

মহর্ষি পতঞ্জলি প্রণীত

যোগ দর্শন

ঋষি ভাষ্যানুসার সরল ভাষায় ব্যাখ্যা সহিত

ভাষ্যকার

আচার্য কপিল আর্ষ

প্রকাশক

দর্শন যোগ ধর্মার্থ ট্রাস্ট

আর্যবন, রোজড়, পত্রা. সাগপুর, তা. তলোদ,
জি. সাবরকাঠা (গুজরাত) ৩৮৩৩০৭

মহর্ষি পতঞ্জলি প্রণীত

যোগ দর্শন

ঋষি ভাষ্যানুসার সরল ভাষায় ব্যাখ্যা সহিত

-ভাষ্যকার-

আচার্য্য কপিল আৰ্য্য দৰ্শনাচাৰ্য্য

অধ্যাপক

দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, সুন্দরপুর

রোহতক, হরিয়ানা



প্রকাশক

দর্শন যোগ ধর্মার্থ ট্রাস্ট

আর্যবন, রোজড়, পত্রা. সাগপুর, তা. তলোদ,

জি. সাবরকাঠা (গুজরাত) ৩৮৩৩০৭

দূরভাষ: (০২৭৭০) ২৮৭৪১৮, ২৮৭৫১৮

চলভাষ: ৯৪০৯৪১৫০১১, ৯৪০৯৪১৫০১৭

Email: darshanyog@gmail.com

Website: www.darshanyog.org

পুস্তক	: যোগদর্শন	
প্রকাশনতিথি	: ২০৭৬ বিক্রমী, সৃষ্টি সম্বৎ: ১,৯৬,০৮,৫৩,১২০; মে ২০১৯	
প্রথম সংস্করণ	: ১১০০ প্রতি	
মূল্য	: ১৫০/-	ISBN : 978-81-936179-8-4

❧-প্রাপ্তিস্থান-❧

অনলাইনে উপলব্ধ- <https://vedicbhandar.org>

- (১) মদনপুর আর্ঘ্য সমাজ নদীয়া, পন্ডিত সমীরণ শাস্ত্রী, মোঃ-৯৪৩৩৪১৬৭০৯
- (২) সর্বরক্ষক ভবন, ছোটখেলনা, মালিগ্রাম, আশীষমণ্ডল, মোঃ-৯৪৭৪৭১৩২০৯
- (৩) পতঞ্জলি চিকিৎসালয় ছোটটেংরা, খড়গপুর, চন্দ্রকান্ত রাঠোর, মোঃ-৯৪৩৪৫০৮৯৩৯
- (৪) ওঙ্কার ভবন, ক্ষীরপাই, হালদার দিঘী, পন্ডিত জয়ন্ত পাত্র, মোঃ-৯৬৩৫৫৫৭২৯০

❧-বিষয়সূচি-❧

(০১) আশীর্বচন- বাংলা/হিন্দি-স্বামী বিবেকানন্দ সরস্বতী ।	০০৩
(০২) সমর্পণ ।	০০৫
(০৩) শংসাপত্রম্- আচার্য্য ব্রহ্মদত্ত ।	০০৬
(০৪) আশীর্বচন- আচার্য্য সত্যমিত্র ।	০০৭
(০৫) পতঞ্জলি যোগ সমিতি-অত্যন্ত উপকৃত এবং গর্বিত	০০৮
(০৬) অনিবার্যরূপে পঠনীয় লেখকের উদ্গার (ভূমিকা) ।	০০৯
(০৭) অনুভূমিক তথা ধন্যবাদ এবং কৃতজ্ঞতা জ্ঞাপন ।	০১৬
(০৮) যোগদর্শনের সংক্ষিপ্ত পরিচয় ।	০১৮
(০৯) এই গ্রন্থের বিশেষতা এবং ত্রুটি মার্জনা ।	০২০
(১০) প্রথম পাদ/প্রশ্নপত্র ।	০২১
(১১) দ্বিতীয় পাদ/প্রশ্নপত্র ।	০৫৯
(১২) তৃতীয় পাদ/প্রশ্নপত্র ।	১০৩
(১৩) চতুর্থ পাদ/প্রশ্নপত্র ।	১৪১
(১৪) মূল সূত্র (সম্পূর্ণ) ।	১৬৭
(১৫) মুখস্থ রাখার যোগ্য ব্যাসভাষ্যের কিছু পংক্তি ।	১৭৫
(১৬) যোগমার্গে উন্নতি না হওয়ার কারণ ।	১৮২
(১৭) দর্শন যোগ ধর্মার্থট্রাস্টের গতিবিধি ।	১৮৫
(১৮) দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়-এর পরিচয় ।	১৮৭
(১৯) পুস্তক প্রকাশন সহযোগী ।	১৯০
(২০) দর্শন সার ।	১৯২

॥ ओ३म् ॥

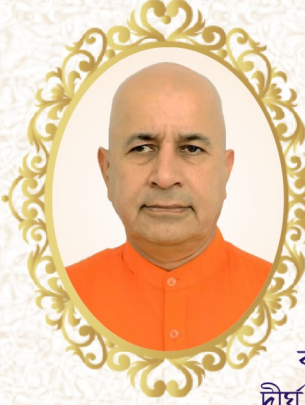
दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट (पंजी.)

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकाठा, (गुजरात) ३८३३०८



Darshan Yog Dharmarth Trust (Reg.)

Aryavan, Rojad, Post-Sagpur, Ta.-Talod, Dist.-Sabarkantha, (Gujarat) PIN : 383307
Tel. : +91(02770) 287518, Mob. : +91-94094 15011, 94094 15017
Email : darshanyog@gmail.com • Website : www.darshanyog.org



आशीर्बचन

संसारेर प्रत्येक प्राणी समस्त दुःख हते निवृत्ति एवं अति उत्तम तथा निरन्तर प्राप्त्य सुखके पेटे चाय । संसारेर मध्ये मनुष्यै एकमात्र एरकम याके ईश्वर एह कार्येर सफलतार जन्य दुह हात, भाषा, बुद्धि, स्वाधीनता एवं बेदेर ज्ञान उपलब्ध करियेछेन ।

बेद समस्त सत्य विद्यार पुस्तक, योग विद्यार ओ मूल बेद । योग एकटि सूक्ष्म विद्या एवं आचरणेर नाम यार अनुष्ठान करले व्यक्ति धन्य हये याय, जीवन सार्थक हये याय । लक्ष-लक्ष ऋषिगण एह योग विद्यार अनुष्ठान निजे करेछेन एवं अन्यके ओ करियेछेन, यार द्वारा संसारे सुखेर वृद्धि निरन्तर, दीर्घकाल पर्यन्त हये एसेछे ।

सारमर्म हल छाड़ार योग्य हल दुःख एवं दुःखेर कारण हल अबिद्या । प्राप्त करार योग्य हल विवेकख्याति=शुद्ध ज्ञान । शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म एवं शुद्ध उपासना द्वारा मोक्षेर प्राप्ति हय ।

बास्तबे योग हल विश्व कल्याणेर आधार । सकल वर्णेर अर्थां ये कोनो ओ काजे रत एवं समस्त आश्रम अर्थां जीवनेर प्रतिटि क्षेत्रे योगेर अनुष्ठान अनिवार्य । ईश्वर, मोक्ष, बैराग्य, तत्त्वज्ञान इत्यादिर दिके चला हल उन्नति एवं प्रकृति, बन्धन, राग-द्वेष, अबिद्या इत्यादिर दिके चला हल अबनति (पतन) ।

ईश्वर सकलेर उन्नति चान एवं समस्त व्यक्ति उन्नतिर जन्य चेष्टा तथा पुरुषार्थ करूक एह भावनाके निये दर्शन योग महाविद्यालय सुन्दरपुर, रोहतक (हरियाणा)-एर अध्यापक आचार्य कपिल जी बांग्ला भाषाय महर्षि पतञ्जलि कृत योग दर्शन ग्रन्थेर व्याख्याके ऋषि भाष्यानुसार प्रस्तुत करार चेष्टा करेछेन । पाशापाशि तिनि एह ग्रन्थे विविध प्रश्नावलीर संग्रह, योग मार्गे चलार पथे बाधक कारण गुलि की ? एवं व्यासभाष्येर अति आवश्यक तथा स्मरणीय पंक्ति गुलिके यथास्थाने रेखे एह ग्रन्थके उत्तम भावना युक्त बानियेछेन ।

एह रकम महत्व पूर्ण एवं कल्याणकारी योग विद्यार प्रकाशक ग्रन्थके पड़े एवं तदनुसारे मन-बचन एवं कर्म द्वारा आचरण करले साधक अवश्यै लौकिक एवं आध्यात्मिक उन्नतिके प्राप्त करते पारबेन ।

आचार्य कपिल दीर्घ काल पर्यन्त अन्य गुरुकुले तथा दर्शन योग महाविद्यालये निवास करे दर्शनार्थी ग्रन्थेर पठन-पाठनेर साथे-साथे योग विद्याके ओ आत्मसां करार चेष्टा करेछेन । फलस्वरूप तिनि योग विद्याके अन्येर काछे पौछानोर जन्य एह ग्रन्थके अन्य भाषाय प्रकाशित करार चेष्टा करेछेन । अतएव आमी ओनार काछ थेके एटि आशा करि ये, तिनि एह रकम ऋषि मार्गे निजेके समर्पित रेखे निजेर जीवनके एवं अन्येर जीवनके सुखमय करबेन । आमी ओनाके धन्यवाद करि एवं आशीर्वाद प्रदान करितेछि ।

स्वामी विवेकानन्द परिव्राजक

निदेशक - दर्शन योग महाविद्यालय

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकाठा (गुजरात) ३८३३०९

॥ ओ३म् ॥

दर्शन योग धर्मार्थ ट्रस्ट (पंजी.)

आर्यवन, रोजड़, पत्रा. सागपुर, ता. तलोद,
जि. साबरकांठा, (गुजरात) ३८३३०८



Darshan Yog Dharmarth Trust (Reg.)

Aryavan, Rojad, Post-Sagpur, Ta.-Talod, Dist.-Sabarkantha, (Gujarat) PIN : 383307
Tel. : +91(02770) 287518, Mob. : +91-94094 15011, 94094 15017
Email : darshanyog@gmail.com • Website : www.darshanyog.org



आशीर्वाचन

संसार का प्रत्येक प्राणी समस्त दुखों से छूटना और बढ़िया तथा निरंतर मिलने वाले सुख को प्राप्त करना चाहता है। संसार में मनुष्य ही एकमात्र ऐसा है जिसे ईश्वर ने इस कार्य की सफलता हेतु दो हाथ, भाषा, बुद्धि, स्वतंत्रता और वेदों का ज्ञान उपलब्ध कराए हैं।

वेद सब सत्य विद्याओं का पुस्तक है, योग विद्या का मूल भी वेद है। योग एक सूक्ष्म विद्या और आचरण का नाम है जिसके अनुष्ठान करने से व्यक्ति कृतकृत्य हो जाता है, जीवन सार्थक हो जाता है। लाखों ऋषियों ने इस योग विद्या का अनुष्ठान स्वयं किया और अन्य को भी करवाया, जिससे संसार में सुखों की वृद्धि निरंतर, लंबे काल तक होती रही।

सार रूप में छोड़ने योग्य दुःख है और दुःख का कारण अविद्या है। प्राप्त करने योग्य विवेकख्याति=शुद्ध ज्ञान है। शुद्ध ज्ञान, शुद्ध कर्म और शुद्ध उपासना से मोक्ष होता है।

वास्तव में योग विश्व कल्याण का आधार है। सभी वर्णों के अर्थात् किसी भी व्यवसाय में रत और सभी आश्रम अर्थात् जीवन के सभी पड़ावों में योग का अनुष्ठान अनिवार्य है। ईश्वर, मोक्ष, वैराग्य, तत्त्वज्ञान आदि की ओर बढ़ना उन्नति है और प्रकृति, बंधन, राग-द्वेष, अविद्या आदि की ओर बढ़ना अवनति (पतन) है।

ईश्वर सबकी उन्नति चाहता है और सभी लोग उन्नति के लिए प्रयत्न, पुरुषार्थ करें इस भावना को लेकर दर्शन योग महाविद्यालय सुंदरपुर, रोहतक (हरियाणा) के अध्यापक आचार्य कपिल जी ने बांग्ला भाषा में महर्षि पतंजलि कृत योग दर्शन ग्रंथ की व्याख्या को ऋषि भाष्य के अनुसार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। साथ साथ उन्होंने इस ग्रंथ में विविध प्रश्नावलियों का संग्रह, योग मार्ग में चलने में बाधक कारण कौन से हैं ? और व्यास भाष्य की अति आवश्यक और स्मरणीय पंक्तियों को यथास्थान रखकर इस ग्रंथ को उत्तम भावनाओं से युक्त बनाया है।

ऐसी महत्वपूर्ण और कल्याणकारी योग विद्या के प्रकाशक ग्रंथ को पढ़कर और तदनुसार मन-वचन व कर्म से आचरण करने से साधक अवश्य ही लौकिक और आध्यात्मिक उन्नति को प्राप्त कर सकेंगे।

आचार्य कपिल जी ने लंबे समय तक अन्य गुरुकुलों में तथा दर्शन योग महाविद्यालय में रहकर दर्शन आदि ग्रंथों के पठन-पाठन के साथ-साथ योग विद्या को भी समझने का प्रयास किया है। इसी के फलस्वरूप उन्होंने योग विद्या को औरों तक पहुंचाने के लिए इस ग्रंथ को अन्य भाषा में प्रकाशित करने का प्रयास किया है। अतः मैं उनसे यह आशा करता हूँ कि वे इसी तरह ऋषियों के मार्ग में स्वयं को समर्पित रखते हुए अपने जीवन को तथा अन्यो के जीवन को सुखमय बनाएं। मैं उनका धन्यवाद करता हूँ और आशीर्वाद देता हूँ।

स्वामी विवेकानंद परिव्राजक

निदेशक

दर्शन योग महाविद्यालय

সমর্পণ



স্বামী ব্রহ্মবিদানন্দ সরস্বতী

ঘিনার অন্তেবাসী হয়ে আমি বৈদিক
ঋষিদের এবং দর্শনের বিদ্যাকে বোঝার কিছুটা
সামর্থ্য প্রাপ্ত করতে পেরেছি এবং ঘিনার
ছত্রছায়ায় সতত বাৎসল্য অনুভব করেছি,
এরকম তপস্বী, যোগীরাজ, সরল-উদার
হৃদয়বান, উহা জ্ঞানের অধিকারী, কোমল
স্বভাববান, বৈদিক বিদ্যায় নিপুণ, আপ্ত লক্ষণে
যুক্ত যোগ বিদ্যার ঘোর তপস্বী, পরম পূজনীয়
স্বামী ব্রহ্মবিদানন্দ জী সরস্বতী মহারাজের
শ্রীচরনকমলে এই 'যোগ দর্শন' ভাষ্যটি সাদরে
সমর্পিত করছি । ।

-কপিল



শংসাপত্রম্

অতি প্রসন্নতার বিষয় যে আচার্য্য কপিল জী দর্শনাচার্য্য বঙ্গভাষায় যোগ দর্শন ব্যাসভাষ্যানুসার ব্যাখ্যা করেছেন। শ্রীমান্ কপিল জী বিনম্র, মৃদু ভাষী, সরল স্বভাব যুক্ত, প্রতিভাবান বিদ্বান। বর্তমানে তিনি দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, সুন্দরপুর, রোহতক, হরিয়াণায় অধ্যাপক রূপে দর্শন শাস্ত্র অধ্যাপনরত আছেন। আচার্য্য কপিলের পিতাশ্রী দেবেন্দ্র বাবু একনিষ্ঠ বৈদিক ধর্মের পুরোহিত। একমাত্র কন্যা এবং দুই পুত্ররত্নকে ছোটবেলায় আমার হাতে বিদ্বান এবং বিদুষী নির্মাণার্থ সমর্পিত করেন, পরিণাম স্বরূপ আজ ওনার কন্যা আচার্য্যা ঋচা জী সোম্যমূর্তি আচার্য্য সত্যমিত্র জীর সহধর্মিণী বেদরক্ষক আর্ধ্য কন্যা গুরুকুল, ছোটখেলনা, পশ্চিমবঙ্গের আচার্য্যা। জ্যেষ্ঠ পুত্র পণ্ডিত প্রদ্যুম্ন শাস্ত্রী যোগ শিক্ষক এবং পুরোহিত। শ্রী কপিল জী কিছু কাল পর্যন্ত কোলাঘাট গুরুকুলে অধ্যায়নের পর আচার্য্য সত্যমিত্র জীর গুরুকুল, মালিগ্রামে বৈদিক শিক্ষার সাথে সাথে বিএ দ্বিতীয় বর্ষ পঠন কালে দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, রোজড়, গুজরাতে গমন করেন। স্বামী সত্যপতি জী দ্বারা সংস্থাপিত দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়ে বিধিবৎ যোগ, সাংখ্য, বৈশেষিক, ন্যায় ও বেদান্ত এবং এগারো উপনিষদাদি শাস্ত্রের অধ্যয়ন করেন এবং যোগ দর্শন বঙ্গভাষায় প্রণয়ন করার মনস্থ করেন, পরিণাম স্বরূপ আজ জনতা জনাদের সামনে এই দুর্লভ দর্শন খানি প্রস্তুত হতে চলেছে। এই দর্শনের কয়েকটি বিশেষতা রয়েছে। যেমন-

- (১) এই যোগদর্শনে ব্যাসভাষ্যকে প্রমুখভাবে যথাযথ স্থাপন করা হয়েছে।
- (২) পূজ্যপাদ স্বামী সত্যপতি জী মহারাজ দ্বারা প্রণীত যোগ দর্শন ব্যাসভাষ্য সহিত এবং স্ব-অনুভব সহিত লিখিত গ্রন্থরত্ন হইতে যথাসম্ভব সাহায্য গ্রহণ করেছেন।
- (৩) কঠিন এবং জটিল স্থানে প্রশ্নোত্তর এর মাধ্যমে বিষয়বস্তুকে স্পষ্ট করে দিয়েছেন ইত্যাদি। আশা করি এই গ্রন্থরত্ন বিদ্বৎ সমাজে অবশ্যই সমাদৃত হবে। আমি লেখকের সুপ্রয়াসকে সাধুবাদ জানাই এবং সুস্বাস্থ্য পূর্বক দীর্ঘায়ুস্য-এর কামনা করি।

ডঃ আচার্য্য ব্রহ্মদত্ত “বেদমনীষী”

আচার্য্য

আর্ষ গুরুকুল কোলাঘাট, পশ্চিমবঙ্গ

আশীর্বচন

অষ্টাবিংশানি শিবানি শগ্মানি সহ যোগং ভজন্ত মে ।

যোগং প্র পদ্যে ক্ষেমং চ ক্ষেমং প্র পদ্যে যোগং চ নমোহোরাত্রাভ্যামস্তু । (অথর্ব. কাণ্ড. ১৯/সূক্ত ৮/মং.-২)

হে পরমেশ্বরযুক্ত মঙ্গলময় পরমেশ্বর ! আপনার কৃপায় আমায় উপাসনা যোগ প্রাপ্ত হোক তথা তার দ্বারা আমায় সুখেরও প্রাপ্তি হোক । এই ভাবে আপনার কৃপায় দশ ইন্দ্রিয়, দশ প্রাণ, মন, বুদ্ধি, চিত্ত, অহংকার, স্বভাব, শরীর এবং বল এই আঠাশটি সকল কল্যাণে প্রবৃত্ত হয়ে উপাসনায়োগকে সর্বদা সেবন করুক তথা আমরাও সেই যোগ দ্বারা রক্ষাকে এবং রক্ষা দ্বারা যোগকে প্রাপ্ত হতে চাই । এই জন্য আমরা দিন-রাত আপনাকে নমস্কার করি । (মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী কৃত ঋ. ভা. ভূ. উপাসনাবিষয়)

এটি সৃষ্টির কূটস্থ (শাস্বত) সত্য নিয়ম রয়েছে যে পরমাত্মার আশ্রয়ে থেকে, তাঁর সহযোগ দ্বারাই আমরা দিন-রাত সুরক্ষিত থাকতে পারি; অন্যথা সম্ভব নয় (নান্যঃ পন্থা) । কেনোনা এই জীবাত্মা পরমাত্মার শরীর, (যমাত্মা ন বেদ যস্যাত্মা শরীরম্) । যেমন আমরা (আত্মা) নিজের শরীরকে নিয়মে রাখি সেই রকমই পরমাত্মাও প্রত্যেক আত্মাকে নিয়মে রাখেন (আত্মনোত্তরো যময়তি স ত আত্মান্তর্যাম্যমৃতঃ) । এতদর্থ ঈশ্বরের তাত্ত্বিক (যথার্থ) জ্ঞান অত্যন্ত আবশ্যিক । এই ব্রহ্মজ্ঞান (আত্মজ্ঞান) নিত্যপ্রতি, শ্রদ্ধাপূর্বক, দীর্ঘকাল পর্যন্ত, সত্য বিধি-নিষেধানুসার যোগাভ্যাসকারী মনুষ্যকেই প্রাপ্ত হয় । বর্তমান সময়ে পৃথিবীতে যোগাভ্যাসের জন্য মহর্ষি পতঞ্জলি কৃত যোগ দর্শন পুস্তকের মত সরল, বিশুদ্ধ, ক্রিয়াস্বক, সত্য প্রমানের সাথে যুক্ত গ্রন্থের উপলব্ধ হওয়া অত্যন্ত কঠিন । প্রাণী মাত্রের দুঃখের নিবৃত্তি এবং সর্বোত্তম আনন্দের প্রাপ্তির জন্য এই যোগ বিদ্যাকে প্রত্যেক ব্যক্তি পর্যন্ত পৌঁছাতে যে কোনও ব্যক্তি যে কোনোও ভাবে পুরুষার্থ করেছেন সেটি মনুষ্যজাতির উন্নতির জন্য সব থেকে বড় দান এবং সর্বোপরি উপকার (সহযোগ) মনে করা হয় । যোগ বিদ্যার যথার্থ জ্ঞান এবং প্রচার; অহর্নিশ যোগে রত যোগাভ্যাসী ব্যক্তি যতটা করতে পারেন ততটা কম যোগাভ্যাসকারী, অসংযমী, অতপস্বী, ইন্দ্রিয়দোষযুক্ত ব্যক্তির দ্বারা সম্ভব নয় ।

দর্শনাচার্য্য কপিল মহোদয়ের জন্ম; তপ-ত্যাগময়, আধ্যাত্ম মার্গে গমনকারী, বেদানুগামী, ঋষিভক্ত, কৃষিজীবী, মিত্রতার যোগ্য, আর্ঘ্য বিচারে অটল আস্থাধারী মাতা-পিতার পরিবারে হয়েছে । সম্ভবত আট বছর বয়স থেকেই এনাকে যোগাভ্যাসী গুরুদের সান্নিধ্য যখন-তখন প্রাপ্ত হতে রয়েছে ।

মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী জীর বচনানুসার যেমন মোক্ষ প্রাপ্ত মনুষ্যকে পূর্বমুক্ত ব্যক্তির নিজ সমীপে আনন্দে রেখে নেন, এবং পুনঃ তাঁরা পরস্পর নিজ জ্ঞান দ্বারা একে অপরকে প্রীতি পূর্বক দেখতে এবং সাক্ষাৎকার করতে থাকেন । সেই ক্রমে আচার্য্য কপিল জীও নিজের পুণ্য কর্মানুসার বেদ-আর্ষ গ্রন্থের মর্মজ্ঞ, আর্ঘ্য সংস্কৃতির ধারক-বাহক, দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়ের সংস্থাপক মহান্ যোগ গুরু পরিব্রাজক স্বামী সত্যপতি জী মহাশয়ের তথা দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়ের গুরু-শিষ্য পরম্পরায় ব্রহ্মনিষ্ঠ গুরুদের এখনো পর্যন্ত স্নেহ পূর্বক ছত্রছায়ায় কারণে, বঙ্গভাষীদের জন্য বরদান স্বরূপ, মহর্ষি ব্যাসভাষ্য কৃত ব্যাখ্যানুসার যোগ দর্শনের বাংলা ভাষায় ব্যাখ্যান প্রারম্ভিক রূপে সম্ভব হতে পেরেছে ।

এই মহান্ পরোপকার মূলক কার্যের জন্য- আচার্য্য কপিল জী, সকল ব্রহ্মনিষ্ঠ গুরুদের তথা সহযোগী সকল যোগাভ্যাসী মহান্ ভবের উপকার স্বাঙ্গনা স্বীকার করি । সকল যোগজিজ্ঞাসু পাঠকদের কাছে নিবেদন করছি যে- এই যোগ বিদ্যাময় পুস্তকের গভীর অধ্যায়ন-অধ্যাপন যোগাভ্যাস পূর্বক করতে থাকুন, তাহলেই পরমাত্মার প্রাপ্তি পূর্বক জীবন আনন্দময় হবে । কেনোনা, আমাদেরকে নিম্ন আগুপুরুষের বচন (উপদেশ) সদা স্মরণ রাখা উচিত- “স্বাধ্যায়াদোগমাসীত যোগাং স্বাধ্যায়মাসতে । স্বাধ্যায়যোগসংপত্ত্যা পরমাত্মা প্রকাশতে । ।”

(যোগ দর্শন ব্যাসভাষ্য- ১/২৮)

এই আসার সাথে, আপনাদের সকলের শুভাকাঙ্ক্ষী সেবক

আচার্য্য সত্যমিত্র আর্ঘ্য

আচার্য্য

বেদরক্ষক আর্ঘ্য গুরুকুল

পতঞ্জলি যোগ সমিতি (পশ্চিমবঙ্গ) অত্যন্ত উপকৃত এবং গর্বিত



শ্রী চন্দ্রকান্ত জী রাঠোর

রাজ্য প্রভারী

ভারত স্বভিমান ন্যাস পঃ বঃ



শ্রী শ্যামল জী তা

রাজ্য প্রভারী

পতঞ্জলি যোগ সমিতি পঃ বঃ



শ্রীমতী পাপিয়া জী রায়

রাজ্য প্রভারী

মহিলা যোগ সমিতি পঃ বঃ



শ্রী আশীষ জী মণ্ডল

রাজ্য প্রভারী

পতঞ্জলি ক্রিয়ান সেবা সমিতি পঃ বঃ



শ্রী জয়ন্ত জী পাঠ

যোগ প্রচারক

পশ্চিম মেদিনীপুর পঃ বঃ

যুক্তেন মনসা বয়ং দেবস্য সবিতুঃ সবে । স্বর্গায় শক্ত্যা ।। (য়জুঃ)

মোক্ষ লাভ অর্থাৎ সম্পূর্ণ দুঃখের নিবৃত্তি, সর্বোত্তম আনন্দের প্রাপ্তি হেতু, ঈশ্বরের এই সৃষ্টিতে উপাসনা যোগাভ্যাস করে প্রত্যেক ব্যক্তিকে নিজ নিজ আত্মা ও মনকে শুদ্ধ করার জন্য অত্যন্ত ইচ্ছা এবং শক্তি সামর্থ্য দ্বারা প্রয়ত্ন করা উচিত । (মহর্ষি স্বামীদয়ানন্দ সরস্বতী)

যোগ হল সমাধি, আত্মদর্শন, জীবন দর্শন, জীবন প্রবন্ধন, আত্মানুশাসন, সম্পূর্ণ চিকিৎসা বিজ্ঞান, ব্যক্তি সমাজ রক্ষা বিশ্বের সম্পূর্ণ সমস্যার সমাধান, যোগ কেবলমাত্র শারীরিক ব্যায়াম নয় বরং সম্পূর্ণ জীবনের ব্যবহারিক কর্ম পদ্ধতি, যোগ (মন) চিন্তকে পবিত্র ও শান্ত করে । যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি এই অষ্টাঙ্গ যোগের সাধনা না করে কোনো ব্যক্তি যোগী হতে পারে না । (স্বামী রামদেব)

বেদ তথা মহাপুরুষের উপদেশানুসার যোগী হওয়ার অত্যন্ত ইচ্ছা সে সকল ব্যক্তিদের অবশ্যই হয়, যাঁরা দুঃখ হতে পীড়িত, সমস্যায় জর্জরিত, দিন-রাত সুখ শান্তি সার্বভৌমিক বিকাশের খোঁজে রত আছেন । পূজ্য গুরুদেব স্বামী রামদেব জীর কৃপায় আমরা যোগাভ্যাস করে অতীতের তুলনায় বর্তমানে আনন্দিত তবুও যোগ বিজ্ঞানে আজও আমরা অনেক অনভিজ্ঞ, তার কারণ হল বঙ্গভাষায় মহর্ষি পতঞ্জলি কৃত ‘যোগ দর্শন’-এর জ্ঞান এখনো পর্যন্ত সঠিক উপলব্ধ নেই । মহান যোগগুরু স্বামী সত্যপতি জী পরিব্রাজক দ্বারা প্রতিষ্ঠিত ‘দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়’ (GUJARAT) দীর্ঘ সময় ধরে ষড়দর্শন-এর অধ্যয়ন-অধ্যাপনের মাধ্যমে নিগুড় যোগ বিজ্ঞানকে যেভাবে মানব মাত্রের উপকারের জন্য সুরক্ষিত রেখেছেন তাকে কখনও কোনো যোগজিগাসা দার্শনিক যোগী ভুলতে পারবেন না । এই সংস্থার স্নাতক আচার্য্য কপিল জী জন্ম থেকেই বঙ্গবাসীদের প্রতি মমতা এবং করুণা দৃষ্টির জন্য বাংলা ভাষায় বহুপারস্পত না হলেও তিনি বাংলা ভাষায় যোগ দর্শন পুস্তকের ভাষ্য করে মানবতার অনেক বড় সেবা করেছেন । এতদর্থ উনার প্রতি আমরা (পতঞ্জলি পরিবার) স্নেহ এবং সম্মান অর্পণ করিতেছি ।

স্বামী রামদেব জী বলেছেন- আমরা দেশের প্রত্যেক ব্যক্তিকে প্রথম যোগী বানাতে চাই, কেননা আমি মনে করি- আত্মোন্নতি ছাড়া রাষ্ট্রোন্নতি হতে পারে না । যোগ করিয়ে মানুষকে সৎ (আদর্শ) মানুষ তৈরি করব । যোগী হওয়ার এবং বানানোর যে মহাযজ্ঞ সেটি স্বামীজি আমাদের হৃদয়ে যজ্ঞাগ্নি স্বরূপ প্রেরণা বহুদিন পূর্বে প্রজ্জ্বলিত করেছেন, কিন্তু যজ্ঞ সম্পন্ন করতে বাংলা ভাষায় জ্ঞান রূপী ঘৃত (হবি)-এর অভাব হচ্ছিল । ঈশ্বরের দয়ায় বর্তমানে সেটিও আমাদের মতো অনেক শুভাকাঙ্ক্ষীদের আগ্রহ এবং সহযোগিতায় আচার্য্য কপিল মহাশয় আমাদের চিন্তা মুক্ত করে দিয়েছেন । যোগাভ্যাসী পাঠকদের প্রতি নিবেদন আর সময় নষ্ট না করে ‘করো যোগ রহো নিরোগ’ কেননা-

যোগেন যোগো জ্ঞাতব্যো যোগো যোগাৎ প্রবর্ততে । যোগপ্রমত্তন্তু যোগেন স যোগে রমতে চিরম্ ।। (ব্যাসভাষ্য- ৩/৬)

যোগাভ্যাসের দ্বারাই যোগবিদ্যা জানা যায়, যোগের বৃদ্ধি হয়, আলস্যহীন ব্যক্তি দীর্ঘকাল পর্যন্ত যোগে রমন করে

(মগ্ন থাকে) এবং যোগের ফল স্বরূপ অত্যন্ত আনন্দিত হয় । (স্বামী সত্যপতি পরিব্রাজক)

সর্বোত্তম সুখিনঃ

এই আশার সাথে আপনাদের সকলের শুভাকাঙ্ক্ষী...

পতঞ্জলি যোগ সমিতি (পঃবঃ)

অনিবার্যরূপে পঠনীয় লেখকের উদ্গার (ভূমিকা)

বঙ্গ প্রান্তে বর্তমানে নিবাস না করলেও আমি বঙ্গভাষী ব্যক্তিদের উন্নতির জন্য সর্বদা চিন্তন করতে থাকি। দূরে বসেও তাঁদের উন্নতি কিভাবে করা যায়, সেই চিন্তনের ক্ষণে একদিন মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী জী মহারাজের নিম্নলিখিত উক্তিটি পড়ে আমি এই দর্শনকে বাংলাভাষায় লেখার প্রতি প্রেরিত হয়েছি, সেটি হল- “যদি আমায় কেউ প্রশ্ন করে যে, এই পাগলামির কোন উপায়ও রয়েছে কিনা? তাহলে আমার উত্তর হলো যে, যদিও রোগ অনেক বেড়ে গেছে তথাপি এর উপায় হতে পারে। যদি পরমাত্মার কৃপা হয় তাহলে রোগ অসাধ্য নয়। বেদ এবং ষড়্দর্শন-এর প্রাচীন পুস্তকের ভিন্ন-ভিন্ন ভাষায় অনুবাদ করে সকলের যাতে সরলতা পূর্বক প্রাচীন বিদ্যার জ্ঞান প্রাপ্ত হতে পারে, এরকম প্রযত্ন করা উচিত।” বঙ্গ প্রান্তে অধ্যয়নকালে আমি আমার বঙ্গভাষী ব্যক্তিদের আধ্যাত্ম মার্গের প্রতি অরুচি বরাবরই লক্ষ্য করেছি। এই অরুচি হওয়া তাঁদের ক্ষেত্রে, আমি কোন দোষ মনে করি না। তার কারণ হল, বর্তমানে যোগের উচ্চ শিখরে বিরাজমান পূজ্য স্বামী সত্যপতি জী মহারাজ একটি ভজন গাইতেন, সেটি হল- “আম বসর কী তো বাত হি ক্যা বিদ্বান ভটকতে দেখে হৈঁ।” অর্থাৎ সাধারণ জনের কথা ছেড়ে দিন, যখন বিদ্বানরাই দিশেহারা হয়ে ঘুরছেন তখন সাধারণ জন কী করবেন? শুরুতে এটি লেখার সময়ে, বাংলা ভাষায় পঠন-পাঠনের কার্য থেকে বহুদিন দূরে থাকায় কিছুটা কঠিনতার অনুভব হয়েছিল, কিন্তু সেটি আজ আর অট্টা নেই। তা যাই হোক না কেন, বহু প্রসন্নতার বিষয় হল যে সেই কার্য আজ ঈশ্বরের কৃপা, গুরুজনদের আশীর্বাদ এবং বহু শুভ চিন্তক মহানুভবের সহযোগিতায় পূর্ণতা লাভ করেছে।

বস্তুত সকলেই স্থায়ী সুখ প্রাপ্তির জন্য ভোগ মার্গকে চয়ন করছেন, এতে কোন সন্দেহ নেই। কিন্তু তাঁরা এটা জানেন না যে ভোগ মার্গের দিকে প্রবাহিত হয়ে স্থায়ী সুখের প্রাপ্তি করা কখনো সম্ভব নয়, বরং বহুবিধ দুঃখের প্রাপ্তি অবশ্যই হয়। সেই বহুবিধ দুঃখ থেকে নিতান্ত মুক্ত হতে এবং স্থায়ী ও শাস্বত সুখের প্রাপ্তির জন্য আধ্যাত্ম মার্গের দিকে এক না এক দিন সকলকেই আসতে হয় তার কারণ হল “নান্যঃ পন্থা বিদ্যতে অয়নায়” আর কোনো পথ (উপায়)ও নেই। তবে হ্যাঁ, যাঁরা আধ্যাত্ম মার্গের দিকে না এসে স্থায়ী ও শাস্বত সুখের প্রাপ্তি করতে চান তাঁদের জন্য একটি সরল উপায় রয়েছে, যদি তাঁরা সেটি করতে পারেন তাহলে নিশ্চয়ই স্থায়ী ও শাস্বত সুখের প্রাপ্তি করতে পারবেন। সেই উপায় হল-

য়দা চর্মবদ্বাকাশং বেষ্টয়িম্যন্তি মানবাঃ।

তদা দেবমবিজ্ঞায় দুঃখস্যান্তো ভবিষ্যতি।। শ্বেতা. ৬/২০

যখন মানুষ আকাশকে চামড়া দিয়ে আবদ্ধ করে নেবে তখন ঈশ্বরকে না জেনেই সকল দুঃখ থেকে পার হতে পারবে।

ঋষিদের দেওয়া এই উপায়, তাঁদের জন্য ব্যঙ্গাত্মক লাগতে পারে কিন্তু এটি কোনো ব্যঙ্গ নয়, বাস্তবিক তো এটাই যে আমরা সকলেই এই রকমই একটি পথকে চয়ন করে তার থেকে পূর্ণ সুখ পাওয়ার ইচ্ছে করে মরীচিকার পিছনে ছুটছি।

যাঁরা পূর্ণ সুখ পাওয়ার ইচ্ছে করে উল্টো পথে হেটে বহুদূর চলে গেছেন তাঁদেরকে আমি আতর্স্বরে পুনঃ আহ্বান করছি “আয় ছুটে আয়, যোগের দিকে ছুটে আয়”। যে সংসার থেকে পূর্ণ সুখ পাওয়ার ইচ্ছে করে সেদিকে আমরা অহর্নিশ ছুটাছুটি করছি, সেই সংসার সম্বন্ধে ঋষিদের নিষ্কর্ষ ভালোভাবে স্মরণ করে নেওয়া উচিত- “দুঃখবহুলঃ সংসারো হেয়ঃ” (যোগ. ২/১৫) অর্থাৎ এই দুঃখ বহুল সংসার ত্যাগ করার যোগ্য। “কুত্রাপি কোঃপি সুখী ন” (সাংখ্য. ৬/৭) অর্থাৎ সংসারে কোথাও কোনও ব্যক্তি সুখী নেই। “দুঃখমেব সর্বং বিবেকিনঃ” (যোগ. ২/১৫) অর্থাৎ যোগীদের সবকিছুই দুঃখ দায়ক মনে হয়। অতএব পূর্ণ সুখ পেতে হলে আধ্যাত্ম মার্গের দিকে অগ্রসর হতে হবে। আধ্যাত্ম মার্গকে জানতে হলে দর্শন শাস্ত্রের দিকে অগ্রসর হতে হবে এবং দর্শন শাস্ত্রের মধ্যে যোগশাস্ত্র একটি বিশিষ্ট স্থান রাখে যেখানে যোগকে ক্রিয়াত্মক ভাবে বর্ণনা করা হয়েছে। অতএব আধ্যাত্মকে ভালোভাবে জানতে হলে যোগ দর্শনকে ভালোভাবে জানা অনিবার্য।

দর্শন শাস্ত্রে যে সকল বিদ্যার চর্চা করা হয়েছে সেগুলি সব বেদ থেকে এসেছে এবং বেদ ঈশ্বরীয় বাণী। অতএব এই দর্শন বিদ্যা ঈশ্বরীয় বিদ্যা। একথা দর্শনকাররা স্বয়ং স্বীকারও করেছেন যে- “তদ্বচনাদান্নায়স্য প্রামাণ্যম্” (বৈশেষিক. ১/১/৩) অর্থাৎ বেদ ঈশ্বরীয় বাণী হওয়ায় বেদের প্রামাণিকতা এখানে স্বীকার করা হয়েছে। বেদের সেই সকল যোগাদি আধ্যাত্মিক বিদ্যাকে করুণাময়, কৃপা বর্ষণকারী ঋষিরা আমাদেরকে সরল ভাষায়, সরল পদ্ধতিতে, সরল ভাবে জানিয়ে গেছেন।

অনেকের মনে একটা প্রশ্ন জাগতে পারে যে, যদি আধ্যাত্ম বিদ্যা বেদ থেকেই এসেছে তাহলে দর্শনাদি শাস্ত্র পড়ে আধ্যাত্মিক বিদ্যাকে জানার কী প্রয়োজন? সেগুলি বেদ থেকেই জেনে নেওয়া যাবে।

এর উত্তর হল- এটা ঠিক যে যোগ বিদ্যাও বেদ থেকেই এসেছে। বেদোদ্ধারক মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী জী লিখেছেন যে- “সব সত্য বিদ্যা এবং যাহা পদার্থ বিদ্যা দ্বারা জানা যায় সে সকলের আদিমূল পরমেশ্বর।” “বেদ সব সত্য বিদ্যার পুস্তক...” অর্থাৎ যত প্রকারের বিদ্যা সংসারে রয়েছে; যেমন ভৌতিক বিজ্ঞান, আত্মা পরমাত্মার সাথে সম্বন্ধ আধ্যাত্মিক বিজ্ঞানাদি সকলের আদিমূল অর্থাৎ সকলের আধার হলেন পরমেশ্বর; ওই বিজ্ঞান দ্বারা যুক্ত, জ্ঞান বিজ্ঞান দ্বারা পরিপূর্ণ এবং

প্রকৃতি হতে উৎপন্ন যে সকল বুদ্ধি (মহৎ তত্ত্ব) ইত্যাদি থেকে শুরু করে সমস্ত লোক লোকান্তর পর্যন্ত প্রাকৃতিক পদার্থ রয়েছে সেই সকলের কর্তা, ধর্তা এবং হর্তাও হলেন ঈশ্বর। সেই ঈশ্বর থেকেই সমস্ত বিদ্যা প্রচলিত হয়েছে। ঈশ্বর প্রদত্ত জ্ঞান-বিজ্ঞান ছাড়া ব্যক্তি না তো ভৌতিক বিদ্যার অধিকারী হতে পারবেন, না তো আধ্যাত্মিক বিদ্যার অধিকারী হতে পারবেন, না তো লৌকিক সুখকে প্রাপ্ত করতে পারবেন, না তো মোক্ষ সুখ প্রাপ্ত করতে পারবেন। একথা নিম্ন বেদ মন্ত্র দ্বারা প্রমাণিত হয়-

তস্মাদ্যজ্ঞাৎসর্বহৃত ঋচঃ সামানি জজ্ঞিরে।

ছন্দাংসি জজ্ঞিরে তস্মাদ্যজুস্তস্মাদজায়ত।। (য়জু. ৩১/৭)

অর্থ- হে মনুষ্য! তোমাদের উচিত যে (তস্মাৎ) সেই পূর্ণ (য়জ্ঞাৎ) অত্যন্ত পূজনীয় (সর্বহৃতঃ) যাঁর প্রাপ্তির জন্য সকল মনুষ্য সমস্ত পদার্থকে প্রদান অথবা সমর্পণ করেন সেই পরমেশ্বর থেকে (ঋচঃ) ঋগ্বেদ (সামানি) সামবেদ (জজ্ঞিরে) উৎপন্ন হয়েছে (তস্মাৎ) সেই পরমাত্মা থেকে (ছন্দাংসি) অথর্ববেদ (জজ্ঞিরে) উৎপন্ন হয়েছে এবং (তস্মাৎ) সেই পুরুষ থেকে (য়জুঃ) যজুর্বেদ (অজায়ত) উৎপন্ন হয়েছে তাঁকে জানার চেষ্টা কর। (মহর্ষি দয়ানন্দকৃত যজুর্বেদভাষ্য)

বেদে বর্ণিত যোগ সম্পর্কিত কিছু মন্ত্র ও তার অর্থ নিচে দর্শানো হল-

যোগে যোগে তবস্তরং বাজে বাজে হবামহে।

সখায় ইন্দ্রমূতয়ে।। (য়জু. ১১/১৪)

অর্থাৎ বার-বার যোগাভ্যাস করার সময় এবং বার-বার মানসিক এবং শারীরিক বল বাড়ানোর সময় আমরা সকলে পরস্পর মিত্রতার সাথে যুক্ত হয়ে নিজেদের রক্ষার জন্য অনন্ত বলবান্, ঐশ্বর্যশালী ঈশ্বরের ধ্যান করি। সেই পরমাত্মা থেকে সব প্রকারের সাহায্য প্রার্থনা করি।।

যুঞ্জানঃ প্রথমং মনস্তত্ত্বয় সবিতা ধিয়ম্।

অগ্নেজ্যোতির্নিচায়্য পৃথিব্যা অধ্যাভরৎ।। (য়জু. ১১/১)

পদার্থ- (যুঞ্জানঃ) যোগাভ্যাসী মনুষ্য (তত্ত্বয়) তত্ত্ব অর্থাৎ ব্রহ্ম জ্ঞানের জন্য (প্রথমং মনঃ) যখন নিজের মনকে প্রথমে পরমেশ্বরের সাথে যুক্ত করেন তখন (সবিতা) পরমেশ্বর ওনাদের (ধিয়ম্) বুদ্ধিকে নিজ কৃপায় নিজের সাথে যুক্ত করেন (অগ্নেজ্যোতির্নিচায়্য) তার পরই তাঁরা পরমেশ্বরের প্রকাশকে প্রাপ্ত করে (অধ্যাভরৎ) ভালোভাবে ধারণ করেন (পৃথিব্যাঃ) পৃথিবীর মাঝে যোগীর এটাই প্রসিদ্ধ লক্ষণ।। (মহর্ষি দয়ানন্দকৃত যজুর্বেদভাষ্য)

যুঞ্জন্তি ব্রহ্মমরুঞ্চ চরন্তং পরি তস্তুষঃ।

রোচন্তে রোচনা দিবি।। (ঋ. অ.১/অ.১/ব.১১/ম.১)

ভাষার্থ- (যুঞ্জন্তিঃ) মুক্তির উত্তম সাধন হল উপাসনা, এই জন্য যে সকল বিদ্বান্

লোক রয়েছে, তিনারা সমস্ত জগৎ এবং সমস্ত মানুষের হৃদয়ে ব্যাপ্ত ঈশ্বরকে উপাসনা রীতি দ্বারা নিজের আত্মাকে ঈশ্বরের সাথে যুক্ত করেন। সেই ঈশ্বর কিরকম (চরন্তং) অর্থাৎ সকলের জ্ঞাতা (অরুং) হিংসাদি দোষ থেকে পৃথক, কৃপার সাগর (ব্রহ্মং) সব প্রকার আনন্দের বর্ধক সকল রীতি থেকে বড়। এরই দ্বারা (রোচনা) অর্থাৎ উপাসকের আত্মা সকল অবিদ্যা দোষের অন্ধকার থেকে পৃথক হয়ে (দিবি) প্রত্যেক আত্মার প্রকাশকারী পরমেশ্বরের প্রকাশে প্রকাশময় হয়ে (রোচন্তে) প্রকাশিত হন।। (ঋগ্বেদাদিভাষ্যভূমিকা উপাসনা বিষয়)

এই ভাবে বেদের মধ্যে মূল রূপে যোগ বিদ্যার চর্চা করা হলেও দর্শনশাস্ত্র গুলির মহত্ব এর দ্বারা কমে যায় না। তার কারণ হলো মূল রূপে যোগ বিদ্যা বেদে বর্ণিত থাকলেও সেই বিদ্যাকে বিস্তার রূপে ক্রিয়াত্মক ভাবে বোঝার জন্য দর্শন বিদ্যাকে জানা অনিবার্য, তা না হলে বেদে বর্ণিত যোগ বিদ্যাকে জানা দুঃসাধ্য। এ কথা একটি উদাহরণের মাধ্যমে প্রস্তুত করলে হয়তো বিষয়টা আরও স্পষ্ট হয়ে যাবে। যেমন বিমান শাস্ত্রের বিদ্যা মূল রূপে বেদে বর্ণিত থাকলেও আজ পূর্ণাঙ্গ রূপে বিমান শাস্ত্রের অভাবে বেদ বিদ্যা থেকে বিমান তৈরির বিদ্যা কেউই হস্তগত করতে পারছেন না। কিন্তু যদি বিমান শাস্ত্র আজ আমাদের মধ্যে উপস্থিত থাকতো তাহলে নিশ্চয়ই বৈদিক যুগে প্রচলিত প্রদূষণ রহিত বিমানের গর্জনা আকাশে শোনা যেত। কিন্তু সেই শাস্ত্র লুপ্ত হওয়ার ফলে আজ বেদ আমাদের কাছে অর্থ সহিত উপলব্ধ হলেও কেউই বিমান তৈরি করতে সক্ষম হতে পারছেন না। অতএব যোগ বিদ্যা বেদে বর্ণিত থাকলেও এই দর্শন বিদ্যার যদি অভাব হয়ে যায় অথবা কেউ এই গুলিকে না পড়েন তাহলে তাঁরা যোগ বিদ্যাকে কখনই শিখতে পারবেন না।

দর্শন বিদ্যা সম্পর্কে এ কথা বললেও অতিশয়োক্তি হবে না যে দর্শন বিদ্যার অভাবে ব্যক্তির বাণী, ব্যবহার, বিচার সংকুচিত, কলুশিত, বিরুদ্ধ হওয়া কোনও আশ্চর্য নয়। আজ সমাজে দর্শন শাস্ত্রের উপর কিছু লোকের বুদ্ধিতে সংকুচিত, বিপরীত এবং অপরিপক্ক মান্যতা বসে রয়েছে। তাঁরা মনে করেন যে- এই শাস্ত্রের আবশ্যিকতা মানব জীবনে বিশেষ প্রয়োজনীয় নয়। দুর্ভাগ্যের বিষয় যে, এই ধরনের মান্যতা সম্পন্ন মানুষের সংখ্যা আজ সমাজে অধিক হওয়ায় সমাজের দশা এবং দিশা নতুন উড়ান ভরে উল্টো পথ ধরে দুঃখ, অজ্ঞান, অন্ধকারের গর্তে গিয়ে পড়ে পুঁকছে। তাঁদের এই ধরনের মান্যতাকে দেখে মনে হয় তাঁরা নিজেকে ঋষিদের থেকেও বড় মনে করেন অন্যথা যদি ঋষিদের অনুসরণ করে বিদ্বানরা নিজের পা অগ্রসর করতেন তাহলে আজ সমাজের দশা এবং দিশা এ ধরনের হতো না।

মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী জীর এই দর্শনবিদ্যা এবং যোগ বিদ্যার সম্পর্কে উনার দৃষ্টি এবং মতামত-

★ স্বামীজি স্বয়ং মনে করতেন যে এই সংসারের দুর্দশাকে দূর করতে দর্শন বিদ্যা

অত্যন্ত আবশ্যক। ওনার নিম্ন উক্তি দ্বারা সেটি স্পষ্ট হয়ে যায়- “যদি আমায় কেউ প্রশ্ন করে যে, এই পাগলামির কোন উপায়ও রয়েছে কিনা? তাহলে আমার উত্তর হলো যে, যদিও রোগ অনেক বেড়ে গেছে তথাপি এর উপায় হতে পারে। যদি পরমাত্মার কৃপা হয় তাহলে রোগ অসাধ্য নয়। বেদ এবং ষড়দর্শন-এর প্রাচীন পুস্তকের ভিন্ন-ভিন্ন ভাষায় অনুবাদ করে সকলের যাতে সরলতা পূর্বক প্রাচীন বিদ্যার জ্ঞান প্রাপ্ত হতে পারে, এরকম প্রয়াস করা উচিত।” (উপদেশ মঞ্জুরী- উপদেশ ১৩) -মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী।

★ এটা জেনে পাঠকদের আশ্চর্য্য হবে যে বেদের ভূমিকা লিখতে গিয়ে স্বামীজী ঋগ্বেদাদিভাষ্যভূমিকায় বহু জায়গায় দর্শনের সূত্র এবং সিদ্ধান্তকে তুলে ধরে বেদকে বুঝিয়েছেন। পাঠকদেরকে আমি অনুরোধ করছি কিছু সময় বের করে ঋগ্বেদাদিভাষ্যভূমিকার উপাসনা বিষয় এবং মুক্তি বিষয়কে একবার দেখতে পারেন সেখানে বহু জায়গায় দর্শনের সূত্রকে হুবহু উদ্ধৃত করে উপাসনা বিষয় এবং মুক্তি বিষয়কে বুঝিয়েছেন এবং অবশেষে স্বামীজী লিখেছেন- “... কিন্তু সবাইকে পূর্বোক্ত (যোগ দর্শনে বর্ণিত) রীতি দ্বারাই উপাসনা করা উচিত।” (উপাসনা বিষয়)

★ স্বামীজীর বহু কৃতিত্বের মধ্যে ‘সত্যার্থ প্রকাশ’ একটি অমূল্য কৃতিত্ব, যার বিষয়ে এই উক্তি প্রচলিত রয়েছে যে সত্যার্থ প্রকাশ অর্থাৎ এটি বেদের সার। সেই সত্যার্থ প্রকাশ গ্রন্থে চৌদ্দটি সমুল্লাসের মধ্যে সাতটি সমুল্লাসেরও বেশী স্থানে দর্শনের সূত্র উদ্ধৃত করা হয়েছে এবং এক-একটি সমুল্লাসে বহুবার দর্শনের সূত্রকে হুবহু উদ্ধৃত করে সেই সকল বিষয়বস্তুকে স্বামীজী বুঝিয়েছেন। আর একথা বললে অতুষ্টি হবে না যে সম্পূর্ণ সত্যার্থ প্রকাশ একটি দার্শনিক গ্রন্থ। এই গ্রন্থের সকল বিষয়বস্তু বেশির ভাগ ন্যায় দর্শনের উপর নির্ভর। তাই দর্শন গ্রন্থ না পড়ে যেমন বেদকে বুঝতে পারা যায় না সেই রকম দর্শনশাস্ত্র না পড়লে সত্যার্থ প্রকাশও তাঁদের ক্ষেত্রে বোঝা কঠিন।

★ যোগের ফল সম্পর্কে লিখতে গিয়ে স্বামীজী সত্যার্থ প্রকাশে লিখেছেন যে- “.....আত্মার বল এত বেড়ে যায় যে পর্বতের সমান দুঃখ উপস্থিত হলেও সে ভয়ে ভীত হয় না এবং সকল দুঃখকে সহন করে নেয়, এটি কী কোন ছোট কথা?” (সপ্তম সমুল্লাস)

★ যাঁরা দর্শনশাস্ত্র না পড়ে বেদের ভাষ্য করতে শুরু করেছেন তাঁদেরকে স্বামীজীর নিম্নলিখিত নির্দেশকে একবার দৃষ্টিপাত করা উচিত- “বেদের ব্যাখ্যান করার বিষয়ে এরকম বোঝা উচিত যে যতক্ষণ পর্যন্ত সত্য প্রমাণ, সুতর্ক, বেদের শব্দের পূর্বাপর প্রকরণ, ব্যাকরণাদি বেদাঙ্গ, শতপথাদি ব্রাহ্মণ, পূর্ব মীমাংসাদি দর্শন শাস্ত্র এবং শাস্ত্রান্তরের যথাযথ বোধ না হয়ে যায়, এবং পরমেশ্বরের অনুগ্রহ, উত্তম বিদ্বানের শিক্ষা, তাঁদের সঙ্গ দ্বারা পক্ষপাত ত্যাগ করে আত্মার শুদ্ধি না হয় তথা মহর্ষিদের

কৃত ব্যাখ্যানকে না দেখে নেন, ততক্ষণ পর্যন্ত বেদের অর্থের যথাযথ প্রকাশ মানুষের মনের মধ্যে উৎপন্ন হয় না।’’ (ঋগ্বেদাদিভাষ্যাভূমিকা বেদবিষয়বিচার)

আমি আশা করি মহর্ষি জীর এই ধরনের কিছু উক্তি দ্বারা নিশ্চয়ই পাঠকরা দর্শনের মহত্ত্ব সম্পর্কে কিছুটা অবগত হয়েছেন।

ন্যায় (তর্ক) বিদ্যার উপর নিরুক্তকার যাস্কমুনির মত-

’’.....পুরস্তান্মনুষ্যা বা ঋষিষুৎক্রামৎসু দেবানব্রুবন্ কো ন ঋষিভবিষ্যতীতি তেভ্য এতৎ তর্কমৃষিঃ প্রায়চ্ছন্ মন্ত্রার্থচিন্তাভ্যহমভ্যুচং.....’’ (নিরুক্তি. অ.১৩/খ.১২)

ভাবার্থ- পূর্বের ঋষিরা তো চলে গেছেন। বর্তমানে নতুন ঋষি কোথা থেকে আসবেন? এই সমস্যার সমাধানের জন্য যাস্কমুনি একটি আখ্যানের কল্পনা করে বিষয়টাকে বুঝিয়েছেন। “পূর্বের ঋষিরা চলে যাওয়ায় মনুষ্য দেবতাদের সম্মুখে গিয়ে বলেন যে বর্তমানে আমাদের ঋষি কে হবেন? তখন সেই দেবতারা মনুষ্যকে তর্ক নামক ঋষি প্রদান করেন যার দ্বারা মন্ত্রের অর্থ চিন্তন করা হয়।’’ এই তর্ক ঋষি বর্তমানে ন্যায় দর্শনকে বলা হয়। এই কথার ভিত্তিতে একথাও বলা যেতে পারে যে যোগ ঋষির অভাবে বর্তমানে যোগ দর্শন-ই আমাদের সম্মুখে যোগ ঋষি, যেখান থেকে আমরা যোগ বিদ্যার সূক্ষ্ম রহস্যকে জানতে পারি।।

যোগের শক্তির মহিমা পাশ্চাত্য বিদ্বানরাও সাদরে স্বীকার করেছেন। যোগ সম্পর্কে তাঁদের কিছু মতামত-

(১)"Ashtanga yoga is 99 percent practice, one percent theory." ~ Sri K. Pattabhi Jois

অষ্টাঙ্গ যোগ ৯৯ শতাংশ অভ্যাসের ওপর নির্ভর করে, কেবলমাত্র এক ভাগ তত্ত্বজ্ঞান-এর উপর।

(২)"Yoga is the perfect opportunity to be curious about who you are." ~ Jason Crandell

নিজেকে অর্থাৎ আত্মাকে জানার জন্য কেবলমাত্র ‘যোগ’-ই একমাত্র মার্গ (উপায়)।

(৩)"Yoga teaches us to cure what need not be endured and endure what cannot be cured." ~ B.K.S. Iyenger

যে সকল বিষয়গুলি সহ্য করা যায় না, সেইগুলিকে কিভাবে ঠিক করা যায় এবং যে সকল বিষয়গুলি ঠিক হওয়া সম্ভব নয়, সেইগুলির সাথে কিভাবে ব্যবহার করা উচিত- যোগ আমাদের এইসব বিবিধ বিষয়ে শিক্ষা প্রদান করে।

(৪)"The attitude of gratitude is the highest yoga." ~ Yogi Bhajan

ঈশ্বরের প্রতি সর্বদা কৃতজ্ঞতা প্রকট করা অর্থাৎ সর্বদা সমর্পণ ভাব রাখা-ই হল সবথেকে বড় যোগ।

(৫)" Everyone can do Ashtanga. Except lazy people" ~ Sharath Jois

কেবলমাত্র অলস ব্যক্তি ছাড়া প্রত্যেকেই অষ্টাঙ্গ যোগকে করতে পারবেন।

আর বেশি না লিখে আমি অবশেষে এত টুকুই পাঠকদের সম্মুখে বলতে চাই যে- হয়তো আমি ভূমিকার মাধ্যমে দর্শনের মহত্বকে ভালো ভাবে বুঝাতে সক্ষম হতে পারিনি, তাহলেও এর দ্বারা আপনারা দর্শনের মহত্বকে সিমিত করে দেখবেন না; বরং এর মহত্ব অনেক বেশি যা বর্ণনা করা কখনোই সম্ভব নয় অতএব আমি পাঠকদের কাছে বারংবার নিবেদন এবং প্রার্থনা করি যে এ ধরনের দুর্লভ, উত্তম এবং অমূল্য বিদ্যার পঠন-পাঠন করুন এবং নিজের জীবন ও অন্যের জীবনে সুখ, শান্তি, আনন্দ, উৎসাহ এবং নিভয়তার বিস্তার করুন।। ইতি ওম্ শান্তি।।

-আচার্য্য কপিল আর্ঘ্য



অনুভূমিকা তথা কৃতজ্ঞতা এবং ধন্যবাদ জ্ঞাপন

বঙ্গ ভূমিতে জন্মগ্রহণ করার সৌভাগ্য প্রাপ্ত না হলেও দীর্ঘকাল পর্যন্ত বঙ্গভূমিতে আমার পালন-পোষণ, এবং শিক্ষা-দীক্ষা হওয়ার ফলে আমি বঙ্গভূমির প্রতি এবং বঙ্গভাষী ব্যক্তিদের প্রতি তাঁদের এই অবদান এবং ঋণকে কখনোই ভুলতে পারবো না। তাঁদের সেই অবদান এবং ঋণ থেকে কিছুটা হলেও মুক্ত হওয়ার জন্য আমার মধ্যে বঙ্গভূমির প্রতি এবং বঙ্গভাষী ব্যক্তিদের প্রতি কিছু করার ইচ্ছে সর্বদা ছিলো, রয়েছে এবং থাকবে।

আমায় প্রথম গুরু রূপে যিনি শিক্ষা প্রদান করেছেন তিনি হলেন আচার্য্য ব্রহ্মদত্ত জী (গুরুকুল কোলাঘাট)। ইনি জীবনের অনেক মৌলিক বিষয় শিখিয়েছেন যা আজও আমার জীবনে পাথেয় রূপে সাহায্য করে। উনারই চরণে অধ্যায়ন কালে খুবই অল্প বয়সে কোলাঘাট গুরুকুলে সেই দিনে একজন যোগী পুরুষের আবির্ভাব ঘটে, সেই গুরুকুলের অধ্যাপক/ব্যবস্থাপক রূপে; তিনি হলেন আচার্য্য সত্যমিত্র জী (বেদরক্ষক আর্ঘ্য গুরুকুল)। উনার যোগ বিদ্যায় পারদর্শীতা এবং গভীরতা দেখে আমি খুবই প্রভাবিত হই। সেই দিন থেকে যোগ বিদ্যার প্রতি আমার প্রবল রুচি বেড়ে যায় এবং উনারই দয়ায় তথা মার্গ দর্শনের ফলে আমি যোগ বিদ্যার অনেক সূক্ষ্ম বিষয়কে জানতে পেরেছি এবং আমি আজ যা কিছু তার পেছনে উনারই সর্বোচ্চ অবদান। উনার কাছ থেকে দর্শন এবং উপনিষদাদি গ্রন্থের বহু জ্ঞান, উপদেশ কালে শুনে নিলেও সেই সকল গ্রন্থ গুলির পূর্ণ রূপে অধ্যয়নের অবসর ততখন পর্যন্ত না আসায় মনের মধ্যে কিছুটা অপূর্ণতার বোধ সর্বদা ভর করে থাকতো। কিন্তু ঈশ্বরের কৃপায় সেই অবসরও একদিন উপস্থিত হয়, যখন আমি দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, গুজরাতে প্রবেশ করি।

দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়ও আমার জীবনের একটি মূল্যবান অধ্যায়। এখানে অধ্যয়নকালে আমার মনে একটা তীব্র ইচ্ছে জাগতো যে এই বিদ্যাকে বঙ্গভাষীদেরকেও জানানো উচিৎ। কিন্তু ততক্ষণ পর্যন্ত গ্রন্থ লেখার ইচ্ছে উৎপন্ন হয় নি। একদিন স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী জীর উপদেশ মঞ্জুরি গ্রন্থের কিছু পংক্তি যেটি এই পুস্তকের পেছনে তুলে ধরা হয়েছে সেটি পড়ার পর আমার মনে তীব্র ইচ্ছা উৎপন্ন হয় যে এই দর্শন গুলিকে বঙ্গভাষাতেও অনুবাদ অথবা ব্যাখ্যা করা উচিৎ। সেই দিন থেকে আমি দর্শনকে বাংলায় লেখার কাজ শুরু করে দিই কিন্তু মনের মধ্যে একটাই শংকা উৎপন্ন হতো যে এই গ্রন্থ গুলি লেখার পর এই গ্রন্থকে কাঁরা কট্টা মহত্ব দেবেন সেটা মনের ভেতরে সতত চলতে থাকতো, এইজন্য কখনো-কখনো এই গ্রন্থ লেখার কাজ বন্ধ করে দিতাম। তা যাই হোক না কেনো, কেউ এই গ্রন্থকে পড়ুক অথবা না পড়ুক, মহত্ব দিক অথবা না দিক তাতে কোনো যায় আসে না।

আমি বঙ্গভূমির প্রতি যে ঋণী রয়েছি সেই ঋণ থেকে কিছুটা মুক্ত হতে এবং ঋষিদের অসম্পূর্ণ কার্যকে কিছুটা আগে বাড়াতে পেরেছি এতেই আমি সন্তুষ্ট।

সর্বপ্রথম আমি সর্বব্যাপক সৎ চিৎ আনন্দ স্বরূপ ঈশ্বরের প্রতি নিজের কৃতজ্ঞতা অভিব্যক্ত করি কেননা ওনারই দ্বারা প্রদত্ত জ্ঞান, বল, সামর্থ্যাদির জন্যই এই শুভ কল্যাণকারী কার্যকে সম্পন্ন করতে পেরেছি।

যাঁদের লালন-পালনের জন্য স্নেহ ভালোবাসা আশীর্বাদের জন্য আজ আমি এই গ্রন্থকে পূর্ণতা দিতে পেরেছি সে সকল মাতা-পিতা ও গুরুজনদের আন্তরিক শ্রদ্ধা, ভক্তি, সমর্পণ, জ্ঞাপন করি এবং তাঁদের এই অনস্বীকার্য অবদানকে সতত শির ধার্য্য করি।

এই গ্রন্থের রচনায় মহর্ষি ব্যাস জী দ্বারা কৃত ভাষ্যের সাথে-সাথে ঈশ্বরপ্রদত্ত বেদ জ্ঞান, ঋষিকৃত অন্য গ্রন্থ তথা যোগ দর্শনের উপর লিখিত অনেক বিদ্বান্ টীকাকারের টীকা থেকেও সাহায্য নেওয়া হয়েছে।

লেখার সময়ে কিছু বিষয়ের স্ফীকরণ-এর জন্য উচ্চ কোটির বিদ্বান পূজ্য স্বামী বিবেকানন্দ জী মহারাজ (নিদেশক- দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয় গুজরাট) এবং আচার্য্য সত্যজিৎ জী (সংরক্ষক- বানপ্রস্থ সাধক আশ্রম গুজরাট)-এর কাছ থেকেও বহু সহযোগিতা প্রাপ্ত করেছি। অতএব এনাদেরকে আমি আন্তরিক শ্রদ্ধা এবং ধন্যবাদ জ্ঞাপন করি।

এই গ্রন্থের প্রকাশন কার্যে যিনি বহু সহযোগিতা করেছেন আচার্য্য প্রিয়েশ জী দর্শনাচার্য্য (দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, সুন্দরপুর), ডাঃ নরেশ কুমার ধীমান (প্রিন্সিপাল দোআবা কলেজ, জালন্ধর)। এই গ্রন্থকে আগে বাড়াতে যিনি আমায় সতত প্রেরণা দিতেন আমার প্রিয় মিত্র আচার্য্য রমেশ জী দর্শনাচার্য্য (দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়, সুন্দরপুর) এবং আমার পিতা জী, এই গ্রন্থকে ভাষার দিক থেকে পরিশোধনের কাজ যিনি অনেক মূল্যবান সময় দিয়ে সহযোগিতা করেছেন মহাত্মা আশীষ জী (রাজ্য প্রভারী, পতঞ্জলি কিষান সেবা সমিতি, পশ্চিমবঙ্গ) এবং যাঁরা সময়ে সময়ে এই গ্রন্থ রচনায় সহযোগিতা করেছেন তাঁরা হলেন অধ্যাপক পার্থ জী, আমার সহপাঠী মিত্র ব্রহ্মচারী দেবব্রত জী, ব্রহ্মচারী অনিমেষ জী, ভাই বাপন জী রায়, ব্রহ্মচারিণী মোনালিসা জী, এনাদের সকলকে আমি হৃদয় দ্বারা কৃতজ্ঞতা প্রকট করি এবং তাঁদেরকে ধন্যবাদ জ্ঞাপন করি।

এই গ্রন্থ প্রকাশনায় যাঁরা আর্থিক সহযোগিতা করেছেন তাঁদেরকেও আমি নিজের হৃদয় দ্বারা সম্মান ব্যক্ত করি এবং ধন্যবাদ জ্ঞাপন করি।

আপনাদের সকলের বহিরঙ্গ শুভচিন্তক

যোগ দর্শনের সংক্ষিপ্ত পরিচয় এবং প্রয়োজনীয়তা

বৈদিক ষড়্ দর্শনের মধ্যে যোগ দর্শনের নিজের একটি বিশিষ্ট স্থান রয়েছে। এই দর্শনে যোগের বাস্তবিক স্বরূপ, যোগের ফল, যোগের ক্রিয়াক্ষমক উপায়, যোগের ভেদ এবং যোগে উপস্থিত হওয়া বাধকদের এবং তাদের নিবারণের বিস্তৃত বিবেচনা করা হয়েছে।

বেদের উপাঙ্গে এই দর্শন গুলিকে গণনা করা হয়। এই দর্শনের রচয়িতা হলেন মহর্ষি পতঞ্জলি। এতে মোট ১৯৫ টি সূত্র রয়েছে। এই সূত্র গুলিকে চারটি ভাগে ভাগ করা হয়েছে। প্রত্যেকটি ভাগকে ‘পাদ’ নামে অভিহিত করা করা হয়েছে। প্রথম পাদে ৫১ টি সূত্র রয়েছে। দ্বিতীয় এবং তৃতীয় পাদে ৫৫ টি সূত্র রয়েছে। চতুর্থ পাদে ৩৪ টি সূত্র রয়েছে। প্রথম পাদের নাম সমাধি পাদ, দ্বিতীয় পাদের নাম সাধন পাদ, তৃতীয় পাদের নাম বিভূতি পাদ এবং চতুর্থ পাদের নাম কৈবল্য পাদ রাখা হয়েছে। প্রত্যেকটি পাদের মধ্যে কোন্-কোন্ বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে সেটি নিচে বর্ণনা করা হল-

(১) সমাধি পাদ : এই পাদে মুখ্য রূপে সমাধি তথা সমাধির ভেদের বর্ণনা করা হয়েছে। অতএব একে ‘সমাধি পাদ’ নামে অভিহিত করা হয়েছে। এতে উচ্চ কোটির সাধকদের জন্য সমাধির বর্ণনার সাথে-সাথে অন্য উচ্চস্তরীয় যোগের সাধনেরও বর্ণনা করা হয়েছে। এই পাদে যোগের স্বরূপ, তার ফল, বৃত্তির প্রকার তথা তাদের স্বরূপ, বৈরাগ্যের ভেদ তথা স্বরূপ, যোগের ভেদ তথা প্রভেদ, ঈশ্বরের স্বরূপ, জপ অনুষ্ঠানের বিধি, মন নিরোধের জন্য বিবিধ উপায়ের বর্ণনা, সমাপত্তির স্বরূপ তথা ঋতন্তরা প্রজ্ঞার লক্ষণ ইত্যাদি বর্ণনা করা হয়েছে।

(২) সাধন পাদ : এই পাদে প্রারম্ভিক সাধকদের জন্য যোগের সাধনের বর্ণনা করা হয়েছে, এইজন্য একে ‘সাধন পাদ’ নামে অভিহিত করা হয়েছে। এই দ্বিতীয় পাদে ক্রিয়াযোগ এবং তার ফল, অবিদ্যা পাঁচ ক্লেশ, তাদের স্বরূপ এবং তাদের নাশ করার উপায়, ক্লেশ মূল কর্মশয় এবং তাদের ফল, বিবেকী ব্যক্তির জন্য দুঃখ এবং দুঃখের কারণ, সুখ এবং সুখের উপায়, যোগের আট অঙ্গ এবং তাদের ফল, প্রাণায়ামের লক্ষণ, তার ভেদ এবং ফল তথা প্রত্যাহারের স্বরূপ ইত্যাদি বিষয়ের উপর আলোচনা করা হয়েছে।

(৩) বিভূতি পাদ : যোগ সাধনের অনুষ্ঠান দ্বারা প্রাপ্ত বিবিধ প্রকারের সিদ্ধি=বিভূতি (ঐশ্বর্য্য)-এর বর্ণনা এই তৃতীয় পাদে মুখ্য রূপে করা হয়েছে, তাই এই পাদকে ‘বিভূতি পাদ’ নামে অভিহিত করা হয়েছে। এই পাদে ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি এই তিনটি অঙ্গের লক্ষণ তথা তাদের শাস্ত্রীয় পরিভাষিক নাম, তাদের সিদ্ধির ফল তথা বিভিন্ন স্তরে বিনিয়োগ, মোক্ষ প্রাপ্তিতে সকল সিদ্ধি গুলির অনিবার্যতার নিষেধ, চিত্ত পরিণামের ভেদ এবং তাদের বিবরণ, সংযমের অনুষ্ঠান

দ্বারা বিবিধ ঐশ্বর্যের প্রাপ্তি, বিবেকজ জ্ঞানের প্রাদুর্ভাব এবং তাদের পরিণাম ইত্যাদি বিষয়ের উপর আলোচনা করা হয়েছে।

(৪) কৈবল্য পাদ : এই পাদে কৈবল্য অর্থাৎ মোক্ষের যথার্থ স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে। এই জন্য এই পাদকে ‘কৈবল্য পাদ’ নামে অভিহিত করা হয়েছে। এই পাদে চিত্ত দ্বারা প্রাপ্ত সিদ্ধির পাঁচ প্রকারের ভেদ, কর্মের প্রকার, কর্মশায়ের বিদ্যমানতায় মোক্ষ লাভ সম্ভব নয়, যোগী এবং অযোগী ব্যক্তিদের মধ্যে কর্মের অন্তর, স্মৃতি এবং সংস্কার সদা সমান বিষয়ক হয়, বাসনা সংগ্রহের চারটি কারণ, সংসারের ষড়্‌চক্র, স্ফটিকবাদের খন্ডন, ধর্মমেঘ সমাধির স্বরূপ, ক্রমের স্বরূপ ইত্যাদি বিভিন্ন বিষয়ের উপর আলোচনা করা হয়েছে।

এই দর্শন বিদ্যার প্রয়োজনীয়তার বিষয়ে যদি এক বাক্যে সংক্ষেপে বলা হয় তা হলে বলা যায় যে একটি শরীরে চোখের যতটা প্রয়োজনীয়তা রয়েছে ততটাই প্রয়োজনীয়তা এই মানব জীবনে দর্শনের রয়েছে। এই গ্রন্থ গুলির প্রয়োজনীয়তা কতটা তা পুস্তকের পেছনে উদ্ধৃত মহর্ষি জীর উপদেশ দ্বারা স্পষ্ট হয়ে যায়। অতএব এটা অবশ্যই অনস্বীকার্য যে দর্শন বিদ্যা প্রত্যেক মানুষের ক্ষেত্রে সমান রূপে প্রয়োজন অন্যথা যেমন কোনো ব্যক্তি চক্ষু বিহীন অবস্থায় এদিকে ওদিকে ঠোকর খায় সেই অবস্থা দর্শন বিদ্যা বিহীন ব্যক্তির হয়।

একটা কথা বহু জায়গায় উল্লেখ থাকে যে মনুষ্যই সব থেকে বুদ্ধিমান প্রাণী, এতে কোন সন্দেহ নেই; কেননা মনুষ্যের কাছে বিদ্যা পড়ার, বোঝার এবং তাকে উপযোগে আনার সামর্থ্য রয়েছে কিন্তু এই কথাটি ঋষিদের দৃষ্টিতে একটি সীমা পর্যন্ত ঠিক যে মানুষই সব থেকে বুদ্ধিমান, অন্য প্রাণীদের তুলনায়। এটি কীভাবে সম্ভব? এর উত্তর নিম্ন শ্লোক এর মাধ্যমে জেনে নেওয়া উচিত-

”আহার নিদ্রা ভয় মৈথুনং চ, সামান্যমেতৎ পশুভির্নরাণাম্।
ধর্মো হি তেষামধিকো বিশেষো, ধর্মেণ হীনাঃ পশুভিঃ সমানাঃ।।”

(বিবেক বৈরাগ্য শ্লোক সংগ্রহ)

সংসারে আমরা তাকেই বুদ্ধিমান মনে করি যে একটি পদার্থ হতে বহু প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে অথবা সিদ্ধ করতে সমর্থ। সেই রকম ঈশ্বরপ্রদত্ত এই সংসার থেকে যে ব্যক্তি ভোগ এবং অপবর্গ রূপী দুটিই প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে, সে এই সংসারে ঋষিদের দৃষ্টিতে বুদ্ধিমান। এইজন্য ভোগ এবং অপবর্গকে সিদ্ধ করার জন্য, জানার জন্য এই দর্শন বিদ্যা গুলির আবশ্যিকতা হয়। অতএব সারাংশ হল এই দর্শন বিদ্যার অভাবে কোনোও ব্যক্তিকে বুদ্ধিমান বলে মনে করা যাবে না অথবা মনে করা উচিত নয়। এই জন্য নিজেকে বুদ্ধিমান মনে করতে অথবা মনে করাতে এই বিদ্যার আবশ্যিকতা রয়েছে।।

নিবেদক

আচার্য্য কপিল আর্ষ্য

এই গ্রন্থের বিশেষতা এবং ক্রটি মার্জনা

এই গ্রন্থের বিশেষতাকে নিম্নে কিছু বিন্দু দ্বারা উল্লেখ করা হল-

- (১) গ্রন্থকে চলতি ভাষায় লেখার চেষ্টা করা হয়েছে, যাতে সাধারণ ব্যক্তিও এটি পড়ে বিষয়টাকে বুঝতে পারেন। যেহেতু দর্শন বিদ্যা একটি সামান্য বিদ্যা নয়, তাই এতে ভাষার পাণ্ডিত্য দেখাতে গিয়ে ভাষা এবং বিষয়ের জটিলতা হওয়ার ফলে পাঠকদের মনে ভয় উৎপন্ন হতে পারে।
- (২) মূল সূত্রের শব্দার্থ, সূত্রার্থ এবং ব্যাসভাষ্যের অনুরূপ ব্যাখ্যা করার চেষ্টা করা হয়েছে। প্রত্যেকটা সূত্রের বিষয়বস্তু কি সেটা প্রত্যেক সূত্রের ব্যাখ্যার শুরুতে তুলে ধরা হয়েছে যাতে পাঠকরা প্রত্যেক সূত্রের বিষয়বস্তু সম্পর্কে সুস্পষ্ট জ্ঞান করতে পারেন।
- (৩) গ্রন্থের কলেবর যাতে বৃহৎ না হয়ে যায় সেই দিকে সর্বদা ধ্যান রাখা হয়েছে। তা সত্ত্বেও কিছু বিষয় এমন রয়েছে যেটা উল্লেখ না করলে গ্রন্থের মধ্যে ন্যূনতর অনুভূতি হয়। অতএব এই গ্রন্থে ঋষিদের দ্বারা লিখিত বিষয়গুলিকে অত্যাধিক ভাবে তুলে ধরার চেষ্টা করা হয়েছে যেটা না থাকলে এরকম মনে হয় যে পাঠকদেরকে এই গ্রন্থ দ্বারা ঠকানো হচ্ছে।
- (৪) প্রত্যেকটি পাদের শেষে বিবিধ প্রশ্নের সংগ্রহ করা হয়েছে যাতে সাধারণ ব্যক্তিও এই গ্রন্থকে স্বয়ং পড়ার পর, পেছনে প্রশ্নের মাধ্যমে তার জ্ঞানের পরীক্ষা নিজেই করতে পারেন। এই উদ্দেশ্যে বিবিধ প্রশ্ন দেওয়া হয়েছে। কোনো অধ্যাপক পড়ানোর পর এই সকল প্রশ্ন দ্বারা পরীক্ষাও নিতে পারেন, তাঁদের জন্যও সরলতা হবে।
- (৫) চারটি পাদের মূলসূত্রকেও একত্রিত করে একটি স্থানে দেওয়া হয়েছে যাতে কেউ মুখস্থ করতে চাইলে তাদের ক্ষেত্রে সরলতা হবে।
- (৬) ব্যাসভাষ্যের কিছু সংস্কৃত পংক্তিকেও অর্থ সহিত রাখা হয়েছে যেটি মুখস্থ রাখার যোগ্য এবং এগুলি জীবন পথে চলার ক্ষেত্রে এবং কখনো-কখনো প্রবচন কালেও কাজে আসতে পারে।
- (৭) যোগমার্গে চলার পথে উন্নতি না হওয়ার পেছনে কি কারণ হতে পারে সেই কারণগুলিকে জানা আবশ্যিক এই জন্য আটচল্লিশটি বাধক কারণের উল্লেখ করা হয়েছে যাতে সাধক স্বয়ং সেগুলি পড়ে নিজের ভেতরে বিদ্যমান অপূর্ণতা, অবগুণ এবং দোষগুলিকে ত্যাগ করে যোগমার্গে অবাধ গতিতে উন্নতি করতে পারে, সেই দিকেও ধ্যান রাখা হয়েছে।
- (৮) অবশেষে দর্শনের সার সংক্ষেপেরও সংগ্রহ করে একটি স্থানে দেওয়া হয়েছে যাতে দর্শনের কিছু কথা সদা সেখান থেকে স্মরণে রাখা যেতে পারে।
- (৯) যেমন কোনো ব্যক্তি নিজের আত্মীয় স্বজনের প্রতি সেবা যত্ন রাখে সেই রকম এই গ্রন্থ লেখার সময়ে বঙ্গবাসী ব্যক্তিদের প্রতিও ব্যবহার করা হয়েছে। এই গ্রন্থ সম্বন্ধে গুরু স্থানীয় ব্যক্তিদের উক্তি হল “এ ধরনের গ্রন্থ বঙ্গভাষায় প্রথম প্রকাশিত হচ্ছে এবং অন্য ভাষাতেও এ ধরনের গ্রন্থ এখনো পর্যন্ত দেখা যায়নি।”

ক্রটি মার্জনা

মনুষ্য অল্পজ্ঞ, অল্পশক্তিমান, একদেশী ইত্যাদি। অতএব অল্পজ্ঞতা তথা অসাবধানের কারণে যদি এই গ্রন্থে কোথাও ভাষাগত, শব্দগত অথবা সিদ্ধান্ত গত ক্রটি থেকে যায় তাহলে কোনোও ব্যক্তি দ্বারা পক্ষপাত রহিত হয়ে প্রমাণ সহিত সংকেত করলে সেটি পরের সংস্করণে অবশ্যই দূর করা হবে। কেননা-“সত্যকে গ্রহণ করতে এবং অসত্যকে পরিত্যাগ করতে সর্বদা উদ্যত থাকা উচিত” (আর্য সমাজের নিয়ম বা উদ্দেশ্য- নিয়ম চতুর্থ)

ঋষিচরণের অনুচর
আচার্য কপিল আর্য

।। ৩৩ম।।

তৎ সৎ পরব্রহ্মণে নমঃ ।।

অথ পাতঞ্জল - যোগ দর্শন প্রথম সমাধি পাদ

সূত্র - অথ যোগানুশাসনম্ ।।১।।

শব্দার্থ - (অথ) এখন আরম্ভ করা হচ্ছে (যোগ-অনুশাসনম্) যোগের স্বরূপকে বর্ণনাকারী শাস্ত্রের ।

সূত্রার্থ - এখন অর্থাৎ বর্তমানে যোগের বাস্তবিক (প্রকৃত) স্বরূপ কী ? সেই বিষয় বর্ণনাকারী শাস্ত্রের আরম্ভ করা হচ্ছে ।

ব্যাখ্যা - ‘অথ’ শব্দ অধিকার অর্থে প্রযুক্ত হয়েছে । এই শব্দ আরম্ভকে সূচিত করে অর্থাৎ এই যোগ নামক শাস্ত্রের আরম্ভ করা হচ্ছে । চিত্ত বা মনের পাঁচটি অবস্থা রয়েছে - ক্ষিপ্ত, মূঢ়, বিক্ষিপ্ত, একাগ্র ও নিরুদ্ধ । যোগ সমাধিকে বলা হয় । চিত্তের পাঁচটি দশাকে সমাধি দশা বলা যায়, কিন্তু পাঁচটি দশাকে যোগের দশা বলা যায় না । অর্থাৎ একাগ্র ও নিরুদ্ধ দশাকেই যোগ বলা হয় । তার কারণ হল চিত্তের প্রথম তিনটি দশাতে চিত্ত, বৃত্তি অর্থাৎ বিচার হতে রহিত হতে পারে না । কিন্তু একাগ্র দশায় চিত্তে বস্তুর যথার্থ স্বরূপ প্রকট হয়; ক্লেশ (যেসব বিচার অজ্ঞান, অবৈরাগ্য, অধর্ম এবং বন্ধনের দিকে নিয়ে যায় সেগুলি) ক্ষীণ হয়, কর্মের বন্ধন শিথিল হয়, অবশেষে নিরুদ্ধ অর্থাৎ অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি দশার দিকে নিয়ে যায় । যে অবস্থায় সকল বৃত্তি (বিচার) নিরুদ্ধ হয়ে যায় সেই অবস্থাকে অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি বলা হয় ।

এখানে একটা কথা জেনে নেওয়া উচিত যে চিত্ত এবং মন দুটি একই বস্তু; কার্য ভেদে ভিন্ন-ভিন্ন নামকরণ করা হয়েছে । যখন মন দ্বারা কোনো বিষয়কে মনন করা হয় অথবা সংকল্প-বিকল্প করা হয় তখন তাকে ‘মন’ বলা হয় এবং যখন স্মরণ করা হয় তখন তাকে ‘চিত্ত’ বলা হয় ।।১।।

অবতরণিকা - যোগের বাস্তবিক পরিভাষা কী ? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - যোগশ্চিত্তবৃত্তিনিরোধঃ ।।২।।

শব্দার্থ - (যোগঃ) যোগ (চিত্ত-বৃত্তি-নিরোধঃ) চিত্তের বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়া।

সূত্রার্থ - চিত্তের বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়াকে ‘যোগ’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগের স্বরূপকে বর্ণনা করা হয়েছে।

সূত্রে ‘সর্ব’ শব্দ না থাকায় সম্প্রজ্ঞাত সমাধিও যোগের আওতায় চলে আসে। চিত্ত তিন প্রকারের স্বভাব যুক্ত হয়ে থাকে, প্রকাশশীল (সত্ত্বগুণ বহুল হলে), গতিশীল (রজোগুণ বহুল হলে) এবং স্থিতিশীল (তমোগুণ বহুল হলে)। বস্তুত চিত্ত নির্মাণে সত্ত্বগুণের অধিকতা থাকে এবং রজোগুণ ও তমোগুণ মিশ্রিত থাকে। কিন্তু সেই সত্ত্ববহুল চিত্তে যখন রজোগুণ ও তমোগুণের প্রধানতা ঘটে তখন সেই মনুষ্য বিবিধ ঐশ্বর্যের ইচ্ছুক হয়। এই অবস্থাকে ‘ক্ষিপ্তাবস্থা’ বলা হয়।

সেই সত্ত্ববহুল চিত্তে যখন তমোগুণের প্রধানতা ঘটে তখন সেই মনুষ্যকে অধর্ম, অজ্ঞান, অবৈরাগ্য এবং অনৈশ্বর্য প্রিয় লাগতে থাকে। এই অবস্থাকে ‘মূঢ়াবস্থা’ বলা হয়।

সেই সত্ত্ববহুল চিত্তে যখন রজোগুণের প্রধানতা ঘটে তখন সেই মনুষ্যকে ধর্ম, জ্ঞান এবং বৈরাগ্য অধিক প্রিয় লাগতে থাকে। এই অবস্থাকে ‘বিক্ষিপ্তাবস্থা’ বলা হয়।

যখন চিত্তে কেবল সত্ত্বগুণের প্রধানতা ঘটে এবং রজোগুণ ও তমোগুণ হতে পৃথক হয়ে যায় তখন সে নিজ স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয় এবং বুদ্ধি ও পুরুষের পৃথকতার জ্ঞানের সহিত যুক্ত হয়ে (সম্প্রজ্ঞাত সমাধির উচ্চ অবস্থা) ধর্মমেঘ নামক সমাধিকে প্রাপ্ত করে। এই অবস্থাকে যোগীরা ‘পরম প্রসংখ্যান’ বলেন। এই সমাধিতে বস্তুর স্বরূপের যথার্থ ভাবে পরিজ্ঞান হয়ে থাকে। এটি চিত্তের ‘একাগ্রাবস্থা’।

এই সকল পরিবর্তন চিত্তে ঘটে, জীবাত্মাতে নয়। তার কারণ হল চিত্ত পরিবর্তনশীল, সেটি উৎপন্ন হয় এবং নষ্টও হয়। কিন্তু জীবাত্মা অপরিবর্তনশীল, না উৎপন্ন হয়; না নষ্ট হয়। ধর্মমেঘ সমাধিতে বুদ্ধি এবং জীবাত্মার স্বরূপের পৃথকতার জ্ঞান হয়ে থাকে এই জ্ঞানকে ‘বিবেকখ্যাতি’ বলা হয়। কিন্তু এই জ্ঞান হতে জীবাত্মা ভিন্ন। যখন যোগী ধর্মমেঘ সমাধিকে প্রাপ্ত করেন তখন তিনি বিবেকখ্যাতিতেও দোষ দেখতে থাকেন অর্থাৎ চেতন পুরুষ পরিণাম হতে রহিত, নির্লেপ, বিষয়ের দৃষ্টা, পবিত্র এবং নাশ রহিত হয়। কিন্তু সত্ত্বগুণ যুক্ত এই বিবেকখ্যাতি জীবাত্মা হতে অত্যন্ত বিরুদ্ধ স্বভাব যুক্ত হয়। এই জন্য সেই বিবেকখ্যাতির প্রতিও বিরক্ত হয়ে তাকে নিরুদ্ধ করে দেন এবং তার থেকেও বৈরাগ্য হয়ে যায়। এই বৈরাগ্যকে ‘পরবৈরাগ্য’ বলা হয়। এটি অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির নিকটতম সাধন। এই পরবৈরাগ্যের দ্বারা চিত্তের সমস্ত বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যায় এবং

অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সিদ্ধি লাভ হয়ে থাকে। অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিকে ‘নির্বীজ সমাধি’ও বলা হয়। এটি চিত্তের ‘নিরুদ্ধাবস্থা’। যেখানে সাংসারিক বিষয় সম্বন্ধী কোনও জ্ঞান থাকে না তাকে ‘অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি’ বলা হয়। এই চিত্তবৃত্তি নিরোধ যোগ দুই প্রকারের হয়- সম্প্রজ্ঞাত সমাধি এবং অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি। ১২।।

অবতরণিকা - চিত্তের নিরুদ্ধ অবস্থাতে যখন চিত্তে বিষয়ের অভাব হয়ে যায় তখন চিত্তের অনুভবকারী পুরুষের স্বরূপ কেমন হয়, সেটি নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তদা দ্রষ্টুঃ স্বরূপে ঐবস্থানম্। ১৩।।

শব্দার্থ - (তদা) তখন অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি [নিরুদ্ধাবস্থা]-তে (দ্রষ্টুঃ) জীবাত্মা এবং পরমাত্মার (স্বরূপে) স্বরূপে (অবস্থানম্) অবস্থিতি হয়।

সূত্রার্থ - অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে জীবাত্মা নিজ স্বরূপে এবং পরমাত্মার স্বরূপে অবস্থান করে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগ-এর মুখ্য ফলের বর্ণনা করা হয়েছে।

অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে জীবাত্মা নিজের স্বরূপকে ঠিক-ঠিক জানতে পারে এবং পরমাত্মার স্বরূপকেও সুস্পষ্ট রূপে জানতে পারে। যেমন কৈবল্যে অর্থাৎ মোক্ষে জীবাত্মার অবস্থা হয় সেই রকম অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতেও একই অবস্থা হয়। অর্থাৎ ঈশ্বরের আনন্দকে মোক্ষের মত এই সমাধিতেও জীবাত্মা অনুভব করে। ১৩।।

অবতরণিকা - চিত্তের ব্যুত্থান অর্থাৎ ক্ষিপ্ত, মূঢ় ও বিক্ষিপ্ত অবস্থায় জীবাত্মা অপরিবর্তনশীল হলেও নিজেকে সেই রকম অনুভব করে না। তাহলে কেমন মনে করে নিজেকে ? জীবাত্মা বিষয়ের অনুভবকারী হওয়ার জন্য, বুদ্ধি দ্বারা যেমন বিষয় দেখানো হয় সেইরকম নিজেকে মনে করে।

সূত্র - বৃত্তিসাক্ষ্যমিতরত্র। ১৪।।

শব্দার্থ - (বৃত্তি-সাক্ষ্যম্) বৃত্তির সমান স্বরূপ যুক্ত প্রতীত হয় জীবাত্মা (ইতরত্র) নিরুদ্ধ এবং একাগ্র অবস্থা হতে ভিন্ন অবস্থায় অর্থাৎ ব্যুত্থান অবস্থায়।

সূত্রার্থ - নিরুদ্ধ এবং একাগ্র অবস্থা হতে ভিন্ন অবস্থায় অর্থাৎ ব্যুত্থান অবস্থায় জীবাত্মা নিজেকে বৃত্তির সমান মনে করে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে সম্প্রজ্ঞাত ও অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি অবস্থা হতে ভিন্ন অবস্থায় জীবাত্মা নিজেকে চিত্তবৃত্তির সমান মনে করে।

ব্যুত্থান অবস্থায় চিত্তে যে ধরনের বিষয় উপস্থিত হয় সেই রকম নিজেকে মনে করে অর্থাৎ বস্তুর হ্রাস অথবা বৃদ্ধিতে নিজের হ্রাস অথবা বৃদ্ধি মনে করে। চিত্ত

চুষকের মত হওয়ার জন্য চিত্তের নিকটতা মাত্র জীবাত্মার উপকারী হয়। চিত্ত দৃশ্য রূপে জীবাত্মার সম্পত্তি; এইজন্য চিত্তবৃত্তির যে জ্ঞান হয়ে থাকে তার কারণ হল চিত্তের সাথে জীবাত্মার অনাদি সম্বন্ধ।

এ বিষয়ে একটা কথা জানা উচিত যে ব্যুত্থান সংস্কার অর্থাৎ সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অপেক্ষায় ক্ষিপ্ত, মূঢ় এবং বিক্ষিপ্ত অবস্থাকে ব্যুত্থান বলা হয়। আবার অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির অপেক্ষায় ক্ষিপ্ত, মূঢ়, বিক্ষিপ্ত এবং একাগ্র অবস্থাকে ব্যুত্থান বলা হয়। ১৪।।

অবতরণিকা - চিত্তবৃত্তি কত প্রকারের সেটি নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - বৃত্তয়ঃ পঞ্চতয়ঃ ক্লিষ্টাক্লিষ্টাঃ। ১৫।।

শব্দার্থ - (বৃত্তয়ঃ) বৃত্তি গুলি (পঞ্চতয়ঃ) পাঁচ প্রকারের হয় (ক্লিষ্টাঃ-অক্লিষ্টাঃ) ক্লেশ উৎপন্নকারী এবং ক্লেশ বিনষ্টকারী।

সূত্রার্থ - বৃত্তি পাঁচ প্রকারের হয়, দুঃখ উৎপন্নকারী এবং দুঃখ নষ্টকারী।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের বৃত্তি কত প্রকারের হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

চিত্তের পাঁচটি বৃত্তি রয়েছে। এই পাঁচটি বৃত্তি ক্লিষ্ট এবং অক্লিষ্ট ভেদ হওয়ায় দশ প্রকারের হয়ে থাকে। যেসব বৃত্তির পেছনে অবিদ্যা কারণ হয় তথা পাপ কর্ম এবং শুভ সাকাম কর্মকে উৎপন্ন করে তাকে ‘ক্লিষ্ট বৃত্তি’ অর্থাৎ বন্ধনকারী বৃত্তি বলা হয়। যে বৃত্তি গুলি বিবেকখ্যাতি অর্থাৎ প্রকৃতি এবং পুরুষের পৃথকতার জ্ঞানকে উৎপন্ন করে এবং গুণের অর্থাৎ সত্ত্ব, রজ ও তমের অধিকারকে নষ্ট করে তাকে ‘অক্লিষ্ট বৃত্তি’ অর্থাৎ মোক্ষদায়ক বৃত্তি বলা হয়। ক্লিষ্ট বৃত্তির ব্যাপার-এর সময় যদি কোনো অক্লিষ্ট বৃত্তি উপস্থিত হয় তাহলে সেটি অক্লিষ্টই থাকবে, ক্লিষ্ট হবে না। একই ভাবে অক্লিষ্ট বৃত্তির মাঝে যদি কোনো ক্লিষ্ট বৃত্তি উপস্থিত হয়ে যায় তাহলে সেটি ক্লিষ্টই থাকবে অক্লিষ্ট হবে না। যে ধরনের বৃত্তি হয় সেই ধরনের সংস্কার উৎপন্ন হয় এবং সংস্কার পুনঃ বৃত্তিকে উৎপন্ন করে; এইভাবে বৃত্তি হতে সংস্কার এবং সংস্কার হতে বৃত্তি অহর্নিশ চলতে থাকে। কিন্তু যাঁদের চিত্ত ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন সম্পন্ন করে নিয়েছে তাঁদের চিত্ত আত্মার সমান পবিত্র হয়ে থাকে অথবা প্রলয় অভিমুখ হয়ে যায়।

এইজন্য ব্যক্তিকে সৎপুরুষের সঙ্গ, তাঁদের উপদেশকে আচরণে আনা, মোক্ষ শাস্ত্রের অধ্যয়ন করা উচিত, এর দ্বারা অক্লিষ্ট বৃত্তি উৎপন্ন হয়।

এই পাঁচটি বৃত্তি কিভাবে ক্লিষ্ট এবং অক্লিষ্ট হয়, সেটি নিচে বর্ণনা করা হল -

(১) প্রমাণ বৃত্তির তিনটি উপভেদ রয়েছে যেটিকে নিচে বর্ণনা করা হল -

(ক) প্রত্যক্ষ প্রমাণ - কোনো ব্যক্তি মিষ্টি খেয়ে প্রসন্নতার অনুভব করে আবার

সেই মিষ্টি অন্য ব্যক্তি খাওয়ার সময় দুঃখ অনুভব করে যেহেতু তার সুগার ইত্যাদি রোগ বাড়ার সম্ভাবনা রয়েছে।

(খ) অনুমান প্রমাণ - কোনো ব্যক্তি বৃষ্টি হওয়ার অনুমান করে দুঃখী হয় আবার কেউ প্রসন্ন হয়।

(গ) শব্দ প্রমাণ - কোনো ব্যক্তি বেদ ইত্যাদি সত্য গ্রন্থে বর্ণিত পাপ কর্মের দণ্ডের বিধানকে পড়ে প্রসন্ন হয় আবার কেউ দুঃখী হয়।

(২) বিপর্যয় বৃত্তি - কোনো ব্যক্তির দড়ির আবশ্যকতা কালে সাপকে দেখে দড়ি মনে করে প্রসন্ন হয় আবার কেউ দড়িকে দেখে সাপ মনে করে অপ্রসন্ন হয়।

(৩) বিকল্প বৃত্তি - বন্ধ্যার পুত্র হয়েছে তাই নিমন্ত্ৰণ এসেছে; এরকম শুনে কেউ সুখী হয় আবার কেউ (সন্তান হীন ব্যক্তি) দুঃখী হয়।

(৪) নিদ্রা বৃত্তি - যখন কোন ব্যক্তির গাড়ি নিদ্রা হয় তখন সে সুখের অনুভব করে আবার কোন ব্যক্তির নিদ্রা বিঘ্নিত হলে তখন সে দুঃখের অনুভব করে।

(৫) স্মৃতি বৃত্তি - কখনো-কখনো পুরোনো কথা স্মরণ করে কেউ দুঃখী হয় আবার কেউ সুখী হয়।

এইভাবে একটিই বৃত্তি কখনো ক্লিষ্ট হয় আবার কখনো অক্লিষ্ট হয়।।৫।।

অবতরণিকা - নিম্ন সূত্রে সেই পাঁচ প্রকারের বৃত্তির নাম উল্লেখ করা হয়েছে-

সূত্র- প্রমাণবিপর্যয়বিকল্পনিদ্রাস্মৃতয়ঃ ।।৬।।

শব্দার্থ - (প্রমাণ-বিপর্যয়-বিকল্প-নিদ্রা-স্মৃতয়ঃ) প্রমাণ, বিপর্যয়, বিকল্প, নিদ্রা এবং স্মৃতি এগুলি হল পাঁচ প্রকারের বৃত্তি।

সূত্রার্থ - পাঁচ প্রকারের বৃত্তি হল, প্রমাণ, বিপর্যয়, বিকল্প, নিদ্রা এবং স্মৃতি।

ব্যাখ্যা - এর ব্যাখ্যা পরবর্তী সূত্রে পৃথক্-পৃথক্ ভাবে করা হবে।।৬।।

অবতরণিকা - তাদের মধ্যে প্রথম প্রমাণ -

সূত্র - প্রত্যক্ষানুমানাগমাঃ প্রমাণানি ।।৭।।

শব্দার্থ - (প্রত্যক্ষ-অনুমান-আগমাঃ) প্রত্যক্ষ, অনুমান এবং আগম (প্রমাণানি) প্রমাণ বৃত্তির স্বরূপ।

সূত্রার্থ - প্রমাণ বৃত্তির তিনটি ভাগ রয়েছে- প্রত্যক্ষ, অনুমান এবং আগম অর্থাৎ শব্দ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রমাণ বৃত্তির লক্ষণ সম্বন্ধে বলা হয়েছে।

প্রমাণ বৃত্তির দ্বারা প্রত্যক্ষ প্রমাণ, অনুমান প্রমাণ ও শব্দ প্রমাণকে গ্রহণ করা হয়। “যে সাধনের দ্বারা বস্তুর স্বরূপ ঠিক-ঠিক পরিজ্ঞান হয়ে থাকে তাকে প্রমাণ বলা হয়।”

“ইন্দ্রিয় প্রণালীর দ্বারা চিত্ত বাহ্য বস্তুর সাথে সম্পর্ক হলে সামান্য ও বিশেষাত্মক পদার্থের বিশেষ ধর্মের নিশ্চয়াত্মক বৃত্তিকে ‘প্রত্যক্ষ প্রমাণ’ বলে।”

“অনুমান করার যোগ্য তুল্য জাতীয় দুটি বস্তুতে এক সমান বিদ্যমান যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধকে অনুভব করার পর পদার্থের মধ্যে বিদ্যমান সামান্য ধর্মকে প্রধান ভাবে গ্রহণ করিয়ে থাকে যে বৃত্তি, সেই বৃত্তিকে ‘অনুমান প্রমাণ’ বলা হয়।” যেমন- গতি পূর্বক কোনো ব্যক্তির দেশান্তরে গমনকে দেখে দেশান্তর প্রাপ্ত চন্দ্র, তারাকে দেখে গতির অনুমান করা হয়।

একই ভাবে “অনুমান করার যোগ্য ভিন্ন জাতীয় দুটি বস্তুতে অসমান বিদ্যমান যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধকে অনুভব করার পর, পদার্থের মধ্যে বিদ্যমান সামান্য ধর্মকে প্রধান ভাবে গ্রহণ করিয়ে থাকে যে বৃত্তি, সেই বৃত্তিকেও ‘অনুমান প্রমাণ’ বলা হয়।” যেমন- পর্বত ইত্যাদিকে স্থানান্তর হতে কদাপি না দেখলে অনুমান করা হয় যে - এগুলিতে গতি নেই।

“আপ্ত পুরুষ প্রত্যক্ষ অথবা অনুমান দ্বারা জ্ঞাত পদার্থের জ্ঞানকে অন্য ব্যক্তিকে দেওয়ার জন্য শব্দ দ্বারা উপদেশ করেন, সেই উপদেশ শ্রোতার পদার্থ বিষয়ক যে বৃত্তি উৎপন্ন হয় সেটি শ্রোতার জন্য ‘আগম প্রমাণ’ হয়।” কিন্তু আগমের যে বক্তা সে যদি শ্রদ্ধার যোগ্য নয় এবং পদার্থকে প্রত্যক্ষ বা অনুমান দ্বারা ভালোভাবে জানেননি সে আগম প্রমাণ হতে চ্যুত হয়ে যায়। যে বক্তা পদার্থকে প্রত্যক্ষ ও অনুমান দ্বারা পদার্থের স্বরূপকে ভালোভাবে জেনে নিয়েছেন, এই ধরনের সত্য বক্তার বচনকে প্রমাণ কোটিতে গণনা করা হয়। ১৭।।

সূত্র - বিপর্যয়ো মিথ্যাজ্ঞানমতদ্রুপপ্রতিষ্ঠম্ । ১৮ ।।

শব্দার্থ - (বিপর্যয়ঃ) বিপর্যয় অর্থাৎ (মিথ্যা-জ্ঞানম্) মিথ্যাজ্ঞান (অ-তদ্-রূপ-প্রতিষ্ঠম্) পদার্থের স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত থাকে না।

সূত্রার্থ - ‘বিপর্যয় বৃত্তি’ অর্থাৎ মিথ্যাজ্ঞান, যে জ্ঞান পদার্থের বাস্তবিক স্বরূপকে প্রকাশিত করে না।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিপর্যয় বৃত্তির লক্ষণ বলা হয়েছে।

বিপর্যয় শব্দের অর্থ হলো উল্টো জ্ঞান অর্থাৎ যে বস্তু যেমন অবস্থায় অবস্থিত থাকে তাকে সেরকম না মনে করে অন্য কিছু মনে করে নেওয়াকে ‘মিথ্যাজ্ঞান’ বলা হয়। যেমন- রাত্রিতে দড়িকে সাপ মনে করা, জড় মনকে চেতন মনে করা, নিরাকার

ঈশ্বরকে সাকার মনে করা ইত্যাদি। বিপর্যয় শব্দকে অবিদ্যাও বলা হয় এর পাঁচটি পর্ব রয়েছে- অবিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ ও অভিনিবেশ। এগুলিকে দ্বিতীয় পাদে ব্যাখ্যা করা হবে।।৮।।

সূত্র - শব্দজ্ঞানানুপাতী বস্তুশূন্যো বিকল্পঃ।।৯।।

শব্দার্থ - (শব্দ-জ্ঞান-অনুপাতী) শব্দ দ্বারা উৎপন্ন জ্ঞানের অনুসরণকারী যে চিত্তবৃত্তি (বস্তু-শূন্যঃ) যেটি বস্তু হতে শূন্য হয় (বিকল্পঃ) সেটিকে বিকল্প বৃত্তি বলা হয়।

সূত্রার্থ - শব্দ দ্বারা উৎপন্ন যে জ্ঞান সেই জ্ঞানকে অনুসরণ করা যার স্বভাব এবং যেটি বস্তু হতে রহিত হয় তাকে ‘বিকল্প বৃত্তি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিকল্প বৃত্তির স্বরূপ সম্বন্ধে বলা হয়েছে।

বিকল্প বৃত্তি প্রমাণ এর অন্তর্গত আসে না এবং বিপর্যয়ের অন্তর্গতেও আসে না। বাস্তবিক অর্থ হতে রহিত হওয়া সত্ত্বেও শব্দ জ্ঞানের মহিমার জন্য এর ব্যবহার দেখা যায়। যেমন- আকাশের ফুল, পুরুষের চৈতন্য। এই উদাহরণে যখন পুরুষই চৈতন্যবান তাহলে কে কার দ্বারা বিশেষিত হয়েছে? বস্তুত পুরুষ এবং চৈতন্য দুটি পৃথক-পৃথক বস্তু নয়। যেমন- চৈত্র নামক ব্যক্তির গরু বললে দুটির মধ্যে পৃথকতার জ্ঞান হচ্ছে, সেই রকম পুরুষ এবং চৈতন্যের মধ্যে নেই। একইভাবে এটাও জানা উচিত ঈশ্বর এবং আনন্দ এই দুটিও পৃথক-পৃথক বস্তু নয়। অতএব যখন আত্মা অথবা পরমাঙ্গার সাক্ষাৎকার হবে তখন যথাক্রমে চৈতন্যের ও আনন্দেরই অনুভূতি বা সাক্ষাৎকার হবে।।৯।।

সূত্র - অভাবপ্রত্যয়ালম্বনাবৃত্তির্নিদ্রা।।১০।।

শব্দার্থ - (অভাব-প্রত্যয়-আলম্বনা) অভাব জ্ঞানের আশ্রয়কারী (বৃত্তিঃ) বৃত্তি (নিদ্রা) নিদ্রা বৃত্তি বলা হয়।

সূত্রার্থ - জাগ্রত এবং স্বপ্ন জ্ঞানের অভাবের প্রতিতিকে আশ্রয় করে যে বৃত্তি, তাকে ‘নিদ্রা বৃত্তি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে নিদ্রা বৃত্তির স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

নিদ্রাকে একটি বিশেষ বৃত্তি অর্থাৎ জ্ঞান বলা হয়েছে তার কারণ হলো নিদ্রা থেকে উঠে গেলে নিদ্রা সম্বন্ধী স্মৃতি ওঠে। যেমন- আমি সুখ পূর্বক শয়ন করেছি। অতএব আমার মন প্রসন্ন, আমার বুদ্ধি নির্মল হয়ে গেছে। আমি দুঃখ পূর্বক শয়ন করেছি। অতএব আমার মন আজ অকর্মণ্য চঞ্চল হয়ে ঘুরছে। আমি আজ গাঁড় নিদ্রায় শয়ন করেছি। অতএব আমার শরীর ভারী-ভারী লাগছে, আমার চিত্ত ক্লান্ত

অলস, মন হারানো-হারানো ভাব লাগছে। এই ধরনের স্মৃতি অনুভবাত্মক জ্ঞান ছাড়া সম্ভব নয়। অতএব নিদ্রা একটি বিশেষ প্রকারের জ্ঞান অথবা বৃত্তি এবং সেই বৃত্তিকে উপাসনা কালে অন্য বৃত্তির মত নিরোধ করা উচিত। ১০।

সূত্র - অনুভূতবিষয়াসম্প্রমোষঃ স্মৃতিঃ । ১১ ।।

শব্দার্থ - (অনুভূত-বিষয়-অসম্প্রমোষঃ) পূর্বে অনুভূত বিষয়ের পুনঃ স্মরণ হওয়া (স্মৃতিঃ) স্মৃতি বৃত্তি বলা হয়।

সূত্রার্থ - আত্মা দ্বারা পূর্বে অনুভূত বিষয়ের পুনঃ স্মরণ করাকে ‘স্মৃতি বৃত্তি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে স্মৃতি বৃত্তির স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

এখানে একটা প্রশ্ন ওঠে যে- চিত্ত যেটা স্মরণ করে সেটা কি জ্ঞানের স্মরণ না বস্তুর? তার উত্তর হল দুটিরই স্মরণ করে। প্রত্যক্ষ কালে জ্ঞান মুখ্য হওয়ায় জ্ঞানের স্মৃতি হয় এবং স্মৃতি কালে বস্তু মুখ্য হওয়ায় বস্তুর স্মৃতি হয়। বস্তু এবং জ্ঞানের সংস্কার পড়ার ফলে উপযুক্ত উদ্বোধক-এর দ্বারা উদ্বুদ্ধ হয়ে জ্ঞানের এবং বস্তুর স্মৃতিকে উৎপন্ন করে।

স্মৃতি দুই প্রকারের হয় কল্পিত বিষয়ের স্মৃতি এবং অকল্পিত বিষয়ের স্মৃতি। স্বপ্ন কালে কল্পিত স্মৃতি হয় এবং জাগ্রত কালে অকল্পিত স্মৃতি হয়। এই সকল স্মৃতি প্রমাণ, বিপর্যয়, বিকল্প, নিদ্রা এবং স্মৃতির অনুভব দ্বারা উৎপন্ন হয়। এই সকল বৃত্তি সুখ, দুঃখ এবং মোহ স্বভাব যুক্ত হয়ে থাকে; যেটি দ্বিতীয় পাদে বর্ণনা করা হবে। সকল বৃত্তি নিরোধ করার যোগ্য। এই বৃত্তি গুলি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে সম্প্রজ্ঞাত সমাধি অথবা অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সিদ্ধিলাভ হয়। ১১।

অবতরণিকা - উপরোক্ত বৃত্তি গুলিকে নিরোধ করার উপায় কী? এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - অভ্যাসবৈরাগ্যাভ্যাং তন্নিরোধঃ । ১২ ।।

শব্দার্থ - (অভ্যাস-বৈরাগ্যাভ্যাম্) অভ্যাস এবং বৈরাগ্য দ্বারা (তত্-নিরোধঃ) ওই গুলিকে নিরোধ করা হয়।

সূত্রার্থ - অভ্যাস এবং বৈরাগ্য দ্বারা ওই বৃত্তি গুলিকে নিরোধ করা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পাঁচটি বৃত্তিকে নিরোধ করার উপায় অভ্যাস এবং বৈরাগ্য, এই বিষয়ে বলা হয়েছে।

চিত্ত রূপী নদী দুটি ধারায় প্রবাহিত হয়, একটি কল্যান মার্গের দিকে অপরটি

পাপ মার্গের দিকে। যে ধারা মোক্ষের দিকে নিয়ে যায় তথা বিবেক মার্গের দিকে ঝুঁকে থাকে সেটি কল্যান মার্গের দিকে বইছে, এমনটি মনে করা উচিত এবং যে ধারা সংসারের দিকে নিয়ে যায় তথা অবিবেক মার্গের দিকে ঝুঁকে থাকে সেটি পাপ মার্গের দিকে বইছে। বৈরাগ্য দ্বারা বিষয়ের দিকে প্রবাহিত স্রোতকে শুকনো করা হয় এবং বিবেক দর্শনের অভ্যাস দ্বারা বিবেক রূপী স্রোতকে উদ্ঘাটিত করা হয়। অতএব এই সকল চিত্তবৃত্তি নিরোধ অভ্যাস ও বৈরাগ্যের উপর নির্ভর করে। ১২।।

সূত্র - তত্র স্থিতৌ যত্নোভ্যাসঃ । ১৩ ।।

শব্দার্থ - (তত্র) অভ্যাস এবং বৈরাগ্য এই দুটি সাধনে (স্থিতৌ) চিত্তকে একাগ্র করার জন্য (যত্নঃ) যে প্রযত্ন করা হয় তাকে (অভ্যাসঃ) অভ্যাস বলা হয়।

সূত্রার্থ - অভ্যাস এবং বৈরাগ্য এই দুটি সাধনে চিত্তকে একাগ্র করার জন্য যে প্রযত্ন (চেষ্টা) করা হয় তাকে ‘অভ্যাস’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অভ্যাসের লক্ষণ সম্বন্ধে বর্ণনা করা হয়েছে।

বৃত্তি রহিত চিত্ত যখন প্রশান্ত ভাবে কোন এক বিষয়ে প্রবাহিত হয় তখন তাকে ‘স্থিতি’ অর্থাৎ ‘একাগ্রতা’ বলা হয়। ওই একাগ্রতা আনার জন্য শারীরিক ক্ষমতা ও স্বাস্থ্যতা এবং উৎসাহের আবশ্যিকতা হয়। চিত্ত একাগ্র করার জন্য অষ্টাঙ্গ যোগের পুনঃ পুনঃ অনুষ্ঠান করাকে ‘অভ্যাস’ বলা হয়। ১৩।।

সূত্র - স তু দীর্ঘকালনৈরন্তর্যসংকারাসেবিতো দৃঢ়ভূমিঃ । ১৪ ।।

শব্দার্থ - (সঃ তু) সেই অভ্যাস (দীর্ঘকাল-নৈরন্তর্য-সংকার-আসেবিতঃ) দীর্ঘকাল পর্যন্ত, নিরন্তরতা পূর্বক, সংকার পূর্বক সেবন করলে (দৃঢ়-ভূমিঃ) দৃঢ় ভূমি তৈরী হয়।

সূত্রার্থ - সেই অভ্যাসকে দীর্ঘকাল পর্যন্ত, নিরন্তরতা পূর্বক, সংকার পূর্বক অর্থাৎ তপস্যা-ব্রহ্মচর্য-বিদ্যা এবং শ্রদ্ধা পূর্বক সেবন করলে দৃঢ়তা আসে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অভ্যাস করার বিধি কি হওয়া উচিত, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

অভ্যাসকে দীর্ঘকাল পর্যন্ত করতে হবে এবং নিরন্তরতা পূর্বক করতে হবে অর্থাৎ কখনো অষ্টাঙ্গ যোগকে করা কখনো না করা, এভাবে অভ্যাস দৃঢ় হয় না। তপস্যা পূর্বক করতে হবে অর্থাৎ সুখ-দুঃখ, হানি-লাভ ইত্যাদিকে সহন করেও অভ্যাস করতে হবে। ব্রহ্মচর্য পালন পূর্বক করতে হবে অর্থাৎ ইন্দ্রিয়কে বিষয়

ভোগ হতে পৃথক রাখতে হবে; মন, বাণী এবং কর্ম দ্বারা ব্রহ্মচর্য পালন করতে হবে। শ্রদ্ধা পূর্বক করতে হবে অর্থাৎ যোগাভ্যাস-এর প্রতি তীব্র ইচ্ছা হওয়া উচিত। এইভাবে করতে থাকলে অভ্যাস দৃঢ় হয়ে যায়। তখন ব্যুত্থান সংস্কারের দ্বারা শীঘ্র যোগাভ্যাস-এর সংস্কার অভিভূত হয় না অর্থাৎ সাংসারিক বিষয় ভোগের সংস্কার তাকে শীঘ্র বিচলিত করতে পারে না। ১৪।।

সূত্র - দৃষ্টানুশ্রবিকবিষয়বিতৃষ্ণস্য বশীকারসংজ্ঞা বৈরাগ্যম্। ১৫।।

শব্দার্থ - (দৃষ্ট-আনুশ্রবিক-বিষয়-বিতৃষ্ণস্য) দৃষ্ট এবং শ্রুত বিষয়ে তৃষ্ণা রহিত যোগীর (বশীকার-সংজ্ঞা) মন, ইন্দ্রিয়তে পূর্ণ বশীকারণ হওয়াকে (বৈরাগ্যম্) [অপর] বৈরাগ্য বলা হয়।

সূত্রার্থ - দৃষ্ট বিষয়ে এবং শ্রুত বিষয়ে তৃষ্ণা রহিত যোগীর মন, ইন্দ্রিয়তে পূর্ণ বশীকারণ হওয়াকে ‘অপরবৈরাগ্য’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অপরবৈরাগ্যের স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

স্ত্রী, অন্ন, পান ও ঐশ্বর্য ইত্যাদিকে ‘দৃষ্ট বিষয়’ বলা হয়। যেগুলি শাস্ত্রে বর্ণিত রয়েছে কিন্তু এখনো পর্যন্ত প্রত্যক্ষ করা হয়নি যেমন - স্বর্গ প্রাপ্তি, প্রাকৃতিক বিষয়ে মনকে লাগিয়ে তার থেকে বিশেষ পদার্থকে উৎপন্ন করার ইচ্ছা, আগের জন্মে উত্তম মাতা-পিতা, সাধন-সম্পন্ন পরিবারে জন্ম নেওয়ার ইচ্ছা, যোগাভ্যাস দ্বারা বিভিন্ন প্রকারের সিদ্ধিলাভ করার ইচ্ছা ইত্যাদিকে ‘আনুশ্রবিক বিষয়’ বলা হয়।

উপরোক্ত সকল বিষয় হতে তৃষ্ণা রহিত তথা উৎকৃষ্ট ও সামান্য বিষয়ের সাথে সম্বন্ধ হলেও তাদের মধ্যে দোষ দর্শন করা এবং বিবেক জ্ঞান দ্বারা সেগুলিকে ত্যাজ্য অথবা গ্রাহ্য না লাগা। এই ধরনের মন-ইন্দ্রিয়কে বশ করার অনুভূতিকে ‘অপরবৈরাগ্য’ বলা হয়। বিবেক জ্ঞানকে এত দৃঢ় পর্যায়ে নিয়ে যেতে হবে যেখানে উপরোক্ত বিষয়কে দেখে এটা যেন না লাগে যে- “আরে এটাকে ছাড়া উচিত না গ্রহণ করা উচিত?” অর্থাৎ বিষয় সামনে আসলেও চিন্তে কোনরকম জিজ্ঞাসা অথবা বিচলন অথবা আলোড়ন যেন না হয়। এই অবস্থাকে ‘অপরবৈরাগ্য’ অর্থাৎ ছোট্ট বৈরাগ্য বলা হয়। ১৫।।

সূত্র - তৎপরং পুরুষখ্যাতে গুণবৈতৃষ্ণ্যম্। ১৬।।

শব্দার্থ - (তৎ-পরম্) সেটি সবচেয়ে উচ্চ বৈরাগ্য যেটি (পুরুষ-খ্যাতেঃ) জীবাত্মার সাক্ষাৎকার হয়ে গেলে (গুণ-বৈতৃষ্ণ্যম্) গুণের প্রতি বিতৃষ্ণা হয়ে যায়।

সূত্রার্থ - সেটি সবচেয়ে উচ্চ বৈরাগ্য যেখানে জীবাত্মার সাক্ষাৎকার হয়ে গেলে

সত্ত্ব, রজ ও তম গুণের প্রতি বিতৃষ্ণা হয়ে যায়। এই অবস্থাকে ‘পরবৈরাগ্য’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পরবৈরাগ্যের লক্ষণ সম্বন্ধে বর্ণনা করা হয়েছে।

দৃষ্ট এবং আনুশ্রবিক বিষয়ে দোষ দেখার পর বিরক্ত সাধক, পুরুষ দর্শনের অভ্যাস দ্বারা পুরুষের শুদ্ধ স্বরূপের বাস্তবিক বোধ হয়ে গেলে চিত্ত তৃপ্ত হয়ে যায় এবং স্থূল ও সূক্ষ্ম বিষয় হতে বিরক্ত হয়ে যায়। এই অবস্থাকে প্রাপ্ত হয়ে গেলে আত্মদর্শী যোগী এটা মনে করে যে- “যা প্রাপ্ত করার যোগ্য সেটি প্রাপ্ত হয়ে গেছে আর অপ্রাপ্তব্য কিছু নেই, নষ্ট করার যোগ্য ক্লেশ নষ্ট হয়ে গেছে, ছিন্ন করার যোগ্য সংসার চক্র ছিন্ন হয়ে গেছে; যেটি ছিন্ন না হলে জন্মের পর মৃত্যু এবং মৃত্যুর পর জন্ম হত।” জ্ঞানের অন্তিম সীমা অর্থাৎ উচ্চ অবস্থার নামই ‘বৈরাগ্য’। এই বৈরাগ্য মোক্ষের অনিবার্য সাধন।।১৬।।

অবতরণিকা - এখন অভ্যাস ও বৈরাগ্য দ্বারা নিরুদ্ধ চিত্ত যুক্ত সাধকের সম্প্রজ্ঞাত সমাধি কিভাবে হয়, সেটিকে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - বিতর্কবিচারানন্দাস্মিতারূপানুগমাৎ সম্প্রজ্ঞাতঃ।।১৭।।

শব্দার্থ - (বিতর্ক-বিচার-আনন্দ-অস্মিতা-রূপানুগমাত্) বিতর্ক, বিচার, আনন্দ ও অস্মিতা নামক অবস্থার অনুভূতির দ্বারা (সম্প্রজ্ঞাতঃ) সম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়।

সূত্রার্থ - বিতর্ক, বিচার, আনন্দ ও অস্মিতা নামক অবস্থার অনুভূতিকে ‘সম্প্রজ্ঞাত সমাধি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সম্প্রজ্ঞাত সমাধির স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

সম্প্রজ্ঞাত সমাধি চার প্রকারের হয়- বিতর্কানুগত, বিচারানুগত, আনন্দানুগত এবং অস্মিতানুগত। ‘বিতর্ক’-এর অর্থ হল চিত্তের নিজ ধ্যেয় রূপ বিষয়ে স্থূল ভূত পৃথিবী-শরীর-বৃক্ষ ইত্যাদির সাক্ষাৎকার হওয়া। ‘বিচার’-এর অর্থ হল চিত্তের নিজ ধ্যেয় রূপ বিষয়ে গন্ধতন্মাত্রা, রসতন্মাত্রা, রূপতন্মাত্রা, স্পর্শতন্মাত্রা এবং শব্দতন্মাত্রা-এর সাক্ষাৎকার হওয়া। ‘আনন্দ’-এর অর্থ হল মহৎতত্ত্ব, অহংকার, মন এবং ইন্দ্রিয়তে চিত্ত একাগ্র করলে; এইসব বস্তু সত্ত্বগুণ প্রধান হওয়ায় এগুলিকে সাক্ষাৎকার করার সময় সুখের অনুভূতি হওয়া। ‘অস্মিতা’-এর অর্থ হল জীবাশ্মার সাক্ষাৎকার হওয়া।

এখানে একটা কথা আরও জানা উচিত যে- বিতর্কানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে পরের তিনটি সমাধি জিজ্ঞাস্য রূপে বিদ্যমান থাকে। একই ভাবে বিচারানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে পরের দুটি সমাধি জিজ্ঞাস্য রূপে বিদ্যমান থাকে এবং বিতর্ক

সমাধি জিজ্ঞাস্য থাকে না। একই ভাবে আনন্দানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধির এবং অস্মিতানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধির ক্ষেত্রেও জানা উচিত। এই সকল সমাধি আলম্বন (বিষয়) দ্বারা যুক্ত থাকে, তাই এগুলিকে ‘সবীজ সমাধি’ও বলা হয়।।১৭।।

অবতরণিকা - অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সিদ্ধি লাভ কিভাবে হয় এবং তার স্বরূপ কি ধরনের, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - বিরামপ্রত্যয়াভ্যাসপূর্বঃ সংস্কারশেষোऽন্যঃ।।১৮।।

শব্দার্থ - (বিরাম-প্রত্যয়-অভ্যাস-পূর্বঃ) সকল বৃত্তির নিরোধের যে কারণ পরবৈরাগ্য সেই পরবৈরাগ্যের পুনঃ পুনঃ আবৃত্তির দ্বারা (সংস্কার-শেষঃ) যে অবস্থায় সংস্কারমাত্র অবশিষ্ট থাকে (অন্যঃ) সেটি সম্প্রজ্ঞাত সমাধি হতে ভিন্ন অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়।

সূত্রার্থ - সকল বৃত্তির নিরোধের যে কারণ পরবৈরাগ্য সেই পরবৈরাগ্যের পুনঃ পুনঃ আবৃত্তির দ্বারা যে সমাধি হয় এবং যেখানে কেবল সংস্কারমাত্র অবশিষ্ট থাকে তাকে ‘অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির বর্ণনা করা হয়েছে।

চিত্তের সকল বৃত্তি অস্ত হয়ে যাওয়ার পর যেখানে সংস্কারমাত্র শেষ থাকে, এরকম অবস্থাকে ‘অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি’ বলা হয়। এই সমাধির কারণ হল ‘পরবৈরাগ্য’। আলম্বন সহিত অভ্যাস এই সমাধির সাধন হয় না, এই জন্য বৃত্তি নিরোধের যে কারণ পদার্থহীন পরবৈরাগ্য তাকেই সাধন রূপে গ্রহণ করা হয়। যেহেতু পরবৈরাগ্য পদার্থহীন হয়ে থাকে। এই সমাধিতে জীবাত্মার এবং পরমাঙ্গার সাক্ষাৎকার হয়। জীবাত্মার সাক্ষাৎকার যদিও সম্প্রজ্ঞাত সমাধিতেও হয়ে থাকে, কিন্তু এখানে জীবাত্মার সাক্ষাৎকার আরোও সুস্পষ্ট ভাবে হয়।

সংস্কারমাত্র শেষ কী? অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে পৌঁছে গেলে নিরোধ অবস্থার সংস্কার বর্তমান থাকে এবং ব্যুত্থান তথা সম্প্রজ্ঞাত সমাধির সংস্কার সুপ্ত রূপে বিদ্যমান থাকে। যখন অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি ভঙ্গ হয়ে যায় তখন সম্প্রজ্ঞাত সমাধির সংস্কার কার্য করা শুরু করে দেয়। যখন সম্প্রজ্ঞাত সমাধি ভঙ্গ হয়ে যায় সেই অবস্থায় ব্যুত্থান অর্থাৎ সাংসারিক বৃত্তির সংস্কার প্রকট হয়ে যায়। অতএব এর দ্বারা এটা সিদ্ধ হয়ে যায় যে- অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়ে গেলেও অন্য অবস্থার সংস্কার সুপ্ত রূপে বিদ্যমান থাকে, একেই সংস্কারমাত্র শেষ জানা উচিত।

প্রসঙ্গত এটাও জানা উচিত যে- অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়ে গেলেই মোক্ষ হয়ে যায় না। চিত্তে বিদ্যমান পাঁচটি ক্লেশ দণ্ডবীজ হওয়া অনিবার্য।।১৮।।

অবতরণিকা - অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি দুই প্রকারের হয়ে থাকে উপায়প্রত্যয় এবং ভবপ্রত্যয়। নিম্ন সূত্রে ভবপ্রত্যয় নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির বিষয়ে বলা হয়েছে -

সূত্র - ভবপ্রত্যয়ো বিদেহ প্রকৃ তিলয়ানাম্ ।। ১৯ ।।

শব্দার্থ - (ভবপ্রত্যয়ঃ) সংসারের জ্ঞান কারণ হয় যে অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে, সেই অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি (বিদেহ-প্রকৃ তিলয়ানাম্) বিদেহ এবং প্রকৃ তিলয় নামক যোগীদের হয়।

সূত্রার্থ - বিদেহ এবং প্রকৃ তিলয় নামক যোগীদের ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির বর্ণনা করা হয়েছে।

‘ভব’ শব্দের অর্থ হল সংসার এবং ‘প্রত্যয়’-এর অর্থ হল কারণ। অর্থাৎ যে সমাধিতে এই সংসার এবং সংসারের জ্ঞান কারণ হয়ে থাকে সেই সমাধিকে ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি বলা হয়। সংসার এবং সংসারের জ্ঞান অর্থাৎ যোগী সংসারের ঘটনা গুলিকে দেখে তাঁর পূর্বজন্মের সংস্কার উদ্বুদ্ধ হয়ে যায়। যার ফলে তাঁর বৈরাগ্য চরমে উঠে যায়। তখন তিনি সংসারের সমস্ত পদার্থকে নাশবান্ মনে করেন এবং এই সমস্ত পদার্থের কর্তা ঈশ্বরকে মনে করে সাধনা করেন। এই ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি দুই প্রকারের যোগীদের হয়ে থাকে -

(১) **বিদেহ নামক যোগী -** বিদেহ নামক যোগীদের ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়। ‘বিদেহ’-এর অর্থ হল শরীর, ইন্দ্রিয়, মন, বুদ্ধির অভিমান হতে রহিত হওয়া এবং ঈশ্বরকে এই সকল পদার্থের স্বামী মনে করে উপাসনা করা। এই অবস্থা প্রাপ্তকারী যোগীকে ‘বিদেহ’ যোগী বলা হয়। তিনি নিজের সংস্কারমাত্র অবশিষ্ট চিত্ত দ্বারা সমাধিতে কৈবল্য পদের মত অনুভব করতে-করতে নিজের সংস্কারের অনুরূপ ফলকে ভোগ করে সমাপ্ত করেন।

(২) **প্রকৃ তিলয় নামক যোগী -** প্রকৃ তিলয় নামক যোগীদেরও ‘ভবপ্রত্যয়’ নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়। ‘প্রকৃ তিলয়’-এর অর্থ হল তন্মাত্রা, অহংকার, মহৎত্ত্ব এবং প্রকৃ তির স্বরূপকে গভীরতা পূর্বক জ্ঞান করে এই পদার্থের দোষকে জেনে; এগুলিকে উপাস্য না মনে করে, ঈশ্বরের উপাসনা করা। এই অবস্থা প্রাপ্তকারী যোগীকে ‘প্রকৃ তিলয়’ যোগী বলা হয়। তিনিও বৌদ্ধিক ভাবে অকৃতকৃত্য চিত্তকে প্রকৃ তিতে বিলীন করে সমাধিতে কৈবল্য পদের মত অনুভব করেন। চিত্ত অধিকারের জন্য যতক্ষণ পর্যন্ত তিনি সমাধি অবস্থায় অবস্থিত থাকেন ততক্ষণ পর্যন্ত এই অবস্থা বিদ্যমান থাকে। কিন্তু সমাধি ভঙ্গ হয়ে গেলে সেই অনুভূতি নষ্ট হয়ে যায়। পুনঃ

যখন সমাধি লাগান তখন তিনি ঈশ্বরের অনুভূতি পুনঃ করেন । ১৯ ।।

অবতরণিকা - উপায়প্রত্যয় নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি কিভাবে হয়, এটি নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে-

সূত্র - শ্রদ্ধাবীর্যস্মৃতিসমাধিপ্রজ্ঞাপূর্বক ইতরেষাম্ । ২০ ।।

শব্দার্থ - (শ্রদ্ধা-বীর্য-স্মৃতি-সমাধি-প্রজ্ঞা-পূর্বকঃ) রুচি, উৎসাহ, যোগ সম্বন্ধী পঠিত এবং শ্রুত বিষয়ের স্মরণ, একাগ্রতা এবং ঋতন্তুরা প্রজ্ঞা পূর্বক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয় (ইতরেষাম্) বিদেহ এবং প্রকৃতিলয় যোগীদের হতে ভিন্ন যোগীদের ।

সূত্রার্থ - বিদেহ এবং প্রকৃতিলয় যোগীদের হতে ভিন্ন যোগীদের অর্থাৎ উপায়প্রত্যয় নামক যোগীদের অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি শ্রদ্ধা (রুচি), বীর্য (উৎসাহ), স্মৃতি (যোগ সম্বন্ধী পঠিত এবং শ্রুত বিষয়ের স্মরণ), সমাধি (একাগ্রতা) এবং প্রজ্ঞা (ঋতন্তুরা প্রজ্ঞা) পূর্বক হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে উপায়প্রত্যয় নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি প্রাপ্ত যোগীদের সমাধি কিভাবে প্রাপ্ত হয়, এই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

‘উপায়’ শব্দের অর্থ হল অভ্যাস । উপায়প্রত্যয় নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি প্রাপ্ত যোগীরা যে সকল সাধনগুলির দ্বারা সমাধিকে প্রাপ্ত করেন সেগুলি হল- ‘শ্রদ্ধা’ অর্থাৎ চিত্তের অভিরুচি অর্থাৎ সত্যকে ধারণ করার তীব্র ইচ্ছা । এই শ্রদ্ধা মায়ের মত কল্যাণকারিণী হয়ে যোগীকে রক্ষা করে । সেই শ্রদ্ধালু বিবেক অভিলামী যোগীকে ‘বীর্য’ অর্থাৎ বল (উৎসাহ) প্রাপ্ত হয় । এই ধরনের বলযুক্ত যোগীর ‘স্মৃতি’ উপস্থিত হয়; স্মৃতি অর্থাৎ পূর্বকৃত যোগ সম্বন্ধী অনুভবের স্মৃতি উপস্থিত হয় । স্মৃতি উপস্থিত হলে চঞ্চল চিত্ত ‘সমাধি’ অর্থাৎ চিত্ত সমাহিত অর্থাৎ একাগ্র হয়ে যায় । চিত্ত স্থির হয়ে গেলে যোগীকে ‘প্রজ্ঞা’ অর্থাৎ পরম উৎকৃষ্ট বুদ্ধি প্রাপ্ত হয়; যার দ্বারা সেই যোগী বস্তুকে যথার্থভাবে জানতে পারেন । এই বিবেক জ্ঞানের অভ্যাস এবং এই বিবেক জ্ঞানের বিষয় হতে পরবৈরাগ্য হয়ে গেলে অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সিদ্ধিলাভ হয় । ২০ ।।

অবতরণিকা - উপায়প্রত্যয় নামক অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি প্রাপ্ত যোগীদের উপায় অর্থাৎ অভ্যাস মৃদু, মধ্য এবং অধিমাত্র (উৎকৃষ্ট) ভেদে তাঁরা নয় প্রকারের হন । যেমন- মৃদুউপায়, মধ্যউপায় এবং অধিমাত্রউপায় । আবার মৃদুউপায় যোগীও তিন প্রকারের হন যেমন- মৃদুসংবেগ, মধ্যসংবেগ এবং তীব্রসংবেগ । একইভাবে মধ্যউপায় যোগীও তিন প্রকারের হন যেমন- মৃদুসংবেগ, মধ্যসংবেগ এবং তীব্রসংবেগ । একইভাবে অধিমাত্রউপায় যোগীও তিন প্রকারের হন যেমন- মৃদুসংবেগ, মধ্যসংবেগ এবং তীব্রসংবেগ । তাদের মধ্যে অধিমাত্র উপায় নামক যোগীদের মধ্যে তীব্রসংবেগ

প্রাপ্ত যোগীদের বিষয়ে পরবর্তী সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তীব্রসংবেগানামাসন্নঃ । ১২১ ।।

শব্দার্থ - (তীব্র-সংবেগানাম) উচ্চ বিবেক, বৈরাগ্য এবং অভ্যাস যুক্ত যোগীদের (আসন্নঃ) শীঘ্র সমাধি লাভ এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - উচ্চ বিবেক, বৈরাগ্য এবং অভ্যাস যুক্ত যোগীদের শীঘ্র সমাধি লাভ এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যেসব যোগীদের বিবেক, বৈরাগ্য এবং অভ্যাস খুব উচ্চমানের তাঁরা শীঘ্র সমাধির প্রাপ্তি এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি করে নেন।

সূত্রে যে ‘সংবেগ’ শব্দ রয়েছে তার অর্থ হল বিবেক এবং বৈরাগ্য। ‘উপায়’ শব্দের অর্থ হল অভ্যাস। অতএব অবতরণিকায় বর্ণিত যোগীদের নামকরণ নিম্ন প্রকারের হয়ে যায় -

(১) মৃদুউপায় অর্থাৎ মৃদুঅভ্যাস। (২) মধ্যউপায় অর্থাৎ মধ্যঅভ্যাস। (৩) অধিমাত্র উপায় অর্থাৎ অধিমাত্রঅভ্যাস। এখন সংবেগ শব্দের অর্থ যদি বিবেক এবং বৈরাগ্য করা হয় তাহলে মৃদু অভ্যাস ইত্যাদি যোগীদের যে ভাগ করা হয়েছিল তাঁদের নামকরণ নিম্ন প্রকারের হয়ে যায় -

(১) মৃদুঅভ্যাস - (১) মৃদুবিবেক, মৃদুবৈরাগ্য।

(২) মধ্যবিবেক, মধ্যবৈরাগ্য।

(৩) তীব্রবিবেক, তীব্রবৈরাগ্য - মৃদুঅভ্যাস যোগীদের মধ্যে ইনি সবচেয়ে উচ্চ মানের যোগী।

(২) মধ্যঅভ্যাস - (১) মৃদুবিবেক, মৃদুবৈরাগ্য।

(২) মধ্যবিবেক, মধ্যবৈরাগ্য।

(৩) তীব্রবিবেক, তীব্রবৈরাগ্য - মৃদুঅভ্যাস এবং মধ্যঅভ্যাস যোগীদের মধ্যে ইনি সবচেয়ে উচ্চ মানের যোগী।

(৩) অধিমাত্রঅভ্যাস - (১) মৃদুবিবেক, মৃদুবৈরাগ্য।

(২) মধ্যবিবেক, মধ্যবৈরাগ্য।

(৩) তীব্রবিবেক, তীব্রবৈরাগ্য - মৃদুঅভ্যাস, মধ্যঅভ্যাস এবং অধিমাত্রঅভ্যাস যোগীদের মধ্যে ইনি সবচেয়ে উচ্চ মানের যোগী। অতএব ইনি শীঘ্র সমাধি লাভ এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি করে থাকেন। ১২১।।

অবতরণিকা - অধিমাত্রঅভ্যাস যোগীদের মধ্যে যে সবচেয়ে উচ্চ যোগী তাঁকেও

তিনটি বিভাগ করে নিম্ন সূত্রে দেখানো হয়েছে -

সূত্র - মৃদুমধ্যাধিমাত্রত্বাৎ ততোঽপি বিশেষঃ ।।২২।।

শব্দার্থ - (মৃদু-মধ্য-অধিমাত্রত্বাত্) উচ্চ বিবেক, বৈরাগ্য এবং অভ্যাসেরও নিম্ন-মধ্য-অধিক ভেদ হওয়ায় (ততঃ-অপি- বিশেষঃ) অপেক্ষাকৃত উচ্চ বিবেক, বৈরাগ্য ও অভ্যাসকারী যোগীদের শীঘ্র সমাধি লাভ এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - উচ্চ বিবেক-বৈরাগ্য-অভ্যাসকারী যোগীদের মধ্যেও নিম্ন-মধ্য-অধিক ভেদ হওয়ায় অপেক্ষাকৃত যে অধিক বিবেক, বৈরাগ্য ও অভ্যাসের অধিকারী তাঁর সমাধি লাভ এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি শীঘ্র হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে যোগ সাধনের অনুষ্ঠানে ভিন্ন-ভিন্ন স্তর হওয়ার জন্য যোগীদের ন্যূনাধিক সময়ে, সমাধি এবং মোক্ষ প্রাপ্তি সম্পন্ন হয়।

উপরোক্ত অন্তিম যোগীকে অর্থাৎ (৩) অধিমাত্রঅভ্যাস - (৩) তীব্রবিবেক, তীব্রবৈরাগ্য-কেও তিনটি বিভাগ করা হয়েছে যেমন -

(১) মৃদুতীব্রবিবেক, মৃদুতীব্রবৈরাগ্য।

(২) মধ্যতীব্রবিবেক, মধ্যতীব্রবৈরাগ্য।

(৩) অধিমাত্রতীব্রবিবেক, অধিমাত্রতীব্রবৈরাগ্য - এনার বিবেক, বৈরাগ্য এবং অভ্যাস সর্বোচ্চ হওয়ায় উপরোক্ত সকল যোগীদের মধ্যে ইনি শীঘ্র সমাধি লাভ ও সমাধি ফলের প্রাপ্তি করেন।।২২।।

অবতরণিকা - কেবল উচ্চ বিবেক, বৈরাগ্য ও অভ্যাস দ্বারাই শীঘ্র সমাধির প্রাপ্তি হয় না এর সিদ্ধিলাভের জন্য অন্য আরও কিছু উপায় রয়েছে? এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - ঈশ্বরপ্রণিধানাদ্বা ।।২৩।।

শব্দার্থ - (ঈশ্বর-প্রণিধানাত্) ঈশ্বরপ্রণিধান দ্বারা (বা) আরও শীঘ্র সমাধি এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - (উপরোক্ত সকল সাধন-এর সাথে সাথে) ঈশ্বরপ্রণিধান দ্বারাও শীঘ্র সমাধি এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি হয়। (এই সূত্রে ‘বা’ শব্দ সমুচ্চয় অর্থে প্রযুক্ত হয়েছে, বিকল্প অর্থে নয়)।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ঈশ্বরপ্রণিধান দ্বারা সমাধি ও সমাধি ফলের প্রাপ্তি অনেক শীঘ্র হয়, এই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

‘ঈশ্বরপ্রণিধান’ অর্থাৎ ঈশ্বরের প্রতি ভক্তি বিশেষ অর্থাৎ অত্যাধিক প্রেম পূর্বক

ঈশ্বরের উপাসনা করা; শরীর ইত্যাদি সকল পদার্থকে ঈশ্বরের মনে করে তাঁর আঞ্জানুসারে এগুলিকে প্রয়োগ করা, তথা সমস্ত কর্ম ঈশ্বরকে সমর্পিত করা এবং সেই সকল কর্মের লৌকিক ফল না চাওয়া। এই প্রণিধান অর্থাৎ ভক্তি বিশেষ দ্বারা ঈশ্বর আমাদের অনুকূল হয়ে যান এবং ঈশ্বর নিজ সংকল্প দ্বারা সেই যোগীকে অনুগ্রহ অর্থাৎ সহায়তা করেন। সেই ঈশ্বরের সহায়তায় যোগী অতিশীঘ্র সমাধি এবং সমাধি ফলের প্রাপ্তি করে নেন। ১২৩।।

অবতরণিকা - প্রকৃতি এবং পুরুষ হতে ভিন্ন উপরোক্ত সূত্রে বর্ণিত যে ঈশ্বরের কথা বলা হয়েছে তিনি কে? এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - ক্লেশকর্মবিপাকশয়ৈরপরামৃষ্টঃ পুরুষবিশেষ ঈশ্বরঃ। ১২৪।।

শব্দার্থ - (ক্লেশ-কর্ম-বিপাক-আশয়েঃ) অবিদ্যা ইত্যাদি পাঁচটি ক্লেশ, শুভ-অশুভ এবং মিশ্রিত কর্ম, সুখ-দুঃখ রূপী ফল, সুখ-দুঃখ ভোগের সংস্কার; এই সকল হতে (অপরামৃষ্টঃ) সম্বন্ধ রহিত (পুরুষবিশেষঃ) জীব হতে ভিন্ন স্বভাব যুক্ত চৈতন্য বিশেষ (ঈশ্বরঃ) ঈশ্বর।

সূত্রার্থ - অবিদ্যা ইত্যাদি পাঁচটি ক্লেশ, শুভ-অশুভ এবং মিশ্রিত কর্ম, সুখ-দুঃখ রূপী ফল, সুখ-দুঃখ ভোগের সংস্কার; এই সকল হতে সম্বন্ধ রহিত এবং জীব হতে ভিন্ন স্বভাব যুক্ত চৈতন্য বিশেষকে ঈশ্বর বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ঈশ্বরের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

অবিদ্যা ইত্যাদি পাঁচটি ক্লেশ, শুভ-অশুভ এবং মিশ্রিত কর্ম, সুখ-দুঃখ রূপী ফল, সুখ-দুঃখ ভোগের সংস্কার এই সকল মনে বিদ্যমান থাকলেও পুরুষে বিদ্যমান বলে কল্পনা করা হয়। তার কারণ হল পুরুষ এগুলির ফলের ভোক্তা। যেমন- জয় এবং পরাজয় যুদ্ধাদির মধ্যে হলেও রাজার জয় এবং পরাজয় বলা হয়। অতএব এই সূত্রে বলা হয়েছে ঈশ্বর উপরোক্ত সকল পদার্থ হতে সম্পূর্ণভাবে পৃথক।

মোক্ষ প্রাপ্ত অনেক জীবাত্মা রয়েছেন তাঁরা তিনটি বন্ধনকে ছিন্ন করে মোক্ষকে প্রাপ্ত করেছেন, কিন্তু ঈশ্বর সেই বন্ধনে, না কোনোদিন ছিলেন, না আছেন, না হবেন, কিন্তু তিনি সदैব মুক্ত, সदैব ঈশ্বর।

ঈশ্বরের যে ঐশ্বর্য রয়েছে সেই ঐশ্বর্য হতে অধিক অথবা সমান ঐশ্বর্য কারোও কাছে নেই। অতএব যেখানে ঐশ্বর্যের সর্বোচ্চ সীমা সেটিই হল ঈশ্বর। এইজন্য শাস্ত্রে তাঁকে পুরুষ বিশেষ বলা হয়েছে।

এখানে একটা প্রশ্ন উঠে- ঈশ্বরের যে উৎকৃষ্ট গুণ, কর্ম ও স্বভাব বিদ্যমান রয়েছে তার প্রমাণ কী? এর উত্তর হল সত্য বিদ্যা যুক্ত বেদ এর প্রমাণ। আবার

প্রশ্ন উঠে- এই শাস্ত্রের কখন ঠিক কিনা তার প্রমাণ কী ? এর উত্তর হল সেই ঈশ্বরই এর প্রমাণ। যেমন- প্রদীপ জ্বলছে কিনা তাকে চোখ দ্বারা জানা যায় কিন্তু চোখ ঠিক আছে কিনা তাকে জানতে হলে প্রদীপের আবশ্যিকতা হয়; যদি বস্তু ঠিক ঠিক দেখছে তাহলে তার চোখ ঠিক আছে। এইভাবে একে অপরকে যেমন প্রদীপ এবং চোখ প্রমাণিত করে সেই রকম বেদ এবং ঈশ্বর একে অপরকে প্রমাণিত করে। এভাবে একে অপরের আশ্রয় অশ্রিত দোষও আসে না। ১২৪।।

অবতরণিকা - সেই ঈশ্বরের আরোও কি বিশেষতা হয়েছে, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তত্র নিরতিশয়ং সর্বজ্ঞবীজম্। ১২৫।।

শব্দার্থ - (তত্র) ওই ঈশ্বরে (নির্-অতিশয়ম্) অতিশয় হতে রহিত (সর্বজ্ঞ-বীজম্) সর্বজ্ঞতার বীজ রয়েছে।

সূত্রার্থ - ওই ঈশ্বরের কাছে অতিশয় সর্বজ্ঞতার বীজ রয়েছে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও ঈশ্বরের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

সংসারে আমরা দেখি কোনো ব্যক্তির মধ্যে অধিক জ্ঞান, কোনো ব্যক্তির মধ্যে অল্প জ্ঞান বিদ্যমান থাকে। আবার অনেকে ভূত, ভবিষ্যৎ ও বর্তমান জ্ঞানের অধিকারী হন; আবার অনেকে কেবল বর্তমানকালেই জীবন-যাপন করেন; একেই সর্বজ্ঞতার বীজ বলা হয়। এই সর্বজ্ঞতার বীজ বাড়তে-বাড়তে একটি সীমা আসবে যার বেশি কারও জ্ঞান হওয়া সম্ভব নয় তাকেই নিরতিশয় বলা হয়। এই নিরতিশয় জ্ঞান ঈশ্বরের মধ্যে বিদ্যমান থাকে; তাই তাঁকে ‘সর্বজ্ঞ’ বলা হয়।

অনুমান দ্বারা পদার্থের বিশেষ জ্ঞান করা সম্ভব নয়। তাই ঈশ্বরের সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞান করার জন্য আগম প্রমাণের সাহায্য নেওয়া উচিত।

ঈশ্বরের নিজের কোনোও স্বার্থ না থাকলেও জীবের কল্যাণ করাই তার প্রয়োজন। এই জন্য জ্ঞান এবং ধর্মের উপদেশ দ্বারা প্রত্যেক সৃষ্টিতে “সাংসারিক জীবের উদ্ধার করিব” এটাই তাঁর প্রয়োজন। অতএব সকল দুঃখ হতে মুক্তি পাওয়ার জন্য অর্থাৎ ঈশ্বরকে জানার জন্য নিত্য পুরুষার্থ করা উচিত। ১২৫।।

অবতরণিকা - নিম্ন সূত্রেও ঈশ্বরের স্বরূপকে দর্শানো হয়েছে -

সূত্র - স এষ পূর্বেষামপি গুরুঃ কালেনানবচ্ছেদাৎ। ১২৬।।

শব্দার্থ - (সঃ এষঃ) সেই ঈশ্বর (পূর্বেষামপি) পূর্বে উৎপন্ন গুরুদের (অপি) ও (গুরুঃ) গুরু অর্থাৎ বিদ্যা দাতা (কালেন-অনবচ্ছেদাত্) সময় দ্বারা মৃত্যুকে প্রাপ্ত

না হওয়ায়।

সূত্রার্থ - সেই ঈশ্বর পূর্বে উৎপন্ন গুরুদেরও গুরু অর্থাৎ বিদ্যা দাতা, তার কারণ হল কালের দ্বারা তিনি কখনো মৃত্যুকে প্রাপ্ত হননা।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও ঈশ্বরের স্বরূপকে বর্ণনা করা হয়েছে।

পূর্ববর্তী গুরুরা সময় দ্বারা নষ্ট হয়ে গেছেন কিন্তু ঈশ্বরকে নষ্ট করার জন্য কালের প্রবৃত্তি দেখা যায় না। এই জন্য তিনি সকল গুরুদেরও গুরু। যেমন এই সৃষ্টির আরম্ভে জ্ঞান দিয়েছেন, সেই রকম অতীত সৃষ্টিতেও দিয়েছিলেন এবং ভবিষ্যৎ সৃষ্টিতেও দেবেন, এরকম জানা উচিত।

সংসারে কাকে গুরু বানানো উচিত? তাঁদের কি লক্ষণ হওয়া উচিত? এই বিষয়ে নিম্নে কিছু বিন্দু রাখা হল -

(১) বেদ এবং বেদানুকূল ঋষি কৃত গ্রন্থে শ্রদ্ধা রাখেন এবং এই শাস্ত্র গুলিকে মুক্তির সাধন বলে মনে করেন।

(২) সত্যবাদী, সত্যমानी এবং সত্যকারী যেন হন।

(৩) পুত্রৈষণা, বিদ্বেষণা এবং লোকৈষণার ত্যাগী যেন হন।

(৪) ঈশ্বর, জীব ও প্রকৃতিকে পৃথক্-পৃথক্ মানেন।

(৫) স্বয়ং অষ্টাঙ্গ যোগের অনুষ্ঠান করেন।

(৬) সকাম কর্মকে ছেড়ে নিষ্কাম কর্ম করেন।

(৭) নিজের উন্নতির সমান অন্যের উন্নতির অভিলাষ রাখেন।

(৮) পক্ষপাত রহিত যেন হন।

(৯) মদ্য, মাংস ইত্যাদি ভক্ষণকারী যেন না হন।

(১০) মোক্ষ প্রাপ্তি করা এবং করানো মানব জীবনের মুখ্য লক্ষ্য মনে করেন।

(১১) বেদ, দর্শন, উপনিষদ ইত্যাদি গ্রন্থে বর্ণিত যোগ বিদ্যার প্রচার-প্রসার করেন, ইত্যাদি লক্ষণ যুক্ত ব্যক্তি কে, এটি দীর্ঘ পরীক্ষণ করার পর কাউকে নিজ গুরু রূপে স্বীকার করা উচিত। তা না হলে এই অমূল্য মানব জীবন ছারখার হয়ে যাবে।।২৬।।

অবতরণিকা - সেই ঈশ্বরের মুখ্য নাম কী? এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে-

সূত্র - তস্য বাচকঃ প্রণবঃ ।।২৭।।

শব্দার্থ - (তস্য) ওই ঈশ্বরের (বাচকঃ) বোধক শব্দ = নাম (প্রণবঃ) ও৩ম্।

সূত্রার্থ - ওই ঈশ্বরের বোধক = নাম 'ও৩ম্'।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ঈশ্বরের নামের বিষয়ে চর্চা করা হয়েছে।

ওই ঈশ্বরের নিজ এবং মুখ্য নাম হল ‘ওতম্’। এই বাচ্য ঈশ্বরের সাথে বাচক প্রণবের যে সম্বন্ধ রয়েছে সেটি অনাদিকালের। তাই এই সম্বন্ধকে জানানোর জন্য কেবল সংকেত মাত্র করা হয়। এই সংকেত ঈশ্বরের সাথে ওতম্-এর বিদ্যমান সম্বন্ধকেই জানায়। যেমন- পিতা পুত্রের সম্বন্ধ প্রথম থেকে বিদ্যমান থাকে, সেই সম্বন্ধকে জানানোর জন্য কেবল সংকেত করা হয় যে- ‘ইনি এর পিতা এবং এ এনার পুত্র’। ঈশ্বরের সাথে যে প্রণবের সম্বন্ধ রয়েছে সেটি অন্য সৃষ্টিতেও একই রকম থাকবে এবং সেই সম্বন্ধকে কেবলমাত্র সংকেত দ্বারাই জানানো হবে। সদৃশ্য ব্যবহারের পরম্পরা নিত্য হওয়ায়, শব্দ তথা বস্তুর বাচ্য-বাচকত্ব সম্বন্ধও নিত্য।

‘প্রণব’ শব্দ দ্বারা ওতম্ কীভাবে গ্রহণ করা হয়? যজুর্বেদ মন্ত্র সংখ্যা ১৮/২৫-এর ভাষ্য করার সময় মহর্ষি দয়ানন্দ সরস্বতী জী লিখেছেন যে- “প্রণবৈঃ ওঙ্কারৈঃ” অতএব এটা স্পষ্ট হয়ে যায় যে প্রণব শব্দ দ্বারা ওঙ্কারকে বলা হয়েছে। ‘প্রণব’ শব্দের অর্থ হল- “যে শব্দ দ্বারা উৎকৃষ্ট ভাবে স্তুতি করা হয়, তাকে ‘প্রণব’ বলা হয়।” ওতম্-এর অর্থ হল রক্ষক = রক্ষাকর্তা। এই নাম দ্বারা ঈশ্বরের আরাধনা করা উচিত। ১২৭।।

অবতরণিকা - বাচ্য বাচক সম্বন্ধকে জানার পর যোগীর কি করা উচিত, এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে-

সূত্র - তজ্জপস্তদর্থভাবনম্ । ১২৮ ।।

শব্দার্থ - (তত্-জপঃ) ওই ওতম্ শব্দের জপ (তত্-অর্থ-ভাবনম্) ওই ঈশ্বর রূপ অর্থের ভাবনা অর্থাৎ গুণের চিন্তন করা উচিত।

সূত্রার্থ - ওই ওতম্ শব্দের জপ এবং ওতম্ নামের নামী ঈশ্বরের ভাবনা অর্থাৎ তাঁর রক্ষণাদি গুণের চিন্তন করা উচিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ওতম্-এর জপ এবং ঈশ্বরের গুণের চিন্তন কীভাবে করা উচিত, এই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যোগী ওতম্-এর জপ এবং ঈশ্বরের গুণের চিন্তন করতে থাকলে মন একাগ্র হয়ে যায়; মন একাগ্র হয়ে গেলে ঈশ্বর শীঘ্র প্রাপ্ত হয়।

তাই বলা হয়েছে -

স্বাধ্যায়াদ্যোগমাসীত যোগাৎস্বাধ্যায়মাসতে ।

স্বাধ্যায়যোগসংপত্ত্যা পরমাত্মা প্রকাশতে ।।

অর্থাৎ ওতম্ জপের মাধ্যমে বৃত্তি নিরোধ করিবে এবং বৃত্তি নিরোধের দ্বারা ওতম্-এর জপ করিবে। এই দুটির সামর্থ্যে পরমাত্মা প্রকাশিত হয়।।

যেমন - দেশলাই এবং দেশলাই কাঠিকে ঘর্ষন করলে অগ্নি প্রকাশিত হয় সেই রকম জপ এবং বৃত্তি নিরোধ দ্বারা ঈশ্বরও প্রকাশিত হয়।।২৮।।

অবতরণিকা - জপ করিলে যোগী আরও কি লাভ করেন, এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - ততঃ প্রত্যক্চেতনাধিগমোঽপ্যন্তরায়াভাবশ্চ।।২৯।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ওই ঈশ্বরপ্রণিধান দ্বারা (প্রত্যক্-চেতন-অধিগমঃ) ঈশ্বরের সাক্ষাৎকার (অপি) জীবাত্মারও সাক্ষাৎকার হয় (চ) এবং (অন্তরায়-অভাবঃ) রোগ প্রভৃতি বিঘ্নের বিনাশ হয়।

সূত্রার্থ - ওই ঈশ্বরপ্রণিধান দ্বারা ঈশ্বরের এবং জীবাত্মার সাক্ষাৎকার হয় এবং রোগ প্রভৃতি বিঘ্নের বিনাশও ঘটে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিধি পূর্বক জপ এবং ঈশ্বরের গুণের চিন্তন করলে কি প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

ঈশ্বর প্রণিধান দ্বারা রোগ প্রভৃতি যে বিঘ্ন (এটি পরবর্তী সূত্রে বলা হবে) সেগুলি হয় না এবং যোগী নিজের স্বরূপের দর্শনও করে নেন। যেমন ঈশ্বর পবিত্র, দুঃখ রহিত, অন্য পদার্থের সংমিশ্রণ হতে রহিত, সব প্রকারের বাধা হতে রহিত। সেই রকম বুদ্ধির প্রতिसংবেদনকারী জীবাত্মাও নিজেকে জেনে নেয় যে - আমিও পবিত্র ইত্যাদি।।২৯।।

অবতরণিকা - চিত্ত চঞ্চলকারী বিঘ্ন কতগুলি রয়েছে এবং তার স্বরূপ কী? এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

**সূত্র - ব্যাধিস্ত্যানসংশয়প্রমাদালস্যাবিরতিভ্রান্তিদর্শনালঙ্ক-
ভূমিকত্বানবস্থিতত্বানি চিত্তবিক্ষেপাস্তেঽন্তরায়াঃ।।৩০।।**

শব্দার্থ - (ব্যাধি-স্ত্যান-সংশয়-প্রমাদ-আলস্য-অবিরতি-ভ্রান্তিদর্শন-
অলঙ্কভূমিকত্ব-অনবস্থিতত্বানি) ব্যাধি, স্ত্যান, সংশয়, প্রমাদ, আলস্য, অবিরতি,
ভ্রান্তিদর্শন, অলঙ্কভূমিকত্ব এবং অনবস্থিতত্ব (চিত্তবিক্ষেপাঃ) চিত্ত চঞ্চলকারী (তে)
এগুলি (অন্তরায়াঃ) যোগের বাধক।

সূত্রার্থ - ব্যাধি, স্ত্যান, সংশয়, প্রমাদ, আলস্য, অবিরতি, ভ্রান্তিদর্শন,
অলঙ্কভূমিকত্ব এবং অনবস্থিতত্ব; এই নয়টি সমাধির বিঘ্ন।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সমাধিতে বিঘ্ন উৎপন্নকারী কারণ গুলিকে দর্শানো হয়েছে।

‘ব্যাপি’ অর্থাৎ বাত-পিত্ত-কফে বিষমতা হওয়া, ভোজন হতে তৈরি রসে বিষমতা হওয়া। ইন্দ্রিয়ের ক্ষমতা কমে যাওয়া। ‘স্ত্যান’ অর্থাৎ যোগ করার যোগ্যতা হওয়া সত্ত্বেও যোগ করার প্রতি অপ্রীতি হওয়া। ‘সংশয়’ অর্থাৎ একটি বিষয়ে দুটি বিরুদ্ধ জ্ঞান হওয়া। যেমন- ঈশ্বরের অস্তিত্ব রয়েছে আবার ঈশ্বরের অস্তিত্ব নেই। ‘প্রমাদ’ অর্থাৎ যোগের অনুষ্ঠান না করা। ‘আলস্য’ অর্থাৎ শরীর এবং মন ভারী হওয়া যোগের প্রতি প্রবৃত্তি না হওয়া। ‘অবিরতি’ অর্থাৎ চিত্তের বিষয় ভোগের প্রতি আকাঙ্ক্ষা হওয়া। ‘ব্রাহ্মদর্শন’ অর্থাৎ মিথ্যাজ্ঞান হওয়া। যেমন- নিত্যকে অনিত্য মনে করা। ‘অলঙ্কভূমিকত্ব’ অর্থাৎ সমাধির কোনও অবস্থার প্রাপ্তি না হওয়া। ‘অনবস্থিতত্ব’ অর্থাৎ সমাধি অবস্থা প্রাপ্ত হয়ে গেলেও স্থির না হওয়া; যেহেতু সমাধি লাভ হয়ে গেলে চিত্তকে সেই অবস্থায় স্থির থাকা উচিত কিন্তু স্থির না থাকা। এই নয়টি যোগের মল, অর্থাৎ যোগের শত্রু, যোগের বিঘ্ন, যোগের বাধক, যোগের অন্তরায়।। ৩০।।

সূত্র - দুঃখদৌর্মনস্যাস্মেজয়ত্বশ্বাসপ্রশ্বাসা বিক্ষেপসহভুবঃ।। ৩১।।

শব্দার্থ - (দুঃখ) দুঃখ (দৌর্মনস্য) হতাশা (অস্মেজয়ত্ব) শরীরাস্থে কম্পন হওয়া (শ্বাসঃ) ইচ্ছার বিরুদ্ধে শ্বাস ভিতরে প্রবেশ করা (প্রশ্বাসঃ) ইচ্ছার বিরুদ্ধে প্রশ্বাস বাইরে বের হওয়া (বিক্ষেপ-সহভুবঃ) উপরোক্ত বিঘ্ন গুলির সাথে বিদ্যমান থাকে।

সূত্রার্থ - উপরোক্ত বিঘ্ন গুলির সাথে দুঃখ, দৌর্মনস্য, অস্মেজয়ত্ব, শ্বাস এবং প্রশ্বাস এই পাঁচটি উপবিঘ্ন গুলিও বিদ্যমান থাকে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগের উপবিঘ্নের বর্ণনা করা হয়েছে।

‘দুঃখ’ অর্থাৎ আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক এবং আধিদৈবিক। “যার দ্বারা পীড়িত হয়ে প্রাণী তাকে নাশ করার জন্য প্রযত্ন করে তাকেই দুঃখ বলা হয়।” ‘দৌর্মনস্য’ অর্থাৎ ইচ্ছার পূর্তি না হলে চিত্তে চঞ্চলতা উৎপন্ন হওয়া। ‘অস্মেজয়ত্ব’ অর্থাৎ শরীরাস্থের স্থিরতা না হওয়া অর্থাৎ কম্পন হওয়া। ‘শ্বাস’ অর্থাৎ বাইরের বায়ুকে গ্রহণ করা। ‘প্রশ্বাস’ অর্থাৎ ভিতরের বায়ুকে বাহির করা। যখন এই শ্বাস-প্রশ্বাস নিজের অধীন না হয়ে, ধ্বনি পূর্বক অথবা অসরলতা পূর্বক চলে তখন এটি মনকে একাগ্র করতে বাধা উপস্থিত করে। বস্তুত এই উপবিঘ্ন গুলি চঞ্চল চিত্ত যুক্ত সাধকদের হয়ে থাকে, একাগ্রচিত্ত যুক্ত যোগীদের থাকে না।। ৩১।।

অবতরণিকা - পূর্বোক্ত বিঘ্ন এবং উপবিঘ্ন গুলির নাশ করার উপায় নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - তৎপ্রতিষেধার্থমেকতত্ত্বাভ্যাসঃ ।।৩২।।

শব্দার্থ - (তৎ-প্রতিষেধার্থম্) পূর্বোক্ত বিঘ্ন এবং উপবিঘ্ন গুলির নাশ করার জন্য (এক-তত্ত্বাভ্যাসঃ) এক তত্ত্বের অভ্যাস করা উচিত ।

সূত্রার্থ - পূর্বোক্ত বিঘ্ন এবং উপবিঘ্ন গুলির নাশ করার জন্য এক তত্ত্ব অর্থাৎ ঈশ্বরের পুনঃ-পুনঃ অভ্যাস অর্থাৎ চিন্তন করা উচিত ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিঘ্ন এবং উপবিঘ্নের নাশ করার উপায়কে বলা হয়েছে ।

এই সূত্রে ‘একতত্ত্ব’-এর অর্থ হল ঈশ্বর ; অতএব সেই ঈশ্বরকে পুনঃ পুনঃ জপ, চিন্তন, প্রণিধান, করতে থাকলে শারীরিক বাধা এবং মানসিক বাধা দূর হয়ে যায় ।।৩২।।

অবতরণিকা - নিম্নে কিছু সূত্র দ্বারা সম্প্রজ্ঞাত সমাধি প্রাপ্ত করার জন্য চিত্ত পরিশোধনের কিছু উপায়কে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - মৈত্রীকরুণামুদিতোপেক্ষাণাং সুখদুঃখপুণ্যাপুণ্যবিষয়াণাং ভাবনাত্চিত্তপ্রসাদনম্ ।।৩৩।।

শব্দার্থ - (মৈত্রী-করুণা-মুদিতা-উপেক্ষাণাম্) মিত্রতা, দয়া, প্রসন্নতা এবং উদাসীনতার (সুখ-দুঃখ-পুণ্য-অপুণ্য-বিষয়াণাম্) সুখী, দুঃখী, পুণ্য এবং অপুণ্য ব্যক্তিদের সাথে (ভাবনাতঃ) ভাব রাখলে (চিত্ত-প্রসাদনম্) চিত্ত প্রসন্ন হয় ।

সূত্রার্থ - সুখী, দুঃখী, পুণ্য এবং অপুণ্য ব্যক্তিদের সাথে ক্রমশ মিত্রতা, দয়া, প্রসন্নতা এবং উদাসীনতার ভাব রাখা উচিত ; এর দ্বারা চিত্ত প্রসন্ন এবং একাগ্র হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তকে প্রসন্ন রাখার উপায় দর্শানো হয়েছে ।

সুখভোগ সম্পন্ন ব্যক্তিদের সাথে মিত্রতা করা উচিত । দুঃখী ব্যক্তিদের সাথে করুণা অর্থাৎ দয়ার দৃষ্টি রাখা উচিত । পুণ্যাত্মাদের সাথে প্রসন্নতার ব্যবহার করা উচিত । পাপীদের প্রতি উপেক্ষা করা উচিত, ঘৃণা নয় । এই রকম ব্যবহার দ্বারা ব্যক্তি ধর্মান্বিত হয়ে যায় । যে ধর্মান্বিত হয় তার চিত্ত প্রসন্ন থাকে । যার মন প্রসন্ন হয় সে শীঘ্র একাগ্রতার অবস্থাকে সম্পাদন করে নেয় । অবশেষে সমাধিকেও শীঘ্র প্রাপ্ত করে নেয় ।।৩৩।।

সূত্র - প্রচ্ছদর্নবিধারণাভ্যাং বা প্রাণস্য ।।৩৪।।

শব্দার্থ - (প্রচ্ছদর্ন-বিধারণাভ্যাম্) নাসিকা দ্বারা বাইরে নিষ্ক্ষেপ করা এবং বাইরে আটকে রাখা (বা) অথবা (প্রাণস্য) প্রাণবায়ুকে, এই দুই প্রকৃতির মাধ্যমেও

চিত্ত একাগ্র হয়।

সূত্রার্থ - অথবা প্রাণবায়ুকে নাসিকা দ্বারা বাইরে নিষ্ক্ষেপ করা এবং বাইরে আটকে রাখা, এই দুই প্রকৃয়ার মাধ্যমেও চিত্ত একাগ্র হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রাণায়াম-এর দ্বারা চিত্তকে একাগ্র করার বিধি বর্ণনা করা হয়েছে।

কোষ্ঠগত বায়ুকে নাসা ছিদ্র দ্বারা বিশিষ্ট যত্ন সহকারে বাইরের দিকে বের করাকে ‘প্রচ্ছদন’ বলা হয়। ‘বিধারণ’ অর্থাৎ প্রাণবায়ুকে আটকে রাখা, একে প্রাণায়াম বলা হয়। এই দুই প্রক্রিয়ার দ্বারা মনের স্থিরতাকে সম্পাদন করা হয়।

এখানে প্রাণায়ামের বিষয়কে সংক্ষেপে বলা হয়েছে। প্রাণায়ামকে বিস্তার পূর্বক দ্বিতীয় পাদে বর্ণনা করা হবে। ১৩৪।

সূত্র - বিষয়বতী বা প্রবৃত্তিরূপম্না মনসঃ স্থিতিনিবন্ধনী। ১৩৫।

শব্দার্থ - (বিষয়বতী) রূপ, রস, গন্ধ ইত্যাদি বিষয় যুক্ত (বা) অথবা (প্রবৃত্তিঃ) অনুভূতি (উৎপন্ন) উৎপন্ন (মনসঃ) মনের (স্থিতি-নিবন্ধনী) স্থিরতাকে বেঁধে রাখে।

সূত্রার্থ - অথবা গন্ধ ইত্যাদি বিষয়ের সাথে সম্বন্ধ দ্বারা উৎপন্ন অনুভূতি মনের স্থিরতাকে বেঁধে রাখে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও মনকে স্থির করার উপায় বলা হয়েছে।

নাসিকার অগ্রভাগে ধারণাকারী সাধকদের যে দিব্য গন্ধের সাক্ষাৎকার হয় তাকে ‘গন্ধপ্রবৃত্তি’ বলা হয়। একই রকমভাবে জিহ্বার অগ্রভাগে দিব্য রসের সাক্ষাৎকার হয় তাকে ‘রসপ্রবৃত্তি’ বলা হয়। তালুতে দিব্য রূপের সাক্ষাৎকার হয় তাকে ‘রূপপ্রবৃত্তি’ বলা হয়। জিহ্বার মধ্যভাগে দিব্য স্পর্শের সাক্ষাৎকার হয় তাকে ‘স্পর্শপ্রবৃত্তি’ বলা হয়। জিহ্বা মূলে দিব্য শব্দের সাক্ষাৎকার হয় তাকে ‘শব্দপ্রবৃত্তি’ বলা হয়। এই সকল প্রবৃত্তির দ্বারা মনকে স্থির করা হয় এবং সমাধির উচ্চ অবস্থায় পৌঁছাতে সাহায্য করে।

একই রকমভাবে সূর্য, চন্দ্র, গ্রহ, মনি, প্রদীপ ইত্যাদিতে ধারণা করলেও দিব্যরূপের সাক্ষাৎকার হয়, এর দ্বারাও মনকে স্থির করা হয়।

যদিও শাস্ত্রের বচন, অনুমান প্রমাণ তথা ঋষি-মুনিদের উপদেশ যথার্থই হয়। তার কারণ হল এনাদের মধ্যে যথার্থ বলার সামর্থ্য রয়েছে। তাহলেও কোনো একটি বিষয়ের সাক্ষাৎকার করা উচিত। যতক্ষণ না কোনো একটি বিষয়ে নিজের ব্যক্তিগত সাক্ষাৎকার হয়, ততক্ষণ পর্যন্ত গুণাদের উপদেশ গুলিতে সন্দেহ থাকবে;

পূর্ণ বিশ্বাস জাগবে না। যদি একটি বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয়ে যায় তাহলে অপবর্গ পর্যন্ত অতি সূক্ষ্ম বিষয় গুলিতেও শ্রদ্ধা উৎপন্ন হয়ে যায়। এইজন্য এই ‘চিত্ত পরিশোধন’-এর নির্দেশ দেওয়া হয়েছে। চিত্ত যখন অস্থির গন্ধ ইত্যাদি বৃত্তি গুলির বিষয়ে বশীকার অবস্থা অর্থাৎ অপবর্বৈরাগ্য উৎপন্ন হয়ে যায় তখন চিত্ত জ্ঞাতব্য বিষয়কে প্রত্যক্ষ করতে সমর্থ হয়ে যায়। এরকম হলে যোগীর শ্রদ্ধা, বীর্য, স্মৃতি এবং সমাধি অবাধ গতিতে সিদ্ধিলাভ করে নেয়।।৩৫।।

সূত্র - বিশোকা বা জ্যোতিষ্মতী।।৩৬।।

শব্দার্থ - (বিশোকা) শোকরহিত (বা) অথবা (জ্যোতিষ্মতী) প্রকাশ যুক্ত অনুভূতি মনের স্থিরতাকে বেঁধে রাখে।

সূত্রার্থ - অথবা শোকরহিত, প্রকাশ যুক্ত প্রবৃত্তি মনের স্থিরতাকে বেঁধে রাখে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও মনকে একাগ্র করার উপায় বলা হয়েছে।

পূর্বসূত্র হতে প্রবৃত্তিরূপে মনসঃ স্থিতিনিবন্ধনী অর্থাৎ “উৎপন্ন প্রবৃত্তি মনের স্থিরতাকে বেঁধে রাখে” এই অংশটির অনুবৃত্তি আসছে; তাহলেই সূত্রের সম্পূর্ণ অর্থ করা সম্ভব। এই সূত্রে দুটি প্রবৃত্তির কথা বলা হয়েছে যার দ্বারা মনকে স্থির করা হয় -

‘বিশোকা বিষয়বতী জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তি’ এবং ‘বিশোকা অস্মিতামাত্র জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তি’। ‘বিশোকা বিষয়বতী জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তি’ অর্থাৎ পদ্ধ রূপী হৃদয়ে ধারণাকারী যোগীর চিত্তের সাক্ষাৎকার হয়; চিত্ত প্রকাশ স্বরূপ এবং আকাশের সমান ব্যাপক হয় (ব্যাপক অর্থাৎ যেমন আকাশ অনেক বস্তুকে নিজের মধ্যে ধারণ করে সেই রকম চিত্তও অনেক বস্তুকে ধারণ করতে সক্ষম। চিত্তের এটাই ব্যাপকতা। কিন্তু আকাশের মত ব্যাপক হয় না; এটা জানা উচিত)। সেখানে চিত্তের স্থিরতা এবং নির্মলতার কারণে শুদ্ধ সাক্ষাৎকার রূপী প্রবৃত্তি সূর্য, চন্দ্র, গ্রহ, মনির প্রকাশের মতো উৎপন্ন হয় এবং সত্ত্বগুণ-এর প্রধানতা হওয়ার ফলে শোকরহিত অবস্থা উৎপন্ন হয়; এই প্রবৃত্তিকে দর্শন করতে থাকলে মন একাগ্র হয়ে যায়।

‘বিশোকা অস্মিতামাত্র জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তি’ অর্থাৎ উপরোক্ত প্রক্রিয়ার মতোই যখন যোগী নিজ স্বরূপে চিত্তকে একাগ্র করে তখন চিত্ত নিস্তরঙ্গ, মহান্ সমুদ্র সদৃশ শান্ত, বিশাল হয়ে কেবল আত্মস্বরূপাকার হয়ে আত্ম অনুভূতিকারী হয়ে যায়। যার বিষয়ে এটাও বলা হয় যে- সেই অবস্থায় চিত্ত দ্বারা আত্ম সাক্ষাৎকারও ঘটে; তখন সে কেবল এটাই জানে যে “আমি আছি”। এখানেও সত্ত্বগুণ-এর প্রধানতা হওয়ার ফলে শোকরহিত অবস্থা উৎপন্ন হয়; এই প্রবৃত্তিকে দর্শন করতে থাকলেও মন একাগ্র হয়ে যায়।

এই বিষয়ে যজুর্বেদ মন্ত্ৰ সংখ্যা ৪০/ ৭ -এর ভাবার্থে মহর্ষি দয়ানন্দ সরস্বতী জী লিখেছেন যে- “সন্ন্যাসী সকল প্রাণীদের আত্মবৎ দর্শনকারী হয়ে মোহ এবং শোক হতে রহিত হয়ে যান” ।।৩৬।।

সূত্র - বীতরাগবিষয়ং বা চিত্তম্ ।।৩৭।।

শব্দার্থ - (বীতরাগ-বিষয়ম্) রাগরহিত যোগীদের চরিত্রকে আলম্বন করলে (বা) অথবা (চিত্তম্) চিত্ত একাগ্র হয় ।

সূত্রার্থ - অথবা বিষয়ের প্রতি রাগরহিত যোগীদের চরিত্রকে আলম্বন করলেও চিত্ত একাগ্র হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও চিত্ত একাগ্র করার উপায় বলা হয়েছে ।

যে সকল যোগী শুদ্ধজ্ঞান, শুদ্ধকর্ম এবং শুদ্ধ উপাসনা দ্বারা নিজের চিত্তকে রাগরহিত অর্থাৎ সাংসারিক বন্ধন হতে রহিত করে নিয়েছেন সেই সকল যোগীদের সঙ্গ করলে অর্থাৎ তাঁরা কিভাবে খান-পান, আচার-ব্যবহার করেন সেগুলিকে অনুকরণ করলে অথবা উপরোক্ত স্বভাব যুক্ত যোগীদের জীবন চরিত পড়ে তাঁদের মতো হওয়ার চেষ্টা করলে শীঘ্র চিত্ত স্থিরত্বকে প্রাপ্ত করে ।

ধ্যান রাখা উচিত যে- যাঁদেরকে আমরা অনুকরণ করব তাঁরা যেন বাস্তবিক রাগ রহিত যোগী হন; অনেক সময় দেখা যায় যে ছদ্মবেশী মানুষ নিজেকে যোগী বলে অন্যকে ভ্রমিত করে । যদি এই ধরনের ব্যক্তির পাল্লায় কেউ পড়ে, তাহলে তার জীবন রসাতলে যাবেই-যাবে । জীবন অনেক মূল্যবান তাই প্রত্যেক পা দেখেশুনে রাখবেন ।।৩৭।।

সূত্র - স্বপ্ননিদ্রাজ্ঞানালম্বনং বা ।।৩৮।।

শব্দার্থ - (স্বপ্ন-নিদ্রা-জ্ঞান-আলম্বনম্) স্বপ্নজ্ঞান এবং নিদ্রাজ্ঞানের আলম্বন করলে (বা) অথবা, চিত্ত একাগ্র হয় ।

সূত্রার্থ - অথবা স্বপ্নজ্ঞান এবং নিদ্রাজ্ঞানের আলম্বন করলেও চিত্ত একাগ্র হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও চিত্ত একাগ্র করার উপায় বলা হয়েছে ।

যোগ বিদ্যার পঠন-পাঠন, শ্রবণ করতে থাকলে মনে ওই ধরনের সংস্কার পড়ে; সেই সংস্কারের কারণে অনেক সময় স্বপ্ন কালেও সেই সব সংস্কার জেগে উঠে এবং বড় আনন্দদায়ক অনুভূতি হয় । সেই অনুভূতিকে উপাসনা কালে চিত্ত দ্বারা স্মরণ করলে চিত্ত একাগ্র হয়ে যায় । আবার একই রকম ভাবে কখনো কখনো সুখ পূর্বক

নিদ্রা হয়ে থাকে সেই নিদ্রাকে উপাসনা কালে স্মরণ করলেও চিত্ত একাগ্র হয়ে যায় ।।৩৮।।

সূত্র - যথাভিমতধ্যানাদ্বা ।।৩৯।।

শব্দার্থ - (যথা-অভিমত-ধ্যানাত্) যেটি অভিষ্ট তার ধ্যান করলে (বা) অথবা, চিত্ত স্থির হয় ।

সূত্রার্থ - অথবা চিত্ত স্থির করার জন্য যেটি অভিষ্ট অর্থাৎ বেশি অনুকূল তার ধ্যান অর্থাৎ প্রয়োগ করে চিত্তকে স্থির করা উচিত ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে- চিত্ত স্থির করার যে সব উপায় এই শাস্ত্রে বর্ণনা করা হয়েছে; এর অতিরিক্ত অন্য কোনোও উপায় কোনো শাস্ত্রে বর্ণিত থাকলে অথবা নিজের কোনো আবিষ্কৃত পদ্ধতি থাকলে সেটা প্রয়োগ করে চিত্তকে একাগ্র করা উচিত । চিত্ত একাগ্র করাই একমাত্র প্রয়োজন । একটি স্থানে মনকে স্থির করতে পারলে অন্য ঈশ্বর প্রভৃতি বস্তুতেও মনকে সরলতা পূর্বক স্থির করা সম্ভব ।।৩৯।।

সূত্র - পরমাণুপরমমহত্ত্বান্তোঃস্য বশীকারঃ ।।৪০।।

শব্দার্থ - (পরমাণু-পরম-মহত্ত্বান্তঃ) সূক্ষ্ম হতে অতি সূক্ষ্ম বস্তু পর্যন্ত এবং বড় হতে অত্যন্ত বড় বস্তু পর্যন্ত (অস্য) এই চিত্তের (বশীকারঃ) বশীকার হয়ে যায় ।

সূত্রার্থ - (পূর্বোক্ত সাত প্রকারের চিত্ত পরিশোধনের কোনও একটিতে সফলতা হয়ে গেলে) ওই যোগীর সূক্ষ্ম হতে অতি সূক্ষ্ম বস্তু পর্যন্ত এবং বড় হতে অত্যন্ত বড় বস্তু পর্যন্ত চিত্তের বশীকার অর্থাৎ নিয়ন্ত্রণ হয়ে যায় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে- পূর্বোক্ত উপায়ে চিত্ত একাগ্র হয়ে গেলে যোগীর চিত্তের অবস্থা কেমন হয় ।

যোগী অভ্যাস করতে-করতে চিত্তকে পূর্ণ ভাবে নিজের অধিকার করে নেন তখন তিনি ছোট হতে অতি ছোট পদার্থে এবং বড় হতে অত্যন্ত বড় পদার্থে নিজের ইচ্ছানুসার যত সময় পর্যন্ত ইচ্ছা করেন তত সময় পর্যন্ত মনকে স্থির করতে সমর্থ হয়ে যান । এই অবস্থাকে উৎকৃষ্ট বশীকার বলা হয় । এই বশীকার দ্বারা পরিপূর্ণ চিত্ত, অভ্যাস সাধ্য চিত্ত পরিশোধনের অপেক্ষা আর থাকে না । কিন্তু আলস্য প্রমাদ করলে, একে ছেড়ে দিলে পুনঃ সেই অবস্থায় পৌঁছাতে অত্যন্ত কঠিন হয়ে যায় । তাই যতক্ষণ পর্যন্ত ক্লেশ দগ্ধবীজবৎ না হয়ে যায় ততক্ষণ পর্যন্ত নিজেকে কৃতকৃত্য মনে করা উচিত নয় ।।৪০।।

অবতরণিকা - চিত্ত স্থির হয়ে গেলে বিষয়ের প্রতি চিত্তের সমাপত্তি অর্থাৎ তদাকার অবস্থা কি ধরনের এবং কোন বিষয়ের হয়ে থাকে, এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

**সূত্র - ক্ষীণবৃত্তেরভিজাতস্যেব মণেগ্রহীতৃগ্রহণগ্রাহ্যেষু
তৎস্বতদঞ্জনতা সমাপত্তিঃ ।।৪১।।**

শব্দার্থ - (ক্ষীণ-বৃত্তেঃ) যাদের রাজসিক এবং তামসিক বৃত্তি ক্ষীণ হয়ে গেছে, এরকম স্বচ্ছ চিত্তের (অভিজাতস্য-ইব মণেঃ) অতি নির্মল স্ফটিকমণির মত (গ্রহীতৃ-গ্রহণ-গ্রাহ্যেষু) জীবাশ্মা, ইন্দ্রিয় এবং ভূতের (তত্-স্ব-তদ্-অঞ্জনতা) তাদের স্বরূপে স্থিত হয়ে তাদের স্বরূপকে প্রাপ্ত করাকে (সমাপত্তিঃ) সমাপত্তি বলা হয়।

সূত্রার্থ - যে সকল যোগীদের রাজসিক এবং তামসিক বৃত্তি ক্ষীণ হয়ে গেছে, এরকম স্বচ্ছ চিত্ত অতি নির্মল স্ফটিকমণির মত জীবাশ্মা, ইন্দ্রিয় এবং ভূতের স্বরূপকে প্রাপ্ত হয়ে তাদের সমান ভাসিত হওয়াকে ‘সমাপত্তি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘সমাপত্তি’-এর পরিভাষার উল্লেখ করা হয়েছে অর্থাৎ যখন জীবাশ্মা সমাধি লাগায় তখন যে বিষয়ে জীবাশ্মা সমাধি লাগায় সেই বিষয়ের প্রতি চিত্তের অবস্থা কেমন হয়।

এখানে একটা বিষয় স্পষ্ট করে নেওয়া উচিত যে- মনের বিষয়াকার অবস্থাকে ‘সমাপত্তি’ বলা হয় এবং বিষয়ের অনুরূপ জ্ঞান হওয়াকে ‘সমাধি’ বলা হয়। ‘সমাপত্তি’ চিত্তের অবস্থা এবং ‘সমাধি’ আশ্মার অবস্থা। ‘সমাধি’-এর কথা আগে বলা হয়েছে, এর পরে ‘সমাপত্তি’-এর চর্চা করা হবে অর্থাৎ সমাধি দশায় মনের কিধরনের অবস্থা হয়ে থাকে সেই বিষয়ে পরে চর্চা করা হয়েছে।

এই সূত্রে স্ফটিকমণিকে উদাহরণ রূপে গ্রহণ করা হয়েছে। স্ফটিক মণি, যে ধরনের বিষয় সামনে আসে সেইরকম নিজে থেকে প্রকট করে; লাল ফুল সামনে নিয়ে আসলে স্ফটিক মণি লাল ফুলের মত দেখায়, আবার নীল ফুল নিয়ে আসলে নীল ফুলের মত দেখায় সেইরকম সমাধি দশায় চিত্তের অবস্থা হয়ে থাকে। যখন জীবাশ্মা তন্মাত্রা প্রভৃতি সূক্ষ্ম বিষয়ে সমাধি লাগায় তখন চিত্ত সেই সূক্ষ্ম বিষয়কে প্রাপ্ত করে বিষয়াকার হয়ে যায়। একই রকমভাবে স্থূল ভূত ঘট-পট-মনুষ্য ইত্যাদি, ইন্দ্রিয়, জীবাশ্মা ইত্যাদির ক্ষেত্রেও জানা উচিত। ‘গ্রহীতৃ’ অর্থাৎ জীবাশ্মা, ‘গ্রহণ’ অর্থাৎ ইন্দ্রিয়, ‘গ্রাহ্য’ অর্থাৎ স্থূল-সূক্ষ্ম ভূত; এইসকল বিষয়ে চিত্তের তদাকারতা হয়।।৪১।।

**সূত্র - তত্র শব্দার্থজ্ঞানবিকল্পৈঃ সংকীর্ণা সবিতর্কা
সমাপত্তিঃ ।।৪২।।**

শব্দার্থ - (তত্র) ওই সমাপত্তির মধ্যে (শব্দ-অর্থ-জ্ঞান-বিকল্পেঃ) শব্দ, অর্থ [বস্তু] এবং জ্ঞানের ভেদ দ্বারা (সংকীর্ণা) যুক্ত থাকে তাকে (সবিতর্কা সমাপত্তিঃ) সবিতর্কা সমাপত্তি বলা হয়।

সূত্রার্থ - ওই সমাপত্তির মধ্যে, যে সমাপত্তি শব্দ, অর্থ (বস্তু) এবং জ্ঞানের ভেদ দ্বারা যুক্ত থাকে, তাকে ‘সবিতর্কা সমাপত্তি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সবিতর্কা সমাপত্তির বর্ণনা করা হয়েছে অর্থাৎ যখন যোগী পূর্বোক্তে বিতর্কানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধি লাগায় তখন চিত্তের অবস্থা কিরূপ হয় এই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যখন যোগী স্থূল পদার্থ গরুতে সমাধি লাগান তখন সেখানে ‘গরু’ ‘শব্দ’, ‘গরু’ নামক ‘অর্থ’ এবং ‘গরু’-র ‘জ্ঞান’ এই তিনটি পৃথক্-পৃথক্ বিদ্যমান থাকে; এই তিনটির মাধ্যমে গরুর বিষয়ে সমাধি লাগান। এই অবস্থায় চিত্তও শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানের ভেদ দ্বারা যুক্ত হয়ে গরু নামক বস্তুর স্বরূপাকার হয়ে ভাসিত হয়; একেই ‘সবিতর্কা সমাপত্তি’ বলা হয়। ১৪২।।

অবতরণিকা - যখন শব্দ এবং জ্ঞানের ভেদ হতে রহিত হয়ে কেবল অর্থের বিশুদ্ধ স্বরূপ মাত্র সমাধি প্রজ্ঞায় বিদ্যমান থাকে তখন চিত্তেও অর্থমাত্র নির্ভাসিত হয়; চিত্তের এই অবস্থাকে ‘নির্বিতর্কা সমাপত্তি’ বলা হয়। সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - স্মৃতিপরিশুদ্ধৌ স্বরূপশূন্যেবার্থমাত্রনির্ভাসা নির্বিতর্কা। ১৪৩।।

শব্দার্থ - (স্মৃতি-পরিশুদ্ধৌ) শব্দ এবং জ্ঞানের ভিন্নতার স্মৃতি নিবৃত্তি হয়ে গেলে (স্বরূপ-শূন্য-ইব) নিজ গ্রহণ স্বরূপ হতে শূন্যের মত হয়ে গেলে (অর্থমাত্র-নির্ভাসা) অর্থমাত্র প্রকাশকারী (নির্বিতর্কা) নির্বিতর্কা সমাপত্তি হয়।

সূত্রার্থ - শব্দ এবং জ্ঞানের ভিন্নতার স্মৃতি নিবৃত্তি হয়ে গেলে এবং চিত্ত দ্বারা বস্তুর জ্ঞান করছি এর থেকেও শূন্যের মত হয়ে গেলে কেবল অর্থমাত্র যখন চিত্তে প্রকাশিত হয় তখন তাকে ‘নির্বিতর্কা সমাপত্তি’ বলে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘নির্বিতর্কা সমাপত্তি’-এর স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

এই সমাপত্তিতে বস্তুর শব্দ এবং জ্ঞান হতে রহিত হয়ে কেবল অর্থমাত্র চিত্তে ভাসিত হয় অর্থাৎ যে স্থূল বিষয়ে সমাধি লাগানো হয় সেই বিষয়ে চিত্ত বিষয়াকার হয়ে যায়, কিন্তু সেই বস্তুর জ্ঞান এবং শব্দ হতে শূন্যের মতো হয়। যেমন- কোনো ছোট শিশুকে মধু চাটালে সে কেবল মধুর স্বাদকেই গ্রহণ করে; মধুর জ্ঞান এবং মধু শব্দ হতে সে নিতান্তই অজ্ঞ থাকে।

অর্থ কাহাকে বলা হয় ? যেটি তন্মাত্রার অবয়ব দ্বারা রচনা বিশেষ হয়ে গরু, ঘট ইত্যাদি উৎপন্ন হয়। যেটি তন্মাত্রা দ্বারা উৎপন্ন সাধারণ ধর্ম, অভিব্যক্ত রূপ কার্য দ্বারা অনুমান করা হয়। নিজের ব্যঞ্জক কারণ দ্বারা উৎপন্ন হয় এবং খন্ড-খন্ড হয়ে গেলে সেটি বিনষ্ট হয়ে যায়। যেটিকে ‘অবয়বী’ বলা হয়। সেই অবয়বী বড়, ছোট, স্পর্শ করার যোগ্য, ব্যবহার করার যোগ্য এবং অনিত্য হয়। সেই অবয়বী দ্বারাই সকল ব্যবহার সম্পন্ন হয়, তাকেই ‘অর্থ’ বলা হয়।।৪৩।।

সূত্র - এতয়ৈব সবিচারা নির্বিচারা চ সূক্ষ্মবিষয়া ব্যাখ্যাতা।।৪৪।।

শব্দার্থ - (এতয়া-ইব) ওই সবিতর্কা এবং নির্বিতর্কা সমাপত্তির বর্ণনা দ্বারাই (সবিচারা নির্বিচারা চ) সবিচারা এবং নির্বিচারা (সূক্ষ্ম-বিষয়া) সূক্ষ্ম বস্তু বিষয়ক যুক্ত (ব্যাখ্যাতা) ব্যাখ্যানও বুঝে নেওয়া উচিত।

সূত্রার্থ - পূর্বোক্ত সবিতর্কা এবং নির্বিতর্কা সমাপত্তির বর্ণনা দ্বারাই সূক্ষ্ম বস্তু বিষয়ক সবিচারা এবং নির্বিচারা সমাপত্তির বর্ণনাও বুঝে নেওয়া উচিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সবিচারা এবং নির্বিচারা সমাপত্তির বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন ‘দেশ’ (বস্তুর উপর-নীচে, ‘দানদিক-বাঁদিক ভাগ), ‘কাল’ (যে সময়ে বস্তুর সাক্ষাৎকার করা হচ্ছে) এবং ‘নিমিত্ত’ (যে উপাদান কারণ দ্বারা সেই বস্তুর উৎপত্তি হয়েছে) এই সকল অনুভব সহিত তন্মাত্রা ইত্যাদি সূক্ষ্মভূতে চিত্তের তদাকারতা হয় তখন তাকে ‘সবিচারা সমাপত্তি’ বলা হয়। আবার যখন দেশ, কাল এবং নিমিত্তের জ্ঞান থাকে না; কেবল সূক্ষ্ম ভূত তন্মাত্রা ইত্যাদি বস্তুর স্বরূপে চিত্তের তদাকারতা হয় তখন তাকে ‘নির্বিচারা সমাপত্তি’ বলা হয়। এখানে একটা কথা জানা উচিত যে- সবিতর্কা এবং নির্বিতর্কা সমাপত্তি স্থূল বস্তু বিষয়ক হয় এবং সবিচারা এবং নির্বিচারা সমাপত্তি সূক্ষ্ম বস্তু বিষয়ক হয়।।৪৪।।

সূত্র - সূক্ষ্মবিষয়ত্বং চালিঙ্গপর্যবসানম্।।৪৫।।

শব্দার্থ - (সূক্ষ্ম-বিষয়ত্বম্) জড় পদার্থের সূক্ষ্মতা (চ) এবং (অলিঙ্গ-পর্যবসানম্) প্রকৃতি পর্যন্ত হয়।

সূত্রার্থ - জড় পদার্থের সূক্ষ্মতা মূল প্রকৃতি পর্যন্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে জড় পদার্থের সূক্ষ্মতার সীমার উল্লেখ করা হয়েছে।

পার্থিব বস্তুর সূক্ষ্ম বিষয় অর্থাৎ উপাদান কারণ হল গন্ধতন্মাত্রা। একইভাবে জলীয় বস্তুর সূক্ষ্ম বিষয় রসতন্মাত্রা। এইভাবে অন্য আগ্নেয় ইত্যাদি বস্তুর ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত। তন্মাত্রার সূক্ষ্ম বিষয় অহংকার। অহংকার-এর সূক্ষ্ম বিষয়

মহৎতত্ত্ব। মহৎতত্ত্বের উপাদান কারণ প্রকৃতি। প্রকৃতি হতে অন্য কোনও সূক্ষ্ম বিষয় অর্থাৎ উপাদান কারণ নেই। যদিও প্রকৃতি হতে সূক্ষ্ম আত্মা এবং পরমাত্মা রয়েছে। কিন্তু সেগুলি প্রকৃতির উপাদান কারণ নয়। তাঁদের সূক্ষ্মতা প্রকৃতি হতে সম্পূর্ণ ভিন্ন।।৪৫।।

সূত্র - তা এব সর্বীজঃ সমাধিঃ ।।৪৬।।

শব্দার্থ - (তাঃ) উপরোক্ত চারটি সমাপত্তি (এব) অবশ্যই (সর্বীজঃ) বাহ্য বস্তু আলম্বন যুক্ত (সমাধিঃ) সমাধি।

সূত্রার্থ - উপরোক্ত চারটি সমাপত্তিকে সর্বীজ সমাধি অর্থাৎ বাহ্য বস্তু আলম্বনকারী সমাধি বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সর্বীজ সমাধি কাকে বলা হয় এই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

যেহেতু উপরোক্ত চারটি সমাপত্তি বাহ্য বস্তুকে আলম্বন করে, অতএব সমাধিকেও সর্বীজ বলা হয় অর্থাৎ বাহ্য বস্তু বিষয়ক সমাধি হয়। ওই সমাধি গুলির মধ্যে সবিতর্কা, নির্বিতর্কা সমাধি স্থূল বস্তু বিষয়ক হয় এবং সবিচার, নির্বিচার সমাধি সূক্ষ্ম বস্তু বিষয়ক হয়।

স্থূল বস্তুর অভিপ্রায় হল- পৃথিবী গুরু ঘট ইত্যাদি। সূক্ষ্ম বস্তুর অভিপ্রায় হল- তন্মাত্রা, ইন্দ্রিয়, মন, অহংকার, মহৎতত্ত্ব এবং জীবাত্মা। এই সমাধিতে বাহ্য বস্তুর সম্বন্ধ হওয়ায় একে ‘সর্বীজ’ বলা হয়। আত্ম সাক্ষাৎকারের সময় চিত্ত এবং অহংকারের সাথে সম্বন্ধ থাকায় অস্মিতানুগত সম্প্রজ্ঞাত সমাধিকেও সর্বীজ সমাধি বলা হয়। অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সাথে বাহ্য বস্তুর সম্বন্ধ না থাকায় একে ‘নির্বীজ সমাধি’ বলা হয়।।৪৬।।

সূত্র - নির্বিচারবৈশারদ্যেঽধ্যাত্মপ্রসাদঃ ।।৪৭।।

শব্দার্থ - (নির্বিচার-বৈশারদ্যে) নির্বিচার সমাপত্তির নির্মলতা হয়ে গেলে (অধ্যাত্ম-প্রসাদঃ) যথার্থ বস্তু বিষয়ক প্রজ্ঞার প্রকাশ উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - নির্বিচার সমাপত্তির নির্মলতা হয়ে গেলে যথার্থ বস্তু বিষয়ক প্রজ্ঞার প্রকাশ উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - নির্বিচার সমাপত্তির পরিপক্ব অবস্থা হয়ে গেলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে এই সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে।

রাজসিক এবং তামসিক রূপী অশুদ্ধির আবরণ মল হতে পৃথক হয়ে প্রকাশ

স্বভাবকারী চিত্ত রজোগুণ ও তমোগুণ দ্বারা অভিভূত না হয়ে স্বচ্ছ নির্মল ধারায় যখন প্রবাহিত হয় তখন তাকে ‘বৈশারদ্য’ বলা হয়। যখন যোগীর এই ‘বৈশারদ্য’ উৎপন্ন হয় তখন আধ্যাত্ম জ্ঞানের বিকাশ হয় এবং যথার্থ বস্তু বিষয়ক, ক্রমের অপেক্ষা না রেখে বস্তুর স্পষ্ট জ্ঞান হয়। যার বিষয়ে বলা হয়েছে -

প্রজ্ঞাপ্রসাদমারুহ্য অশোচ্যঃ শোচতো জনান্।

ভূমিষ্ঠানিব শৈলস্থঃ সর্বান্প্রাজ্ঞোঽনুপশ্যতি।।

অর্থাৎ যোগী উৎকৃষ্ট জ্ঞানে আরুঢ় হয়ে শোকহীন যোগী, শোকমগ্ন প্রাণীদের এরকম দেখেন যেমন পর্বতে স্থিত ব্যক্তি, ভূমিতে স্থিত ব্যক্তিদের দেখেন। ১৪৭।।

সূত্র - ঋতন্তরা তত্র প্রজ্ঞা। ১৪৮।।

শব্দার্থ - (ঋতন্তরা) সত্য জ্ঞানকেই ধারণকারী (তত্র) নির্বিচারী সমাপত্তির পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে (প্রজ্ঞা) বুদ্ধি উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - নির্বিচারী সমাপত্তির পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে সত্য জ্ঞানকেই ধারণকারী বুদ্ধি উৎপন্ন হয়। ১৪৮।।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে নির্বিচারী সমাপত্তির ফলের বর্ণনা করা হয়েছে।

একাগ্র চিত্ত যুক্ত যোগীর যখন সেই ‘বৈশারদ্য’ অবস্থা প্রাপ্ত হয় তখন তাঁর যে প্রজ্ঞার প্রাপ্তি হয় তার নাম হল ‘ঋতন্তরা প্রজ্ঞা’। তখন সেই যোগী কেবল সত্যকেই ধারণ করে, সেখানে বিপরীত জ্ঞানের কোনো গন্ধ মাত্র থাকে না। তাই বলা হয়েছে-

আগমেনানুমানেন ধ্যানাভ্যাসরসেন চ।

ত্রিধা প্রকল্পয়ন্তপ্রজ্ঞাং লভতে যোগমুত্তমম্।।

অর্থাৎ যোগী বেদ ইত্যাদি সত্য শাস্ত্রের পঠন এবং শ্রবণ দ্বারা, সেই শাস্ত্রের মনন এবং নিদিধ্যাসন দ্বারা তিন প্রকারের বুদ্ধিকে উৎপন্ন করে, উত্তম যোগকে প্রাপ্ত করেন।।

এই অবস্থায় যোগী এটা জেনে নেন যে আত্মা, শরীর, ইন্দ্রিয়, মন, বুদ্ধি কী ? দুঃখ কেনো হয় ? সুখী হওয়ার উপায় কি ? অন্য প্রাণীদের সঙ্গে কি ধরনের ব্যবহার করা উচিত ? ইত্যাদি। ১৪৮।।

অবতরণিকা - ‘ঋতন্তরা প্রজ্ঞা’-র আরও কি বিশেষতা রয়েছে, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - শ্রুতানুমানপ্রজ্ঞাভ্যামন্যবিষয়া বিশেষার্থত্বাৎ। ১৪৯।।

শব্দার্থ - (শ্রুত-অনুমান-প্রজ্ঞাভ্যাম) শব্দ প্রমাণ তথা অনুমান প্রমাণ দ্বারা

উৎপন্ন প্রজ্ঞা হতে (অন্য-বিষয়া) ঋতন্তরা প্রজ্ঞা ভিন্ন বিষয় যুক্ত হয় (বিশেষ-অর্থত্বাত) বস্তুর বিশেষ স্বরূপের প্রকাশক হওয়ায়।

সূত্রার্থ - বস্তুর বিশেষ স্বরূপের প্রকাশক হওয়ায়, ঋতন্তরা প্রজ্ঞা, শব্দ প্রমাণ তথা অনুমান প্রমাণ দ্বারা উৎপন্ন প্রজ্ঞা হতে ভিন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ঋতন্তরা প্রজ্ঞার বিশেষতাকে দেখানো হয়েছে।

শব্দ প্রমাণ এবং অনুমান প্রমাণ দ্বারা পদার্থ বিষয়ক সামান্য জ্ঞান হয়। শব্দ প্রমাণ এবং অনুমান প্রমাণ দ্বারা বস্তুর বিশেষতাকে জানা সম্ভব নয়। যেমন- যে বস্তুর দেশান্তর প্রাপ্তি হয়, সেই বস্তুতে গতি রয়েছে এবং যে বস্তুর দেশান্তর প্রাপ্তি হয় না, তাতে গতি নেই; এই অনুমান দ্বারা বস্তুর গতি সম্পর্কে বিশেষ জ্ঞান হয় না। আবার আত্মা, মন প্রভৃতি অনেক সূক্ষ্ম বিষয় রয়েছে যা সামান্য লৌকিক মনুষ্য দ্বারা প্রত্যক্ষ করা সম্ভব নয় এবং সেই সব বস্তুর অভাবও নেই। তাই সে সকল বস্তুকে প্রত্যক্ষ করতে হলে ঋতন্তরা প্রজ্ঞার দ্বারাই প্রত্যক্ষ করা সম্ভব। এইজন্য একে বস্তুর বিশেষ স্বরূপের প্রকাশক বলা হয়েছে।।৪৯।।

অবতরণিকা - ঋতন্তরা প্রজ্ঞা দ্বারা যোগীর নতুন-নতুন সংস্কার উৎপন্ন হয়; এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তজ্জঃ সংস্কারোऽন্যসংস্কারপ্রতিবন্ধী।।৫০।।

শব্দার্থ - (তত্-জঃ) ওই ঋতন্তরা প্রজ্ঞা দ্বারা উৎপন্ন (সংস্কারঃ) সংস্কার (অন্য-সংস্কার-প্রতিবন্ধী) অন্য সকল ব্যুত্থান সংস্কারের প্রতিবন্ধক হয়।

সূত্রার্থ - ওই ঋতন্তরা প্রজ্ঞা দ্বারা উৎপন্ন সংস্কার অন্য সকল ব্যুত্থান সংস্কারের প্রতিবন্ধক হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও ঋতন্তরা প্রজ্ঞার বিশেষতাকে বলা হয়েছে।

সমাধি প্রজ্ঞা দ্বারা উৎপন্ন সংস্কার ব্যুত্থান সংস্কারের রাশিকে বাধিত করে। ব্যুত্থান সংস্কার অভিভূত হয়ে গেলে ব্যুত্থান সংস্কারের বৃত্তি গুলি আর উৎপন্ন হয় না। ব্যুত্থান সংস্কারের বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে সমাধি স্থির হয়ে যায় এবং ওই সমাধি প্রজ্ঞা দ্বারা নতুন-নতুন সংস্কারের রাশি উৎপন্ন হয় এবং ওই রাশি দ্বারা প্রজ্ঞা এবং প্রজ্ঞা দ্বারা সংস্কার উৎপন্ন হতে থাকে। ওই প্রজ্ঞা জনিত সংস্কার ক্লেশের নাশক হওয়ায় চিত্তকে ভোগের দিকে প্রবৃত্তি করতে দেয় না। বস্তুত চিত্তের চেষ্টা বিবেকখ্যাতি পর্যন্ত হয়।।৫০।।

অবতরণিকা - ঋতন্তরা প্রজ্ঞা দ্বারা উৎপন্ন সংস্কারসমুদায়ের কি হয়; সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তস্যাপি নিরোধে সর্বনিরোধান্নির্বীজঃ সমাধিঃ ।।৫১।।

শব্দার্থ - (তস্য) ওই ঋতন্তরা প্রজ্ঞা জনিত সংস্কারকে (অপি) ও (নিরোধে) নিরুদ্ধ করে দিলে (সর্ব-নিরোধাত্) সকল চিত্তবৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে (নির্বীজঃ সমাধিঃ) নির্বীজ সমাধি হয় ।

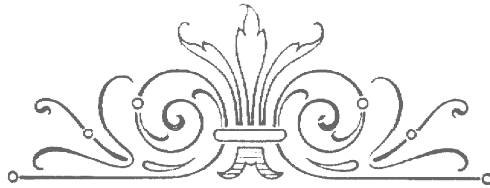
সূত্রার্থ - ওই ঋতন্তরা প্রজ্ঞা জনিত সংস্কারকেও নিরুদ্ধ করে দিলে সকল চিত্তবৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে নির্বীজ সমাধি হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে নির্বীজ সমাধি কখন হয়, এটা বলার সাথে সাথে জীবাত্মার মোক্ষ অবস্থার কথা বর্ণনা করা হয়েছে ।

যখন যোগী নির্বীজ সমাধি অর্থাৎ অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির অবস্থায় পৌঁছে যান তখন ব্যুত্থান অবস্থার সংস্কার অর্থাৎ সম্প্রজ্ঞাত সমাধির জ্ঞানকে এবং সংস্কারকেও নিরুদ্ধ করে দেন ।

নিরোধ জনিত সংস্কার চিত্তের কার্যের বিরোধী হয় অর্থাৎ ভোগ এবং অপবর্গকে সিদ্ধ করা চিত্তের কার্য, সে সকল সংস্কার চিত্তের এই কার্যকে বিরোধ করে । সমাপ্তাধিকার চিত্ত কৈবল্য প্রদানকারী নিরোধ সংস্কারের সহিত সমাপ্ত হয়ে যায় । ওই অবস্থায় জীবাত্মা নিজের এবং ঈশ্বরের স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়ে যায় । ওই সময় তাকে শুদ্ধ, কেবল, মুক্ত বলা হয় । দেহাবসানের পর জীবাত্মার মোক্ষ হয়ে যায় । শরীর থাকতে-থাকতে মোক্ষের অধিকারী হয়ে যাওয়ায়; এই অবস্থাকে ‘জীবন্মুক্ত’ বলা হয় । শরীরাবসানের পর সে ঈশ্বরের ব্যবস্থানুসার মোক্ষে ঈশ্বরের আনন্দকে ভোগ করতে থাকে, এই অবস্থাকে ‘বিদেহমুক্ত’ বলা হয় ।।৫১।।

।।ইতি প্রথম সমাধি পাদ ।।



প্রশ্ন পত্র

(ক) সঠিক উত্তরটি বেছে নিন।

- (০১) এই শাস্ত্রের প্রণেতা কে ? মহর্ষি - (ক) গৌতম (খ) ব্যাস (গ) পতঞ্জলি (ঘ) বাৎসর্যয়ন।
- (০২) যোগের অর্থ হল, চিত্তের - (ক) সমস্ত বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়া (খ) বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়া (গ) কিছু বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়া (ঘ) তিনটিই ঠিক।
- (০৩) চিত্তের কতগুলি অবস্থা রয়েছে ? - (ক) একটি (খ) দুইটি (গ) পাঁচটি (ঘ) ছয়টি।
- (০৪) চিত্তের কোনটি অবস্থা সবথেকে নিম্ন ? - (ক) ক্ষিপ্ত (খ) মূঢ় (গ) বিক্ষিপ্ত (ঘ) একাগ্র।
- (০৫) সম্প্রজ্ঞাত সমাধির কারণ হল - (ক) বৃত্তি নিরোধ (খ) অপরবৈরাগ্য (গ) সর্ব বৃত্তি নিরোধ (ঘ) পরবৈরাগ্য।
- (০৬) চিত্তের কোন অবস্থাকে যোগ বলা হয় - (ক) ক্ষিপ্ত (খ) মূঢ় (গ) বিক্ষিপ্ত (ঘ) একাগ্র।
- (০৭) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির কারণ হল - (ক) বৃত্তি নিরোধ (খ) অপরবৈরাগ্য (গ) সর্ব বৃত্তি নিরোধ (ঘ) পরবৈরাগ্য।
- (০৮) অপরবৈরাগ্যের ফল হল - (ক) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি (খ) সম্প্রজ্ঞাত সমাধি (গ) সবিতর্ক সমাপত্তি (ঘ) নির্বিচার সমাপত্তি।
- (০৯) পরবৈরাগ্যের ফল হল - (ক) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি (খ) সম্প্রজ্ঞাত সমাধি (গ) সবিতর্ক সমাপত্তি (ঘ) নির্বিচার সমাপত্তি।
- (১০) সূক্ষ্ম বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয় - (ক) বিচার সমাধিতে (খ) বিতর্ক সমাধিতে (গ) আনন্দ সমাধিতে (ঘ) অস্মিতা সমাধিতে।
- (১১) আত্মার সাক্ষাৎকার হয় - (ক) বিচার সমাধিতে (খ) বিতর্ক সমাধিতে (গ) আনন্দ সমাধিতে (ঘ) অস্মিতা সমাধিতে।
- (১২) ক্ষিপ্ত অবস্থায় প্রধান হয় - (ক) রজোগুণ (খ) তমোগুণ (গ) সত্ত্বগুণ (ঘ) তিনটিই ঠিক।
- (১৩) সকল বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে - (ক) সর্বজ্ঞ সমাধি হয় (খ) নির্বীজ সমাধি হয় (গ) সম্প্রজ্ঞাত সমাধি (ঘ) তিনটিই ঠিক।
- (১৪) মূঢ় অবস্থায় প্রধান হয় - (ক) রজোগুণ (খ) তমোগুণ (গ) সত্ত্বগুণ (ঘ) তিনটিই ঠিক।
- (১৫) একাগ্র অবস্থায় প্রধান হয় - (ক) রজোগুণ (খ) তমোগুণ (গ) সত্ত্বগুণ (ঘ) তিনটিই ঠিক।
- (১৬) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির ভেদ হল - (ক) বিতর্কানুগত সমাধি (খ) উপায়প্রত্যয়

সমাধি (গ) বিচারানুগত সমাধি (ঘ) তিনটিই ঠিক।

- (১৭) সকল বৃত্তি নিরুদ্ধ হয়ে গেলে - (ক) বিতর্কানুগত সমাধি হয় (খ) বিচারানুগত সমাধি হয় (গ) সম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয় (ঘ) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয়।
- (১৮) চিত্তের বিঘ্ন কতগুলি? - (ক) পাঁচ (খ) নয় (গ) সাত (ঘ) দশ।
- (১৯) চিত্তের উপবিঘ্ন কতগুলি? - (ক) পাঁচ (খ) নয় (গ) সাত (ঘ) দশ।
- (২০) বিঘ্ন এবং উপ বিঘ্নের বিনাশের জন্য অভ্যাস করা উচিত - (ক) ঈশ্বর তত্ত্বের (খ) ঈশ্বর ও আত্মা তত্ত্বের (গ) প্রকৃতি তত্ত্বের (ঘ) তিনটি তত্ত্বের।
- (২১) বেদ ইত্যাদি সকল সত্য শাস্ত্রে বিশ্বাস উৎপন্ন করার জন্য ঐ সকল গ্রন্থে বর্ণিত কথাগুলির - (ক) সকল প্রত্যক্ষ করা উচিত (খ) একাধিক প্রত্যক্ষ করা উচিত (গ) একটিই প্রত্যক্ষ পর্যাপ্ত (ঘ) প্রত্যক্ষ করার আবশ্যিকতা নেই।
- (২২) 'সংবেগ' শব্দের অর্থ হল - (ক) অভ্যাস-বৈরাগ্য (খ) অভ্যাস-বিবেক (গ) বিবেক-বৈরাগ্য (ঘ) বিবেক-বৈরাগ্য-অভ্যাস।
- (২৩) চিত্তের কোন অবস্থাকে সমাধি দশা বলা হয় - (ক) ক্ষিপ্ত (খ) মূঢ় (গ) বিক্ষিপ্ত (ঘ) একাগ্র।
- (২৪) চিত্তের কোন অবস্থায় সম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয় - (ক) ক্ষিপ্ত (খ) মূঢ় (গ) নিরুদ্ধ (ঘ) একাগ্র।
- (২৫) চিত্তের কোন অবস্থায় অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি হয় - (ক) ক্ষিপ্ত (খ) মূঢ় (গ) নিরুদ্ধ (ঘ) একাগ্র।
- (২৬) চিত্তের কতগুলি বৃত্তি রয়েছে - (ক) দুই (খ) তিন (গ) চার (ঘ) পাঁচ।
- (২৭) তন্মাত্রার উপাদান কারণ হল - (ক) প্রকৃতি (খ) মহৎতত্ত্ব (গ) অহংকার (ঘ) স্থূলভূত।
- (২৮) অহংকারের উপাদান কারণ হল - (ক) প্রকৃতি (খ) মহৎতত্ত্ব (গ) তন্মাত্রার (ঘ) স্থূলভূত।
- (২৯) মহৎতত্ত্বের উপাদান কারণ হল - (ক) প্রকৃতি (খ) অহংকার (গ) তন্মাত্রার (ঘ) স্থূলভূত।
- (৩০) স্থূলভূতের উপাদান কারণ হল - (ক) প্রকৃতি (খ) অহংকার (গ) তন্মাত্রার (ঘ) মহৎতত্ত্ব।

(খ) নিম্ন লিখিত প্রশ্নের সংক্ষেপে উত্তর লিখুন।

- (০১) কোন্ অবস্থায় জীবাত্মা নিজেকে বৃত্তির সমান মনে করে?
- (০২) বিপর্যয় শব্দের অর্থ কী?
- (০৩) বৃত্তি নিরোধ করার জন্য কী কী উপায় অবলম্বন করা উচিত?

- (০৪) 'সৎকার' শব্দের অর্থ কী ?
- (০৫) 'প্রণিধান' শব্দের অর্থ কী ?
- (০৬) 'ঋতন্তরা' শব্দের অর্থ কী ?
- (০৭) 'অলঙ্কৃত্তমিকত্ব' শব্দের অর্থ কী ?
- (০৮) 'সমাপত্তি' শব্দের অর্থ কী ?
- (০৯) 'অবিরতি' শব্দের অর্থ কী ?
- (১০) বিতর্ক সমাধিতে কোন্-কোন্ বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয় ?
- (১১) বিচার সমাধিতে কোন্-কোন্ বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয় ?
- (১২) আনন্দ সমাধিতে কোন্-কোন্ বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয় ?
- (১৩) অস্মিতা সমাধিতে কোন্-কোন্ বিষয়ের সাক্ষাৎকার হয় ?
- (১৪) 'সবীজ সমাধি' কাকে বলে ?
- (১৫) 'নিবীজ সমাধি' কাকে বলে ?
- (১৬) 'সবিতর্কা সমাপত্তি' কাকে বলে ?
- (১৭) 'নির্বিতর্কা সমাপত্তি' কাকে বলে ?
- (১৮) 'সবিচারা সমাপত্তি' কাকে বলে ?
- (১৯) 'নির্বিচারা সমাপত্তি' কাকে বলে ?
- (২০) সুখী-দুঃখী-পুণ্য-অপুণ্য ব্যক্তিদের প্রতি কীধরনের ব্যবহার করা উচিত ?

(গ) সূত্রার্থ লিখুন।

- (১) যোগশ্চিন্তবৃত্তিনিরোধঃ।
- (২) তদা দৃষ্ট্বঃ স্বরূপে'বস্থানম্।
- (৩) বৃত্তিসারূপ্যমিতরত্র।
- (৪) অভ্যাসবৈরাগ্যাভ্যাং তন্নিরোধঃ।
- (৫) স তু দীর্ঘকালনৈরন্তর্যসৎকারাসেবিতো দৃঢ়ভূমিঃ।
- (৬) দৃষ্টানুশ্রবিকবিষয়বিতৃষ্ণস্য বশীকারসংজ্ঞা বৈরাগ্যম্।
- (৭) তৎপরং পুরুষখ্যাতে'র্গণবৈতৃষ্ণ্যম্।
- (৮) শ্রদ্ধাবীর্যস্মৃতিসমাধিপ্রজ্ঞাপূর্বক ইতরেষাম্।
- (৯) তীব্রসংবেগানামাসন্নঃ।
- (১০) ঈশ্বরপ্রণিধানাদ্বা।
- (১১) ক্লেশকর্মবিপাকাশয়ৈরপরামৃষ্টঃ পুরুষবিশেষ ঈশ্বরঃ।
- (১২) তস্য বাচকঃ প্রণবঃ।

(১৩) তজ্জপস্তদর্থভাবনম্ ।

(১৪) তৎপ্রতিষেধার্থমেকতত্ত্বভ্যাসঃ ।

(১৫) মৈত্রীকরুণামুদিতোপেক্ষাণাং সুখদুঃখপুণ্যাপুণ্যবিষয়াণাং ভাবনাত-
শ্চিত্তপ্রসাদনম্ ।

(ঘ) সমাধি পাদের যে কোনোও পাঁচটি সূত্র লিখুন ।

(ঙ) নিম্নলিখিত প্রশ্ন গুলির ব্যাসভাষ্যানুসার ব্যাখ্যা করুন ।

(১) চিত্তের অবস্থা সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

(২) চিত্তের বৃত্তি সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

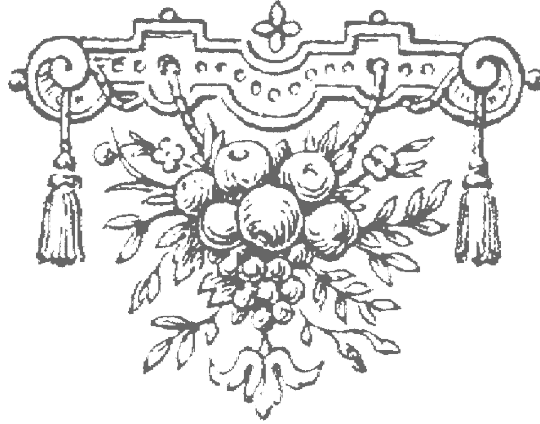
(৩) সমাধি সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

(৪) ঈশ্বর এবং জীবাত্মা সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

(৫) জড় পদার্থের সূক্ষ্মতা কীভাবে এবং কত দূর যায়, এই সম্পর্কে বিস্তার
পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

(৬) চিত্ত একাগ্র করার বিভিন্ন উপায় সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক ব্যাখ্যা করুন ।

।। সমাপ্ত ।।



দ্বিতীয় সাধনপাদ

অবতরণিকা - আগের পাদে একাগ্রচিত্ত যুক্ত সাধকদের জন্য ‘যোগ’-কে বলা হয়েছে। এখন চঞ্চল চিত্ত যুক্ত ব্যক্তিরও কিভাবে যোগের সাথে যুক্ত হতে পারে, সেই বিষয়কে এখন শুরু করা হচ্ছে -

সূত্র - তপঃস্বাধ্যায়েশ্বরপ্রণিধানানি ক্রিয়াযোগঃ ।।১।।

শব্দার্থ - (তপঃ) তপ (স্বাধ্যায়) স্বাধ্যায় এবং (ঈশ্বরপ্রণিধানানি) ঈশ্বরপ্রণিধান, এই তিনটি সাধনকে (ক্রিয়াযোগঃ) ক্রিয়াযোগ বলা হয়।

সূত্রার্থ - তপ, স্বাধ্যায় এবং ঈশ্বরপ্রণিধানকে ক্রিয়াযোগ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ক্রিয়াযোগ-এর স্বরূপকে বর্ণনা করা হয়েছে।

অতপস্বী ব্যক্তির যোগ কখনো সিদ্ধ হয় না। প্রবাহের দ্বারা অনাদি কর্ম যুক্ত এবং ক্লেশের বাসনায় চিত্রিত বিষয়জালকে উপস্থিতকারী অশুদ্ধি, তপস্যা ছাড়া ছিন্ন-ভিন্ন হয় না। এইজন্য সূত্রে ‘তপ’-কে গ্রহণ করা হয়েছে এবং সেই তপস্যা সাধকদের দ্বারা এভাবে করা উচিত যাতে তার চিত্ত প্রসন্নকারী হয়, দুঃখদায়ী যেন না হয়। এরকম যোগীরা মনে করেন। ‘তপ’ অর্থাৎ দ্বন্দ্বকে সহন করা। যেমন সুখ-দুঃখ, হানি-লাভ ইত্যাদি যেটি পরে বর্ণনা করা হবে।

‘স্বাধ্যায়’ অর্থাৎ প্রণব ইত্যাদি পবিত্র মন্ত্রের জপ এবং মোক্ষ শাস্ত্রের অধ্যয়ন করা।

‘ঈশ্বরপ্রণিধান’ অর্থাৎ সকল কর্মকে এবং সকল ধন-সম্পত্তি শরীর ইত্যাদিকে পরম গুরু ঈশ্বরকে অর্পিত করে দেওয়া এবং তার কোনও লৌকিক ফলের ইচ্ছা না করা অর্থাৎ এটি আমি অর্পিত করছি এবং এর বদলে আমায় চাকুরী ইত্যাদি প্রদান করুন; এই ধরনের কামনা না করা।।১।।

অবতরণিকা - উল্লিখিত ক্রিয়াযোগ করলে কি হয়; এই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - সমাধিভাবনার্থঃ ক্লেশতনূকরণার্থশ্চ ।।২।।

শব্দার্থ - (সমাধি-ভাবনার্থঃ) সমাধির উৎপত্তির জন্য (ক্লেশ-তনূ-করণার্থঃ) ক্লেশকে নির্বল করার জন্য (চ) এবং।

সূত্রার্থ - উক্ত ক্রিয়াযোগ সমাধির উৎপত্তি এবং অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশকে নির্বল করার জন্য করা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ক্রিয়াযোগ-এর ফলের উল্লেখ করা হয়েছে।

উক্ত ক্রিয়াযোগের অনুষ্ঠান করলে অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ নির্বল হয় এবং সমাধির উৎপত্তি হয়। সেই সমাধির অভ্যাস করতে থাকলে বিবেকখ্যাতি (অর্থাৎ প্রকৃতি এবং পুরুষের পৃথকতার জ্ঞান) উৎপন্ন হয় এবং সেই নির্বল ক্লেশকে ‘বিবেকখ্যাতি’ রূপী অগ্নি দ্বারা দম্ববীজ-এর ন্যায় করা হয়। যখন ক্লেশ দম্ববীজ হয়ে যায় এবং চিত্তের ভোগ ও অপবর্গ (মোক্ষ) রূপী প্রয়োজন সিদ্ধ হয়ে যায় তখন সে প্রকৃতিতে বিলীন হওয়ার যোগ্য হয়ে যায়। তাই ক্রিয়াযোগের অনুষ্ঠান করা অত্যাৱশ্যক। ১২।।

অবতরণিকা - উপরোক্ত ক্লেশ কী এবং কত প্রকারের? তাহা নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হল -

সূত্র - অবিদ্যাঃ স্মিতা রাগ দ্বেষাভিনিবেশাঃ পঞ্চঃ ক্লেশাঃ।। ৩।।

শব্দার্থ - (অবিদ্যা-অস্মিতা-রাগ-দ্বেষ-অভিনিবেশাঃ) অবিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ (পঞ্চ-ক্লেশাঃ) এই পাঁচটিকে ক্লেশ বলা হয়।

সূত্রার্থ - অবিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ এই পাঁচটিকে ক্লেশ (অর্থাৎ দুঃখ উৎপন্নকারী) বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অবিদ্যা ইত্যাদি পাঁচটি ক্লেশের কথা বলা হয়েছে।

‘ক্লেশ’-এর অর্থ হল পাঁচ প্রকারের মিথ্যাজ্ঞান। এই মিথ্যাজ্ঞানের সাথে অধর্মের পরস্পর সম্বন্ধ রয়েছে। এই মিথ্যাজ্ঞানই আমাদেরকে বন্ধনে বাঁধে। মিথ্যাজ্ঞান অধর্মকে উৎপন্ন করে এবং অধর্ম মিথ্যাজ্ঞানকে উৎপন্ন করে। এই দুটি মিলিত হয়ে জীবাত্মার জন্ম-মরণের চক্রকে চালাতে থাকে। এই পাঁচটি মিথ্যাজ্ঞান সমস্ত অধর্ম এবং দুঃখের কারণ। যেখানে মিথ্যাজ্ঞান থাকে সেখানে অধর্মাচরণ এবং অনীশ্বরোপাসনা অবশ্যই থাকে এবং যেখানে অধর্মাচরণ এবং অনীশ্বরোপাসনা থাকে সেখানে দুঃখ অনিৱার্যরূপে থাকবেই থাকবে। এই জন্য সমস্ত দুঃখ হতে মুক্ত হওয়ার জন্য এবং নিত্যানন্দকে প্রাপ্ত করার জন্য শুদ্ধজ্ঞান, শুদ্ধকর্ম এবং শুদ্ধোপাসনাকে গ্রহণ করা উচিত। ১৩।।

**সূত্র - অবিদ্যা ক্ষেত্রমুত্তরেষাম্
প্রসুপ্তনুবিচ্ছিন্নোদারাগাম্।। ৪।।**

শব্দার্থ - (অবিদ্যা) মিথ্যাজ্ঞান হল (ক্ষেত্রম্) কারণ (উত্তরেষাম্) পরের অস্মিতা,

রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ ক্লেশের (প্রসুপ্ত-তনু-বিচ্ছিন্ন-উদারাগাম) প্রসুপ্ত, তনু, বিচ্ছিন্ন এবং উদার অবস্থা যুক্তদের।

সূত্রার্থ - প্রসুপ্ত, তনু, বিচ্ছিন্ন এবং উদার অবস্থা যুক্ত অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ ক্লেশের মূল কারণ হল ‘অবিদ্যা’ অর্থাৎ মিথ্যাজ্ঞান।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ ক্লেশের জননী অবিদ্যাকে বলা হয়েছে।

এই সকল ক্লেশের পাঁচটি অবস্থা রয়েছে সেটি হল প্রসুপ্ত, তনু, বিচ্ছিন্ন, উদার, এবং দঙ্ঘবীজ।

প্রসুপ্ত অর্থাৎ ক্লেশ যখন সুপ্ত অবস্থায় বিদ্যমান থাকে তখন তাকে ‘প্রসুপ্ত’ বলা হয়। যখন এর অনুকূল বিষয় সামনে আসে তখন এগুলির জাগরণ দেখা যায়। প্রত্যেক ব্যক্তির মনে জন্ম-জন্মান্তরের বাসনা বিদ্যমান থাকে যখন অনুকূল উদ্বোধক কারণ উপস্থিত হয় তখন এগুলি উদ্ভুদ্ধ হয়। যেমন- সুপ্ত ঘাসের বীজের জাগরণ বর্ষাকালে দেখা যায়।

তনু অর্থাৎ যখন ক্রিয়াযোগ দ্বারা ক্লেশকে নির্বল করা হয় তখন বিষয় ভোগের প্রতি প্রবল রুচি থাকে না তখন ক্লেশ সূক্ষ্মরূপে বিদ্যমান থাকে; এই অবস্থাকে ‘তনু’ বলা হয়।

বিচ্ছিন্ন অর্থাৎ যখন কোনো ক্লেশ প্রবল রূপে বিদ্যমান থাকে তখন অন্য ক্লেশ সুপ্ত অবস্থায় থাকে কিন্তু প্রবল ক্লেশ সরে গেলেই সুপ্ত অবস্থায় থাকা ক্লেশ উদ্ভুদ্ধ হয়ে যায়। এই অবস্থাকে ‘বিচ্ছিন্ন’ বলা হয়। যেমন- কোনো বস্তুতে প্রবল রাগাত্মক সম্পর্ক রয়েছে সেই মুহূর্তে অন্য বস্তুতে যে রাগাত্মক অথবা দ্বেষাত্মক সম্পর্ক রয়েছে সেটি সুপ্ত অবস্থায় থাকে। যখন পূর্বোক্ত প্রবল রাগ সরে যায় তখন অন্য বস্তুর প্রতি যে রাগ অথবা দ্বেষ ছিল সেটি পুনঃ জেগে উঠে। যেমন- কোনো ব্যক্তির একটি স্ত্রীর প্রতি রাগ বিদ্যমান রয়েছে অতএব অন্য স্ত্রীর প্রতি রাগ নেই, এরকম বলা যাবে না। পূর্ব স্ত্রী সরে গেলেই অন্য স্ত্রীর প্রতি যে রাগ রয়েছে সেটির জাগরণ দেখা যায়।

উদার যখন ক্লেশ প্রকট রূপে প্রবৃত্ত দেখা যায় তাকে ‘উদার’ বলা হয়। যেমন- কোনো ব্যক্তি অত্যন্ত ক্রুদ্ধ হয়ে যায় তখন সে কর্তব্যাকর্তব্যকে ভুলে যায়; এই রকম অবস্থাকে উদার অবস্থা বলা হয়।

দঙ্ঘবীজ অর্থাৎ যখন যোগী যোগাভ্যাস দ্বারা অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশকে শক্তিহীন করে দেয় তখন ক্লেশের অনুকূল বিষয় সম্মুখীন হলেও ক্লেশ পুনঃ ক্রিয়াশীল হয় না, এই অবস্থাকে ‘দঙ্ঘবীজ’ অবস্থা বলা হয়। যেমন- ধানের বীজকে অগ্নিতে ভাজার পর ধানের অনুকূল ভূমি, জল, বায়ু উপস্থিত হলেও অঙ্কুরিত হয় না,

সেইরকম ক্লেশের অবস্থাও জানা উচিত।

উপরোক্ত সকলেই ক্লেশের অন্তর্ভুক্ত। এগুলি যেমন প্রতিপক্ষ ভাবনা দ্বারা নিবৃত্ত হয় সেরকম নিজের উদ্বোধক কারণ দ্বারা উদ্ধুদ্ধ হয়ে অভিযুক্ত হয়।

উপরোক্ত অবস্থাকে ক্রমানুয়ে সাজালে তাদের ক্রম নিম্নরূপ হয়- উদার, বিচ্ছিন্ন, তনু, প্রসুপ্ত এবং দগ্ধবীজ। এই পাঁচটি অবস্থা অবিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, দ্বেষ এবং অভিনিবেশ ক্লেশের হয়ে থাকে; এবং অবিদ্যা পরের চারটি ক্লেশের জননী। অবিদ্যা থাকলে পরের চারটি ক্লেশও বিদ্যমান থাকে তত্ত্বজ্ঞান দ্বারা অবিদ্যা নষ্ট হয়ে গেলে পরের ক্লেশেরও নিবৃত্তি হয়ে যায়। ১৪।।

অবতরণিকা - তাদের মধ্যে প্রথম অবিদ্যার স্বরূপ নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হল -

সূত্র - অনিত্যশুচিদুঃখানাশ্বসু নিত্যশুচিসুখাশ্বখ্যাতিরবিদ্যা। ১৫।।

শব্দার্থ - (অনিত্য-অশুচি-দুঃখ-অনাশ্বসু) অনিত্য, অশুচি, দুঃখ এবং অনাশ্বাতে (নিত্য-শুচি-সুখ-আশ্ব-খ্যাতিঃ) নিত্য, শুচি, সুখ এবং আশ্বা মনে করা (অবিদ্যা) মিথ্যাভ্রান্ত।

সূত্রার্থ - অনিত্য, অশুচি, দুঃখ এবং অনাশ্বাকে ক্রমশ নিত্য, শুচি, সুখ এবং আশ্বা মনে করাকে ‘অবিদ্যা’ বলা হয়।

ব্যাক্ষ্য - ওই সূত্রে অবিদ্যার স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

অবিদ্যাকে চারটি ভাগে ভাগ করা হয়েছে; তাকে উদাহরণ সহিত নীচে বর্ণনা করা হল।

অনিত্য শরীর ও সংসারকে নিত্য মনে করা এবং নিত্য ঈশ্বর ও আশ্বাকে অনিত্য মনে করা; এটি অবিদ্যার প্রথম ভাগ।

অপবিত্র-মলমূত্র ইত্যাদি দ্বারা পরিপূর্ণ শরীরকে পবিত্র মনে করা এবং যোগাভ্যাস, ধর্মকর্ম, পরোপকার ইত্যাদিকে অশুদ্ধ মনে করা; এটি অবিদ্যার দ্বিতীয় ভাগ। যার বিষয়ে বলা হয়েছে -

স্থানাদ্বীজাদুপষ্টন্তান্নিঃস্যান্দান্নিধনাদপি।

কায়মাধেয়শৌচত্বাৎপণ্ডিতা হ্যশুচিং বিদুঃ।।

অর্থাৎ (স্থানাৎ) উদর স্থান-এর জন্য, (বীজাৎ) রজবীর্ষ-এর জন্য, (উপষ্টন্তাৎ) রস, রক্ত ইত্যাদির আশ্রয় হওয়ার জন্য, (নিঃস্যান্দাৎ) মলমূত্র, ঘাম ইত্যাদি নিরন্তর নিঃসরণ হওয়ার জন্য, (নিধনাৎ) মৃত্যু হওয়ার জন্য তথা (আধেয়শৌচত্বাৎ) সদা শুদ্ধির অপেক্ষা থাকায় বিদ্বানরা এই শরীরকে অশুদ্ধ মনে করেন।

এই রকম অশুদ্ধ শরীরকে শুদ্ধ মনে করতে দেখা যায়।

সংসারের সকল পদার্থের মধ্যে চার প্রকারের দুঃখ মিশ্রিত থাকে। এই সংসারস্থ পদার্থ দ্বারা আমরা পূর্ণ সুখী হয়ে যাব এরকম মনে করা এবং নিত্যানন্দ যুক্ত মোক্ষকে ভয়ংকর দুঃখদায়ক মনে করা অর্থাৎ সেখানে গেলে বহু প্রকারের সুখ সাধন নষ্ট হয়ে যাবে। এরকম বিপরীত বুদ্ধি করা; এটি অবিদ্যার তৃতীয় ভাগ।

শরীর, মন ইত্যাদি জড়বস্তুকে চেতন মনে করা এবং পুত্র, স্ত্রী, বন্ধু-বান্ধব ইত্যাদি চেতন অনাত্মা অর্থাৎ নিজ আত্মা হতে ভিন্ন হলেও এগুলিকে নিজ আত্মার অংশ বলে মনে করা। এই সকল পদার্থের হ্রাস অথবা বৃদ্ধিকে দেখে নিজের হ্রাস অথবা বৃদ্ধি মনে করা; এটি অবিদ্যার চতুর্থ ভাগ।

এটি সকল ক্লেশের মূল কারণ; তাই একে নষ্ট করলেই পরের অস্মিতা ইত্যাদি ক্লেশও নষ্ট হয়ে যায়।।৫।।

সূত্র - দৃশ্যদর্শনশক্ত্যোরেকাস্মিতেবাস্মিতা।।৬।।

শব্দার্থ - (দৃক্-দর্শন-শক্ত্যাঃ) জীবাশ্মা এবং বুদ্ধি এই দুটিকে (একাত্মতা) একত্তের (ইব) মতো মনে করা (অস্মিতা) অস্মিতা ক্লেশ বলা হয়।

সূত্রার্থ - দৃশ্যশক্তি এবং দর্শনশক্তিকে একরূপ মনে করাকে ‘অস্মিতা’ নামক ক্লেশ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অস্মিতা নামক ক্লেশের বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন জীবাশ্মা, নিজেকে এবং বুদ্ধিকে এক মনে করে; দুটির মধ্যে পৃথকতা অনুভব করে না তখন সেটি অস্মিতা নামক ক্লেশে পরিণত হয়ে যায়। যেমন- কোনো খাদ্য পদার্থকে যখন জীবাশ্মা গ্রহণ করে তখন সে মনে করে যে এটি আমার মধ্যে প্রবেশ করছে বস্তুত খাদ্য পদার্থ আত্মার ভিতরে প্রবেশ করে না; খাদ্য পদার্থের জ্ঞানকে বা অনুভূতিকেই কেবলমাত্র জীবাশ্মা গ্রহণ করে। বুদ্ধি পরিণামী অর্থাৎ পরিবর্তনশীল এবং আত্মা অপরিণামী অর্থাৎ অপরিবর্তনশীল। এই দুটি সম্পূর্ণ ভাবে পৃথক্-পৃথক্ হওয়া সত্ত্বেও দুটিকে সাধারণ জীবাশ্মা এক মনে করে। বস্তুত এই দুটির পার্থক্যকে জেনে নিলেই কেবল্য (মোক্ষ) হয়ে যায়। এই অস্মিতা ক্লেশের ফলেই শরীর, মন, ইন্দ্রিয়, কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ, অংকার, সুখ, দুঃখ ইত্যাদিকে নিজের স্বরূপ বলে মনে করে। এরফলেই ব্যক্তি নিজেকে সুখী অথবা দুঃখী অনুভব করে।।৬।।

সূত্র - সুখানুশয়ী রাগঃ।।৭।।

শব্দার্থ - (সুখ-অনুশয়ী) সুখকে ভোগ করার পর মনে বিদ্যমান সুখের প্রতি

এবং সুখের সাধনের প্রতি অভিলাষা (রাগঃ) রাগ ক্লেশ বলা হয়।

সূত্রার্থ - সুখকে ভোগ করার পর সুখের প্রতি এবং সুখের সাধনের প্রতি যে লালসা উৎপন্ন হয়, তাকে ‘রাগ’ (আসক্তি) নামক ক্লেশ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে রাগ নামক ক্লেশের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

ব্যক্তি যখন কোনো বস্তুতে একবার সুখকে অনুভব করে নেয় তখন সেই সুখের প্রতি অথবা সুখ প্রাপ্তকারী বস্তুতে তার রাগ (আসক্তি) উৎপন্ন হয়ে যায়। এই রাগ পরবর্তীকালে ব্যক্তিকে সুখী অথবা দুঃখী করে।।৭।।

সূত্র - দুঃখানুশয়ী দ্বেষঃ।।৮।।

শব্দার্থ - (দুঃখ-অনুশয়ী) দুঃখকে ভোগ করার পর মনে বিদ্যমান দুঃখের প্রতি এবং দুঃখের সাধনের প্রতি বিনাশকারী ভাবনা (দ্বেষঃ) দ্বেষ নামক ক্লেশ বলা হয়।

সূত্রার্থ - দুঃখকে ভোগ করার পর দুঃখের প্রতি এবং দুঃখের সাধনের প্রতি যে বিনাশকারী ভাবনা উৎপন্ন হয়, তাকে ‘দ্বেষ’ নামক ক্লেশ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দ্বেষ নামক ক্লেশের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

ব্যক্তি যখন কোনো বস্তুতে একবার দুঃখকে অনুভব করে নেয় তখন সেই দুঃখের প্রতি অথবা দুঃখ প্রাপ্ত বস্তুতে তার দ্বেষ উৎপন্ন হয়ে যায়। এই দ্বেষ পরবর্তীকালে ব্যক্তিকে সুখী অথবা দুঃখী করে।।৭।।

সূত্র - স্বরসবাহী বিদুষোঽপি তথা রূঢ়োঽভিনিবেশঃ।।৯।।

শব্দার্থ - (স্ব-রস-বাহী) মৃত্যু দুঃখ হতে উৎপন্ন সংস্কার দ্বারা (বিদুষঃ) শাব্দিক বিদ্বানদের মধ্যে এবং সাধারণ মনুষ্য তথা অন্য প্রাণীদের মধ্যে (অপি) ও (তথা- আরুঢ়ঃ) সমান রূপে বিদ্যমান মৃত্যু ভয়কে (অভিনিবেশঃ) অভিনিবেশ ক্লেশ বলা হয়।

সূত্রার্থ - যোগের উচ্চ অবস্থাকে অপ্রাপ্ত বিদ্বানদের মধ্যে এবং সাধারণ মনুষ্যে তথা অন্য প্রাণীদের মধ্যেও সমান রূপে বিদ্যমান মৃত্যু দ্বারা যে সংস্কার উৎপন্ন হয় সেই সংস্কার দ্বারা উৎপন্ন ভয়কে ‘অভিনিবেশ’ ক্লেশ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অভিনিবেশ ক্লেশকে বর্ণনা করা হয়েছে।

মৃত্যুভয়কে ‘অভিনিবেশ’ বলা হয়। প্রত্যেক প্রাণীর এটি নিত্য আত্ম-ইচ্ছা হয়ে থাকে যে- “আমার মৃত্যু যেন না হয় এবং আমি সদা জীবিত থাকি।” এই অনুভব পূর্বজন্মকে সিদ্ধ করে এবং আত্মার নিত্যতাকেও সিদ্ধ করে; তার কারণ হল মৃত্যু দ্বারা ভীত ব্যক্তি না তো এই জন্মে প্রত্যক্ষ প্রমাণ দ্বারা মৃত্যু দুঃখের

অনুভব করেছে এবং না শব্দ প্রমাণ দ্বারা জেনেছে। এর দ্বারা এটা সিদ্ধ হয় যে জীবাত্মা প্রত্যক্ষ প্রমাণ দ্বারা পূর্বজন্মে মৃত্যু দুঃখের অনুভব করেছিল যার ফলে তার এই ভয় এই জন্মে উৎপন্ন হয়েছে। এই মৃত্যু ভয় যেমন একটি মূর্খ ব্যক্তির মধ্যে দেখা যায়, সেই রকম একটি উচ্চকোটির শাব্দিক বিদ্বানের মধ্যেও এই ভয় সমান রূপে বিদ্যমান থাকে এবং সামান্য কীট-পতঙ্গের দেখা যায়। কিন্তু এই ভয় আত্মজ্ঞানী যোগীদের মধ্যে দেখা যায় না।।৯।।

সূত্র - তে প্রতিপ্রসবহেয়াঃ সূক্ষ্মাঃ।।১০।।

শব্দার্থ - (তে) সেই সকল অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ (প্রতিপ্রসব-হেয়াঃ) প্রকৃতিতে লীন হওয়ার যোগ্য হয় (সূক্ষ্মাঃ) ক্রিয়াযোগ এবং বিবেকখ্যাতি দ্বারা নির্বলতাকে প্রাপ্ত হয়ে দগ্ধবীজের ন্যায় হয়।

সূত্রার্থ - সেই সকল অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ যখন ক্রিয়াযোগ এবং বিবেকখ্যাতি দ্বারা নির্বলতাকে প্রাপ্ত হয়ে দগ্ধবীজের ন্যায় হয়ে যায় তখন চিত্ত নিজ উৎপত্তির কারণ প্রকৃতিতে লীন হওয়ার সময় চিত্তের সাথে উপরোক্ত ক্লেশ গুলিও প্রকৃতিতে লীন হওয়ার যোগ্য হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সূক্ষ্মতাকে প্রাপ্ত হওয়া অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশের কি অবস্থা হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যখন যোগী সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অভ্যাস করতে-করতে অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে পৌঁছে যান এবং তার পরিপক্ক অবস্থাকে প্রাপ্ত করে নেন। তখন তাঁর চিত্ত ভোগ ও অপবর্গকে সিদ্ধ করে অধিকার রহিত হয়ে যায়। অধিকার রহিত হয়ে গেলে চিত্ত নিজ উপাদান কারণ প্রকৃতিতে লীন হয়ে যায় অর্থাৎ প্রলয়ের প্রাপ্তি ঘটে। ওই চিত্তের সাথেই উপরোক্ত অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ গুলিও প্রকৃতিতে লীন হয়ে যায়। এই অবস্থায় জীবাত্মা সমস্ত দুঃখ হতে পৃথক হয়ে ঈশ্বরের নিত্যানন্দকে প্রাপ্ত করে। এটিই মনুষ্য জীবনের কৃতকৃত্যতা। এই অবস্থাকে মনুষ্য যতক্ষণ না প্রাপ্ত করে ততক্ষণ সে সংসারের আগুনে জ্বালানির মত জ্বলতে থাকে।।১০।।

সূত্র - ধ্যানহেয়াস্তদ্বৃত্তয়ঃ।।১১।।

শব্দার্থ - (ধ্যান-হেয়াঃ) বিবেকখ্যাতি দ্বারা নষ্ট করার যোগ্য (তদ্-বৃত্তয়ঃ) সেই সকল পাঁচটি ক্লেশের স্থূল বৃত্তি গুলিকে।

সূত্রার্থ - সেই সকল পাঁচটি ক্লেশের স্থূল বৃত্তি গুলিকে ক্রিয়াযোগ দ্বারা নির্বল করে বিবেকখ্যাতি দ্বারা নষ্ট করা উচিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যেসব ক্লেশ দগ্ধবীজ হয়নি এবং স্থূল ও সূক্ষ্ম অবস্থায়

বিদ্যমান রয়েছে সেই সব ক্লেশ গুলিকে কীভাবে দক্ষবীজ পর্যন্ত নিয়ে যাওয়া যায়, সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন ক্লেশ ব্যবহারকালে প্রকট ভাবে দেখা যায় সেগুলিকে স্থূল ক্লেশ বলা হয়। সেই স্থূল ক্লেশ গুলিকে ক্রিয়াযোগ দ্বারা নির্বল করা হয়। কিন্তু যেসব ক্লেশ সূক্ষ্ম অবস্থায় অর্থাৎ মানসিক রূপে বিদ্যমান থাকে ব্যবহারে প্রকট রূপে দেখা যায় না, সেই সব ক্লেশকে উচ্চ বিবেকখ্যাতি অর্থাৎ অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে সেগুলিকে নষ্ট করা উচিত। যেমন- বস্ত্রে বিদ্যমান স্থূল মলকে সামান্য পরিশ্রমে দূর করা হয় কিন্তু যেসব ময়লা বস্ত্রে সূক্ষ্মরূপে বিদ্যমান থাকে সেগুলিকে অত্যন্ত পরিশ্রম দ্বারা দূর করা হয়। সেই রকম স্বল্প প্রতিপক্ষের ভাবনা দ্বারা স্থূল বৃত্তি গুলিকে দূর করা উচিত এবং মহা প্রতিপক্ষ ভাবনা দ্বারা সূক্ষ্ম বৃত্তি গুলিকে দূর করা উচিত। ১১।

সূত্র - ক্লেশমূলঃ কর্মাশয়ো দৃষ্টাদৃষ্টজন্মবেদনীয়ঃ । ১২ ।।

শব্দার্থ - (ক্লেশ-মূলঃ) অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ যে সকল কর্ম সমুদায়ের কারন হয় সেই সকল (কর্মাশয়ঃ) কর্মসমুদায় (দৃষ্ট-অদৃষ্ট-জন্ম-বেদনীয়ঃ) বর্তমান তথা আগামী জন্মে ফল প্রদানকারী হয়।

সূত্রার্থ - অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ যে সকল কর্ম সমুদায়ের কারন হয়ে থাকে সেই সকল কর্মসমুদায় বর্তমান তথা আগামী জন্মে ফল প্রদানকারী হয়ে থাকে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে এই জন্মে ফল প্রদানকারী এবং আগামী জন্মে ফল প্রদানকারীর মূল কারণ কী, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

পুণ্য ও পাপ কর্মাশয় কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ দ্বারা উৎপন্ন হয়। এখানে কর্মকে দুটি ভাগ করা হয়েছে- শুভ এবং অশুভ। যে সকল কর্ম দ্বারা অন্যকে দুঃখ প্রাপ্ত হয় অথবা ঈশ্বরের আজ্ঞার বিরুদ্ধ তাকে অশুভ কর্ম বলা হয় এবং যে সকল কর্ম দ্বারা অন্যকে সুখ প্রাপ্ত হয় অথবা ঈশ্বরের আজ্ঞার অনুকূল সেই সকল কর্ম গুলিকে শুভ কর্ম বলা হয়। যে সকল কর্মের ফল এই জন্মে প্রাপ্ত হয় তাকে ‘দৃষ্টজন্মবেদনীয়’ বলা হয় এবং যে সকল কর্মের ফল আগামী জন্মে প্রাপ্ত হবে, তাকে ‘অদৃষ্টজন্মবেদনীয়’ বলা হয়।

যখন ব্যক্তি তীব্র নিষ্ঠা পূর্বক মন্ত্র, তপ, সমাধি দ্বারা কর্মকে সম্পাদন করে অথবা ঈশ্বর, দেবতা, মহর্ষি, মহানুভবের আরাধনা করে; সেই সকল পুণ্য কর্মাশয় এই জন্মে সদ্য ফল প্রদানকারী হয়। একইভাবে তীব্র ক্লেশ দ্বারা ভীত, রুগ্ন, কৃপাপাত্র, বিশ্বস্ত মহানুভবের প্রতি অথবা তপস্বিদের প্রতি বার-বার অপকার করলে; সেই সকল পাপ কর্মাশয়ও এই জন্মে সদ্য ফল প্রদানকারী হয়। কিন্তু যারা অত্যন্ত নিম্ন কর্ম করে থাকেন তাদের এই জন্মে কোনোও ফল প্রাপ্ত হয় না, তার

কারণ হল তারা এতই খারাপ কর্ম করেছে যে এই একটি জন্মে তাদেরকে কোনোও ফল দেওয়া সম্ভব নয়।

কর্মের বিষয়ে এটাও জানা উচিত যে- “মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা জীবাত্মা যে বিশেষ প্রকারের চেষ্টা করে, তাকে **কর্ম** বলা হয়।” যেমন- যজ্ঞ করা, সত্য বলা, দান দেওয়া ইত্যাদি।

কর্মের বিষয়ে আরও কিছু তথ্য জেনে নেওয়া উচিত -

কর্মের পরিণাম- কোনো ক্রিয়ার নিকটতম প্রতিক্রিয়াকে ‘কর্মের পরিণাম’ বলা হয়। যেমন- কারো ভুলে কোনো ব্যক্তির দুর্ঘটনায় মৃত্যু হওয়া, একে ব্যক্তির নিজের কর্মের ফল মনে করা উচিত নয় এটি অন্যের কর্মের পরিণাম।

কর্মের প্রভাব- কর্ম, কর্মের পরিণাম অথবা কর্মের ফলকে জানার পর চেতনে যে প্রতিক্রিয়া হয়, তাকে ‘কর্মের প্রভাব’ বলা হয়। যেমন- যজ্ঞ রূপী কর্ম করলে যজ্ঞ কর্তাকে প্রসন্নতা, আনন্দ, শান্তি ইত্যাদি প্রাপ্ত হয়; এটি সেই কর্মের প্রভাব।

কর্মের ফল- কর্মানুসার কর্মকর্তাকে ন্যায় পূর্বক যে সুখ-দুঃখ অথবা সুখ-দুঃখের সাধন প্রাপ্ত হয়, তাকে ‘কর্মের ফল’ বলা হয়। যেমন- যজ্ঞ রূপী কর্ম করলে তার ফল পুনর্জন্মে শ্রেষ্ঠ মাতা-পিতা, ধার্মিক, বিদ্বান, পরিবারের প্রাপ্তি হওয়া ইত্যাদি।

কর্মের পরিণাম এবং প্রভাব কর্মকর্তার উপরও হতে পারে অথবা অন্যের উপরও হতে পারে কিন্তু কর্মের ফল কর্মকর্তাকেই প্রাপ্ত হয়। ১২।।

সূত্র - সতি মূলে তদ্বিপাকো জাত্যায়ুভোগাঃ । ১৩।।

শব্দার্থ - (সতি মূলে) অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ বিদ্যমান থাকলে (তদ-বিপাকঃ) সেই সকল কর্মসমুদায়ের ফল (জাতি-আয়ুঃ-ভোগাঃ) জাতি, আয়ু ও ভোগ রূপে প্রাপ্ত হয়।

সূত্রার্থ - অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ বিদ্যমান থাকলে সেই সকল কর্মসমুদায়ের ফল জাতি, আয়ু ও ভোগ রূপে প্রাপ্ত হয়।

ব্যাখ্যা - অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ যুক্ত কর্মশয়ের ফল কিভাবে আমাদের প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে এই সূত্রে বলা হয়েছে।

ক্লেশ যুক্ত কর্মশয় ফল প্রদানকারী হয়। নষ্ট ক্লেশ যুক্ত কর্মশয় ফল প্রদান করে না। যেমন- তুম্ব দ্বারা আবৃত এবং যাকে ভাজা হয়নি; সে ধান অঙ্কুরিত হতে সমর্থ হয়। কিন্তু যে ধানের তুম্ব সরিয়ে দেওয়া হয়েছে অথবা ভেজে দেওয়া হয়েছে সেটি অঙ্কুরিত হতে সমর্থ হয় না। সেই রকম ক্লেশ যুক্ত কর্মশয়ের ক্ষেত্রেও জানা উচিত।

যদি কর্মাশয়ের কারণ অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ বিদ্যমান থাকে তাহলে সেটি অক্ষুরিত হতে সমর্থ হয় কিন্তু যদি ক্লেশ দন্ধবীজবৎ হয়ে যায় তাহলে সেটি ফল প্রদান করে না।

ক্লেশ যুক্ত কর্মাশয় তিন প্রকার ফল প্রদান করে- জাতি, আয়ু এবং ভোগ। জাতি অর্থাৎ মনুষ্য, পশু-পক্ষী, কীট-পতঙ্গ ইত্যাদির শরীর। আয়ু অর্থাৎ জন্ম হতে মৃত্যু পর্যন্ত নির্ধারিত সময়। ভোগ অর্থাৎ সুখ-দুঃখ এবং সুখ-দুঃখ প্রাপ্তির সাধন। যেমন- ধন-সম্পত্তি, ভোজন, বস্ত্র, মিত্র, স্বজন, পরিবার ইত্যাদি। যে সকল কর্মাশয়ের ফল জাতি, আয়ু এবং ভোগ নিশ্চিত হয়ে যায় তাকে ‘নিয়তবিপাক’ বলা হয় এবং যেসব কর্মাশয়ের ফল জাতি, আয়ু এবং ভোগ নিশ্চিত নয় তাকে ‘অনিয়তবিপাক’ বলা হয়। অনিয়তবিপাক কর্মাশয়ের তিনটি গতি হয়ে থাকে- (১) কিছু কর্ম দীর্ঘসময় পশ্চাৎ ফল প্রদানকারী হয়। (২) কিছু কর্ম প্রধান কর্মের সাথে মিলিত হয়ে ফল প্রদানকারী হয়। (৩) যখন প্রবল কর্ম নিজ ফল প্রদান করে তখন অন্য কর্ম তার নিচে সুপ্ত অবস্থায় থাকে এবং অনুকূল বাতাবরণ এলে সেটি ফল প্রদানকারী হয়।

বস্তুত কোনও কর্ম বিনা ফল দিয়ে নষ্ট হয় না। তাই বলা হয়েছে - “অব্যয়মেব ভোক্তব্যং কৃতং কর্ম শুভাশুভম্।”

এই জন্মের বিষয়ে দুধরনের বিচার উৎপন্ন হয়- (১) একটি কর্ম একটি জন্মকে প্রদান করে অথবা একটি কর্ম অনেক জন্মকে প্রদান করে। (২) অনেক কর্ম অনেক জন্মকে প্রদান করে অথবা অনেক কর্ম একটি জন্মকে প্রদান করে। যদি প্রথম পক্ষকে স্বীকার করা হয় যে একটি কর্ম একটি জন্মকে প্রদান করে তাহলে কর্ম সমুদায় অধিক হওয়ায় প্রত্যেক কর্মের ফল দেওয়ার অবসর আসা কঠিন। আবার যদি একটি কর্ম অনেক জন্মকে প্রদান করে তাহলে এক্ষেত্রেও কর্মের সংখ্যা অধিক হওয়ায় সকল কর্মের ফল দেওয়ার অবসর আসা কঠিন। অতএব এই পক্ষকেও স্বীকার করা ঠিক নয়। যদি দ্বিতীয় পক্ষকে স্বীকার করা হয় যে অনেক কর্ম অনেক জন্মকে প্রদান করে, তাহলে অনেক কর্ম একসাথে অনেক জন্ম দিতে পারে না। তার কারণ হল এক সময়ে জীবাত্মা অনেক শরীর ধারণ করতে পারবে না। যদি ক্রমশ জন্ম দেওয়া হয় তাহলেও পূর্বোক্ত দোষে দুষ্ট হয়। এই জন্য উপরোক্ত সকল পক্ষের মধ্যে এটাই স্বীকার করা উচিত যে অনেক কর্ম মিলিত হয়ে একটি জন্মকে প্রদান করে।

বস্তুত কর্ম এবং কর্মফল সম্পর্কে সম্পূর্ণভাবে জানা দুঃসাধ্য। কোন কর্মের কি ফল হয়, কতটা হয়, কখন প্রাপ্ত হয়, এটিকে সম্পূর্ণ রূপে ঈশ্বরই জানেন। আমরা কিছুটা অনুমান করতে পারি। ১৩।।

সূত্র - তে হ্লাদপরিতাপফলাঃ পুণ্যাপুণ্যহেতুত্বাৎ ।। ১৪ ।।

শব্দার্থ - (তে) ওই জাতি, আয়ু ও ভোগ (হ্লাদ-পরিতাপ-ফলাঃ) সুখ এবং দুঃখ রূপ ফল যুক্ত হয় (পুণ্য-অপুণ্য-হেতুত্বাৎ) পুণ্য এবং পাপ রূপ কর্ম দ্বারা উৎপন্ন হওয়ায়।

সূত্রার্থ - যে সকল জাতি, আয়ু ও ভোগের কারণ পুণ্য কর্ম হয় সেগুলি সুখ প্রদানকারী হয়, তথা যে সকল জাতি, আয়ু ও ভোগের কারণ পাপ কর্ম হয় সেগুলি দুঃখ প্রদানকারী হয়।

ব্যাখ্যা - জাতি, আয়ু ও ভোগের কারণ যখন পাপ অথবা পুণ্য হয় তখন তার ফল কি হয়, সেই বিষয়ে যেই সূত্রে বলা হয়েছে।

যে সকল কর্ম ঈশ্বরের গুণ, কর্ম, স্বভাব, বেদ এবং ঋষিকৃত গ্রন্থের অনুকূল সেগুলিকে পুণ্যকর্ম বলা হয়। এর বিরুদ্ধ কর্মকে পাপ কর্ম বলা হয়। যখন পুণ্য কর্ম দ্বারা জাতি, আয়ু ও ভোগ প্রাপ্ত হয় তখন সেটি সুখ প্রদান করে এবং পাপ কর্ম দ্বারা দুঃখ প্রাপ্ত হয়।

এই দুঃখ যেমন আমাদের প্রতিকূল মনে হয় সেইরকম যোগীকে বিষয় সুখকালেও বিষয়সুখ প্রতিকূলাত্মক হওয়ায় দুঃখই মনে হয়। ১৪।।

অবতরণিকা - যোগীরা সাংসারিক বিষয় সুখেও দুঃখের অনুভব করেন, সেটি কীভাবে? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - পরিণামতাপসংস্কারদুঃখৈগুণবৃত্তিবিরোধাচ্চ দুঃখমেব সর্বং বিবেকিনঃ। ১৫।।

শব্দার্থ - (পরিণাম-তাপ-সংস্কার-দুঃখৈঃ) পরিণাম দুঃখ, তাপ দুঃখ, সংস্কার দুঃখ দ্বারা (গুণবৃত্তি-বিরোধাৎ-চ) এবং গুণবৃত্তি বিরোধ দুঃখ দ্বারা (দুঃখম্) দুঃখদায়ী হয় (এব) অবশ্যই (সর্বম্) সব কিছু (বিবেকিনঃ) যোগীদের জন্য।

সূত্রার্থ - সাংসারিক বিষয় সুখে পরিণাম দুঃখ, তাপ দুঃখ, সংস্কার দুঃখ এবং গুণবৃত্তি বিরোধ দুঃখ বিদ্যমান হওয়ায়, যোগীদের জন্য সংসারের বিষয় সুখও কেবলমাত্র দুঃখদায়ী মনে হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগীরা বিষয় সুখেও দুঃখ কত প্রকারের এবং কিভাবে দেখেন, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

পরিণামদুঃখ- বিষয়কে ভোগ করার পর ইন্দ্রিয়ের যে তৃপ্তি হয় সেটিকে সাংসারিক ‘সুখ’ বলা হয় এবং ইন্দ্রিয়ের চঞ্চলতার কারণে যে অনুপশান্তি হয় সেটিকে ‘দুঃখ’ বলা হয়। ভোগকে ভোগ করতে থাকলে ইন্দ্রিয়কে তৃষ্ণা রহিত করা যায় না। ভোগাভ্যাস দ্বারা রাগের বৃদ্ধি হতে থাকে এবং ইন্দ্রিয় বিষয় ভোগে

কুশল হয়ে যায়। পরিণামে এরকম হয় যে ব্যক্তি যেটি ইচ্ছা করে তার পূর্তির জন্য ভোগকে ভোগ করছিল সেটি শান্ত হয় না। কিন্তু ইচ্ছা আরও অধিক বাড়তে থাকে এতে মনে অশান্তি বাড়তে থাকে। এই জন্য ভোগাভ্যাস সুখের উপায় নয়। যেমন-কোনো বিষয়-সুখার্থী ব্যক্তি বিছার বিষ দ্বারা ভীত হয়ে সাপের বিষ দ্বারা দংশিত হওয়ার সমান মহান্দুঃখ পাঁকে গিয়ে পড়ে। এই অপ্রিয় অবস্থাকেই ‘পরিণামদুঃখ’ বলা হয়।

তাপদুঃখ- বিষয় সুখ ভোগ কালে যে কোনো জড়-চেতন পদার্থ বাধা উপস্থিত করলে সেই পদার্থ হতে বিবিধ দুঃখের অনুভব হয় একেই ‘তাপদুঃখ’ বলে।

সংস্কারদুঃখ- কোনো বস্তু দ্বারা সুখ অনুভব করলে সুখসংস্কারাশয় এবং দুঃখ অনুভব করলে দুঃখসংস্কারাশয় উৎপন্ন হয়। ব্যক্তি সেই সংস্কার দ্বারা সেই রকম কর্ম করতে পুনঃ আরম্ভ করে দেয়। সেই কর্ম দ্বারা পুনঃ সুখ দুঃখের প্রাপ্তি হয়। এইভাবে অনুভব দ্বারা সংস্কার এবং সংস্কার দ্বারা শুভাশুভ কর্ম এবং কর্ম দ্বারা সুখ-দুঃখের প্রাপ্তি হতে থাকে। এই ক্রম জন্ম-জন্মান্তর চলতে থাকে। যে বস্তু দ্বারা ব্যক্তি সুখ ভোগ করেছিল সেই বস্তুর সুখ পুনঃ ভোগ করার ইচ্ছা উৎপন্ন হওয়ায় যখন সেই বস্তু ভোগ করার জন্য প্রাপ্ত হয় না অথবা অপেক্ষাকৃত কম মাত্রায় প্রাপ্ত হয় তখন পূর্ব ভোগের সংস্কারের জন্য ব্যক্তি দুঃখী হয়ে যায়; একেই ‘সংস্কারদুঃখ’ বলা হয়।

গুণবৃত্তিবিরোধদুঃখ- সত্ত্বগুণ সুখদায়ী হয়, রজগুণ দুঃখদায়ী হয় এবং তমোগুণ মূঢ় অবস্থা উৎপন্নকারী হয়। যখন সত্ত্বগুণের প্রধানতা থাকে তখন সুখের অনুভূতি হয়। যখন রজোগুণের প্রধানতা থাকে তখন দুঃখের অনুভূতি হয়। যখন তমোগুণের প্রধানতা থাকে তখন ব্যক্তি মোহ যুক্ত হয়। এইভাবে তিনটি গুণের পরস্পর বিরুদ্ধ স্বভাব দ্বারা ব্যক্তি অশান্ত থাকে, একেই ‘গুণবৃত্তিবিরোধদুঃখ’ বলা হয়।

বস্তুত বিষয় সুখেও এত প্রকারের দুঃখ রয়েছে সেটিকে কেবল যোগীই অনুভব করেন। তার কারণ হল তাঁরা “অক্ষিপাত্রকল্লো হি বিদ্বান্।” অর্থাৎ যেমন- চোখে কোনো উলের ছেঁটু রোঁয়া চোখে পড়ে গেলে যেমন ব্যক্তি বিচলিত হয়ে যায় কিন্তু অন্য শরীরে তার কোনো প্রভাব পড়ে না। সেই রকম যোগীদেরই এই সকল বিষয় সুখকেও দুঃখদায়ক মনে হয়, অন্য ব্যক্তিদের নয়। বস্তুত বিষয় সুখকে দুঃখ রহিত মনে করাই অবিদ্যা। এই অবিদ্যাই সকল দুঃখের উৎপত্তির কারণ এবং তত্ত্বজ্ঞান এই দুঃখ দূর করার উপায়।

যেরকম চিকিৎসাশাস্ত্রে চারটি বিভাগ থাকে- রোগ, রোগের কারণ, আরোগ্য এবং চিকিৎসা। সেই রকম এই যোগশাস্ত্রেও চারটি বিভাগ রয়েছে- সংসার (=দুঃখ),

সংসারের (=দুঃখের) কারণ, মোক্ষ (=সুখ) এবং মোক্ষের (=সুখের) উপায়। যে ব্যক্তি চিকিৎসাশাস্ত্রের এই বিভাগকে জেনে নিয়ে যেরকম নিরোগ থাকে, সেই রকম এই যোগশাস্ত্রের চারটি বিভাগকে জেনে নিলে ব্যক্তি সুখী হয়ে যায়। তাদের মধ্যে ‘দুঃখ বহুল সংসার’ ত্যাগ করার যোগ্য। ‘প্রধান ও পুরুষের সম্বন্ধ’ দুঃখের কারণ। তাদের মধ্যে বিদ্যমান সম্বন্ধের সম্পূর্ণ নিবৃত্তি হাওয়াই ‘মোক্ষ’। ‘যথার্থ জ্ঞান’ মোক্ষ লাভের উপায়।।১৫।।

অবতরণিকা - যোগশাস্ত্রের চারটি বিভাগকে কতিপয় সূত্র দ্বারা বর্ণনা করা হল -

সূত্র - হেয়ং দুঃখমনাগতম্ ।।১৬।।

শব্দার্থ - (হেয়ম্) ত্যাজ্য হয় (দুঃখম্) দুঃখ (অনাগতম্) আগন্তুক।

সূত্রার্থ - ভবিষ্যতে আগন্তুক দুঃখই ত্যাজ্য হয়।

ব্যাখ্যা - দুঃখের বিষয়ে এই সূত্রেও বর্ণনা করা হয়েছে।

বস্তুত যে সকল দুঃখকে আমরা উপভোগ করে নিয়েছি সেই সকল দুঃখ হেয় কোটিতে আসে না এবং বর্তমান দুঃখ, যেটি আমরা ভোগ করছি; সেটিও হেয় পক্ষে আসে না। তার কারণ হল সেটি কিছুক্ষণ পর সমাপ্ত হয়ে যাবে। এই জন্য যে দুঃখ অনাগত অর্থাৎ ভবিষ্যতে আসবে সেই সকল দুঃখই ত্যাজ্য। এই অনাগত দুঃখই ‘অক্ষিপাত্রকল্প’ যোগীকেই দুঃখদায়ী মনে হয়, অন্য ব্যক্তিদের নয়।

বস্তুত সংসারে জন্ম নেওয়াই দুঃখের কারণ। অতএব আমাদের যে শরীর, ইন্দ্রিয়, মন ইত্যাদি সাধন প্রাপ্ত হয়েছে, এটি হেয় পক্ষে গণনা করা সম্ভব নয়। কিন্তু ভবিষ্যতে পুনঃ যাতে জন্ম না নিতে হয়, সেই দুঃখ হতে নিতান্ত যাতে আমরা মুক্তি পাই, সেই বিষয়ে চিন্তা করা উচিত, সেই দুঃখই ত্যাজ্য।।১৬।।

সূত্র - দ্রষ্টৃদৃশ্যয়োঃ সংযোগো হেয়হেতুঃ ।।১৭।।

শব্দার্থ - (দ্রষ্টৃ-দৃশ্যয়োঃ) জীবাত্মা এবং শরীর, মন, বুদ্ধি ইত্যাদি সমস্ত পদার্থের সাথে (সংযোগঃ) অজ্ঞানতা পূর্বক সম্বন্ধ (হেয়-হেতুঃ) ত্যাজ্য দুঃখের কারণ।

সূত্রার্থ - জীবাত্মার সাথে শরীর, মন, বুদ্ধি ইত্যাদি সমস্ত পদার্থের যে সম্বন্ধ রয়েছে; সেটিই ত্যাজ্য দুঃখের কারণ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দুঃখের কারণ কী? সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

বুদ্ধিতে যে সংসারিক পদার্থের চিত্র তৈরি হয় তার অনুভবকারীকে ‘দ্রষ্টা’ অর্থাৎ জীবাত্মা বলা হয়। যেসব পদার্থের চিত্র বুদ্ধিতে তৈরি হয় তাকে ‘দৃশ্য’ বলা

হয় অর্থাৎ প্রকৃতি হতে তৈরি সকল পদার্থ। এই সকল দৃশ্য চুম্বকের মত হয়। যেমন- চুম্বকের সমীপতার জন্য লোহাকে নিজের দিকে আকর্ষণ করে। সেই রকম দৃশ্য ও জীবাশ্মার সমীপতার জন্য জীবাশ্মাকে উপকার করে অর্থাৎ ভোগ এবং অপবর্গকে সিদ্ধ করে। যদি জীবাশ্মা এই দৃশ্যের সাথে স্ব-স্বামিসম্বন্ধ তৈরি করে নেয় তাহলে এই দৃশ্যই তার বন্ধনের কারন হয়ে যায়। অতএব ব্যক্তিকে দুঃখের কারণ সম্পর্কে সঠিক জ্ঞান করা উচিত। যেমন- কোনো ব্যক্তি এটা জানে যে কাঁটা পায়ে ফুটলে দুঃখ হয়, তখন সে কাঁটায় পা রাখে না। যদি রাখে তাহলে সে জুতো পরে রাখে। যার ফলে সে কাঁটা দ্বারা উৎপন্ন দুঃখে কষ্ট পায় না। অতএব যে ব্যক্তি ভেদ্যতা, ভেদকত্ব এবং তার পরিহারের সাধনকে জানে সে দুঃখকে প্রাপ্ত হয় না। এখানেও সত্ত্বগুণ ভেদ্য, রজোগুণ ভেদক এবং তত্ত্বজ্ঞান পরিহারের সাধন। এটাকে যে জানে সে কখনও দুঃখী হয় না। রজোগুণ তাপায় এবং সত্ত্বগুণ তপ্ত হয়, এই তপন ক্রিয়া জীবাশ্মাতে হয় না। সত্ত্বগুণ তপ্ত হলে বুদ্ধির মাধ্যমে বিষয়ের অনুভবকারী জীবাশ্মা অজ্ঞানতার জন্য তপন ক্রিয়াকে নিজের স্বরূপ মনে করে দুঃখী হয়।

বস্তুত এই দৃশ্য ভোগ এবং অপবর্গকে সিদ্ধ করার জন্য তৈরি করা হয়েছে। যে ব্যক্তি অজ্ঞানতায় বিচরণ করে তারা ভোগেই সন্তুষ্ট হয়ে যায়। কিন্তু যাঁরা তত্ত্ববেত্তা হন তাঁরা এই সকল ভোগে দুঃখ অনুভব করে তাকে পরিত্যাগ করে মোক্ষকে প্রাপ্ত করেন। ১৭।।

সূত্র - প্রকাশক্রিয়াস্থিতিশীলং ভূতেন্দ্রিয়াত্মকং ভোগাপবর্গার্থং দৃশ্যম্। ১৮।।

শব্দার্থ - (প্রকাশ-ক্রিয়া-স্থিতি-শীলম্) প্রকাশশীল, ক্রিয়াশীল এবং স্থিতিশীল যার স্বভাব (ভূত-ইন্দ্রিয়-আত্মকম্) ভূত এবং ইন্দ্রিয় যার স্বরূপ (ভোগ-অপবর্গার্থম্) ভোগ এবং অপবর্গ যার প্রয়োজন, তাকে (দৃশ্যম্) দৃশ্য বলা হয়।

সূত্রার্থ - প্রকাশশীল, ক্রিয়াশীল এবং স্থিতিশীল; ভূত এবং ইন্দ্রিয় স্বরূপ যুক্ত; যে পুরুষের ভোগ এবং অপবর্গ রূপ প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে তাকে 'দৃশ্য' বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দৃশ্যের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন সত্ত্ব, রজ ও তম পদার্থ পৃথক-পৃথক নিজ অবস্থায় পড়ে থাকে তখন তাকে 'প্রকৃতি' বলা হয়। যখন সত্ত্ব, রজ ও তম পদার্থ পরস্পর মিলিত হয় তখন তাকে বিকৃতি অর্থাৎ 'সংসার' বলা হয়; তাই সংসারের সকল পদার্থকে ত্রিগুণাত্মক বলা হয়। যখন যে গুণের প্রধানতা হয়, তখন সেটিকে সেই গুণের দ্বারা অভিহিত

করা হয়। সত্ত্বগুণের স্বভাব প্রকাশশীল, রজোগুণের স্বভাব ক্রিয়াশীল এবং তমগুণের স্বভাব স্থিতিশীল।

এই অব্যক্ত প্রকৃতি হতে উৎপন্ন ব্যক্ত সংসারের দুটি স্বরূপ- (১) ভূতাত্মক অর্থাৎ পৃথিবী ইত্যাদি পাঁচ স্থূলভূত এবং তন্মাত্রা ইত্যাদি পাঁচ সূক্ষ্মভূত। (২) ইন্দ্রিয়াত্মক অর্থাৎ পাঁচ জ্ঞানেন্দ্রিয়, পাঁচ কর্মেন্দ্রিয়, এক মন, এক অহংকার তথা এক বুদ্ধি।

উপরোক্ত সকল পদার্থের রচনা ঈশ্বর নিষ্প্রয়োজনে করেননি, বরং প্রয়োজনকে সামনে রেখেই রচনা করেছেন। সেই প্রয়োজন হল- জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গের অর্থাৎ মোক্ষের সিদ্ধি। যখন জীবাশ্মা নিজেকে এবং বুদ্ধিকে এক মনে করে এই সকল পদার্থের ইষ্ট ও অনিষ্টকে গ্রহণ করে তখন তাকে ‘ভোগ’ বলা হয়। যখন জীবাশ্মা নিজের স্বরূপকে নিশ্চয় করে তখন তাকে ‘অপবর্গ’ বলা হয়। এই দৃশ্য জগৎ হতে যদি কেউ কেবলমাত্র ভোগকে সিদ্ধ করে তাহলে তাকে বুদ্ধিমান বলা যাবে না। তার কারণ হল দৃশ্যের সামর্থ্য কেবল এতটুকু নয়। যেমন কোনো ব্যক্তি একটি বস্তু হতে বিভিন্ন প্রকারের কার্য সিদ্ধ করে তখন তাকে বুদ্ধিমান বলা হয়। সেই রকম এই দৃশ্য জগৎ হতে যে ব্যক্তি ভোগ ও অপবর্গ রূপী দুটিই প্রয়োজন সিদ্ধ করবে তখনই তাকে বুদ্ধিমান বলা যাবে। ১১৮।।

অবতরণিকা - দৃশ্যের বিভিন্ন রূপকে বোঝানোর জন্য নিম্ন সূত্রের রচনা করা হয়েছে -

সূত্র - বিশেষাবিশেষলিঙ্গমাত্রালিঙ্গানি গুণপর্বাণি। ১১৯।।

শব্দার্থ - (বিশেষ-অবিশেষ-লিঙ্গমাত্র-অলিঙ্গানি) বিশেষ, অবিশেষ, লিঙ্গমাত্র এবং অলিঙ্গ (গুণ-পর্বাণি) প্রকৃতির চারটি বিভাগ।

সূত্রার্থ - প্রকৃতি হতে উৎপন্ন দৃশ্যকে চারটি ভাগে ভাগ করা হয়েছে- বিশেষ, অবিশেষ, লিঙ্গমাত্র এবং অলিঙ্গ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দৃশ্যের স্বরূপকে বিভিন্ন বিভাগ করে বর্ণনা করা হয়েছে।

‘বিশেষ’ অর্থাৎ আকাশ ইত্যাদি পাঁচ স্থূলভূত, পাঁচ জ্ঞানেন্দ্রিয়, পাঁচ কর্মেন্দ্রিয় এবং মন। ‘অবিশেষ’ অর্থাৎ পাঁচ সূক্ষ্মভূত তন্মাত্রা (যেটি স্থূলভূতের উপাদান কারণ) এবং অহংকার (যেটি পাঁচ জ্ঞানেন্দ্রিয়, পাঁচ কর্মেন্দ্রিয় এবং মনের উপাদান কারণ)। ‘লিঙ্গমাত্র’ অর্থাৎ মহৎতত্ত্ব = বুদ্ধি (যেটি অহংকারের উপাদান কারণ)। ‘অলিঙ্গ’ অর্থাৎ মূল প্রকৃতি = সত্ত্ব, রজ ও তম (যেটি উপরোক্ত সকল পদার্থের উপাদান কারণ)। অতএব ষোলোটি প্রকৃতির বিশেষ পরিণাম, ছয়টি অবিশেষ পরিণাম এবং একটি লিঙ্গমাত্র পরিণাম। প্রকৃতির এই তিনটি পরিণামই জীবাশ্মার

ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে; তাই একে অনিত্য বলা হয়েছে। অলিপ্স অবস্থায় অর্থাৎ প্রকৃতি অবস্থায় জীবাত্মার কোনো প্রয়োজন সিদ্ধ হয় না; তাই একে নিত্য বলা হয়েছে। বস্তুত প্রকৃতি সকল পদার্থে একই রূপে সতত বিদ্যমান থাকায় এটি না নষ্ট হয়, না উৎপন্ন হয়। প্রকৃতিতে বিদ্যমান অতীত, অনাগত ও বর্তমান অভিব্যক্ততার জন্যই উৎপন্ন হওয়া এবং নষ্ট হওয়া দৃষ্টিগোচর হয়। বস্তুত তার স্বরূপের কোনও পরিবর্তন হয় না। যেমন- দেবদত্ত দরিদ্র হয়ে গেছে। তার কারণ কি? তার কারণ হল তার গরু মারা গেছে। গরু মরে যাওয়ার ফলেই তার দরিদ্রতা হয়েছে। বস্তুত দেবদত্তের স্বরূপের নাশ হওয়ার ফলে সে দরিদ্র হয়নি। সেই রকম প্রকৃতির ক্ষেত্রেও জানা উচিত।

যোগাভ্যাসী এই সকল দৃশ্যকে সঠিকভাবে জেনে আত্মা-পরমাত্মার স্বরূপকে জানতে সমর্থ হয়ে যায়। যখন এই দৃশ্য সম্পর্কে বিপরীত জ্ঞান হয় তখন তার ভোগ এবং অপবর্গ সিদ্ধ হয় না। ১৯।।

অবতরণিকা - দৃশ্যের ব্যাখ্যান করার পর, এখন দ্রষ্টার স্বরূপকে বোঝানোর জন্য নিম্ন সূত্রের রচনা করা হয়েছে -

সূত্র - দ্রষ্টা দৃশিমাত্রঃ শুদ্ধোঽপি প্রত্যয়ানুপশ্যঃ । ২০ ।।

শব্দার্থ - (দ্রষ্টা) দর্শনকারী (দৃশিমাত্রঃ) জ্ঞান স্বরূপ জীবাত্মা (শুদ্ধঃ) শুদ্ধ (অপি) হলেও (প্রত্যয়-অনুপশ্যঃ) চিত্তের বৃত্তির অনুরূপ নিজেকে দেখে।

সূত্রার্থ - দ্রষ্টা অর্থাৎ জ্ঞান স্বরূপ জীবাত্মা প্রাকৃতিক পদার্থের সংমিশ্রণ হতে রহিত, অজ্ঞান, অধর্ম, বিকার ইত্যাদি দোষ হতে স্বভাবতঃ রহিত হলেও চিত্তের বৃত্তির অনুরূপ নিজেকে দেখে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে জীবাত্মার স্বরূপের বর্ণনা করা হয়েছে।

জীবাত্মা দ্রষ্টা অর্থাৎ দর্শনকারী, বুদ্ধি বৃত্তির অনুরূপ দর্শন করে। জীবাত্মাকে দৃশিমাত্র বলা হয়, এর অভিপ্রায় হল জীবাত্মা চেতন পদার্থ জড় নয়।

জীবাত্মার স্বাভাবিক গুণ হল- জ্ঞান, বল, ইচ্ছা ইত্যাদি। মন, ইন্দ্রিয় দ্বারা পদার্থের যে আকার-প্রকার বুদ্ধিতে তৈরি হয়, সেই অনুসারে জীবাত্মা দেখে। আত্মা ও বুদ্ধির সাথে কিছু সমানতা এবং কিছু অসমানতা রয়েছে। বুদ্ধির সামনে যে পদার্থ উপস্থিত হয় তারই চিত্র তৈরি হয়। যে পদার্থ তার সামনে থাকে না তার চিত্র তৈরি হয় না। যার চিত্র তৈরি হয় সেটি জ্ঞাত এবং যার চিত্র তৈরি হয় না সেটি অজ্ঞাত অর্থাৎ বুদ্ধি জ্ঞাত এবং অজ্ঞাত হয়। এজন্য একে পরিণামী বলা হয়। কিন্তু জীবাত্মা সদা জ্ঞান করতে থাকে, এজন্য একে অপরিণামী বলা হয়। অপরিণামী

অর্থাৎ অপরিবর্তনশীল তাই জীবাশ্মা অপরিবর্তনশীল। বুদ্ধি সত্ত্ব ইত্যাদি গুণের সংঘাত হয়ে তৈরি হয় এবং সংঘাত বস্তু অন্যের জন্য হয় অর্থাৎ জীবাশ্মার জন্য হয়। কিন্তু আশ্মা কোনো বস্তুর সংঘাত নয় অর্থাৎ কোনো বস্তু মিলিত হয়ে এটি তৈরি হয়নি। এটি স্বভাবতই নিত্য। এর উৎপত্তির কোনো কারণ নেই। বুদ্ধি সংঘাত হতে তৈরি হওয়ার জন্য এটি জড় পদার্থ কিন্তু আশ্মা এই সকল পদার্থের ভোক্তা হওয়ার জন্য জীবাশ্মা চেতন। যখন জীবাশ্মা বুদ্ধিবৃত্তিকে নিজ হতে পৃথক অনুভব করে না, তখন অস্মিতা নামক ক্লেশের উৎপত্তি হয়। যখন ব্যক্তি নিজের স্বরূপকে ঠিক প্রকারে জেনে নেয়, তখন তার ভ্রান্তি দূর হয়ে যায় যে- আমি এবং বুদ্ধি এক বস্তু নয়। আশ্মার স্বরূপকে ঠিক প্রকারে জেনে নিলেই ব্যক্তি মন, বুদ্ধি, ইন্দ্রিয়ের অধীন হয় না। এগুলিকে বশীভূত করে মোক্ষের সিদ্ধি লাভ করে নেয়। নিজের স্বরূপকে ঠিকভাবে জেনে নিলেই ঈশ্বরের স্বরূপকেও শীঘ্র জেনে নিতে পারে। যে ব্যক্তি নিজের স্বরূপকে ঠিক ভাবে জানতে পারে না সে ঈশ্বরের স্বরূপকেও জানতে পারে না।।২০।।

সূত্র - তদর্থ এব দৃশ্যস্যাস্মা।।২১।।

শব্দার্থ - (তদ-অর্থঃ) ওই জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গের জন্য (এব) অবশ্যই (দৃশ্যস্য) দৃশ্যের (আশ্মা) স্বরূপ হয়।

সূত্রার্থ - দৃশ্যের স্বরূপ জীবাশ্মার ভোগ ও অপবর্গকে সিদ্ধ করার জন্য হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দৃশ্যের কী প্রয়োজন; সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

এই দৃশ্যের রচনা ঈশ্বর, যাতে জীবাশ্মা ভোগ এবং অপবর্গ রূপ প্রয়োজনকে সিদ্ধ করতে পারে সেই জন্য করেছেন। এই সংসারে তিনটি পদার্থ রয়েছে ঈশ্বর, জীব ও প্রকৃতি। ঈশ্বর সকল কামনা হতে রহিত; তাই তাঁর কাছে এই দৃশ্যের কোনো প্রয়োজন নাই। প্রকৃতি একটি জড়পদার্থ হওয়ায় সে নিজেকে স্বয়ং ভোগ করতে পারে না। কিন্তু জীবাশ্মার নিজস্ব কোনো আনন্দ না থাকায় সে এই দৃশ্যকে ভোগ করে।।২১।।

অবতরণিকা - এই দৃশ্য সকলের জন্য সমান রূপে প্রয়োজনীয় হয় না, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - কৃতার্থম্‌প্রতি নষ্টমপ্যনষ্টং তদন্যসাধারণত্বাৎ।।২২।।

শব্দার্থ - (কৃতার্থম্‌-প্রতি) যে সকল জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন সিদ্ধ হয়ে গেছে তাদের জন্য (নষ্টম্) নষ্ট (অপি) হলেও (অ-নষ্টম্) নষ্ট হয় না (তদ-অন্য-সাধারণত্বাৎ) কৃতার্থ পুরুষদের হতে ভিন্ন পুরুষদের জন্য ভোগ

এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন অবশিষ্ট থাকায়।

সূত্রার্থ - যে সকল জীবাত্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন সিদ্ধ হয়ে গেছে তাদের জন্য এই দৃশ্য নষ্টের মত হলেও নষ্ট হয় না। তার কারণ হল কৃতার্থ পুরুষদের হতে ভিন্ন পুরুষদের জন্য ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন অবশিষ্ট থাকায়।

ব্যাখ্যা - এই দৃশ্যের প্রয়োজন বস্তুত কাদের জন্য ? সেই বিষয়ে এই সূত্রে বলা হয়েছে।

যে সকল ব্যক্তি যোগাভ্যাস করতে-করতে ঈশ্বর সাক্ষাৎকার পর্যন্ত পৌঁছে যান এবং মুক্তির অধিকারী হয়ে যান তাঁদের জন্য এই দৃশ্য সংসার প্রয়োজন হীন হয়ে যায়। কিন্তু যে সকল জীবাত্মা এখনো পর্যন্ত ভোগ এবং মোক্ষকে সিদ্ধ করেননি তাদের জন্যই এই দৃশ্যের সার্থকতা অব্যাহত থাকে। যতক্ষণ পর্যন্ত জীবাত্মা মোক্ষকে প্রাপ্ত না করে নেয় ততক্ষণ পর্যন্ত ঈশ্বর জীবাত্মার জন্য এই সকল বুদ্ধি ইত্যাদি পদার্থের সাথে সম্বন্ধ করতে থাকেন। তাই এই সকল পদার্থের সাথে জীবাত্মার সম্বন্ধ প্রবাহ হতে অনাদি।।২২।।

অবতরণিকা - প্রকৃতি এবং পুরুষের সম্বন্ধের স্বরূপ কেমন হয় সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - স্বস্বামিশক্ত্যাঃ স্বরূপোপলব্ধিহেতুঃ সংযোগঃ।২৩।।

শব্দার্থ - (স্ব-স্বামি-শক্ত্যাঃ) স্বশক্তির এবং স্বামিশক্তির (স্বরূপ-উপলব্ধি-হেতুঃ) স্বরূপের জ্ঞানের কারণ হল (সংযোগঃ) তাদের মধ্যে পরস্পর সম্বন্ধ।

সূত্রার্থ - প্রকৃতি এবং প্রাকৃতিক পদার্থের গুণ, কর্ম এবং স্বভাব তথা জীবাত্মা এবং জীবাত্মার গুণ, কর্ম এবং স্বভাব এই দুটির স্বরূপের জ্ঞানের কারণ হল তাদের মধ্যে পরস্পর সম্বন্ধ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে স্ব-স্বামীর স্বরূপের উপলব্ধির কারণ কী ? সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

‘স্ব’ শব্দের অর্থ হল প্রকৃতি এবং প্রকৃতি হতে উৎপন্ন পদার্থ। ‘স্বামী’ শব্দের অর্থ হল জীবাত্মা। স্বামী পুরুষ তত্ত্বজ্ঞান দর্শনের জন্যই দৃশ্য রূপী স্ব-এর সাথে সংযুক্ত হয়। ওই সংযোগের ফলে যখন দৃশ্যের উপলব্ধি (জ্ঞান) হয়; তখন তাকে ভোগ বলা হয়। যখন দৃষ্টার স্বরূপের উপলব্ধি হয়; তখন তাকে যোগ অর্থাৎ অপবর্গ বলা হয়। এই দর্শন কার্যের অবসান হয়ে গেলেই সংযোগেরও অবসান ঘটে। এইজন্য তত্ত্বজ্ঞান রূপী দর্শনকে বিয়োগের কারণ বলা হয়েছে এবং মিথ্যাজ্ঞান রূপী অদর্শনকে সংযোগের কারণ বলা হয়। তত্ত্বজ্ঞান দ্বারা মিথ্যাজ্ঞানের নিবৃত্তি

হয়, মিথ্যাজ্ঞানের নিবৃত্তি হলে বন্ধনেরও নিবৃত্তি হয় এবং অবশেষে সে মুক্ত হয়ে যায়। তত্ত্বজ্ঞানের অর্থ হল ঈশ্বর, জীব ও প্রকৃতির সাক্ষাৎকার। মিথ্যাজ্ঞানের অর্থ হল ঈশ্বর, জীব ও প্রকৃতি সম্বন্ধে বিপরীত মান্যতা।।২৩।।

অবতরণিকা - প্রকৃতি এবং পুরুষের সাথে যে সম্বন্ধ রয়েছে তার কারণ কী? সেই বিষয়েই নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - তস্য হেতুরবিদ্যা।।২৪।।

শব্দার্থ - (তস্য) সেই সম্বন্ধের (হেতুঃ) কারণ হল (অবিদ্যা) মিথ্যাজ্ঞান।

সূত্রার্থ - সেই সম্বন্ধের কারণ হল অবিদ্যা অর্থাৎ মিথ্যাজ্ঞান।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রকৃতি এবং পুরুষের যে সম্বন্ধ রয়েছে তার কারণ হল অবিদ্যা, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

অবিদ্যা অর্থাৎ মিথ্যাজ্ঞান। এই মিথ্যাজ্ঞানের সংস্কারের ফলেই বিবেকখ্যাতি রূপী তত্ত্বজ্ঞান হতে দেয় না। এই তত্ত্বজ্ঞান না হওয়ার ফলেই এই সংসারের বন্ধনে বেঁধে থাকি। বিবেকখ্যাতি উৎপন্ন হয়ে গেলেই মিথ্যাজ্ঞানের সংস্কার দূর হয়ে যায়। ওই সংস্কার দূর হয়ে গেলে বুদ্ধি, ভোগ এবং অপবর্গকে সিদ্ধ করে নিরুদ্ধ হয়ে যায় অর্থাৎ আগামী জন্মের কারণ হয় না এবং জীবাশ্মা দীর্ঘ সময় পর্যন্ত মোক্ষ বিদ্যমান থাকে। তাই বিবেকখ্যাতিকে মোক্ষের কারণ বলা হয়েছে এবং অবিদ্যাকে বন্ধনের কারণ বলা হয়েছে।।২৪।।

অবতরণিকা - দুঃখ এবং দুঃখের কারণ সম্পর্কে চর্চা করার পর এবার মোক্ষ সম্পর্কে নিম্ন সূত্রে চর্চা করা হল -

সূত্র - তদভাবাৎ সংযোগাভাবো হানং তদৃশেঃ কৈবল্যম্।।২৫।।

শব্দার্থ - (তদ-অভাবাৎ) সেই অবিদ্যার অভাব হয়ে গেলে (সংযোগ-অভাবঃ) সংযোগেরও অভাব হয়ে যায়। (হানম্) সমস্ত দুঃখ হতে নিস্তার হওয়া (তদৃশেঃ) সেটিই জীবাশ্মার (কৈবল্যম্) কৈবল্য।

সূত্রার্থ - সেই অবিদ্যার অভাব হয়ে গেলে দ্রষ্টা এবং দৃশ্যের সংযোগেরও অভাব হয়ে যায়; তাকেই মোক্ষ বলা হয়; সেটিই জীবাশ্মার কৈবল্য।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে মোক্ষের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

অবিদ্যার অভাব হয়ে গেলে প্রকৃতি এবং পুরুষের সম্বন্ধেরও অভাব হয়ে যায়। সম্বন্ধের অভাব হয়ে গেলে জীবাশ্মার বন্ধনেরও নিতান্ত বিনাশ হয়ে যায়। একেই

হান অর্থাৎ মোক্ষ বলা হয়। একেই আত্মার কৈবল্য বলা হয়। দুঃখের কারণের নিবৃত্তি হয়ে গেলে দুঃখেরও নিবৃত্তি হয়ে যায়। সেই অবস্থায় পুরুষ নিজ স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়ে যায় এবং পরমাত্মার আনন্দকে দীর্ঘ সময় পর্যন্ত ভোগ করে। ১২৫।।

অবতরণিকা - সেই হানের উপায় কী? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে-

সূত্র - বিবেকখ্যাতিরবিপ্লবা হানোপায়ঃ। ১২৬।।

শব্দার্থ - (বিবেক-খ্যাতিঃ) বুদ্ধি এবং পুরুষের ভিন্নতার জ্ঞানের (অবিপ্লবা) পরিপক্ক অবস্থাকে (হান-উপায়ঃ) মোক্ষের সাধন বলা হয়।

সূত্রার্থ - বুদ্ধি ইত্যাদি প্রাকৃতিক পদার্থের তথা পুরুষের ভেদক জ্ঞানের পরিপক্ক অবস্থাকে প্রাপ্ত হওয়াই মোক্ষের সাধন।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অবিচলিত বিবেকখ্যাতিকে মোক্ষের সাধন বলা হয়েছে।

বুদ্ধি এবং পুরুষের ভিন্নতার জ্ঞানকে বিবেকখ্যাতি বলা হয়। কিন্তু সে জ্ঞান অনুমান এবং শব্দ প্রমাণ দ্বারা হলে সেটাকে বিবেকখ্যাতি বলা হয় না। যখন আত্মা, বুদ্ধি, মন, ইন্দ্রিয় এবং শরীরের স্বরূপের পৃথক-পৃথক প্রত্যক্ষ হয় তাকেই বিবেকখ্যাতি বলা হয়। এই বিবেকখ্যাতিকেই মোক্ষের বিশেষ উপায় বলা হয়েছে। এই বিবেকখ্যাতিকে প্রাপ্ত করার জন্য সম্প্রজ্ঞাত সমাধির বিশেষ অভ্যাস করতে হয়। যখন ব্যক্তির বৈরাগ্য হয় তখন তার জ্ঞান বাড়তে থাকে। কিন্তু লৌকিক সংস্কারের কারণে সমাধি ভঙ্গ হতে থাকে। এটি বিবেকখ্যাতির অপরিপক্ক অবস্থা। একে যম-নিয়মের পালন দ্বারা, ঈশ্বরপ্রণিধান ইত্যাদি সাধনের দ্বারা পরিপক্ক অবস্থায় নিয়ে যাওয়া উচিত। এর দ্বারা মিথ্যাজ্ঞানের নিবৃত্তি এবং পরবৈরাগ্যের উৎপত্তি হয়। যখন মিথ্যাজ্ঞান দৃষ্টবীজ ভাবে প্রাপ্ত হয়ে অংকুর উৎপাদনে অসমর্থ হয়, তখন ক্লেশ এবং রজোগুণ হতে রহিত বুদ্ধির উৎকৃষ্ট বৈশাদ্য এবং বশীকার অনুভূতিতে স্থিত হয়ে গেলে বিবেক জ্ঞানের প্রবাহ নির্মল হয়। সেই অখণ্ডিত বিবেকখ্যাতিই মুক্তির উপায়। তার দ্বারা মিথ্যাজ্ঞান দৃষ্টবীজ অবস্থাকে প্রাপ্ত হয় এর ফলে মিথ্যাজ্ঞান পুনঃ উৎপন্ন হয় না এবং দেহাবসানের পর সে মোক্ষকে প্রাপ্ত করে নেয়। ১২৬।।

সূত্র - তস্য সপ্তধা প্রাপ্তভূমিঃ প্রজ্ঞা। ১২৭।।

শব্দার্থ - (তস্য) ওই বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত যোগীর (সপ্তধা) সাত প্রকারের (প্রাপ্তভূমিঃ) উৎকৃষ্ট অবস্থা যুক্ত (প্রজ্ঞা) বুদ্ধি উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - ওই বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত যোগীর সাত প্রকারের উৎকৃষ্ট বুদ্ধি উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত যোগীর সাত প্রকারের উৎকৃষ্ট বুদ্ধি উৎপন্ন হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সেই সাত প্রকারের বুদ্ধি হল- (১) ত্যাগ করার যোগ্য দুঃখকে পূর্ণরূপে জেনে নিয়েছি। দুঃখ সম্পর্কে জানার কিছু অবশিষ্ট নেই। (২) দুঃখের কারণ অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশকে পূর্ণরূপে ক্ষীণ করে দিয়েছি। এর কোনো ভাগ ক্ষীণ করার যোগ্য অবশিষ্ট নেই। (৩) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি দ্বারা জীবনকালেই মোক্ষের সাক্ষাৎকার করে নিয়েছি। (৪) বিবেকখ্যাতি রূপী মোক্ষের সাধনকে আমি সিদ্ধ করে নিয়েছি, এখন কোনো সাধন সিদ্ধ করার যোগ্য অবশিষ্ট নেই। এই চারটি হল বুদ্ধির কার্য হতে বিমুক্তি। চিত্তের কার্য বিমুক্তি হল তিন প্রকারের সেটি নিম্নরূপ- (৫) চিত্তের দুটি প্রয়োজন ভোগ এবং অপবর্গ সেটি পূর্ণ হয়ে গেছে। (৬) যেমন- পর্বত শিখর হতে পতিত পাথর মধ্যে কোথাও স্থির না হয়ে ভূমি তলে গিয়ে পড়ে। সেরকম সূক্ষ্ম শরীর ইত্যাদি সকলে চিত্তের সাথে প্রলয় অভিমুখ হয়ে গেছে। (৭) এই অবস্থায় সত্ত্ব ইত্যাদি গুণের সম্বন্ধ হতে পৃথক হয়ে নির্মল পুরুষ, কেবল নিজ বিশুদ্ধ স্বরূপে এবং পরমাত্মার স্বরূপে অবস্থিত হয়। একেই মুক্তি বলা হয়। এই অবস্থা প্রাপ্তকারী যোগীকে মুক্ত বলা হয়। ১২৭।।

অবতরণিকা - বিবেকখ্যাতিকে মোক্ষের উপায় বলা হয়েছে। কিন্তু সেই বিবেকখ্যাতি কোন্ সাধনের দ্বারা প্রাপ্ত হয়? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে ক্রমশ বর্ণনা করা হল -

সূত্র - যোগাঙ্গানুষ্ঠানাদশুদ্ধিক্ষয়ে জ্ঞানদীপ্তিরাবিবেকখ্যাতেঃ । ১২৮ ।।

শব্দার্থ - (যোগ-অঙ্গ-অনুষ্ঠানাদ) যোগের আট অঙ্গকে আচরণ করলে (অশুদ্ধিক্ষয়ে) অশুদ্ধির নাশ হলে (জ্ঞান-দীপ্তিঃ) জ্ঞানের বিকাশ (আবিবেকখ্যাতেঃ) বিবেকখ্যাতি পর্যন্ত হয়।

সূত্রার্থ - মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা যোগের আট অঙ্গকে আচরণ করলে অশুদ্ধির নাশ হয় এবং অশুদ্ধির নাশ হলে জ্ঞানের বিকাশ বিবেকখ্যাতি পর্যন্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেকখ্যাতিকে প্রাপ্ত করার জন্য যোগের আট অঙ্গের আচরণ করার কথা বলা হয়েছে।

যোগের আট অঙ্গ সম্পর্কে পরে বর্ণনা করা হয়েছে। সেই অঙ্গের অনুষ্ঠান করলে পাঁচ প্রকারের অবিদ্যার নাশ হয়। অবিদ্যার নাশ হলে সম্যক জ্ঞানের অভিব্যক্তি হয়। সাধক যতটা-যতটা সাধনের আচরণ করতে থাকে ততটা-ততটা তার অশুদ্ধির নাশ হতে থাকে। অশুদ্ধির নাশের সাথে-সাথে জ্ঞানের প্রকাশও বাড়তে থাকে।

এই জ্ঞানের প্রকাশ বাড়তে-বাড়তে বিবেকখ্যাতি পর্যন্ত পৌঁছায়। যোগের অনুষ্ঠান অশুদ্ধির বিয়োগের কারণ হয়। যেমন- কুড়োল কাষ্ঠকে ছেদন করার কারণ হয়। আবার বিবেকখ্যাতি প্রাপ্তির কারণ হয়। যেমন- ধর্ম সুখের কারণ হয়। এইজন্য যোগের অনুষ্ঠান করা আবশ্যিক।

শাস্ত্রে নয় প্রকারের কারণ উল্লেখ করা হয়েছে, যেমন -

উৎপত্তিস্থিত্যভিব্যক্তিবিকারপ্রত্যয়াপ্তয়ঃ ।

বিয়োগান্যত্বত্বতয়ঃ কারণং নবধা স্মৃতম্ ।।

- (১) উৎপত্তির কারণ- মন, জ্ঞানের উৎপত্তির কারণ হয় অর্থাৎ আত্মা মনের দ্বারা জ্ঞানের উৎপত্তি করে।
- (২) স্থিতির কারণ- মনের স্থিতির কারণ ভোগ এবং অপবর্গ। যেমন- শরীরের স্থিতির কারণ আহার হয়।
- (৩) অভিব্যক্তির কারণ- প্রকাশ পদার্থের রূপের অভিব্যক্তির কারণ হয়।
- (৪) বিকারের কারণ- অন্য বিষয় মনের বিকারের কারণ হয়।
- (৫) প্রত্যয়ের কারণ- ধোঁয়ার জ্ঞান, আগুনের জ্ঞানের কারণ হয়।
- (৬) প্রাপ্তির কারণ- যোগাস্থের অনুষ্ঠান, বিবেকখ্যাতির প্রাপ্তির কারণ হয়।
- (৭) বিয়োগের কারণ- যোগাস্থের অনুষ্ঠান, অশুদ্ধির বিয়োগের কারণ হয়।
- (৮) অন্যত্বের কারণ- স্বর্ণকার, সুবর্ণের অন্যত্বের কারণ হয়।
- (৯) ত্বতির কারণ- শরীর, ইন্দ্রিয় গুলির ধারণের কারণ হয় এবং ইন্দ্রিয়, শরীরের ধারণের কারণ হয়। একইভাবে মনুষ্য, পশু, পক্ষী, ঔষধি ইত্যাদি পরস্পরের ধারণের কারণ হয়।।২৮।।

অবতরণিকা - যোগের আট অঙ্গ গুলি কী কী ? সেটি নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - যমনিয়মাসনপ্রাণায়ামপ্রত্যাহারধারণাধ্যান-

সমাধয়োষ্টাবঙ্গানি ।।২৯।।

(যম-নিয়ম-আসন-প্রাণায়াম-প্রত্যাহার-ধারণা-ধ্যান-সমাধয়ঃ) যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি (অষ্টৌ) এগুলি যোগের আট (অঙ্গানি) অঙ্গ।

সূত্রার্থ - যোগের আট অঙ্গ গুলি হল যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি।

ব্যাখ্যা - ক্রমানুসার এর অনুষ্ঠান এবং এর স্বরূপকে পরবর্তী কিছু সূত্র দ্বারা বর্ণনা করা হয়েছে।

অবতরণিকা - তাদের মধ্যে প্রথম ‘যম’-এর সম্পর্কে বলা হয়েছে -

সূত্র - অহিংসাসত্যাস্তেয়ব্রহ্মচর্যাপরিগ্রহা যমাঃ ।। ৩০ ।।

শব্দার্থ - (অহিংসা-সত্য-অস্তেয়-ব্রহ্মচর্য-অপরিগ্রহাঃ) অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য এবং অপরিগ্রহ (যমাঃ) এগুলিকে যম বলা হয়।

সূত্রার্থ - অহিংসা, সত্য, অস্তেয়, ব্রহ্মচর্য এবং অপরিগ্রহ এগুলিকে যম বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পাঁচটি যমের চর্চা করা হয়েছে।

অহিংসা - সর্বথা সর্বদা সকল প্রাণীর সাথে প্রীতির সহিত ব্যবহার করাকে ‘অহিংসা’ বলা হয়। আগেকার যম-নিয়মের মূল হল অহিংসা অর্থাৎ সেগুলি অহিংসার উপর আশ্রিত। অহিংসাকে নির্মল করার জন্যই সেগুলির আচরণ করা হয়। তাই মহর্ষি দয়ানন্দ সরস্বতী জীও এই সূত্রের ব্যাখ্যা করতে গিয়ে তিনি লিখেছেন - “জো উপাসনা কা আরম্ভ করনা চাহে উসকে লিএ যহী আরম্ভ হৈ কি বহু কিসীসে বৈর ন রক্খে, সর্বদা সব সে প্রীতি করে” (সত্যো সপ্তমো)।

সত্য- যেরকম দর্শন করেছে, অনুমান দ্বারা জেনেছে এবং শুনেছে সেরকমই মন এবং বাণীতে হওয়ায় ‘সত্য’ বলা হয়। নিজ জ্ঞানকে অন্যের কাছে পৌঁছানোর জন্য কথিত বাণী যেন ঠগকারী না হয়, ভ্রান্ত না হয়, অভিপ্রায়কে ব্যক্ত করতে সমর্থ হয় তাহলে তাকে সত্য বলা হবে। এই বাণী অন্যের উপকারের জন্যই প্রযুক্ত হয়; যদি অপকারের জন্য প্রয়োগ করা হয় তাহলে সেটি সত্য নয়।

অস্তেয়- মন, বচন এবং শরীর দ্বারা অবৈধ ভাবে অন্যের পদার্থকে গ্রহণ করাকে ‘স্তেয়’ অর্থাৎ চুরি বলা হয়। একে ছেড়ে দেওয়ায় অর্থাৎ অন্যের পদার্থকে অবৈধভাবে অভিলাষা না করাকে ‘অস্তেয়’ অর্থাৎ চুরি ত্যাগ বলা হয়।

ব্রহ্মচর্য- বেদ বিদ্যার পঠন-পাঠন করা, ঈশ্বরের উপাসনা করা এবং বীর্ষের রক্ষা করাকে ‘ব্রহ্মচর্য’ বলা হয়। এই ব্রহ্মচর্য পালন করার জন্য নিচে বর্ণিত অষ্ট মৈথুনের পালন করা অনিবার্য- “দর্শন, স্পর্শন, একান্ত সেবন, সম্ভাষণ, বিষয়ের কথা, পরস্পর ক্রীড়া, বিষয়ের ধ্যান এবং সঙ্গ করা এগুলি ত্যাগ করা উচিত।” (সত্যার্থ প্রকাশ তৃতীয় সমুদ্রাস)।

অপরিগ্রহ- বিষয়বস্তুতে উপার্জন, রক্ষণ, ক্ষয়, সঙ্গ এবং হিংসা দোষ দেখে বিষয় ভোগকে সংগ্রহ না করাকে ‘অপরিগ্রহ’ বলা হয়। অর্থাৎ হানিকারক, অনাবশ্যক

বাণী-বস্তু-বিচারের সংগ্রহ না করা ।। ৩০ ।।

অবতরণিকা - সেই যম সম্পর্কে কিছু নির্দেশ নিম্ন সূত্রে দেওয়া হয়েছে -

সূত্র - জাতিদেশকালসময়ানবচ্ছিন্নাঃ সার্বভৌমা মহাব্রতম্ ।। ৩১ ।।

শব্দার্থ - (জাতি-দেশ-কাল-সময়-অনবচ্ছিন্নাঃ) জাতি, স্থান, কাল এবং নিয়ম বিশেষ দ্বারা অবাধিত (সার্বভৌমাঃ) সব অবস্থায় পালন করার যোগ্য হয় (মহাব্রতম্) মহাব্রত ।

সূত্রার্থ - অহিংসা ইত্যাদি মহাব্রতকে জাতি, স্থান, কাল এবং নিয়ম বিশেষ দ্বারা অবাধিত, সব অবস্থায় পালন করার যোগ্য ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যমকে সব অবস্থায় পালন করার কথা বলা হয়েছে ।

সংসারে দেখা যায় যে, ব্যক্তি নিজের অনুকূল সুবিধা অনুসারে কিছু মনগড়ন্ত নিয়ম তৈরি করে তাকে অহিংসার নাম দিয়েছে । কিন্তু এভাবে যম গুলিকে সীমিত করা যায় না । অহিংসাকে সর্বত্র ভূগোলে সব বিষয়ে সব প্রকারে মন, বচন এবং শরীর দ্বারা এর পালন করাকে মহাব্রত বলা হয়েছে ।

জাতি দ্বারা সীমিত অহিংসা- যেমন কোনো ব্যক্তি বলেন যে আমি কেবল মাছেরই হত্যা করি অন্য প্রাণীকে নয় । এটিই আমার অহিংসা ।

দেশ দ্বারা সীমিত অহিংসা- যেমন কোনো ব্যক্তি বলেন যে আমি পুণ্য স্থলে হিংসা করি না, অন্যত্র করি । এটিই আমার অহিংসা ।

কাল দ্বারা সীমিত অহিংসা- যেমন কোনো ব্যক্তি বলেন যে আমি অমাবস্যা ইত্যাদি পর্বের দিনে হিংসা করি না; অন্য দিনে করি । এটিই আমার অহিংসা ।

সময় দ্বারা সীমিত অহিংসা- যেমন কোনো ব্যক্তি কোনো প্রয়োজন সিদ্ধির জন্য নিয়ম তৈরি করে নেয় যে অমুক অবসরেই আমি হিংসা করব, ভিন্ন অবসরে নয়; এটিই আমার অহিংসা । এইভাবে জাতি, দেশ, কাল ও সময়ের দ্বারা এই পাঁচটি যমকে সীমিত করা যায় না । এই পাঁচটি যম সর্বথা সর্বদা সর্বকালে পালনীয়, তাই একে ‘সার্বভৌম মহাব্রত’ বলা হয়েছে ।। ৩১ ।।

সূত্র - শৌচসন্তোষতপঃস্বাধ্যায়েশ্বরপ্রণিধানানি নিয়মাঃ ।। ৩২ ।।

শব্দার্থ - (শৌচ-সন্তোষ-তপঃ-স্বাধ্যায়-ঈশ্বরপ্রণিধানানি) শৌচ, সন্তোষ, তপ, স্বাধ্যায় এবং ঈশ্বরপ্রণিধান (নিয়মাঃ) এগুলিকে নিয়ম বলা হয় ।

সূত্রার্থ - শৌচ, সন্তোষ, তপ, স্বাধ্যায় এবং ঈশ্বরপ্রণিধান এই পাঁচটিকে নিয়ম বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পাঁচটি নিয়ম সম্পর্কে চর্চা করা হয়েছে।

শৌচ- শৌচ অর্থাৎ শুদ্ধি। এই শুদ্ধি দুই প্রকারের হয় এক বাহ্য শুদ্ধি, দ্বিতীয় আন্তরিক। শরীর, বস্ত্র, স্থান, পাত্র, ভোজন ইত্যাদির শুদ্ধি রাখা এবং ধন-সম্পত্তিকে ন্যায়পূর্বক উপার্জিত করাকে ‘বাহ্য শুদ্ধি’ বলা হয়। অবিদ্যা, মিথ্যাভিমান, রাগ, দ্বেষ, কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ইত্যাদিকে দূর করাকে ‘আন্তরিক শুদ্ধি’ বলা হয়।

সন্তোষ- পূর্ণ পুরুষার্থের পশ্চাৎ যা কিছু উপলব্ধ হয় তাতেই সন্তুষ্ট থাকা এবং তার অধিকের ইচ্ছা না করাকে ‘সন্তোষ’ বলা হয়।

তপ- ধর্মাচরণ করার সময় হানি-লাভ, সুখ-দুঃখ, মান-অপমান, শীত-গ্রীষ্ম, ক্ষুধা-পিপাসা, দীর্ঘ সময় দাড়িয়ে থাকা, বসে থাকা, কাষ্ঠ মৌন (কাষ্ঠের মত কাউকে সংকেতও না করা), আকার মৌন (আবশ্যিকতানুযায়ী সংকেত করা) ইত্যাদিকে শান্ত চিত্তে সহন করাকে ‘তপ’ বলে।

স্বাধ্যায়- বেদ এবং বেদানুকূল মোক্ষের স্বরূপকে বর্ণনকারী শাস্ত্রের পঠন-পাঠন এবং ঈশ্বরের স্বরূপকে প্রকাশকারী প্রণব ইত্যাদি মন্ত্রকে অর্থ সহিত জপ করাকে ‘স্বাধ্যায়’ বলা হয়।

ঈশ্বরপ্রণিধান- সমস্ত বিদ্যাদাত্রী পরম গুরু ঈশ্বরকে সমস্ত কর্ম সমর্পিত করে দেওয়া, তাঁরই ভক্তি করা, তাঁর আদেশ পালন করা, শরীর, মন, বুদ্ধি ইত্যাদি সকল পদার্থকে ঈশ্বরের মনে করে ধর্মাচরণ করা এবং সেগুলির কোনোও লৌকিক ফলের ইচ্ছা না করাকে ‘ঈশ্বরপ্রণিধান’ বলা হয়।।৩২।।

অবতরণিকা- যম-নিয়ম পালন করার সময় কোনো বিতর্ক অর্থাৎ বিপরীত পরিস্থিতি উপস্থিত হলে কি করা উচিত, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - বিতর্কবাধনে প্রতিপক্ষভাবনম্।।৩৩।।

শব্দার্থ - (বিতর্ক-বাধনে) বিতর্ক দ্বারা বাধা উপস্থিত হলে (প্রতিপক্ষ-ভাবনম্) বিরুদ্ধ পক্ষের ভাবনা করা উচিত।

সূত্রার্থ - যম-নিয়ম পালন করার সময় বিতর্ক দ্বারা বাধা উপস্থিত হলে বিরুদ্ধ পক্ষের ভাবনা করা উচিত অর্থাৎ যম-নিয়মকে ভঙ্গ করলে অনেক বড় হানি হয়ে যাবে, এরকম বিচার করলে বিতর্ক থেমে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিতর্ক উপস্থিত হলে যোগীকে বিরুদ্ধ পক্ষের ভাবনা করে, সেই বিতর্ককে নিরুদ্ধ করা উচিত; সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যখন কোনো যোগীর সাথে কোনো ব্যক্তি অন্যায়চরণ করে তখন তার মধ্যে বিতর্ক উপস্থিত হয় যে আমি অপকারীকে হত্যা করব, অসত্য বলব, তার দ্রব্যের অপহরণ করব, তার স্ত্রীর সাথে অনাচার করব, তার সম্বৃত্ত ধনকে অধিকার করব। এইভাবে অতি তীব্র কুমারগরুপী বিতর্ক জ্বর দ্বারা পীড়িত হলে এর প্রতিপক্ষের ভাবনা করা উচিত যে- “ঘোর সংসার রূপী আগুনে ঝলসাতে-ঝলসাতে আমি সকল প্রাণীকে অভয় প্রদান করার জন্য যোগ মার্গের শরণ নিয়েছিলাম কিন্তু আমি পুনঃ বিনাশকারী মার্গকে গ্রহণ করে কুকুরের সমান হয়ে গেছি।” যেমন কুকুর বমন করে পুনঃ গ্রহণ করে নেয় সেরকম আমিও পুনঃ ওই সকল অনিষ্ট গ্রহণকারী হয়ে গেছি। এই আচরন দ্বারা আমার মহান বিনাশ হয়ে যাবে। এধরনের বিরুদ্ধ প্রতিপক্ষের ভাবনা করে বিতর্ক গুলিকে নিরুদ্ধ করা উচিত।।৩৩।।

অবতরণিকা - নিম্ন সূত্রে কিছু আরও বিরুদ্ধ পক্ষের ভাবনা করার কথা উল্লেখ করা হয়েছে -

**সূত্র - বিতর্ক হিংসাদয়ঃ কৃতকারিতানুমোদিতা
লোভক্রোধমোহপূর্বকা মৃদুমধ্যাধিমাত্রা দুঃখাঙ্গানানন্তফলা
ইতি প্রতিপক্ষভাবনম্।।৩৪।।**

শব্দার্থ - (বিতর্কঃ) বিতর্ক বলা হয় (হিংসা-আদয়ঃ) হিংসা ইত্যাদিকে যেটি (কৃত-কারিত-অনুমোদিতাঃ) ব্যক্তি স্বয়ং করুক, কারও দ্বারা করিয়ে থাকুক অথবা অনুমোদন করে থাকুক যেটি (লোভ-ক্রোধ-মোহপূর্বকাঃ) লোভ, ক্রোধ এবং মোহ দ্বারা উৎপন্ন হয় তথা (মৃদু-মধ্য-অধিমাত্রা) মৃদু, মধ্য এবং অধিমাত্র [তীব্র] ভেদ যুক্ত হয় (দুঃখ-অঙ্গান-অনন্তফলাঃ) অনন্ত দুঃখ এবং অনন্ত অঙ্গান রূপে ফলদায়ক হয় (ইতি) এরকম (প্রতিপক্ষ-ভাবনম্) প্রতিপক্ষের ভাবনা করা উচিত।

সূত্রার্থ - যম-নিয়মের বিরোধী ভাবনাকে ‘বিতর্ক’ বলা হয় যেটি ব্যক্তি স্বয়ং করুক, কারও দ্বারা করিয়ে থাকুক অথবা অনুমোদন করে থাকুক, এভাবে এটি তিন প্রকারের হয়। এই তিনটি লোভ, ক্রোধ এবং মোহ দ্বারা উৎপন্ন হয়। এগুলি আবার মৃদু, মধ্য এবং অধিমাত্র (তীব্র) ভেদ যুক্ত হয়। এর ফল অত্যাধিক দুঃখদায়ী এবং অত্যাধিক অঙ্গানদায়ী হয়। এরকম প্রতিপক্ষের বিচার করে সেই সব বিতর্ককে নিরুদ্ধ করা উচিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও বিতর্ক উপস্থিত হলে কি ধরনের প্রতিপক্ষের ভাবনা করে সেগুলি হতে নিস্তার পাওয়া যায়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

বিতর্কের মধ্যে হিংসার বিষয়ে এটা জানা উচিত যে হিংসা তিন প্রকারের হয়- কৃত (স্বয়ং করা), কারিত (অন্যের দ্বারা করানো) এবং অনুমোদিত (অনুমোদন করা

অর্থাৎ উচিৎ মনে করা)। হিংসার তিনটি কারণ হল- লোভ, ক্রোধ এবং মোহ।
 লোভ দ্বারা হিংসা- চামড়ার জন্য মাংস সংগ্রহ করবো, ক্রোধ দ্বারা হিংসা-
 এই ব্যক্তি অপকার করেছে এইজন্য তার সাথে দুর্ব্যবহার করবো এবং মোহ দ্বারা
 হিংসা- আমার ধর্ম হবে এই জন্য একে বলি দিচ্ছি। এখন লোভ, ক্রোধ এবং মোহ
 গুলি একটি-একটি পুনঃ তিন প্রকারের হয়ে যায়, যেমন-

লোভ দ্বারা কৃত হিংসা।

লোভ দ্বারা কারিত হিংসা।

লোভ দ্বারা অনুমোদিত হিংসা।

একইভাবে-

ক্রোধ দ্বারা কৃত হিংসা।

ক্রোধ দ্বারা কারিত হিংসা।

ক্রোধ দ্বারা অনুমোদিত হিংসা।

একইভাবে-

মোহ দ্বারা কৃত হিংসা।

মোহ দ্বারা কারিত হিংসা।

মোহ দ্বারা অনুমোদিত হিংসা।

এইভাবে নয়টি ভেদ হয়ে যায়।

আবার লোভ, ক্রোধ এবং মোহের তিনটি স্তর রয়েছে- মৃদু, মধ্য এবং অধিমাত্র (তীব্র)। তখন তাদের ভেদ নিম্নরূপ হয় -

মৃদু লোভ কৃত, মধ্য লোভ কৃত এবং অধিমাত্র (তীব্র) লোভ কৃত।

মৃদু লোভ কারিত, মধ্য লোভ কারিত এবং অধিমাত্র (তীব্র) লোভ কারিত।

মৃদু লোভ অনুমোদিত, মধ্য লোভ অনুমোদিত এবং অধিমাত্র (তীব্র) লোভ
 অনুমোদিত।

আবার মৃদু, মধ্য এবং অধিমাত্রও পুনঃ তিন-তিন প্রকারের হয়, যেমন-

মৃদুমৃদু, মধ্যমৃদু এবং তীব্রমৃদু।

মৃদুমধ্য, মধ্যমধ্য এবং তীব্রমধ্য।

মৃদুতীব্র, মধ্যতীব্র, এবং তীব্রতীব্র।

উপরোক্ত বিভাগ অনুসারে কেবল লোভেরই সাতাশটি ভেদ হয়ে যায়, যেমন
 কৃত লোভ নয় প্রকারের হয়-

মৃদুমৃদু কৃত লোভ, মধ্যমৃদু কৃত লোভ এবং তীব্রমৃদু কৃত লোভ ।

মৃদুমধ্য কৃত লোভ, মধ্যমধ্য কৃত লোভ এবং তীব্রমধ্য কৃত লোভ ।

মৃদুতীব্র কৃত লোভ, মধ্যতীব্র কৃত লোভ, এবং তীব্রতীব্র কৃত লোভ ।

আবার কারিত লোভও নয় প্রকারের হয়-

মৃদুমৃদু কারিত লোভ, মধ্যমৃদু কারিত লোভ এবং তীব্রমৃদু কারিত লোভ ।

মৃদুমধ্য কারিত লোভ, মধ্যমধ্য কারিত লোভ এবং তীব্রমধ্য কারিত লোভ ।

মৃদুতীব্র কারিত লোভ, মধ্যতীব্র কারিত লোভ, এবং তীব্রতীব্র কারিত লোভ ।

আবার অনুমোদিত লোভও নয় প্রকারের হয় -

মৃদুমৃদু অনুমোদিত লোভ, মধ্যমৃদু অনুমোদিত লোভ এবং তীব্রমৃদু অনুমোদিত লোভ ।

মৃদুমধ্য অনুমোদিত লোভ, মধ্যমধ্য অনুমোদিত লোভ এবং তীব্রমধ্য অনুমোদিত লোভ ।

মৃদুতীব্র অনুমোদিত লোভ, মধ্যতীব্র অনুমোদিত লোভ, এবং তীব্রতীব্র অনুমোদিত লোভ ।

অতএব লোভের সাতাশটি (২৭) ভেদ; একই রকম ভাবে ক্রোধের এবং মোহেরও সাতাশটি-সাতাশটি (২৭-২৭) ভেদ হওয়ায় হিংসা একাশি (২৭X৩=৮১) প্রকারের হয় । আবার হিংসাকারী ব্যক্তির বিচারও তিন প্রকারের হতে পারে -

নিয়ম- একটিই প্রাণী=কেবল মাছেরই হিংসা করব ।

বিকল্প- মাছ অথবা ছাগল, কোনোও একটি প্রাণীকে হিংসা করব ।

সমুচ্চয়- যে প্রাণী সামনে আসবে তারই হিংসা করব ।

এইভাবে প্রাণধারী প্রাণী অসংখ্য হওয়ায় হিংসাও অসংখ্য প্রকারের হতে পারে । একই রকমভাবে অসত্য ইত্যাদি বিতর্কের ক্ষেত্রেও জানা উচিত । যোগাভ্যাসী এই বিতর্কের বিষয়ে এইভাবে বিচার করা উচিত যে যদি আমি এই বিতর্কের অনুসার আচরণ করি তাহলে এর ফল পশু-পক্ষী, কীট-পতঙ্গ ইত্যাদি বিবিধ যোনিতে দীর্ঘকাল পর্যন্ত অজ্ঞান অবস্থায় থেকে মহাদুঃখ ভোগ করতে হবে । যেমন হিংসক, বধ করার যোগ্য প্রাণীকে প্রথমে তার বলকে ক্ষীণ করে, পশ্চাৎ অস্ত্র ইত্যাদির প্রহার দ্বারা তাকে দুঃখী করে, অবশেষে তাকে জীবন হতে বিযুক্ত করে দেয় । সেই রকম হিংসাকারী ব্যক্তিরও প্রথমে চেতন-অচেতন সাধন ঈশ্বর নির্বল করে দেয় । দুঃখ দেওয়ার ফলে হিংসককেও নরক দুঃখদায়ী=পশু-পক্ষী, তীর্থক=কীট-পতঙ্গ ইত্যাদি তথা মৃত শরীরে কীট রূপে জন্ম দিয়ে দুঃখ ভোগ

করায়। জীবন হতে বিযুক্ত করার ফলে হিংসাকারীকেও প্রত্যেক ক্ষণ মরণাপন্ন অবস্থায় বর্তমান রাখে, মৃত্যুর ইচ্ছা করতে থাকলেও দুঃখ রূপী ফল নিশ্চিত রূপে ভোগ্য হওয়ায়, সে কেবল কোনো প্রকারে শ্বাস নিয়ে বেঁচে থাকে। যদি তার কিছু পুণ্য অবশিষ্ট থাকে তাহলে হিংসার সাথে পুণ্য কর্মকে মিলিয়ে তার ফল স্বরূপ কিছু সুখ প্রাপ্তি হলেও সেই হিংসকের অল্লায়ু হয়। এরকম অনিষ্ট কর্মের ফলকে জেনে যোগী প্রতিপক্ষের ভাবনা করলে হিংসা ইত্যাদি দুষ্ট কর্ম হতে বেঁচে যায়।।৩৪।।

অবতরণিকা - প্রতিপক্ষের ভাবনা দ্বারা বিতর্ককে ত্যাগ করে অহিংসার পালন করলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - অহিংসাপ্রতিষ্ঠায়াং তৎসন্নিধৌ বৈরত্যাগঃ।।৩৫।।

শব্দার্থ - (অহিংসা-প্রতিষ্ঠায়াম্) অহিংসার আচরণে পরিপক্ব হয়ে গেলে (তৎ-সন্নিধৌ) সেই যোগীর নিকট সকল প্রাণীদের প্রতি (বৈর-ত্যাগঃ) বৈরী ভাব ত্যাগ হয়ে যায়।

সূত্রার্থ - অহিংসার আচরণে পরিপক্ব হয়ে গেলে সেই যোগীর সকল প্রাণীদের প্রতি বৈরী ভাব ত্যাগ হয়ে যায় এবং তাঁর উপদেশকে গ্রহণ করে আচরণে নিয়ে আসলে অন্য প্রাণীদেরও যথাযোগ্য বৈরী ভাব ত্যাগ হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অহিংসার ফলকে বর্ণনা করা হয়েছে।

অহিংসার পালন করতে-করতে যোগীর অন্য প্রাণীদের প্রতি বৈরী ভাব ত্যাগ হয়ে যায় এবং সেই যোগীর উপদেশকে জীবনে গ্রহণ করলে অন্য প্রাণীদেরও বৈরী ভাব ত্যাগ হয়ে যায়। কিন্তু কেবলমাত্র যোগীর সঙ্গে থাকলেই বৈরী ভাব ত্যাগ হয় না।।৩৫।।

সূত্র - সত্যপ্রতিষ্ঠায়াং ক্রিয়াফলাশ্রয়ত্বম্।।৩৬।।

শব্দার্থ - (সত্য-প্রতিষ্ঠায়াম্) সত্য আচরণে পরিপক্বতা হয়ে গেলে (ক্রিয়া-ফল-আশ্রয়ত্বম্) যোগীর কর্ম এবং ফল একটি সীমা পর্যন্ত তাঁর অধীন হয়ে যায়।

সূত্রার্থ - মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা সত্য আচরণে পরিপক্বতা হয়ে গেলে যোগীর কর্ম উত্তম ফলদায়ী হয়। তাঁর আচরণের প্রভাব অন্য প্রাণীদের উপর যথাযোগ্য পড়ে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সত্য আচরণের ফলকে বর্ণনা করা হয়েছে।

যোগী যখন সত্য আচরন করতে-করতে পরিপক্ব অবস্থায় পৌঁছে যান তখন

তিনি অন্যের লক্ষণকে সূক্ষ্মভাবে জানতে সক্ষম হয়ে যান। এই অবস্থায় তিনি সূক্ষ্ম লক্ষণগুলি দেখে কোনো ব্যক্তিকে যদি বলেন “ধার্মিক হয়ে যাও” সে ধার্মিক হয়ে যায়। “তুমি সুখী হয়ে যাও” সে সুখী হয়ে যায়। এইরকম যোগীর বাণী নিষ্পাপ এবং অমোঘ হয়ে যায়।।৩৬।।

সূত্র - অস্তেয়প্রতিষ্ঠায়াং সর্বরত্নোপস্থানম্ ।।৩৭।।

শব্দার্থ - (অস্তেয়-প্রতিষ্ঠায়াম্) চুরিকে পরিত্যাগ করে দিলে (সর্ব-রত্ন-উপস্থানম্) সকল উত্তম পদার্থের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা চুরিকে পরিত্যাগ করে দিলে সকল উত্তম পদার্থের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অস্তেয়ের ফলের বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন যোগী চুরিকে পরিত্যাগ করে দেয় তখন সে পরিশ্রমী হয়ে যায়। পরিশ্রমী ব্যক্তিকে ঈশ্বর বা অন্য ধন-সম্পন্ন ব্যক্তিও তাকে সহায়তা করে। এইভাবে সে যেমন-যেমন পুরুষার্থ করতে থাকে সেই ভাবে তার সাফল্যও প্রাপ্ত হতে থাকে। তার সকল ইচ্ছার পূর্তি শীঘ্র হয়ে যায়। এখানে সর্ব রত্নের অর্থ হল ইচ্ছিত সকল উত্তম-উত্তম পদার্থ।।৩৭।।

সূত্র - ব্রহ্মচর্যপ্রতিষ্ঠায়াং বীর্যলাভঃ ।।৩৮।।

শব্দার্থ - (ব্রহ্মচর্য-প্রতিষ্ঠায়াম্) ব্রহ্মচর্য পালনে দৃঢ় হয়ে গেলে (বীর্য-লাভঃ) বলের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - যখন ব্যক্তি মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা ব্রহ্মচর্য পালনে দৃঢ় হয়ে যায় তখন তার বৌদ্ধিক এবং শারীরিক বলের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ব্রহ্মচর্য পালনের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

ব্রহ্মচর্য পালন করলে এমন কোনও সংসারে শুভ গুণ থাকে না যেটি সে প্রাপ্ত করতে পারে না। শারীরিক, মানসিক এবং বৌদ্ধিক শক্তির বৃদ্ধি হয় যার দ্বারা শীঘ্র পঠন-পাঠন করতে, রোগের সাথে লড়াই করতে, বিদ্যাকে শীঘ্র স্মরণ করতে সক্ষম হয় এবং পঠিত বিদ্যাকে শিষ্যদের উৎকৃষ্ট ভাবে প্রদান করতে সে সমর্থ হয়ে যায়।।৩৮।।

সূত্র - অপরিগ্রহস্থৈর্যে জন্মকথন্তাসম্বোধঃ ।।৩৯।।

শব্দার্থ - (অ-পরিগ্রহ-স্থৈর্যে) হানিকারক এবং অনাবশ্যক বস্তুকে তথা

হানিকারক এবং অনাবশ্যক বিচারকে দৃঢ়তা পূর্বক ত্যাগ করে দিলে (জন্ম-কথন্তা-সম্বোধঃ) জন্ম সম্বন্ধী বোধ হয়।

সূত্রার্থ - যখন যোগী হানিকারক এবং অনাবশ্যক বস্তুকে তথা হানিকারক এবং অনাবশ্যক বিচারকে দৃঢ়তা পূর্বক ত্যাগ করে দেয় তখন তার ভূত, ভবিষ্যৎ এবং বর্তমান জন্ম সম্বন্ধী জিজ্ঞাসা এবং জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অপরিগ্রহ পালনের ফল সম্পর্কে বলা হয়েছে।

অপরিগ্রহ পালন করলে যোগীর পূর্ব জন্মের, বর্তমান জন্মের এবং ভবিষ্যৎ জন্মের জিজ্ঞাসা উৎপন্ন হয়। যেমন- আমি কে? কেমন ছিলাম? কেমন হব? এই শরীর কি? কোথা থেকে উৎপন্ন হয়েছে? এরকম জিজ্ঞাসা স্বতঃ উৎপন্ন হয়। এই ধরনের জিজ্ঞাসাই মোক্ষ পাওয়ার লক্ষণ; যেটি চতুর্থ পাদে বর্ণনা করা হয়েছে। ১৩৯।।

অবতরণিকা - যমের ফল সম্পর্কে বলা হয়েছে; এর পরে নিয়মের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হল -

সূত্র - শৌচাৎস্বাস্জুগুপ্সা পরৈরসংসর্গঃ।।৪০।।

শব্দার্থ - (শৌচাৎ) শুদ্ধি হয়ে গেলে (স্ব-অঙ্গ-জুগুপ্সা) নিজের অঙ্গ হতে ঘৃণা উৎপন্ন হয় (পরৈঃ) অন্যের শরীরের সাথেও (অ-সংসর্গঃ) সম্বন্ধের অভাব হয়।

সূত্রার্থ - বাহ্য এবং আন্তরিক শুদ্ধি হয়ে গেলে নিজের অঙ্গ হতে ঘৃণা উৎপন্ন হয় এবং অন্যের শরীর হতেও আসক্তি রহিত হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শৌচের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

যখন যোগী বাহ্য এবং আন্তরিক শুদ্ধি করতে-করতে উচ্চ স্তরের শুদ্ধি করে নেন তখন তাঁর নিজের অঙ্গের প্রতি ঘৃণা উৎপন্ন হয়। শরীরের দোষ দেখতে-দেখতে নিজের শরীর হতে তাঁর আসক্তি সমাপ্ত হয়ে যায় এবং তিনি সংযমী হয়ে যান। অন্যের শরীরের সাথে সংসর্গ অর্থাৎ আসক্তির নিবৃত্ত হয়ে যায়। শরীরের অশুদ্ধ স্বভাবকে জেনে তাকে ত্যাগ করার ইচ্ছে হয়ে যায়। জল ইত্যাদি দ্বারা শুদ্ধি করতে থাকলেও নিজের শরীরকে অশুদ্ধই দেখায় এবং যারা শরীরের শুদ্ধির জন্য বিশেষ কোনো প্রযত্ন করেন না তাদের সাথে যোগী কিভাবে সংসর্গ করবে? অর্থাৎ সংসর্গ করার ইচ্ছাই হবে না। ১৪০।।

অবতরণিকা - শৌচের পালন করলে আরও কি প্রাপ্ত হয়, এ বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - সত্ত্বশুদ্ধিসৌমনস্যৈকাগ্র্যেन्द्रিয়জয়াত্মদর্শন- যোগ্যত্বানি চ ।। ৪১ ।।

শব্দার্থ - (সত্ত্বশুদ্ধি-সৌমনস্য-ঐকাগ্র্য-ইন্দ্রিয়জয়-আত্মদর্শন-যোগ্যত্বানি) বুদ্ধির শুদ্ধি, মনের প্রসন্নতা, একাগ্রতা, ইন্দ্রিয়ে নিয়ন্ত্রণ তথা আত্মা এবং পরমাত্মাকে জানার যোগ্যতা (চ) ও, প্রাপ্ত হয়।

সূত্রার্থ - যখন যোগীর বাহ্য তথা আন্তরিক শুদ্ধি হয়ে যায় তখন তাঁর বুদ্ধির শুদ্ধি, মনের প্রসন্নতা, একাগ্রতা, ইন্দ্রিয়ে নিয়ন্ত্রণ তথা আত্মা এবং পরমাত্মাকে জানার যোগ্যতা প্রাপ্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শৌচের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

যোগাভ্যাসী যেমন-যেমন বাহ্য এবং আন্তরিক শুদ্ধি করতে থাকে তেমন-তেমন তার বুদ্ধির পবিত্রতা, মনের প্রসন্নতা, একাগ্রতা, ইন্দ্রিয়ের উপর বিজয়, আত্মা এবং পরমাত্মার সাক্ষাৎকার করার যোগ্যতা বেড়ে যায়। এই সকল প্রাপ্তি শৌচ বিষয়ক স্থিরতা হলেই প্রাপ্ত হয়।। ৪১ ।।

সূত্র- সন্তোষাদনুত্তমসুখলাভঃ ।। ৪২ ।।

শব্দার্থ - (সন্তোষাৎ) পূর্ণ রূপে সন্তোষের পালন করলে (অনুত্তম-সুখলাভঃ) উত্তম সুখের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - পূর্ণ রূপে সন্তোষের পালন করলে সাংসারিক সমস্ত সুখ হতে উত্তম সুখের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সন্তোষের ফলকে দর্শানো হয়েছে।

সন্তোষী ব্যক্তির সুখের প্রাপ্তি কতটা হয় সেই বিষয়ে নিম্ন শ্লোকের মাধ্যমে বর্ণনা করা হয়েছে -

য়চ্চ কামসুখং লোকে যচ্চ দিব্যং মহৎসুখম্ ।

তৃষ্ণাক্ষয়সুখস্যেতে নার্ততঃ ষোড়শীং কলাম্ ।।

অর্থাৎ সংসারে যে কামনা জনিত সুখ রয়েছে এবং যে মহান্ স্বর্গসুখ রয়েছে এই দুটি সুখ, তৃষ্ণার ক্ষয় হতে প্রাপ্ত সুখের মোলটি ভাগের এক ভাগও নয়।। ৪২ ।।

সূত্র - কায়েन्द्रিয়সিদ্ধিরশুদ্ধিক্ষয়ান্তপসঃ ।। ৪৩ ।।

শব্দার্থ - (কায়-ইন্দ্রিয়-সিদ্ধিঃ) শরীর এবং ইন্দ্রিয় সম্বন্ধী সিদ্ধির প্রাপ্তি হয়

(অশুদ্ধি-ক্ষয়াৎ) অশুদ্ধির নাশ হয়ে গেলে (তপসঃ) তপের অনুষ্ঠান দ্বারা।

সূত্রার্থ - তপের অনুষ্ঠান দ্বারা বাত, পিত্ত এবং কফের বিষমতা হতে উৎপন্ন বিকার, তমোগুণ হতে উৎপন্ন আলস্য ইত্যাদি দোষের নাশ হওয়ায় শরীর স্বস্থ্য, বলবান্, স্বচ্ছ এবং স্ফূর্তিমান্ হয়ে যায় তথা ইন্দ্রিয়তে বিশেষ সামর্থ্য উৎপন্ন হয়। যেমন- দূরদৃষ্টি হওয়া, স্পষ্ট দেখতে-শুনতে পাওয়া ইত্যাদির সামর্থ্য বেড়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে তপের ফলকে বলা হয়েছে।

আচরণে নিয়ে আসা তপ অশুদ্ধিজনিত আবরণরূপী মলকে নষ্ট করে। সেই আবরণ মলের দূর হওয়ায় শরীর সম্বন্ধী সিদ্ধি যেমন- স্বাস্থ্য, বলবান্ ইত্যাদির প্রাপ্তি হয় এবং ইন্দ্রিয় সম্বন্ধী সিদ্ধি যেমন- দূর হতে দেখতে-শুনতে পাওয়া ইত্যাদির প্রাপ্তি হয়। ১৪৩।।

সূত্র - স্বাধ্যায়াদিষ্টদেবতাসম্প্রয়োগঃ । ১৪৪ ।।

শব্দার্থ - (স্বাধ্যায়াৎ) স্বাধ্যায় দ্বারা (ইষ্ট-দেবতা-সম্প্রয়োগঃ) যোগী মহাপুরুষদের সাথে সম্বন্ধ হয়।

সূত্রার্থ - বেদ ইত্যাদি মোক্ষ শাস্ত্রের পঠন-পাঠন, প্রণব তথা গায়ত্রী ইত্যাদি মন্ত্রের অর্থ সহিত জপ দ্বারা ঈশ্বর, বৈদিক বিদ্বান্, যোগী ইত্যাদি ধার্মিক মহাপুরুষের সাথে সম্বন্ধ হয়ে যায় এবং তাঁদের কাছ থেকে বিবিধ উত্তম কার্যের সহায়তা প্রাপ্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে স্বাধ্যায়ের ফলকে উল্লেখ করা হয়েছে।

স্বাধ্যায় করলে সেই সব গ্রন্থে ঈশ্বরের গুণ, কর্ম ও স্বভাবের সম্বন্ধে এবং ঈশ্বর প্রাপ্তির সাধন সম্বন্ধে বিশেষ জ্ঞানের প্রাপ্তি হয়। তার দ্বারা ঈশ্বরের সাথে সংবন্ধ হয়ে যায় অর্থাৎ ঈশ্বর সাক্ষাৎকার হয়। শাস্ত্রের অধ্যয়নের অনুসার আচরণ করলে ব্যক্তির যোগ্যতা এতই বেড়ে যায় যে বিশুদ্ধ যোগী, বিদ্বানদের জানতে সমর্থ হয়ে যান। তাঁদের গুণ সম্পর্কে জ্ঞান হলে তাঁদের সাথে সম্বন্ধ স্থাপিত হয়। এর দ্বারা ব্যক্তির ইষ্ট প্রয়োজনের সিদ্ধি লাভ হয় এবং যোগী বিদ্বানরাও স্বাধ্যায়কারী ব্যক্তিকে সহায়তাও করেন। ঈষ্টদেবের সম্প্রয়োগের অর্থ হল ঈষ্ট দেবের প্রাপ্তি। ১৪৪।।

সূত্র - সমাধিসিদ্ধিরীশ্বরপ্রণিধানাৎ । ১৪৫ ।।

শব্দার্থ - (সমাধি-সিদ্ধিঃ) সমাধির প্রাপ্তি হয় (ঈশ্বর-প্রণিধানাৎ) ঈশ্বর প্রণিধান দ্বারা।

সূত্রার্থ - ঈশ্বর প্রণিধান দ্বারা শীঘ্রই সমাধির প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ঈশ্বর প্রণিধানের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা সম্পাদিত সকল কর্মকে এবং তার ফলকে ঈশ্বরকে অর্পিত করে দিলে শীঘ্রই সমাধির সিদ্ধিলাভ হয় অর্থাৎ ঈশ্বর, জীব, প্রকৃতি তথা শরীর ইত্যাদি সকল অভিষ্ট পদার্থের যথার্থ রূপে জ্ঞান হয়। তার বুদ্ধি পদার্থকে যথার্থ রূপে জানতে সক্ষম হয়। ১৪৫।।

অবতরণিকা - যম-নিয়ম-এর ফল সম্পর্কে বলা হয়েছে। এর পরে আসন ইত্যাদির সম্পর্কে বর্ণনা করা হবে -

সূত্র - স্থিরসুখমাসনম্। ১৪৬।।

শব্দার্থ - (স্থির-সুখম্) যে অবস্থায় শরীর স্থির এবং সুখযুক্ত হয় (আসনম্) তাকে আসন বলে।

সূত্রার্থ - যে অবস্থায় অবস্থিত থাকলে শরীর স্থির এবং সুখযুক্ত হয় তাকেই আসন বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে আসনের পরিভাষার উল্লেখ করা হয়েছে।

আসন অনেক প্রকারের হয়ে থাকে, যেমন- পদ্মাসন, বীরাসন, ভদ্রাসন, স্বস্তিকাসন, স্থিরসুখাসন ইত্যাদি। যোগাভ্যাসী যে অবস্থায় বসে সুখের অনুভব করে তাকেই 'আসন' বলা হয়। মুখ্য রূপে এটা জেনে রাখা উচিত যে উপাসনা কালে ব্যক্তির মন আসন সম্বন্ধিত কোনও বাধায় বাধিত যেন না হয়। ১৪৬।।

অবতরণিকা - আসনের সিদ্ধি লাভের উপায় নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে-

সূত্র - প্রয়ত্নশৈথিল্যানন্তসমাপত্তিভ্যাম্। ১৪৭।।

শব্দার্থ - (প্রয়ত্ন-শৈথিল্য-অনন্ত-সমাপত্তিভ্যাম্) সমস্ত চেষ্টাকে বন্ধ করে দিলে এবং অনন্ত পরমাত্মায় ধ্যান লাগালে [আসনের সিদ্ধিলাভ হয়]।

সূত্রার্থ - শারীরিক সমস্ত চেষ্টাকে বন্ধ করে দিলে এবং অনন্ত পরমাত্মায় ধ্যান লাগালে আসনের সিদ্ধিলাভ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে আসনের সিদ্ধি লাভের উপায়কে দর্শানো হয়েছে।

উপাসনা কালেও ব্যক্তি সামান্য রূপে শরীর দ্বারা কিছু না কিছু ক্রিয়া করতে থাকে (যেমন কমরকে বলপূর্বক সোজা রাখা ইত্যাদি) এই ক্রিয়া গুলি আসনের সিদ্ধিলাভে বাধা উপস্থিত করে। আবার উপাসনা কালে বাহ্য বিষয়ের চিন্তন করতে থাকলেও আসনের সিদ্ধিলাভ হয় না। তাই অনন্ত পরমাত্মায় চিত্তকে একাগ্র করার কথা বলা হয়েছে। এই একাগ্রতার ফলে আসনের সিদ্ধিলাভ স্বতঃ হয়ে যায়। ১৪৭।।

সূত্র - ততো দ্বন্দ্বানভিঘাতঃ ।। ৪৮ ।।

শব্দার্থ - (ততঃ) আসনের সিদ্ধিলাভ হয়ে গেলে (দ্বন্দ্ব-অনভিঘাতঃ) দ্বন্দ্ব বাধিত করে না ।

সূত্রার্থ - আসনের সিদ্ধিলাভ হয়ে গেলে শীত-উষ্ণ, ক্ষুধা-পিপাসা ইত্যাদি দ্বন্দ্ব সেই যোগীকে একটি সীমা পর্যন্ত বাধিত করে না ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে আসনের সিদ্ধিলাভের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে ।

আসনের সিদ্ধিলাভের ফলে যোগী শীতোষ্ণ, ক্ষুধা-পিপাসায় বাধিত হয় না । এর তাৎপর্য এটা নয় যে- বরফ দিয়ে তাঁর শরীরকে ঢেকে দিলেও তাঁর কোনও অনুভূতি হয় না অথবা অগ্নির মধ্যে তাঁকে বসিয়ে দিলেও তাঁর শরীর জ্বলে না । কিন্তু একটি সীমা পর্যন্ত সে দ্বন্দ্ব গুলিকে সহন করতে সক্ষম হয় । এটাই আসন সিদ্ধিলাভের ফল ।। ৪৮ ।।

সূত্র - তস্মিন্ সতি শ্বাসপ্রশ্বাসযোগ্যগতিবিচ্ছেদঃ প্রাণায়ামঃ ।। ৪৯ ।।

শব্দার্থ - (তস্মিন্) আসনের সিদ্ধি লাভ (সতি) হয়ে গেলে (শ্বাস-প্রশ্বাসযোগ্যঃ) শ্বাস এবং প্রশ্বাসের (গতি-বিচ্ছেদঃ) গতিকে নিরুদ্ধ করা (প্রাণায়ামঃ) প্রাণায়াম বলা হয় ।

সূত্রার্থ - আসনের সিদ্ধি লাভ হয়ে গেলে শ্বাস এবং প্রশ্বাসের গতিকে যথাশক্তি নিরুদ্ধ করে দেওয়াকে ‘প্রাণায়াম’ বলা হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রাণায়ামের পরিভাষা করা হয়েছে ।

বাহ্য বায়ুকে ভিতরে গ্রহণ করাকে ‘শ্বাস’ বলা হয় কোষ্টগত বায়ুকে বহিঃ নিষ্কাশন করাকে ‘প্রশ্বাস’ বলা হয় । ওই দুটির স্বাভাবিক গতিকে বিচ্ছেদ অর্থাৎ নিরুদ্ধ করাকে ‘প্রাণায়াম’ বলা হয় । ওই দুটির গতিকে নিরুদ্ধ; যথাশক্তি সামর্থ্য অনুসারে করা উচিত, বলপূর্বক নয় ।। ৪৯ ।।

অবতরণিকা - সেই প্রাণায়ামকে কতিপয় বিভাগে বিভক্ত করে নিম্ন সূত্রে তার পদ্ধতিকে উল্লেখ করা হল -

সূত্র - বাহ্যাত্তরন্তরন্তবৃত্তির্দেশকালসংখ্যাভিঃ পরিদৃষ্টৌ দীর্ঘসূক্ষ্মঃ ।। ৫০ ।।

শব্দার্থ - (বাহ্য-আভ্যন্তর-স্তম্ভবৃত্তিঃ) বাহ্যবৃত্তি, আভ্যন্তরবৃত্তি এবং স্তম্ভবৃত্তি

প্রাণায়ামকে (দেশ-কাল-সংখ্যাভিঃ) দেশ, কাল এবং সংখ্যার দ্বারা (পরিদৃষ্টঃ) পরীক্ষিত (দীর্ঘ-সূক্ষ্মঃ) দীর্ঘ এবং সূক্ষ্ম হয়।

সূত্রার্থ - বাহ্যবৃত্তি, আভ্যন্তরবৃত্তি এবং স্তম্ভবৃত্তি প্রাণায়ামকে দেশ, কাল এবং সংখ্যার দ্বারা পরীক্ষিত হলে, প্রাণায়ামের সময় বাড়তে থাকে এবং প্রাণায়ামকারী ব্যক্তি নিজেকে হান্কা অনুভব করে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে তিনটি প্রাণায়াম-এর উল্লেখ করে তার বিধির নির্দেশ করা হয়েছে -

বাহ্য প্রাণায়ামের বিধি- প্রাণায়ামের প্রারম্ভে মূলেन्द्रিয়কে উপরের দিকে সংকুচিত করতে হবে। তৎপশ্চাৎ আন্তরিক প্রাণকে বলপূর্বক বহিঃ নিষ্কাশন করা উচিত। প্রাণকে বহিঃ নিষ্কাশন করে যথাশক্তি বাইরেই নিরুদ্ধ করতে হবে। অধিক বলপূর্বক করা হানিকারক। অতএব বলের প্রয়োগ প্রাণায়ামে করা উচিত নয়। যখন কষ্ট অনুভব হবে তখন মূলেन्द्रিয়ের সংকোচনকে ছেড়ে দিতে হবে এবং ধীরে-ধীরে নাসিকার মাধ্যমে প্রাণবায়ুকে ভিতরে গ্রহণ করতে হবে। যখন প্রাণের পূর্তি হয়ে যায় তখন জানতে হবে যে একটি প্রাণায়াম পূর্ণ হয়েছে। এই প্রাণায়াম নবীন সাধকদের একটি থেকে শুরু করে তিনটি পর্যন্ত করা উচিত। দীর্ঘ অভ্যাস হয়ে গেলে একুশটি প্রাণায়ামের বেশি করা উচিত নয়।

আভ্যন্তর প্রাণায়ামের বিধি- প্রথম প্রাণায়ামের দীর্ঘ অভ্যাস হয়ে গেলে এই দ্বিতীয় প্রাণায়ামের অভ্যাস করা উচিত। প্রথমে ভিতরের বায়ুকে বহিঃ নিষ্কাশন করে দেওয়ার পর পুনরায় বাইরের বায়ুকে ভিতরে গ্রহণ করতে হবে এবং তাকে ভিতরেই নিরুদ্ধ করে রাখতে হবে। যখন কষ্ট অনুভব হবে তখন শ্বাসকে ধীরে-ধীরে ত্যাগ করতে হবে। এভাবে একটি প্রাণায়াম সম্পন্ন হয়। এইভাবে দ্বিতীয় বার, তৃতীয় বার করা উচিত। এই প্রাণায়ামে মূলেन्द्रিয়কে সংকুচিত করার বিধান নেই।

স্তম্ভবৃত্তি প্রাণায়ামের বিধি- দ্বিতীয় প্রাণায়ামের অভ্যাস দীর্ঘকাল হয়ে গেলে এই তৃতীয় প্রাণায়ামের অভ্যাস করা উচিত। এই প্রাণায়ামে শ্বাস-প্রশ্বাস যে অবস্থায় চলছে তাকে সেই অবস্থায় নিরুদ্ধ করে দিতে হবে। এই প্রাণায়ামে প্রাণকে না বহিঃ নিষ্কাশন করা হয়, না ভিতরে গ্রহণ করা হয়। যখন কষ্ট অনুভব হবে তখন তাকে ছেড়ে দিতে হবে। এই ভাবে একটি প্রাণায়াম সম্পূর্ণ হয়।

এই প্রাণায়াম গুলিকে দেশ, কাল এবং সংখ্যা দ্বারা পরীক্ষিত করা হয়। যেমন-

দেশ দ্বারা পরীক্ষিত প্রাণায়াম- প্রাণায়াম করার সময় বহিঃ নিষ্কাশিত প্রাণ যেখানে অবস্থিত থাকে সেটি তার ‘দেশ’। যখন প্রাণকে ভিতরে গ্রহণ করা হয় সেই সময়ে শরীরে যেখানে প্রাণ অবস্থিত থাকে সেটিও তার ‘দেশ’।

কাল দ্বারা পরীক্ষিত প্রাণায়াম- প্রাণায়াম করার সময়ে যত সময় পর্যন্ত প্রাণকে নিরুদ্ধ করা হয় সেই সময়কে ‘কাল’ বলা হয়।

সংখ্যা দ্বারা পরীক্ষিত প্রাণায়াম- প্রাণায়াম করার সময়ে বাইরে অথবা ভিতরে যত সময় পর্যন্ত প্রাণকে নিরুদ্ধ করা হয় তত সময়ে যত শ্বাস-প্রশ্বাস গ্রহণ করা যেত সেটি তার ‘সংখ্যা’। কোনো সুস্থ মানুষের একবার শ্বাস-প্রশ্বাস নিলে যে সময় লাগে তাকে মাত্রা বলা হয়। বারো মাত্রাকে এক উদঘাত বলা হয়। চব্বিশ মাত্রাকে দ্বিতীয় উদঘাত বলা হয়। ছত্রিশ মাত্রাকে তৃতীয় উদঘাত বলা হয়। এক উদঘাত যুক্ত প্রাণায়ামকে মৃদু বলা হয়। দ্বিতীয় উদঘাত যুক্ত প্রাণায়ামকে মধ্য এবং তৃতীয় উদঘাত যুক্ত প্রাণায়ামকে তীব্র বলা হয়।

প্রাণায়ামকে দেশ, কাল এবং সংখ্যা দ্বারা অভ্যাস করলে প্রাণায়ামের সময় বাড়তে থাকে এবং প্রাণায়াম করতে সহজতা অনুভব হয় অর্থাৎ অধিক পরিশ্রম করতে হয় না এবং ক্লান্তিও আসে না। পরবর্তীকালে সমাধি অবস্থায় প্রাণ সম্বন্ধী উপবিঘ্ন গুলির দ্বারা সমাধি বিঘ্নিত হয় না।

প্রাণায়াম করার সময় কিছু আবশ্যিক কথা স্মরণ রাখা উচিত-

(১) ভোজন অথবা দূধ পান ইত্যাদি করে প্রাণায়াম করা উচিত নয়। খালি পেটেই প্রাণায়াম করা উচিত।

(২) অতি রুগ্ন অবস্থায় প্রাণায়াম করা উচিত নয়।

(৩) প্রাণায়ামের বিশেষজ্ঞ ব্যক্তি দ্বারাই প্রাণায়ামের প্রশিক্ষণ নেওয়া উচিত, অন্যথা মহাহানি হওয়ার সম্ভাবনা থাকে।

(৪) প্রাণায়াম কমপক্ষে তিনটি এবং অধিকতম একুশটি করা উচিত।

(৫) প্রাণায়াম করার সময় ওতম্ অথবা প্রাণায়াম মন্ত্র অথবা যে সকল মন্ত্রে ঈশ্বরের স্বরূপ বর্ণিত রয়েছে, তার অর্থ সহিত মানসিক জপ পূর্বক প্রাণায়াম করা উচিত।

(৬) যতটা সম্ভব শুদ্ধ বায়ুতে প্রাণায়াম করা উচিত।

(৭) একটি প্রাণায়াম দীর্ঘকাল অভ্যাস হয়ে গেলে অন্য প্রাণায়াম তার সাথে করা উচিত। অন্যথা একটি প্রাণায়ামই প্রাথমিক অবস্থায় করা উচিত।।৫০।।

সূত্র - বাহ্যাত্যন্তরবিষয়াক্ষেপী চতুর্থঃ।।৫১।।

শব্দার্থ - (বাহ্য-আভ্যন্তর-বিষয়-আক্ষেপী) বাহ্য এবং আভ্যন্তর প্রাণায়ামের বিষয়কে অতিক্রমকারী (চতুর্থঃ) চতুর্থ প্রাণায়াম বলা হয়।

সূত্রার্থ - বাহ্য প্রাণায়ামের এবং আভ্যন্তর প্রাণায়ামের বিষয়কে অতিক্রমকারী

‘বাহ্যভ্যন্তর বিষয়াক্ষেপী’ নামক চতুর্থ প্রাণায়াম বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চতুর্থ প্রাণায়ামের উল্লেখ করা হয়েছে।

দেশ, কাল এবং সংখ্যা দ্বারা পরীক্ষিত বাহ্য প্রাণায়ামকে এই চতুর্থ প্রাণায়াম দ্বারা অতিক্রমণ করা হয়, অর্থাৎ যখন বাহ্য বায়ু বাহ্য দেশ হতে ভেতরের দিকে গতি করে তখন এই প্রাণায়াম তার গতিকে অবরুদ্ধ করে দেয়। একইভাবে দেশ, কাল এবং সংখ্যা দ্বারা পরীক্ষিত আভ্যন্তর প্রাণায়ামকেও এই প্রাণায়াম দ্বারা অতিক্রমণ করা হয় অর্থাৎ যখন বায়ু ভিতর হতে বাইরে গতি করে তখন এই প্রাণায়াম দ্বারা তার গতিকে অবরুদ্ধ করা হয়।

বাহ্যভ্যন্তর বিষয়াক্ষেপী প্রাণায়ামের বিধি- সর্বপ্রথম প্রাণবায়ুকে বহিঃ নিষ্কাশন করতে হবে। যথা শক্তি বাইরেই অবরুদ্ধ করার পর যখন প্রাণ গ্রহণ করার ইচ্ছে হবে তখন ভিতরে না নিয়ে, কিন্তু ভিতরের প্রাণকে পুনঃ বহিঃ নিষ্কাশন করতে হবে। একইভাবে পুনঃ গ্রহণ করার ইচ্ছে হলে গ্রহণ না করে তাকে বাইরেই নিষ্কাশন করতে হবে। ভেতরের শেষ প্রাণকে বহিঃ নিষ্কাশন করে দেওয়ার পর যখন ভিতরে আর কোনোও প্রাণ অবশিষ্ট থাকে না তখন ধীরে-ধীরে বাইরের বায়ুকে ভিতরে গ্রহণ করতে হবে। গ্রহণ করা সম্পূর্ণ হলে যখন পুনঃ বহিঃ নিষ্কাশন করতে ইচ্ছে হবে তখন বহিঃ নিষ্কাশন না করে কিছু বায়ু ভিতরে গ্রহণ করতে হবে আবার যখন বাইরে বায়ুকে নিষ্কাশন করতে ইচ্ছে হবে তখন বহিঃ নিষ্কাশন না করে কিছু বায়ু পুনঃ ভিতরে গ্রহণ করতে হবে। এইভাবে এক দুবার যথা শক্তি করা উচিত। যখন কষ্টের অনুভূতি হয় তখন ধীরে-ধীরে প্রাণকে বহিঃ নিষ্কাশন করতে হবে; এইভাবে একটি প্রাণায়াম সম্পন্ন হয়। এই প্রক্রিয়াকে একবার, দুবার যতটা সম্ভব করা উচিত।।৫১।।

সূত্র - ততঃ ক্ষীয়তে প্রকাশাবরণম্।।৫২।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ওই প্রাণায়ামের অনুষ্ঠান দ্বারা (ক্ষীয়তে) ক্ষীন হয় (প্রকাশ-আবরণম্) জ্ঞানের আবরণ।

সূত্রার্থ - ওই সকল প্রাণায়ামের অনুষ্ঠান দ্বারা বিবেক জ্ঞানের আবরণ অর্থাৎ অজ্ঞানতা ক্ষীন হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রাণায়ামের ফলকে উল্লেখ করা হয়েছে।

প্রাণায়াম দ্বারা জ্ঞানের আচ্ছাদনকারী আবরণ অর্থাৎ অজ্ঞানতার হ্রাস হয়। তার দ্বারা অশুভ সংস্কার এবং ভাবী অশুভ কর্ম ক্ষীন হয়ে যায়। তাই বলা হয়েছে- “তপো ন পরং প্রাণায়ামাত্ততো বিশুদ্ধির্মলানাং দীপ্তিশ্চ জ্ঞানস্যেতি” অর্থাৎ প্রাণায়ামের থেকে বড় তপ নেই, তার দ্বারা মনের শুদ্ধি হয় এবং জ্ঞানের দীপ্তি

প্রাণায়াম করলে এগুলি কিভাবে ক্ষীণ হয় তার প্রক্রিয়া নিম্নরূপ-

(১) যখন ব্যক্তি প্রাণায়াম করে তখন তার মন এবং ইন্দ্রিয়ের চঞ্চলতা নিরুদ্ধ হয়ে যায়। মন-ইন্দ্রিয়ের চঞ্চলতা নিরুদ্ধ হয়ে গেলে, যোগী স্থির বুদ্ধি দ্বারা নিজের দোষকে জানতে সক্ষম হয়ে যায়; দোষকে জেনে তাকে দূর করে। দূর করার ফলে শুভ সংস্কার বিকশিত হয়। এইভাবে অজ্ঞানতার নাশ হয়।

(২) প্রাণায়াম দ্বারা মন-ইন্দ্রিয়ের উপর অধিকার হয়ে যায় এর দ্বারা সে বিধি পূর্বক ঈশ্বর উপাসনা করতে সফল হয়ে যায়। এই অবস্থায় ঈশ্বর তাঁকে বিদ্যা প্রদান করেন। সেই বিদ্যা দ্বারা অবিদ্যার নাশ হয়।

(৩) প্রাণায়াম করলে সত্ত্বগুণের বৃদ্ধি হয় এবং রজোগুণ ও তমোগুণের হ্রাস হয়। এর দ্বারা অজ্ঞানতার নাশ হয় এবং জ্ঞানের বৃদ্ধি হয়।

(৪) প্রাণায়াম করলে শরীর এবং নাড়ির শুদ্ধি হয়। এগুলি শুদ্ধ হলে জ্ঞানের বিকাশ হয় এবং অজ্ঞানতার নাশ হয়। এইভাবে প্রাণায়াম করতে থাকলে মুক্তি পর্যন্ত ক্রমশ জ্ঞানের বিকাশ হতে থাকে।।৫২।।

অবতরণিকা - প্রাণায়াম করলে আরও কি উপলব্ধি হয়, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - ধারণাসু চ যোগ্যতা মনসঃ ।।৫৩।।

শব্দার্থ - (ধারণাসু) ধারণায় (চ) এবং (যোগ্যতা) সামর্থ্য (মনসঃ) মনের [বেড়ে যায়]।

সূত্রার্থ - প্রাণায়াম করতে থাকলে ধারণা প্রদেশে মনকে দীর্ঘ সময় স্থির করার যোগ্যতা বেড়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও প্রাণায়ামের ফল সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

মনকে কোনো একটি স্থানে টিকিয়ে রাখাকে ধারণা বলা হয়। প্রাণায়াম করলে মনের বিশেষ সামর্থ্য উৎপন্ন হয়; যার দ্বারা যোগী যেখানে ধারণা করতে চায় সেখানে সফলতা পূর্বক ধারণাকে সিদ্ধ করে নেয়।।৫৩।।

অবতরণিকা - ক্রমানুসারে নিম্ন সূত্রে প্রত্যাহারকে উল্লেখ করা হয়েছে -

সূত্র - স্ববিষয়াসম্প্রয়োগে চিত্তস্য স্বরূপানুকার ইবেন্দ্রিয়াণাং প্রত্যাহারঃ ।।৫৪।।

শব্দার্থ - (স্ব-বিষয়-অসম্প্রয়োগে) নিজ-নিজ বিষয়ের সাথে সম্বন্ধ না হলে (চিত্তস্য-স্বরূপ-অনুকার) মনের স্বরূপের অনুরূপ (ইব) [নিরুদ্ধের] মতো [হয়ে

যাওয়াকে] (ইন্দ্রিয়াণাম্) ইন্দ্রিয়ের (প্রত্যাহারঃ) প্রত্যাহার বলা হয়।

সূত্রার্থ - নেত্র ইত্যাদি ইন্দ্রিয় নিজের বিষয়ের সাথে সম্বন্ধ না হলে এবং মনের অনুসার হয়ে যাওয়াকে ‘প্রত্যাহার’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রত্যাহারের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

ইন্দ্রিয় গুলি নিজ-নিজ বিষয়ের সাথে সম্বন্ধ না হলে সেই সকল ইন্দ্রিয় চিত্তের অনুকরণ করে। যখন চিত্ত নিরুদ্ধ হয়ে যায় তখন ইন্দ্রিয় গুলিও নিরুদ্ধ হয়ে যায়; একেই ‘প্রত্যাহার’ বলা হয়। একটি-একটি ইন্দ্রিয়কে বশীভূত করার জন্য ভিন্ন-ভিন্ন অভ্যাসের আবশ্যিকতা হয় না। যেমন- রানী মৌমাছি উড়তে শুরু করে দিলে সকল মৌমাছি তার সাথে-সাথে উড়তে শুরু করে দেয়। যেখানে রানী মৌমাছি বসে সেখানেই সকল মৌমাছি বসে যায়। একই রকমভাবে সকল ইন্দ্রিয় গুলিও চিত্তের অনুকরণ করে।।৫৪।।

সূত্র - ততঃ পরমা বশ্যতেন্দ্রিয়াণাম্।।৫৫।।

শব্দার্থ - (ততঃ) প্রত্যাহারের পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে (পরমা) সর্বোৎকৃষ্ট (বশ্যতা) নিয়ন্ত্রণ হয় (ইন্দ্রিয়াণাম্) ইন্দ্রিয়ের।

সূত্রার্থ - প্রত্যাহারের পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে ইন্দ্রিয়ের সর্বোৎকৃষ্ট নিয়ন্ত্রণ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে প্রত্যাহারের ফলের উল্লেখ করা হয়েছে।

প্রত্যাহারের অভ্যাস করতে থাকলে সাধকের ইন্দ্রিয়তে সর্বোৎকৃষ্ট নিয়ন্ত্রণ এসে যায়। এর দ্বারা এক-একটি ইন্দ্রিয়কে বশীভূত করার জন্য ভিন্ন-ভিন্ন চেষ্টা করার প্রয়োজন হয় না।।৫৫।।

।। ইতি দ্বিতীয় সাধনপাদ ।।



প্রশ্ন পত্র

(ক) সঠিক উত্তরটি বেছে নিন।

- (১) ক্লেশ কত প্রকারের ? - (ক) তিন (খ) চার (গ) পাঁচ (ঘ) ছয়।
- (২) বিষয়ে সুখ ভোগ করার পর বিষয়ের প্রতি কী উৎপন্ন হয় ? - (ক) ক্রোধ (খ) দ্বেষ (গ) মোহ (ঘ) রাগ।
- (৩) এই শাস্ত্রের আধারে দুঃখ কত প্রকারের ? - (ক) এক (খ) দুই (গ) তিন (ঘ) চার।
- (৪) প্রকৃতি এবং পুরুষের সাথে যে সংযোগ রয়েছে তার কারণ হল - (ক) দুঃখ (খ) জন্ম (গ) মিথ্যাজ্ঞান (ঘ) প্রবৃত্তি।
- (৫) বিষয়ের দুঃখ ভোগ করার পর বিষয়ের প্রতি কী উৎপন্ন হয় ? - (ক) লোভ (খ) মোহ (গ) দ্বেষ (ঘ) রাগ।
- (৬) যোগের কত গুলি অঙ্গ রয়েছে ? - (ক) তিন (খ) চার (গ) সাত (ঘ) আট।
- (৭) মহৎতত্ত্বের অপর নাম কি ? - (ক) অহংকার (খ) বুদ্ধি (গ) অলিঙ্গ (ঘ) এই তিনটি।
- (৮) যম কত প্রকারের ? - (ক) তিন (খ) আট (গ) পাঁচ (ঘ) এগারো।
- (৯) নিয়ম কত প্রকারের ? - (ক) তিন (খ) আট (গ) পাঁচ (ঘ) এগারো।
- (১০) অহিংসা কার অন্তর্গত আসে ? - (ক) যম (খ) নিয়ম (গ) আসন (ঘ) প্রাণায়াম।
- (১১) ক্রিয়াযোগ কার অন্তর্গত আসে ? - (ক) যম (খ) নিয়ম (গ) আসন (ঘ) প্রাণায়াম।
- (১২) প্রাণায়াম কত প্রকারের ? - (ক) তিন (খ) দুই (গ) পাঁচ (ঘ) চার।
- (১৩) বিশেষ পদার্থ কতগুলি রয়েছে ? - (ক) ছয়টি (খ) ষোলটি (গ) বত্রিশটি (ঘ) পাঁচটি।
- (১৪) অবিশেষ পদার্থ কতগুলি রয়েছে ? - (ক) ছয়টি (খ) ষোলটি (গ) বত্রিশটি (ঘ) পাঁচটি।
- (১৫) প্রকৃতি থেকে তৈরি প্রথম পদার্থ হল - (ক) সত্ত্ব (খ) রজ (গ) অহংকার (ঘ) মহৎতত্ত্ব।
- (১৬) প্রকৃতি থেকে তৈরি অন্তিম পদার্থ হল - (ক) পাঁচ মহাভূত (খ) পাঁচ

সূক্ষ্মভূত (গ) পাঁচ জ্ঞানেন্দ্রিয় (ঘ) পাঁচ কর্মেন্দ্রিয় ।

- (১৭) অহিংসার কত গুলি ভেদ রয়েছে ? - (ক) নয়টি (খ) আঠারোটি (গ) সাতাশটি (ঘ) একাশিটি ।
- (১৮) ঈশ্বরপ্রণিধান কার অন্তর্গত আসে ? - (ক) ক্রিয়াযোগের (খ) নিয়মের (গ) আঠা অপের (ঘ) এই তিনটির ।
- (১৯) প্রাণায়ামের অর্থ হল, শ্বাস প্রশ্বাসের গतिकে - (ক) যথা সামর্থ্য চালাতে থাকা (খ) যথা শক্তি নিরুদ্ধ করা (গ) যথাসম্ভব লক্ষ্য রাখা (ঘ) যথা অবসর গণনা করা ।
- (২০) প্রকৃতির অপর নাম কি ? - (ক) অলিঙ্গ (খ) অস্মিতা (গ) অহংকার (ঘ) অহিংসা ।
- (২১) অবিদ্যাকে কয়টি ভাগে বিভক্ত করা হয়েছে ? - (ক) তিনটি (খ) চারটি (গ) পাঁচটি (ঘ) ছয়টি ।
- (২২) মোক্ষের নিকটতম সাধন হল - (ক) বিবেকখ্যাতি (খ) প্রাণায়াম (গ) অহিংসাপালন (ঘ) ঈশ্বরপ্রণিধান ।
- (২৩) বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত যোগীর কত প্রকারের উৎকৃষ্ট প্রজ্ঞা উৎপন্ন হয় ? - (ক) তিনটি (খ) সাতটি (গ) পাঁচটি (ঘ) ছয়টি ।
- (২৪) প্রত্যাহার দ্বারা কাকে বশীভূত করা হয় ? - (ক) মনকে (খ) ইন্দ্রিয়কে (গ) বুদ্ধিকে (ঘ) আত্মাকে ।
- (২৫) সত্ত্বগুণের স্বভাব হল ? - (ক) প্রকাশশীল (খ) ক্রিয়াশীল (গ) স্থিতিশীল (ঘ) এই তিনটি ।
- (২৬) রজোগুণের স্বভাব হল ? - (ক) প্রকাশশীল (খ) ক্রিয়াশীল (গ) স্থিতিশীল (ঘ) এই তিনটি ।
- (২৭) তমোগুণের স্বভাব হল ? - (ক) প্রকাশশীল (খ) ক্রিয়াশীল (গ) স্থিতিশীল (ঘ) এই তিনটি ।
- (২৮) অভিনিবেশ ক্লেশের অর্থ হল - (ক) প্রকৃতি এবং পুরুষকে এক মনে করা (খ) মৃত্যু হতে ভীত হওয়া (গ) চেতনকে জড় মনে করা (ঘ) এই তিনটি ।
- (২৯) অস্মিতা ক্লেশের অর্থ হল - (ক) বুদ্ধি এবং পুরুষকে এক মনে করা (খ) মৃত্যু হতে ভীত হওয়া (গ) চেতনকে জড় মনে করা (ঘ) এই তিনটি ।
- (৩০) কর্মের ফল কত প্রকারে প্রাপ্ত হয় ? - (ক) তিন (খ) দুই (গ) পাঁচ (ঘ)

চার ।

(খ) নিম্ন লিখিত প্রশ্নের সংক্ষেপে উত্তর লিখুন ।

- (১) স্বাধ্যায় কাকে বলা হয় ?
- (২) অস্মিতা নামক ক্লেশ কি ?
- (৩) অবিদ্যার পরিভাষা লিখুন ।
- (৪) জীবের কর্মের ফল কোন্-কোন্ প্রকারে প্রাপ্ত হয় ?
- (৫) সকল প্রাণায়ামের নাম লিখুন ।
- (৬) ঈশ্বরপ্রণিধান-এর অর্থ কী ?
- (৭) যে কোনো পাঁচটি বিশেষ পদার্থের নাম লিখুন ।
- (৮) অহিংসার ফল সম্পর্কে লিখুন ।
- (৯) অস্তেয়-এর অর্থ কী ? এর ফল সম্পর্কে লিখুন ।
- (১০) সন্তোষের ফল সম্পর্কে লিখুন ।
- (১১) সকল দুঃখের নাম উল্লেখ করুন ।
- (১২) সকল যমের নাম উল্লেখ করুন ।
- (১৩) সকল নিয়মের নাম উল্লেখ করুন ।
- (১৪) ক্রিয়াযোগের নাম উল্লেখ করুন ।
- (১৫) সকল ক্লেশের নাম উল্লেখ করুন ।
- (১৬) দ্বেষ কাকে বলে ?
- (১৭) রাগ কাকে বলে ?
- (১৮) অভিনিবেশ কাকে বলে ?
- (১৯) চিকিৎসা শাস্ত্রের চারটি বিভাগ কী ?
- (২০) যোগ শাস্ত্রের চারটি বিভাগ কী ?

(গ) সূত্রার্থ লিখুন ।

- (১) অনিত্যশুচিদুঃখানাত্মসু নিত্যশুচিসুখাত্মখ্যাতিরবিদ্যা ।
- (২) দৃগদর্শনশক্ত্যোরেকাত্মতেবাস্মিতা ।
- (৩) স্বরসবাহী বিদুমোঽপি তথা রুঢ়োঽভিনিবেশঃ ।
- (৪) ক্লেশমূলঃ কর্মশয়ো দৃষ্টাদৃষ্টজন্মবেদনীয়ঃ ।

- (৫) হেয়ং দুঃখমনাগতম্ ।
 (৬) দ্রষ্টা দৃশিমাত্রঃ শুদ্ধোঽপি প্রত্যয়ানুপশ্যঃ ।
 (৭) কৃতার্থম্প্রতি নষ্টমপ্যনষ্টং তদন্যসাধারণত্বাৎ ।
 (৮) তস্য হেতুরবিদ্যা ।
 (৯) বিবেকখ্যাতিরবিপ্লবা হানোপায়ঃ ।
 (১০) তস্মিন্ সতি শ্বাসপ্রশ্বাসযোগ্যতিবিচ্ছেদঃ প্রাণায়ামঃ ।
 (১১) স্ববিষয়াসম্প্রয়োগে চিত্তস্য স্বরূপানুকর ইবেন্দ্রিয়াণাং প্রত্যাহারঃ ।
 (১২) সন্তোষাদনুত্তমসুখলাভঃ ।
 (১৩) স্থিরসুখমাসনম্ ।
 (১৪) অপরিগ্রহস্থৈর্যে জন্মকথন্তাসম্বোধঃ ।
 (১৫) অহিংসাপ্রতিষ্ঠায়াং তৎসন্নিধৌ বৈরত্যাগঃ ।
- (ঘ) সমাধি পাদের যে কোনও পাঁচটি সূত্র লিখুন ।
- (ঙ) নিম্নলিখিত প্রশ্নগুলির ব্যাসভাষ্যানুসার ব্যাখ্যা করুন ।
- (১) যম-নিয়মকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
 (২) চার প্রকারের দুঃখ সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক লিখুন ।
 (৩) অহিংসাকে বিভাগ করে বিস্তার পূর্বক লিখুন ।
 (৪) পাঁচটি ক্রেশের সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক লিখুন ।
 (৫) বিতর্ক উপস্থিত হলে তার প্রতিকারের জন্য কীভাবে বিরুদ্ধ পক্ষের চিন্তন করা উচিত বিস্তার পূর্বক লিখুন ।
 (৬) চারটি প্রাণায়ামের বিধিকে বিস্তার পূর্বক লিখুন ।

।। সমাপ্ত ।।



তৃতীয় বিভূতিপাদ

অবতরণিকা - যম-নিয়ম ইত্যাদি বহিরঙ্গ সাধন সম্বন্ধে বলা হয়েছে। এর পরে অন্তরঙ্গ সাধন সম্বন্ধে বলা উচিত; সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বলা হয়েছে -

সূত্র - দেশবন্ধুশ্চিত্তস্য ধারণা ।।১।।

শব্দার্থ - (দেশ-বন্ধুঃ) স্থান বিশেষে বাঁধা (চিত্তস্য) মনকে (ধারণা) ধারণা বলা হয়।

সূত্রার্থ - মনকে কোনো দেশ (স্থান) বিশেষে বেধে রাখাকে ‘ধারণা’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধারণার লক্ষণ কী? তাহা উল্লেখ করা হয়েছে।

কোনো স্থান বিশেষে জ্ঞানমাত্র দ্বারা চিত্তকে সেই স্থানে স্থির করাকে ‘ধারণা’ বলা হয়। ধারণার দুটি স্থান রয়েছে; আন্তরিক এবং বাহ্য। নাভি, হৃদয়, নাসিকার অগ্রভাগ, মস্তক ইত্যাদি এগুলি আন্তরিক স্থান। বৃক্ষ, পর্বত ইত্যাদি বাহ্য স্থান।।১।।

সূত্র - তত্র প্রত্যয়েকতানতা ধ্যানম্ ।।২।।

শব্দার্থ - (তত্র) সেই স্থানে (প্রত্যয়-একতানতা) জ্ঞানের এক সমান অবস্থা চলতে থাকা (ধ্যানম্) ধ্যান বলা হয়।

সূত্রার্থ - যে স্থানে ধারণা করা হয়েছে সেই স্থানে জেয়ে বিষয়ক জ্ঞানের এক সমান অবস্থা চলতে থাকাকে ‘ধ্যান’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধ্যানের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

যে প্রদেশে ধারণা করা হয়েছে সেই প্রদেশ সম্বন্ধী জ্ঞানের এক সমান প্রবাহ চলতে থাকা এবং অন্য কোনোও বিষয়ের জ্ঞানকে সেখানে উপস্থিত না করাকে ‘ধ্যান’ বলা হয়।।২।।

সূত্র - তদেবার্থমাত্রনির্ভাসং স্বরূপশূণ্যমিব সমাধিঃ ।।৩।।

শব্দার্থ - (তদ্-এব) সেই ধ্যানই (অর্থমাত্র-নির্ভাসম্) কেবল বস্তুর স্বরূপের প্রকাশকারী (স্বরূপ-শূণ্যম্-ইব) স্বরূপ হতে শূন্যের মতো (সমাধিঃ) সমাধি বলা হয়।

সূত্রার্থ - সেই ধ্যান যখন কেবল বস্তুর স্বরূপের প্রকাশকারী হয় এবং বস্তুর জ্ঞানাত্মক স্বরূপ হতে শূন্যের মতো হয় তখন তাকে ‘সমাধি’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সমাধির স্বরূপ উল্লেখ করা হয়েছে।

ধ্যান কালে ‘ধ্যাতা’ অর্থাৎ ধ্যানকারী; ‘ধ্যান’ অর্থাৎ যে জ্ঞান দ্বারা ধ্যেয় বিষয়ের গবেষণা করা হয় সেই জ্ঞান এবং ‘ধ্যেয়’ অর্থাৎ যে বিষয়ের গবেষণা করা হয় সেই পদার্থ। এই তিনটি ভিন্ন-ভিন্ন রূপে ভাসিত হয়। কিন্তু সমাধি অবস্থায় কেবল ‘ধ্যেয়’-এর অর্থাৎ পদার্থের স্বরূপ মুখ্য রূপে প্রকাশিত হয়। সমাধি অবস্থায় ‘ধ্যাতা’ এবং ‘ধ্যান’ গৌণ হয়ে যায় অর্থাৎ আমার দ্বারা ধ্যান করা হচ্ছে এবং ওই পদার্থের জ্ঞান এই দুটি শূন্যের মতো হয় এবং পদার্থের স্বরূপ মুখ্য রূপে বিদ্যমান থাকে; এই অবস্থাকে ‘সমাধি’ বলা হয়। যেমন- কোনো ছোট শিশুকে মধু চাটালে সে মধুর জ্ঞান এবং আমি মধুকে চাটছি এই দুটি যেমন সে জানতে পারে না কিন্তু মধুর স্বাদেই সে নিমগ্ন হয়ে যায়। সেইরকম সমাধি অবস্থাকে জানা উচিত। ১৩।।

সূত্র - ত্রয়মেকত্র সংযমঃ । ১৪ ।।

শব্দার্থ - (ত্রয়ম্) তিনটির (একত্র) এক বিষয়ক হওয়া (সংযমঃ) সংযম বলা হয়।

সূত্রার্থ - ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি এই তিনটি যখন এক বিষয়ক হয় তখন তাকে ‘সংযম’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সংযমের লক্ষণ সম্পর্কে উল্লেখ করা হয়েছে।

যখন ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি একটি বিষয়ে করা হয় তখন তাকে ‘সংযম’ বলা হয়। যোগ দর্শনকার এই তিনটি সাধন একত্র হলে তাকে ‘সংযম’ নামে পরিভাষিত করেছেন। ১৪।।

সূত্র - তজ্জয়াৎ প্রজ্ঞালোকঃ । ১৫ ।।

শব্দার্থ - (তৎ-জয়াৎ) ওই সংযমের পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে (প্রজ্ঞা-আলোকঃ) প্রজ্ঞার বিকাশ হয়।

সূত্রার্থ - ওই সংযমের পরিপক্ক অবস্থা হয়ে গেলে সমাধি প্রজ্ঞার বিকাশ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সংযমের ফলকে দর্শানো হয়েছে।

যখন যোগী ধারণা, ধ্যান এবং সমাধির অভ্যাস করতে থাকে তখন তার রজোগুণ এবং তমোগুণ নির্বল হয়ে সত্ত্বগুণের প্রবলতা হয়। সত্ত্বগুণের প্রধানতা হলে বুদ্ধির বিকাশ হতে থাকে কুসংস্কার নির্বল হয়ে যায় এবং সুসংস্কারের উৎপত্তি ঘটে।

এইভাবে যেমন-যেমন সংযম দৃঢ় হতে থাকে তেমন-তেমন সমাধি প্রজ্ঞাও নির্মল

হতে থাকে ।।৫।।

সূত্র - তস্য ভূমিষু বিনিয়োগঃ ।।৬।।

শব্দার্থ - (তস্য) সেই সংযমের (ভূমিষু) অবস্থায় (বিনিয়োগঃ) প্রয়োগ করা উচিৎ ।

সূত্রার্থ - সেই সংযমকে যোগের অনন্তর (সূক্ষ্ম, সূক্ষ্মতর এবং সূক্ষ্মতম) স্তরে প্রয়োগ করা উচিৎ ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সংযম দ্বারা বিকশিত বুদ্ধির প্রয়োগ কীভাবে করা উচিৎ; সেই সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে ।

সংযম দ্বারা প্রাপ্ত প্রজ্ঞালোককে, পরের অবস্থাকে প্রাপ্ত করার জন্য প্রয়োগ করা উচিৎ । যোগের এক অবস্থাকে প্রাপ্ত হয়ে গেলে পুনঃ তার থেকে পরের অবস্থাকে প্রাপ্ত করার জন্য চেষ্টা করা উচিৎ । যদি নিকটতম অবস্থাকে ছেড়ে উচ্চ অবস্থা প্রাপ্ত করার চেষ্টা করে তাহলে যোগী সফলতাকে প্রাপ্ত করে না । এইজন্য ক্রমশ যোগের এক-একটি অবস্থাকে প্রাপ্ত করতে-করতে যোগীকে পরের অবস্থাকে প্রাপ্ত করার জন্য চেষ্টা করা উচিৎ । এই জন্য সর্বপ্রথম সংযমের অভ্যাস করা উচিৎ, এর অভ্যাস দ্বারা প্রজ্ঞালোককে প্রাপ্ত করা উচিৎ, সেই প্রজ্ঞালোককে অন্য অবস্থায় প্রয়োগ করা উচিৎ । ঈশ্বরের কৃপায় ক্রমশ উচ্চ অবস্থাকে প্রাপ্ত করার পর নীচ অবস্থা গুলির অভ্যাস করার কোনো আবশ্যকতা থাকে না । যোগের একটি অবস্থা হতে এটি নিকটতম অবস্থা; এই বিষয়ে যোগকেই যোগের ‘উপাধ্যায়’ মনে করা হয় । যেমন-সবিতর্কা সমাধির প্রাপ্তি হয়ে গেলে নির্বিতর্কা সমাধিকে প্রাপ্ত করার সামর্থ্য প্রাপ্ত হয়ে যায়, এইজন্য যোগকেই যোগের শিক্ষক বলা হয় । এর দ্বারা এরকম মনে করা উচিৎ নয় যে যোগের শিক্ষকের কোনও প্রয়োজন নেই । এই বিষয়কে একটি শ্লোকের মাধ্যমে দেখানো হয়েছে -

যোগেন যোগো জ্ঞাতব্যো যোগো যোগাৎপ্রবর্ততে ।

যোগঃপ্রমত্তস্তু যোগেন স যোগে রমতে চিরম্ ।।

অর্থাৎ যোগ, যোগের দ্বারা জানার যোগ্য; যোগ, যোগ দ্বারাই বৃদ্ধি পায় ।

যোগে যিনি অপ্রমত্ত তিনি দীর্ঘকাল পর্যন্ত যোগে রমণ করেন ।।৬।।

সূত্র - ত্রয়মন্তরঙ্গং পূর্বেভ্যঃ ।।৭।।

শব্দার্থ - (ত্রয়ম্) তিনটি (অন্তরঙ্গম্) সমীপতম সাধন (পূর্বেভ্যঃ) পূর্বে বর্ণিত যম, নিয়ম ইত্যাদির অপেক্ষায় ।

সূত্রার্থ - পূর্ব পাদে বর্ণিত যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম এবং প্রত্যাহারের অপেক্ষায় ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি, সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অন্তরঙ্গ অর্থাৎ সমীপতম সাধন।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধারণা-ধ্যান এবং সমাধিকে অন্তরঙ্গ সাধন বলা হয়েছে।

যে কার্যকে সম্পন্ন করতে দূর হতে সহায়তা করে তাকে বহিরঙ্গ বলা হয় এবং যে নিকট হতে সাহায্য করে তাকে অন্তরঙ্গ বলা হয়। এই নিয়ম অনুযায়ী যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম এবং প্রত্যাহারকে সম্প্রজ্ঞাত সমাধির বহিরঙ্গ সাধন বলা হয় এবং ধারণা, ধ্যান, সমাধিকে অন্তরঙ্গ বলা হয়। ১৭।।

সূত্র - তদপি বহিরঙ্গং নির্বীজস্য। ১৮।।

শব্দার্থ - (তদ-অপি) সেই অন্তরঙ্গ সাধন গুলিও (বহিরঙ্গম) বহিরঙ্গ সাধন হয় (নির্বীজস্য) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির।

সূত্রার্থ - সেই অন্তরঙ্গ সাধন গুলিও অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির বহিরঙ্গ সাধন হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধারণা, ধ্যান এবং সমাধিকেও বহিরঙ্গ সাধন বলা হয়েছে।

ধারণা, ধ্যান এবং সমাধিকে বহিরঙ্গ সাধন বলার কারণ হল এই তিনটি সারে গেলেই নির্বীজ সমাধি অর্থাৎ অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির সিদ্ধি লাভ হয়। অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির অন্তরঙ্গ সাধন হল পরবৈরাগ্য। পরবৈরাগ্য দ্বারা নির্বীজ সমাধির সিদ্ধিলাভ হয়। এইজন্য পরবৈরাগ্যকে নির্বীজ সমাধির অন্তরঙ্গ সাধন বলা হয়েছে এবং ধারণা, ধ্যান ও সমাধি পরম্পরাগত সহায়ক হওয়ায় একে বহিরঙ্গ সাধন বলা হয়েছে। ১৮।।

অবতরণিকা - সত্ত্ব ইত্যাদি গুণের স্বভাব চঞ্চল। এইজন্য চিত্তের নিরোধ কালে চিত্তের অবস্থা কীধরনের হয়; সেই বিষয়ে নিম্নে কতিপয় সূত্র দ্বারা বর্ণনা করা হল -

সূত্র - ব্যুত্থাননিরোধসংস্কারয়োরভিভবপ্রাদুর্ভাবৌ নিরোধক্ষণচিত্তানুয়ো নিরোধপরিণামঃ। ১৯।।

শব্দার্থ - (ব্যুত্থান-নিরোধ-সংস্কারয়োঃ) ব্যুত্থান সংস্কার এবং নিরোধ সংস্কারের (অভিভব-প্রাদুর্ভাবৌ) জাপ্ত হওয়া এবং প্রকট হওয়া ঘটে (নিরোধ-ক্ষণ-চিত্ত-অনুয়ঃ) নিরোধ কালিক চিত্ত এই দুটি সংস্কারের সাথে যুক্ত থাকে (নিরোধ-পরিণামঃ) নিরোধ পরিণাম বলা হয়।

সূত্রার্থ - যে অবস্থায় ব্যুত্থান সংস্কার এবং নিরোধ সংস্কার ক্রমশ জাপ্ত হয়ে

যায় এবং প্রকট হয় তথা নিরোধ কালিক চিত্ত এই দুটি সংস্কারের সাথে যুক্ত থাকে; তাকে ‘নিরোধ পরিণাম’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘নিরোধ পরিণাম’-এর স্বরূপ উল্লেখ করা হয়েছে।

চিত্তের ক্ষিপ্ত, মুঢ় ও বিক্ষিপ্ত এই তিনটি অবস্থায় চিত্তে যে সংস্কার পড়ে, সেগুলি সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অপেক্ষায় ব্যুত্থান সংস্কার বলা হয়। সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অবস্থায় চিত্তে যে সংস্কার পড়ে সেগুলি অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির অপেক্ষায় ব্যুত্থান সংস্কার বলা হয়। ব্যুত্থান সংস্কারও চিত্তের ধর্ম এবং নিরোধ সংস্কারও চিত্তের ধর্ম। এই দুই ধরনের সংস্কারের সাথে চিত্ত যুক্ত থাকে। যখন যোগী বিবেক, বৈরাগ্য, অভ্যাস দ্বারা সম্প্রজ্ঞাত সমাধির সংস্কারকে নিরুদ্ধ করে দেয় তখন নিরোধ সংস্কার উৎপন্ন হয়। নিরোধ সংস্কার তীব্র হওয়ায় ব্যুত্থান সংস্কার অভিভূত হয়ে যায় অর্থাৎ নিজ কার্য করা ছেড়ে দেয়। এই অবস্থায় নিরোধ সংস্কার নিজের কার্য করা আরম্ভ করে দেয়। একেই ব্যুত্থান সংস্কারের জাগ্রত হয়ে যাওয়া এবং নিরোধ সংস্কারের প্রকট হওয়া বলা হয়। নিরোধ সময়ে চিত্ত এই দুই ধরনের সংস্কারের সাথে যুক্ত থাকে। চিত্তের এই অবস্থাকে ‘নিরোধ পরিণাম’ বলা হয়। ১১।

সূত্র - তস্য প্রশান্তবাহিতা সংস্কারাৎ । ১০ ।।

শব্দার্থ - (তস্য) সেই চিত্তের (প্র-শান্ত-বাহিতা) প্রশান্ত প্রবাহের ধারা সচল থাকা (সংস্কারাৎ) সংস্কারের কারণে হয়।

সূত্রার্থ - সেই নিরোধ অবস্থা যুক্ত চিত্তের, নিরোধ সংস্কারের অধিকতার কারণে উৎকৃষ্ট রূপে প্রশান্ত প্রবাহের ধারা সচল থাকে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘নিরোধ পরিণাম’ যুক্ত চিত্তের কী অবস্থা হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

নিরোধ সংস্কারের অত্যাধিক অভ্যাস করলে চিত্তের ‘প্রশান্তবাহিতা স্থিতি’ উৎপন্ন হয় অর্থাৎ চিত্ত প্রশান্ত রূপে অবস্থিত থাকে। এই বিষয়ে প্রথম পাদে পঞ্চম সূত্রের ভাষ্যে বলা হয়েছে যে- “আত্মকল্লেন ব্যবতিষ্ঠতে” অর্থাৎ অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে চিত্ত আত্মার সমান পবিত্র হয়ে অবস্থিত থাকে। কিন্তু যদি যোগী আলস্য ইত্যাদির কারণে পুরুষার্থ করা ছেড়ে দেন অথবা সাবধান না থাকেন তখন পুনঃ ব্যুত্থান সংস্কার নিরোধ সংস্কারকে জাগ্রত করে নেয়। এর দ্বারা অসম্প্রজ্ঞাত সমাধি ভঙ্গ হয়ে যায়। এই জন্য নিরোধ অবস্থাকে স্থির রাখার জন্য পূর্ণ প্রয়াস করা উচিত। ১০।।

সূত্র - সর্বার্থতৈকাগ্রতয়োঃ ক্ষয়োদয়ো চিত্তস্য সমাধিপরিণামঃ । ১১ ।।

শব্দার্থ - (সর্বার্থতা-একাগ্রতয়োঃ) সর্বার্থতা এবং একাগ্রতার (ক্ষয়-উদয়োঃ) ক্ষয় এবং উদয় (চিত্তস্য) চিত্তের (সমাধি-পরিণামঃ) সমাধি পরিণাম বলা হয়।

সূত্রার্থ - যে অবস্থায় চিত্তে সর্বার্থতা এবং একাগ্রতার ক্রমশ ক্ষয় এবং উদয় হয়, চিত্তের এই অবস্থাকে ‘সমাধি পরিণাম’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের ‘সমাধি পরিণাম’-এর উল্লেখ করা হয়েছে।

‘সর্বার্থতা’ অর্থাৎ চিত্তের সকল বিষয়ের প্রতি উন্মুখ হওয়া, এটি চিত্তের ধর্ম। ‘একাগ্রতা’ অর্থাৎ চিত্তের একটিই বিষয়ে প্রবৃত্ত হওয়া, এটিও চিত্তের ধর্ম। যোগী প্রযত্ন দ্বারা সর্বার্থতা ক্ষয় করে দেন এবং একাগ্রতাকে উৎপন্ন করে নেন। সর্বার্থতা এবং একাগ্রতা এই দুই ধর্মের সাথে চিত্ত যুক্ত থাকে। চিত্তের সর্বার্থতা সরে গিয়ে কোনো একটি পদার্থে একাগ্র হয়ে যাওয়াকে চিত্তের ‘সমাধি পরিণাম’ বলা হয়। এটি সম্প্রজ্ঞাত সমাধির প্রাথমিক অবস্থা। ১১।।

সূত্র - ততঃ পুনঃ শান্তোদিতৌ তুল্যপ্রত্যয়ৌ চিত্তসৈকাগ্রতা পরিণামঃ। ১২।।

শব্দার্থ - (ততঃ পুনঃ) সেই অবস্থার পর (শান্ত-উদিতৌ) শান্ত হওয়া এবং উৎপন্ন হওয়া (তুল্য-প্রত্যয়ৌ) সমান জ্ঞান (চিত্তস্য-একাগ্রতা পরিণামঃ) চিত্তের একাগ্রতা পরিণাম বলা হয়।

সূত্রার্থ - চিত্তের সমাধি পরিণামের পশ্চাৎ একটি বস্তু বিষয়ক সমান জ্ঞানের শান্ত হওয়া এবং উৎপন্ন হওয়া রূপী ক্রম চলতে থাকাকে চিত্তের ‘একাগ্রতা পরিণাম’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের একাগ্রতা পরিণামের উল্লেখ করা হয়েছে।

একাগ্র চিত্তের পূর্ব জ্ঞান শান্ত হয়ে যায় এবং তারই সুদৃশ্য অন্য-অন্য জ্ঞান উৎপন্ন হতে থাকে। যতক্ষণ পর্যন্ত সমাধি ভঙ্গ না হয়ে যায় ততক্ষণ পর্যন্ত এই অবস্থা স্থির থাকে। শান্ত জ্ঞান এবং উদিত জ্ঞান এই দুটিই চিত্তের ধর্ম। এই দুটি অবস্থাই চিত্তে অনুগত (যুক্ত) থাকে। এটিকে চিত্তের ‘একাগ্রতা পরিণাম’ বলা হয়। এটি সম্প্রজ্ঞাত সমাধির উচ্চ অবস্থা। ১২।।

সূত্র - এতেন ভূতেন্দ্রিয়েষু ধর্মলক্ষণাবস্থাপরিণামা ব্যাখ্যাতাঃ। ১৩।।

শব্দার্থ - (এতেন) এই ব্যাখ্যা দ্বারাই (ভূত-ইন্দ্রিয়েষু) ভূত এবং ইন্দ্রিয়ের (ধর্ম-লক্ষণ-অবস্থা-পরিণামাঃ) ধর্মপরিণাম, লক্ষণপরিণাম এবং অবস্থাপরিণাম

(ব্যাখ্যাতাঃ) ব্যাখ্যানও জেনে নেওয়া উচিত।

সূত্রার্থ - উপরোক্ত চিন্তের পরিণামের ব্যাখ্যা দ্বারাই ভূত এবং ইন্দ্রিয়তে ধর্মপরিণাম, লক্ষণপরিণাম এবং অবস্থাপরিণামের ব্যাখ্যানও জেনে নেওয়া উচিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিন্তের মত ভূত এবং ইন্দ্রিয়তে ধর্মপরিণাম, লক্ষণপরিণাম এবং অবস্থাপরিণাম কীভাবে হয়; সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

ধর্মপরিণাম- কোনোও বস্তুর প্রকট ধর্মের অপ্রকট হয়ে যাওয়া এবং অপ্রকট ধর্মের প্রকট হয়ে যাওয়াকে ‘ধর্ম পরিণাম’ বলা হয়। ‘ধর্ম’ অর্থাৎ গুণ অথবা বিশেষতা এবং ‘পরিণাম’ অর্থাৎ পরিবর্তন। যেমন- ঘট বানাতে মাটিকে একত্র করে জল দিয়ে তাকে পিষ্টাকার তৈরি করা হয়। এখানে পিণ্ড ধর্ম প্রকট রূপে বিদ্যমান রয়েছে কিন্তু ঘট ধর্ম অপ্রকট রূপে রয়েছে। পরবর্তীকালে মাটির পিণ্ড দ্বারা ঘট বানিয়ে দিলে পিণ্ড ধর্ম অপ্রকট হয়ে যাবে এবং ঘট ধর্ম প্রকট হয়ে যাবে। অর্থাৎ এক ধর্ম সরে গিয়ে দ্বিতীয় ধর্মের প্রকট হয়ে যাওয়াকে ‘ধর্ম পরিণাম’ বলা হয়।

লক্ষণপরিণাম- কোনোও বস্তুর একটি ধর্মকে লক্ষ করলে তাতে ভবিষ্যৎ, বর্তমান এবং ভূতকাল তিনটিই বিদ্যমান থাকে। কোনো বস্তু প্রকট হওয়ার পূর্বে তার ধর্ম ভবিষ্যৎ কালের রূপে বিদ্যমান থাকে। প্রকট হয়ে গেলে বর্তমান অবস্থায় বিদ্যমান থাকে। প্রকট হয়ে বিনষ্ট হয়ে গেলে সে অতীত কালের রূপে বিদ্যমান থাকে অর্থাৎ কোনো বস্তুর ধর্মকে যখন তিনটি কালের সাথে যুক্ত করে দেখা হয় তখন তাকে ‘লক্ষণ পরিণাম’ বলা হয়। যেমন- ঘট তৈরির পূর্বে মাটিতে ভবিষ্যৎ কালের রূপে বিদ্যমান থাকে, এটিকে ঘট ধর্মের ‘অনাগত-লক্ষণ-পরিণাম’ বলা হয়। ঘট তৈরি হয়ে গেলে ঘট ধর্ম বর্তমান কালের রূপে বিদ্যমান থাকে, একে ঘট ধর্মের ‘বর্তমান-লক্ষণ-পরিণাম’ বলা হয়। সেই ঘট ভেঙে গেলে ঘট ধর্ম ভূত কালের রূপে তার অবস্থিতি হয়, একে ঘট ধর্মের ‘অতীত-লক্ষণ-পরিণাম’ বলা হয়।

অবস্থাপরিণাম- কোনোও বস্তু একটি ধর্ম হতে অন্য ধর্মে রূপান্তরিত সহসা হয় না, তাতে ক্রমশ পরিবর্তন হওয়া উচিত। এই পরিবর্তনের ক্রমশ হওয়াকে ‘অবস্থা পরিণাম’ বলা হয়। যেমন- মাটি হতে ঘট তৈরীর মধ্যবর্তী অবস্থায় মাটিতে যে ক্রমশ পরিবর্তন হয়ে ঘট তৈরি হয়, সেই মধ্যবর্তী পরিবর্তনকেই ‘অবস্থা পরিণাম’ বলা হয়।

উপরোক্ত তিনটি পরিণামই সকল জড় পদার্থ চিত্ত, ভূত, ইন্দ্রিয় ইত্যাদিতেও একই রকম ভাবে ঘটে, এটিও জেনে নেওয়া উচিত।

বস্তুত সকল জড় পদার্থে একটিমাত্রই পরিণাম ঘটে সেটি হল ‘ধর্ম পরিণাম’।

কিন্তু যখন কোনো বস্তুর পরিবর্তনকে কালের সাথে যুক্ত করে দেখা হয় তখন তাকে ‘লক্ষণ পরিণাম’ বলে। আবার কোনো বস্তুর এক অবস্থা হতে ভিন্ন অবস্থায় পরিবর্তিত হওয়ার মধ্যবর্তী পরিবর্তনকে যখন লক্ষ্য করা হয় তখন তাকে ‘অবস্থা পরিণাম’ বলে এবং বস্তুর এক ধর্ম হতে অন্য ধর্মের প্রকট হওয়াকে ‘ধর্ম পরিণাম’ বলে। বস্তুর ধর্মের পরিবর্তন হলেও বস্তুর কোনোও পরিবর্তন হয় না। যেমন- একটি ই স্ত্রীকে মা, বোন, দিদি, পত্নী ইত্যাদি বলা হলেও স্ত্রীর কোনোও ভিন্নতা হয় না।

চিন্তের ব্যুত্থান পরিণাম, নিরোধ পরিণাম, সমাধি পরিণাম এবং একাগ্রতা পরিণাম এগুলিকে জেনে যোগী সরলতা পূর্বক ব্যুত্থান অবস্থাকে অভিভূত করে সমাধি, একাগ্রতা এবং নিরোধ পরিণামকে উদ্ধুদ্ধ করতে সমর্থ হয়ে যায়। ভূত এবং ইন্দ্রিয়ের ধর্ম পরিণাম, লক্ষণ পরিণাম এবং অবস্থা পরিণামকে জেনে ভৌতিক পদার্থের স্বরূপকে জানতে সমর্থ হয়ে যায় অর্থাৎ তাদের অনিত্যতা সম্পর্কেও জ্ঞান হয়ে যায়।

সমস্ত উৎপন্ন পদার্থের উপাদান কারণ হল সত্ত্ব, রজ এবং তম; এটিকে মূল ধর্মী বলা হয়। কিন্তু মহৎতত্ত্ব, অহংকার, তন্মাত্রা এগুলি প্রকৃতির ধর্ম। এখানে একটা কথা জেনে রাখা উচিত যে- ‘ধর্ম’ শব্দ; দ্রব্য, গুণ এবং কর্ম এই তিনটির ক্ষেত্রে প্রযোজ্য হয়। কিন্তু ধর্মী শব্দ দ্বারা কেবল দ্রব্যকেই গ্রহণ করা হয়। অতএব প্রকৃতিকে কেবল ধর্মী বলা হয় এবং প্রকৃতি হতে তৈরি সকল পদার্থ ধর্মী এবং ধর্ম দুই হতে পারে। ১৩।।

অবতরণিকা - এই সন্দর্ভে ধর্মীর স্বরূপ নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে।

সূত্র - শান্তোদিতাব্যপদেশ্যধর্মানুপাতী ধর্মী। ১৪।।

শব্দার্থ - (শান্ত-উদিত-অব্যপদেশ্য-ধর্ম-অনুপাতী) অতীত, বর্তমান এবং ভবিষ্যৎ ধর্মে বিদ্যমান (ধর্মী) ধর্মী বলা হয়।

সূত্রার্থ - অতীত, বর্তমান এবং ভবিষ্যৎ ধর্মে যে বস্তু নিরন্তর একই রকম বিদ্যমান থাকে তাকে ‘ধর্মী’ বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধর্মীর স্বরূপকে উল্লেখ করা হয়েছে।

যে বস্তু শান্ত, উদিত এবং অব্যপদেশ্য এই তিনটি ধর্মে অনুগত (যুক্ত) থাকে তাকে ‘ধর্মী’ বলা হয়। যে ধর্ম নিজ কার্য পূর্ণ করে তিরোহিত হয়ে যায় তাকে ‘শান্ত’ ধর্ম বলে। যে ধর্ম বর্তমানকালে অভিব্যক্ত হয়ে নিজের কার্যে রত রয়েছে তাকে ‘উদিত’ ধর্ম বলে। যে নিজ ধর্মীতে বিদ্যমান থাকে কিন্তু এখনো উদ্ধুদ্ধ নয় তাকে ‘অব্যপদেশ্য’ ধর্ম বলা হয়। যেমন- মাটি হতে ঘট ভবিষ্যতে অভিব্যক্ত হবে,

একে মাটির ‘অব্যপদেশ্য’ ধর্ম বলে। যখন ঘট উৎপন্ন হয়ে ব্যবহৃত হয় তখন তাকে মাটির ‘উদিত’ ধর্ম বলে। যখন ঘট বিনষ্ট হয়ে যাবে তখন তাকে মাটির ‘শান্ত’ ধর্ম বলা হবে। ‘অব্যপদেশ্য’ ধর্মের অন্তর ‘উদিত’ ধর্ম হয় এবং ‘উদিত’ ধর্মের অন্তর ‘অতীত’ ধর্ম হয়। কিন্তু ‘অতীত’ ধর্মের অন্তর আর কোনোও ধর্ম হয় না। যেহেতু মাটির যে ধর্ম ঘট ছিল সেটি বিনষ্ট হয়ে গেছে। অতএব ‘অতীত’ ধর্মের অন্তর কোনোও ধর্ম উৎপন্ন হয় না। এই সকল পরিবর্তনের মধ্যেও মাটি ধর্মী একই থাকে। এই নিয়ম অন্য জল ইত্যাদি জড় পদার্থের ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত। ১১৪।।

সূত্র - ক্রমান্যত্বং পরিণামান্যত্বে হেতুঃ । ১৫ ।।

শব্দার্থ - (ক্রম-অন্যত্বম্) ক্রমের ভিন্নতা (পরিণাম-অন্যত্বে) পরিণামের ভিন্নতায় (হেতুঃ) কারণ হয়।

সূত্রার্থ - পরিণামের অর্থাৎ পরিবর্তনের ভিন্নতায়, ক্রমের ভিন্নতা কারণ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পরিণামের ভিন্নতার কারণ কী? সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

একটি ধর্মীর একটিই পরিণাম হওয়া উচিত। কিন্তু ক্রম ভিন্ন-ভিন্ন হওয়ায় পরিণামও ভিন্ন-ভিন্ন হয়। যেমন- চূর্ণ মাটি, পিণ্ড মাটি, ঘট মাটি, ঠীকরা মাটি (ভাঙা ঘটের অংশ), কণ মাটি এগুলি হল মাটির ক্রম। একটি ধর্মের পর অন্তর ধর্মের আসাকে ‘ক্রম’ বলা হয়। চূর্ণ মাটিতে জল দিয়ে পিণ্ড তৈরি করা হয়। ওই পিণ্ড দ্বারা ঘট তৈরি করা হয়। তখন পিণ্ডের আকার সমাপ্ত হয়ে যায় এবং ঘটাকার উৎপন্ন হয়; এটি মাটি ধর্মীর ‘ধর্ম পরিণাম’। ঘটের অনাগত অবস্থা হতে বর্তমান অবস্থায় প্রাপ্ত হওয়াকে ঘটের ‘লক্ষণ পরিণাম’ বলা হয়। যখন ঘট চূর্ণ হয়ে নষ্ট হয়ে যায় তখন কোনোও ক্রম অবশিষ্ট থাকে না। নতুন ঘট নির্মাণের সাথে-সাথে পুরোনো হতে থাকে এবং ক্রমশ ঘট জীর্ণ-শীর্ণ হয়ে যায়, একে ঘটের ‘অবস্থা পরিণাম’ বলা হয়। এইভাবে ক্রমের ভিন্নতার ফলে পরিণামের ভিন্নতা ঘটে।

প্রায়ঃ ব্যক্তি এটা জানে না যে আমার শরীর প্রত্যেক ক্ষণ পুরোনো হচ্ছে এবং ধীরে-ধীরে এর বিনাশ হয়ে যাবে। যদি ব্যক্তি এই তথ্যকে জেনে নেয় তাহলে তার বিবেক-বৈরাগ্য শীঘ্র উৎপন্ন হতে পারে এবং শীঘ্র সমাধিকেও প্রাপ্ত করতে পারে। এই জন্য এই পরিণামকে জানা অত্যাবশ্যিক।

ধর্মও ধর্মী হয় অন্য ধর্মের অপেক্ষায়। যেমন- মহৎতত্ত্ব, প্রকৃতির অপেক্ষায় ধর্ম। কিন্তু অহংকার, মহৎতত্ত্বের কার্য হওয়ায় মহত্ত্বকে ধর্মীও বলা হয়। এই নিয়ম

অন্য ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত ।

চিত্তে দুধরনের ধর্ম বিদ্যমান থাকে- একটি দৃষ্ট, দ্বিতীয়টি অদৃষ্ট । জ্ঞানাত্মক রাগ, দ্বেষ ইত্যাদিকে চিত্তের ‘দৃষ্ট ধর্ম’ বলা হয় । অনুমান প্রমাণ দ্বারা জানার যোগ্য, বস্তুমাত্র স্বরূপে চিত্তে বিদ্যমান ধর্মকে ‘অদৃষ্ট ধর্ম’ বলে । সেগুলি সাত প্রকারের হয়-

নিরোধধর্মসংস্কারাঃ পরিণামোঃথ জীবনম্ ।

চেষ্টা শক্তিশ্চ চিত্তস্য ধর্মো দর্শনবর্জিতাঃ ।।

(১) নিরোধ- অসম্প্রজ্ঞাত সমাধিতে চিত্তে ব্যুত্থান সংস্কারের জাপ্ত হয়ে যাওয়া এবং নিরোধ সংস্কারের প্রকট হওয়া । এটি চিত্তের নিরোধ রূপী ‘অদৃষ্ট ধর্ম’ ।

(২) ধর্ম- মন, বাণী এবং শরীর দ্বারা যে কর্ম করা হয় সেগুলি ধর্ম-অধর্মের রূপে চিত্তে সঞ্চিত থাকে ।

(৩) সংস্কার- সংস্কার, স্মৃতি এবং রাগাদি ক্লেশের উৎপাদক, চিত্তে বিদ্যমান বাসনা গুলিকে ‘সংস্কার’ বলা হয় ।

(৪) পরিণাম- সত্ত্ব ইত্যাদির গুণে নিরন্তর ক্রিয়া হওয়ায় চিত্তেও সতত পরিবর্তন হতে থাকে । একে ‘পরিণাম’ বলে ।

(৫) জীবন- শরীরকে জীবিত রাখার জন্য চিত্ত দ্বারা যে প্রযত্ন করা হয়, তাকে ‘জীবন’ বলে ।

(৬) চেষ্টা- ইন্দ্রিয়কে নিজ-নিজ কার্যে প্রবৃত্ত করার জন্য চিত্ত যে ক্রিয়া করে, তাকে ‘চেষ্টা’ বলে ।

(৭) শক্তি- চিত্তে নিজ কার্য সম্পাদন করার যে সামর্থ্য বিদ্যমান থাকে, তাকে ‘শক্তি’ বলে ।। ১৫ ।।

অবতরণিকা - তিনটি পরিণামে সংযম করলে কি হয়, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - পরিণামত্রয়সংযমাদতীতানাগতজ্ঞানম্ ।। ১৬ ।।

শব্দার্থ - (পরিণাম-ত্রয়-সংযমাৎ) তিনটি পরিণামে সংযম করলে (অতীত-অনাগত-জ্ঞানম্) ভূতকালিক এবং ভবিষ্যৎকালিক জ্ঞান হয় ।

সূত্রার্থ - পদার্থের তিনটি পরিণামে সংযম করলে সেই পদার্থের ভূতকালিক এবং ভবিষ্যৎকালিক স্বরূপের জ্ঞান হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে তিনটি পরিণামে সংযম করলে তার কি ফল হয়, সেই

বিষয়ে বলা হয়েছে।

ধর্ম-লক্ষণ-অবস্থা এই তিনটি পরিণামে সংযম করলে অতীত এবং অনাগত কালের জ্ঞান হয়। যোগী যে বিষয়ে সংযম করে সেই বিষয়ের সীমিত জ্ঞান হয়ে যায়। যেমন- আজ কাল ভৌতিক বৈজ্ঞানিকরা বস্তুর সামান্য জ্ঞান করে নেন যে এই ভবন, পাথর, পুল ইত্যাদি পদার্থ কত পুরোনো এবং এটি আগে কতদিন পর্যন্ত চলতে পারে। একইভাবে যোগীও সেই সকল পদার্থ সম্বন্ধে ভূত ও ভবিষ্যৎ জ্ঞান করে নেন। ১১৬।।

সূত্র - শব্দার্থপ্রত্যয়ানামিতরেতরাধ্যাসাৎ - সংকরস্তৎপ্রবিভাগসংয়মাৎসর্বভূতরুতজ্ঞানম্। ১৭।।

শব্দার্থ - (শব্দ-অর্থ-প্রত্যয়ানাম্) শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানকে (ইতরেতর-অধ্যাসাৎ) একটিকে অন্যতে আরোপিত করলে (সংকরঃ) সংমিশ্রণ হয় (তৎ-প্রবিভাগ-সংয়মাৎ) শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানের বিভাগে সংযম করলে (সর্ব-ভূত-রুত-জ্ঞানম্) সকল প্রাণীদের শব্দের জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানকে পরস্পর একটিকে অন্যতে আরোপিত করলে তাদের সংমিশ্রণ হয়ে যায়। যখন শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানের ভিন্ন-ভিন্ন স্বরূপে সংযম করা হয় তখন সংযমকারীকে সকল প্রাণীদের শব্দের জ্ঞান হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শব্দ, অর্থ এবং জ্ঞানের বিভাগে সংযম করলে যোগীর কী ফল প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

‘গরু’ এটি একটি শব্দ, ‘গরু’ এটি একটি অর্থ, ‘গরু’ এটি একটি জ্ঞান। এই ভাবে এগুলিকে পৃথক-পৃথক্ জেনে, তাতে সংযম করলে অনেক প্রাণীদের শব্দের সম্বন্ধে জ্ঞান হয়। যেমন- যেসকল মানুষদের ভাষাকে যোগী জানেন না তাদের ভাষাকে বার-বার শুনে এবং তাদের সংকেত ও ব্যবহারকে দেখে পুনঃ তাদের শব্দে সংযম করেন তখন একটি সীমা পর্যন্ত তাদের ভাবকে জানতে পারেন। সেই রকম গরু ইত্যাদি পশু-পক্ষীদের শব্দকে বার-বার শুনে তাদের সংকেত এবং ব্যবহারকে দেখে তাদের ভাবকে কিছু সীমা পর্যন্ত জেনে নেন। সূত্রে ‘সর্ব’ শব্দের অর্থ হল- যেসকল প্রাণীদের শব্দে যোগী সংযম করেন সেসকল প্রাণীদের শব্দের ভাবকে জানতে পারেন অন্য প্রাণীদের শব্দকে নয়। ১৭।।

সূত্র - সংস্কারসাক্ষাৎকরণাৎপূর্বজাতিজ্ঞানম্। ১৮।।

শব্দার্থ - (সংস্কার-সাক্ষাৎ-করণাৎ) সংস্কারের সাক্ষাৎকার করলে (পূর্ব-জাতি-জ্ঞানম্) পূর্ব জন্মের জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - সংযম দ্বারা সংস্কারের সাক্ষাৎকার করলে পূর্ব জন্মের জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সংস্কারের সাক্ষাৎকার করলে তার কী ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সংস্কার দুই প্রকারের হয়- (১) স্মৃতি এবং অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশের কারণ বাসনারূপ সংস্কার অর্থাৎ স্মৃতি এবং ক্লেশের উৎপাদক সংস্কার। (২) কর্মফলের কারণরূপ সংস্কার অর্থাৎ জাতি, আয়ু এবং ভোগ রূপ ফলের প্রদানকারী সংস্কার। এই দুই ধরনের সংস্কার পূর্ব জন্মে সঞ্চয় করা হয়েছে। এই সংস্কার গুলি পরিণাম, চেষ্টা, নিরোধ ইত্যাদি ধর্মের সমান চিত্তের অদৃষ্ট ধর্ম।

নিজের অথবা কোনো ব্যক্তির কিছু চেষ্টাকে দেখার পর নিজের অথবা তাদের সংস্কারের সম্বন্ধে অনুমান হয় এবং সেই সংস্কারে সংযম করলে যোগীর পূর্ব জন্মের সম্বন্ধে সামান্য ভাবে জ্ঞান হয়ে যায়। কিন্তু আমি অথবা তারা কোন্ স্থানে, কোন্ পরিবারে, কোন্ শরীরে, কোন্ যোনীতে, ছিলাম বা ছিলেন এগুলি জানা সম্ভব নয়। তবে হ্যাঁ, পূর্বজন্ম সম্পর্কে আমরা এতটুকু জানতে পারি যে; যেটিকে একটি উপাখ্যান দ্বারা বোঝানো হয়েছে -

কোনোও এক সময়ে শরীরধারী ভগবান্ আবট্য জৈগীষব্য ঋষিকে জিজ্ঞাসা করেন, আপনি বহু যোনীতে জন্মগ্রহণ করে সুখ-দুঃখের অতিরিক্ত কী অনুভব করেছেন? ঋষি জৈগীষব্য বলেন- আমি বিভিন্ন যোনীতে জন্মগ্রহণ করে যা কিছু অনুভব করেছি তা সকলেই দুঃখের অতিরিক্ত কিছু ছিল না। পুনঃ ভগবান্ আবট্য, জৈগীষব্য ঋষিকে জিজ্ঞাসা করেন, আপনি কি সিদ্ধি দ্বারা প্রাপ্ত সুখকে এবং সন্তোষ দ্বারা প্রাপ্ত সুখকেও দুঃখের কোটিতে গণনা করেছেন? ঋষি জৈগীষব্য বলেন- বিষয় সুখের অপেক্ষায় সেই সকল সুখ উত্তম; কিন্তু মোক্ষ সুখের অপেক্ষায় সেগুলি সকলই দুঃখদায়ক, তার বেশি কিছু নয়। ১৮।।

সূত্র - প্রত্যয়স্য পরচিত্তজ্ঞানম্ । ১৯ ।।

শব্দার্থ - (প্রত্যয়স্য) জ্ঞানে সংযম করলে (পর-চিত্ত-জ্ঞানম্) অন্যের চিত্তের জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - যখন যোগী অন্যের জ্ঞানে সংযম করেন তখন তাঁর অন্যের চিত্তের জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অন্য ব্যক্তির চিত্তের জ্ঞান কীভাবে হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যখন যোগী অন্য ব্যক্তির আকৃতি, বিবিধ চেষ্টা এবং বাণী দ্বারা তার ভাবকে

জেনে তার জ্ঞানে সংযম করেন তখন যোগীর সেই ব্যক্তির চিত্তের অবস্থার জ্ঞান হয় যে- এই ব্যক্তি রাগ, দ্বেষ, মোহ, অহংকার ইত্যাদির সাথে যুক্ত অথবা প্রেম, নির্ভয়তা, জিজ্ঞাসা, ইত্যাদির সাথে যুক্ত । ১৯ ।।

সূত্র - ন চ তৎসালম্বনং তস্যাবিষয়ীভূতত্বাৎ । ২০ ।।

শব্দার্থ - (ন চ) এবং হয় না (তৎ) সেই পরচিত্তের (সালম্বনম্) আলম্বন সহিত (তস্য) সেই আলম্বনের (অ-বিষয়ীভূতত্বাৎ) বিষয় না হওয়ায় ।

সূত্রার্থ - অন্যের চিত্তে সংযম করলে পরচিত্তের জ্ঞান আলম্বন সহিত হয় না, তার কারণ হল পরচিত্তের যে আলম্বন রয়েছে; সেটি যোগীর সংযমের বিষয় হয় না ।

ব্যাখ্যা - অন্য ব্যক্তির চিত্তের আলম্বনসহিত জ্ঞান হওয়াকে নিষেধ করা হয়েছে ।

অন্য ব্যক্তির জ্ঞানে সংযম করলে যোগী অন্যের চিত্তে বিদ্যমান রাগ, দ্বেষ, প্রেম পরোপকার ইত্যাদি ভাবকে তো জেনে নেয় । কিন্তু সেই ব্যক্তির কোন পদার্থে; মনুষ্য না পশু-পক্ষীতে রাগ, দ্বেষ, প্রেম রয়েছে সেটি যোগী জানতে পারেন না । তার কারণ হল অন্য ব্যক্তির চিত্ত যে সকল পদার্থের বিষয়ে রাগ, দ্বেষ, প্রেম, জিজ্ঞাসা ইত্যাদি রাখে সে সকল পদার্থ যোগীর সংযমের বিষয় হয় না । এই জন্য যোগী যেসকল বিষয়ে সংযম করেন তাদেরই জ্ঞান হয়; অন্য বিষয়ের নয় । ২০ ।।

**সূত্র - কায়রূপসংযমাৎ তদগ্রাহ্যশক্তিস্তস্তে
চক্ষুঃপ্রকাশাসম্প্রয়োগে অন্তর্ধানম্ । ২১ ।।**

শব্দার্থ - (কায়-রূপ-সংযমাৎ) নিজের শরীরের রূপে সংযম করলে (তদ-গ্রাহ্য-শক্তি-স্তস্তে) শরীরের রূপের গ্রাহ্যশক্তি নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়ায় (চক্ষুঃ-প্রকাশ-অসম্প্রয়োগে) অন্যের চোখের প্রকাশের সাথে সংযোগ না হওয়ায় (অন্তর্ধানম্) অন্তর্ধান হয়ে যায় ।

সূত্রার্থ - নিজের শরীরের রূপে সংযম করলে শরীরের রূপের গ্রাহ্যশক্তি নিরুদ্ধ হয়ে যায় এবং অন্যের চোখের প্রকাশের সাথে সংযোগ না হওয়ায় যোগী অন্তর্ধান হয়ে যান ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে অন্তর্ধান সিদ্ধি লাভের কথা উল্লেখ করা হয়েছে ।

যখন যোগী নিজ শরীরের রূপে সংযম করেন তখন তাঁর শরীরের রূপের গ্রাহ্যশক্তি নিরুদ্ধ হয়ে যায় অর্থাৎ তাঁর রূপ অন্যের দৃষ্টিগোচর হয় না । তখন তাঁকে অন্তর্ধান

মনে হয়। এই সিদ্ধিলাভ বস্তুত সৃষ্টি নিয়মের বিরুদ্ধ মনে হয়, তাই এটা ঠিক প্রতীত হয় না। কিন্তু কোনো রং বা কাপড় ইত্যাদির দ্বারা যদি নিজেকে আচ্ছাদন করে নেন তাহলে অন্য ব্যক্তি তাকে দেখতে পাবে না; যেমন আজকাল এরকম করতে দেখতে পাওয়া যায়। এভাবে নিজের শরীরের রূপের অন্তর্ধান করা সম্ভব; অন্য উপায়ে নয়।।২১।।

সূত্র - সোপক্রমং নিরুপক্রমং চ কর্ম তৎসংযমাদপরাস্তজ্ঞানমরিষ্টেভ্যো বা।।২২।।

শব্দার্থ - (সোপক্রমম্) শীঘ্র ফল প্রদানকারী (নিরুপক্রমম্) বিলম্বে ফল প্রদানকারী (চ) এবং (কর্ম) কর্ম হয় (তৎ-সংযমাৎ) সেই সকল কর্মে সংযম করলে (অপরাস্ত-জ্ঞানম্) মৃত্যুর জ্ঞান হয় (অরিষ্টেভ্যঃ) মৃত্যুর জ্ঞাপক চিহ্ন দ্বারা (বা) এবং।

সূত্রার্থ - কর্ম দুই ধরনের হয়- ‘সোপক্রমম্’ অর্থাৎ শীঘ্র ফল প্রদানকারী এবং ‘নিরুপক্রমম্’ অর্থাৎ বিলম্বে ফল প্রদানকারী। সেই সকল কর্মে সংযম করলে এবং মৃত্যুর জ্ঞাপক চিহ্ন দ্বারা যোগীর মৃত্যুর জ্ঞান হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে দুধরনের কর্মে সংযম করলে এবং মৃত্যুর জ্ঞাপক চিহ্ন দ্বারা মৃত্যুর জ্ঞান হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

আয়ু রূপী ফল প্রদানকারী কর্ম দুই প্রকারের হয় - শীঘ্র ফল প্রদানকারী এবং বিলম্বে ফল প্রদানকারী।

পূর্বজন্মকৃত কর্মের সংস্কারের সামান্য জ্ঞানের আধারে এবং এই জন্মে কৃতকর্মের বিষয়ে বিশেষ জ্ঞানের আধারে, যোগী সে সকল কর্মে সংযম করলে নিজের বিষয়ে জানতে পারেন যে আমার আয়ু আনুমানিক কতটা হতে পারে।

মৃত্যুর জ্ঞাপক চিহ্ন দ্বারাও মৃত্যু সম্পর্কে জ্ঞান হয়। এই জ্ঞাপক চিহ্ন তিন প্রকারের হয় - আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক এবং আধিদৈবিক।

আধ্যাত্মিক - যেমন- কানকে আঙুল দিয়ে বন্ধ করে দিলে অব্যক্ত ধ্বনির শ্রবণ হয় না এবং নেত্রকে হস্ত দ্বারা ঢেকে দিলে প্রকাশ দেখা যায় না ইত্যাদি।

আধিভৌতিক - যেমন- আমায় কেউ মারতে আসছে, মৃত পরিবার জনকে অকস্মাৎ দেখা ইত্যাদি।

আধিদৈবিক - অকস্মাৎ স্বর্গকে দেখা অথবা সিদ্ধ পুরুষদের দর্শন করা অথবা এইগুলির সর্বথা বিরুদ্ধ নিজেকে দীন-হীন, অসহায় মনে করা ইত্যাদি; এই লক্ষণ গুলির দ্বারা এটা জানা যায় যে এর মৃত্যু নিকট।।২২।।

সূত্র - মৈত্র্যাদিষু বলানি ।। ২৩ ।।

শব্দার্থ - (মৈত্রী-আদিষু) মৈত্রী ইত্যাদিতে সংযম করলে (বলানি) মৈত্রী ইত্যাদি বলের প্রাপ্তি হয় ।

সূত্রার্থ - মৈত্রী, করুণা এবং মুদিতা এই তিনটি ভাবনায় সংযম করলে মৈত্রী, করুণা এবং মুদিতা বলের প্রাপ্তি হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে মৈত্রী ইত্যাদিতে সংযম করলে যোগীর কি প্রাপ্তি হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

মৈত্রীতে সংযম করলে মৈত্রী বলের প্রাপ্তি হয় অর্থাৎ সাধক অন্যকে মিত্র বানাতে সফল হয়ে যান । করুণায় সংযম করলে করুণা বলের প্রাপ্তি হয় অর্থাৎ অন্যকে দয়ালু বানাতে সফল হয়ে যান । মুদিতায় সংযম করলে মুদিতা বলের প্রাপ্তি হয় অর্থাৎ অন্যকে হর্ষযুক্ত করতে সফল হয়ে যান ।

পাপীদের প্রতি উপেক্ষা করা হয় ভাবনা নয়; তাই এতে না সংযম করা হয়, না সংযম দ্বারা কোনো ফলের প্রাপ্তি হয় ।। ২৩ ।।

সূত্র - বলেষু হস্তিবলাদীনি ।। ২৪ ।।

শব্দার্থ - (বলেষু) হস্তি ইত্যাদির বলে সংযম করলে (হস্তি-বলাদীনি) হস্তি ইত্যাদি বলের প্রাপ্তি হয় ।

সূত্রার্থ - হস্তি ইত্যাদির বলে সংযম করলে হস্তি ইত্যাদি বলের প্রাপ্তি হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে হস্তি ইত্যাদি বলযুক্ত পদার্থে সংযম করলে অপ্রতিহত বলের প্রাপ্তি হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

কোনো ব্যক্তি যখন কোনো বলবান্ পুরুষকে দেখেন এবং নিজেকে সেই ধরনের বলবান্ হতে ইচ্ছা করে, তখন সে উপযুক্ত খান-পান, ব্যায়াম ইত্যাদি করতে শুরু করে দেন এবং তিনি বলবান্ হয়ে যান । এরকম হস্তি ইত্যাদি বলশালী প্রাণীদের দেখেও ব্যক্তি বলবান্ হয়ে যায় ।। ২৪ ।।

সূত্র - প্রবৃত্ত্যালোকন্যাসাৎ সূক্ষ্মব্যবহিতবিপ্রকৃষ্টজ্ঞানম্ ।। ২৫ ।।

শব্দার্থ - (প্রবৃত্তি-আলোক-ন্যাসাৎ) প্রবৃত্তির আলোকে সংযম করলে (সূক্ষ্ম-ব্যবহিত-বিপ্রকৃষ্ট-জ্ঞানম্) সূক্ষ্ম, আবরণযুক্ত তথা দূরে স্থিত বস্তুর জ্ঞান হয় ।

সূত্রার্থ - মনের জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তির আলোকে সংযম করে সেই আলোককে

সূক্ষ্ম, আবরণযুক্ত তথা দূরে স্থিত বস্তুতে লাগালে সেই সকল সূক্ষ্ম ইত্যাদি বস্তুর জ্ঞান হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে মনের জ্যোতিষ্মতী প্রবৃত্তির আলোকে সংযম করলে যোগী তাঁর ফলস্বরূপ কি প্রাপ্তি করেন, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

হৃদয়ে ধারণা করলে মনের সাক্ষাৎকার হয়। মন সত্ত্বগুণ যুক্ত প্রকাশশীল এটা যোগী জেনে নেন। এই জ্ঞানে সংযম করলে তার একাগ্রতা আরও বেড়ে যায়। এই একাগ্রতার ফলে তিনি সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম অথবা দূরে স্থিত বস্তুকে উৎকৃষ্ট রূপে অনুমান দ্বারা জানতে সক্ষম হয়ে যান। কিন্তু বর্তমানে সেই বস্তু কী অবস্থায় বিদ্যমান রয়েছে, এগুলি জানতে পারেন না।।২৫।।

সূত্র - ভুবনজ্ঞানং সূর্যে সংয়মাৎ ।।২৬।।

শব্দার্থ - (ভুবন-জ্ঞানম্) লোক-লোকান্তর-এর জ্ঞান হয় (সূর্যে) সূর্যে (সংয়মাৎ) সংযম করলে।

সূত্রার্থ - সূর্যে সংযম করলে লোক-লোকান্তর-এর জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সূর্যে সংযম করলে সংযমকারীর কি ফল প্রাপ্তি হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সূর্যে সংযম করলে সূর্যের এবং সূর্যের সাথে সংবদ্ধ অন্য লোক-লোকান্তরের সামান্য জ্ঞান হয়। যেমন- সূর্য; গ্রহ এবং উপগ্রহের আধার। সূর্য দ্বারা গ্রহ-উপগ্রহকে প্রকাশ ও শক্তি প্রাপ্ত হয় ইত্যাদি।।২৬।।

সূত্র - চন্দ্রে তারাব্যুহজ্ঞানম্ ।।২৭।।

শব্দার্থ - (চন্দ্রে) চন্দ্রমায় সংযম করলে (তারা-ব্যুহ-জ্ঞানম্) তারাদের রচনার জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - চন্দ্রমায় সংযম করলে তারাদের রচনার জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চন্দ্রমায় সংযম করলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

চন্দ্রমায় সংযম করলে কোন্ তারা কোন্ স্থানে অবস্থিত ইত্যাদির জ্ঞান হয়।।২৭।।

সূত্র - ধ্রুবে তদগতিজ্ঞানম্ ।।২৮।।

শব্দার্থ - (ধ্রুবে) ধ্রুব তারায় সংযম করলে (তদ-গতি-জ্ঞানম্) অন্য তারাদের

গতি সম্পর্কে জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - ধ্রুব তারায় সংযম করলে অন্য তারাদের গতি সম্পর্কে জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধ্রুবতারায় সংযম করলে কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

‘ধ্রুব’ শব্দের অর্থ হল স্থির থাকা। অতএব নিশ্চিত স্থানে স্থির অবস্থায় অবস্থিত লোককে ‘ধ্রুবতারা’ বলা হয়। এই ধ্রুবতারায় সংযম করলে অন্য তারাদের গতি সম্পর্কে জ্ঞান হয়। তার কারণ হল স্থির স্থানে অবস্থিত থেকেই চলমান অন্য বস্তুর সম্পর্কে জ্ঞান হওয়া সম্ভব।।২৮।।

সূত্র - নাভিচক্রে কায়ব্যূহজ্ঞানম্।।২৯।।

শব্দার্থ - (নাভি-চক্রে) নাভি চক্রে সংযম করলে (কায়-ব্যূহ-জ্ঞানম্) শরীরের রচনা সম্পর্কে জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - শরীরের নাভি চক্রে সংযম করলে শরীরের রচনা সম্পর্কে জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে নাভি চক্রে সংযম করলে তার কি ফল প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

নাভি চক্রে সংযম করলে শরীরের রচনা সম্পর্কে জ্ঞান হয় অর্থাৎ শরীরে স্থিত বাত, পিত্ত, কফ এই তিনটি দোষ রয়েছে এবং ত্বক, রক্ত, মাংস, স্নায়ু, অস্থি, মজ্জা, শুক্র, এইসকল সাত প্রকারের ধাতু রয়েছে। এগুলির মধ্যে ত্বক ইত্যাদি শরীরের বাইরে থেকে ভিতর পর্যন্ত ক্রমান্বয়ে স্থিত রয়েছে; এই সকল রচনা সম্পর্কে জ্ঞান হয়।।২৯।।

সূত্র - কণ্ঠকূপে ক্ষুৎপিপাসানিবৃত্তিঃ।।৩০।।

শব্দার্থ - (কণ্ঠ-কূপে) কণ্ঠকূপে সংযম করলে (ক্ষুৎ-পিপাসা-নিবৃত্তিঃ) ক্ষুধা-পিপাসার নিবৃত্তি হয়।

সূত্রার্থ - কণ্ঠকূপে সংযম করলে কিছু সময় পর্যন্ত ক্ষুধা-পিপাসায় যোগী বাধিত হয় না।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে কণ্ঠকূপে সংযমকারী কি ফল প্রাপ্তি করেন, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

জিহ্বার নিচে একটি তন্তু রয়েছে। সেই তন্তুর নিচে কণ্ঠ রয়েছে। সেই কণ্ঠের নিচে কূপ অবস্থিত রয়েছে। সেই কূপে সংযম করলে ক্ষুধা-পিপাসা একটি সীমা পর্যন্ত যোগীকে বাধিত করে না।।৩০।।

সূত্র - কূর্মনাড্যাং স্তৈর্যম্ ।। ৩১ ।।

শব্দার্থ - (কূর্ম-নাড্যাম্) কূর্ম নামক নাড়ীতে সংযম করলে (স্তৈর্যম্) স্থিরতা প্রাপ্ত হয় ।

সূত্রার্থ - কূর্ম নামক নাড়ীতে সংযম করলে স্থিরতা প্রাপ্ত হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে কূর্ম নামক নাড়ীতে সংযম করলে কি ফল প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

কণ্ঠ কুপের নিচে উরু স্থলে কচ্ছপের আকারে একটি নাড়ী রয়েছে, সেই নাড়ীতে সংযম করলে যোগী স্থিরত্বকে প্রাপ্ত করেন অর্থাৎ দীর্ঘ সময় পর্যন্ত যোগীর শরীর এবং মন স্থির থাকে । যেমন- সর্প ইত্যাদি নিজের গর্তে মড়ার মত পড়ে থাকে ।। ৩১ ।।

সূত্র - মূর্খজ্যোতিষি সিদ্ধদর্শনম্ ।। ৩২ ।।

শব্দার্থ - (মূর্খ-জ্যোতিষি) মূর্খার প্রকাশে সংযম করলে (সিদ্ধ-দর্শনম্) সিদ্ধ পুরুষদের দর্শন হয় ।

সূত্রার্থ - মূর্খার সাত্ত্বিক প্রকাশে সংযম করলে সিদ্ধ মহান্ যোগীদের চিহ্নিত করার যোগ্যতা প্রাপ্ত হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে মূর্খার সাত্ত্বিক প্রকাশে সংযম করলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

যোগাভ্যাস করলে যোগীর বুদ্ধি সাত্ত্বিক হয়ে যায় । সৎসঙ্গ, স্বাধ্যায়, ঈশ্বর উপাসনা করলে যোগীর বুদ্ধি সত্ত্বগুণ প্রধান হয়ে যায় এবং রজোগুণ ও তমোগুণ জাপ্ত হয়ে যায় । তার দ্বারা ব্যক্তির বিবেক-বৈরাগ্য বিকশিত হয় এবং ঈশ্বর হতে তিনি বিবিধ জ্ঞান প্রাপ্ত করেন । এই প্রাপ্ত জ্ঞান দ্বারা ব্যক্তি সিদ্ধ পুরুষ অর্থাৎ উচ্চ কোটির যোগী মহাত্মাদের জানতে-চিনতে সমর্থ হয়ে যান । যেটা কিনা সাধারণ ব্যক্তির দ্বারা জানা-চেনা সম্ভব নয় ।। ৩২ ।।

সূত্র - প্রাতিভাদ্ বা সর্বম্ ।। ৩৩ ।।

শব্দার্থ - (প্রাতিভাদ্) প্রাতিভ জ্ঞান দ্বারা (বা) অথবা (সর্বম্) সকল বস্তুর জ্ঞান হয় ।

সূত্রার্থ - অথবা ‘প্রাতিভ জ্ঞান’ দ্বারা সকল বস্তুর জ্ঞান করে নেন ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ‘প্রাতিভ জ্ঞান’ দ্বারা যোগী অনেক পদার্থকে জানতে সক্ষম হন, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে ।

‘প্রাতিভ জ্ঞান’ অর্থাৎ যে জ্ঞান কোনো বাহ্য বস্তুর নিমিত্ত দ্বারা উৎপন্ন হয়নি কিন্তু নিজের ভিতর হতে উৎপন্ন হয়েছে তাকে ‘প্রাতিভ জ্ঞান’ বলে। এই জ্ঞানকে বিবেকজ্ঞানের প্রাথমিক রূপ মনে করা হয়। যেমন- সূর্য উদয়ের পূর্বে সূর্যের আভার জ্ঞান হয়। সেইরকম বিবেকজ্ঞানের উৎপন্ন হওয়ার পূর্বে তার উৎপত্তি হয়। সেই ‘প্রাতিভ’ জ্ঞানের উৎপত্তি হলে; যোগী সেই জ্ঞান দ্বারা বিভিন্ন প্রকারের বস্তুকে জানতে সক্ষম হন।।৩৩।।

সূত্র - হৃদয়ে চিত্তসংবিৎ ।।৩৪।।

শব্দার্থ - (হৃদয়ে) হৃদয়ে সংযম করলে (চিত্ত-সংবিৎ) চিত্তের সাক্ষাৎকার হয়।

সূত্রার্থ - হৃদয়ে সংযম করলে চিত্তের সাক্ষাৎকার হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে হৃদয়ে সংযম করলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

শরীরের হৃদয় প্রদেশে চিত্ত অবস্থিত থাকে। তাতে সংযম করলে চিত্তের সাক্ষাৎকার হয়। চিত্তে কীধরনের বৃত্তি রয়েছে? কীধরনের সংস্কার রয়েছে? চিত্তের ক্ষিপ্ত, মূঢ় ইত্যাদি অবস্থা কীভাবে উৎপন্ন হয়? ইত্যাদি বিষয়ের জ্ঞান হয়।।৩৪।।

সূত্র - সত্ত্বপুরুষয়োঃ অত্যন্তাভিন্নতাসংকীর্ণয়োঃ প্রত্যাবিশেষো ভোগঃ পরার্থত্বাৎ স্বার্থসংযমাৎ পুরুষজ্ঞানম্ ।।৩৫।।

শব্দার্থ - (সত্ত্বপুরুষয়োঃ) বুদ্ধি এবং পুরুষ (অত্যন্ত-অসংকীর্ণয়োঃ) অত্যন্ত ভিন্ন-ভিন্ন স্বরূপ যুক্ত হলেও (প্রত্যয়-অবিশেষঃ) ভিন্নতার জ্ঞান না হওয়াই (ভোগঃ) ভোগ (পরার্থত্বাৎ) বুদ্ধির পরার্থ হওয়ায় (স্বার্থ-সংযমাৎ) নিজ স্বরূপে সংযম করলে (পুরুষ-জ্ঞানম্) পুরুষের জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - বুদ্ধি এবং পুরুষ পরস্পর অত্যন্ত ভিন্ন-ভিন্ন স্বরূপ যুক্ত হলেও, বুদ্ধির পরার্থ হওয়ায় দুটির ভিন্নতার জ্ঞান হয় না তখন তাকে ‘ভোগ’ বলা হয়। দুটির স্বরূপকে পৃথক করে নিজ স্বরূপে সংযম করলে পুরুষের স্বরূপের সাক্ষাৎকার হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ভোগের স্বরূপ এবং আত্মার সাক্ষাৎকার কীভাবে হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

বুদ্ধি এবং পুরুষের মধ্যে অত্যন্ত ভিন্নতা রয়েছে। বুদ্ধি জড় পদার্থ এবং জীবাশ্মা চেতন পদার্থ। উপাদান কারণ সত্ত্ব ইত্যাদি তিনটি গুণ দ্বারা বুদ্ধির উৎপত্তি হয়েছে কিন্তু আত্মার কোনো উপাদান কারণ নেই এবং তার উৎপত্তিও হয়নি। যখন এই দুটির সম্বন্ধ হয় তখন আত্মা বুদ্ধি দ্বারা বিবিধ পদার্থের জ্ঞানপ্রাপ্ত করে। সেই

অবস্থায় আত্মা, বুদ্ধিকে এবং নিজেকে পৃথক করতে পারে না। এই অবস্থায় সে বুদ্ধি দ্বারা সুখ-দুঃখের অনুভব করে একেই ‘ভোগ’ বলা হয়। যখন আত্মা নিজেকে বুদ্ধি হতে পৃথক জানে এবং নিজের স্বরূপে সংযম করে তখন আত্মসাক্ষাৎকার হয়। আত্মসাক্ষাৎকার হলে সে অনুভব করে যে আমি জ্ঞান, ইচ্ছা, প্রযত্ন ইত্যাদি গুণ যুক্ত অর্থাৎ আত্মা এই সকল গুণের সাথে যুক্ত থাকে।।৩৫।।

সূত্র - ততঃ প্রাতিভশ্রাবণবেদনাদর্শাস্বাদবার্তা জায়ন্তে।।৩৬।।

শব্দার্থ - (ততঃ) সেই সংযম দ্বারা (প্রাতিভ-শ্রাবণ-বেদনা-আদর্শ-আস্বাদ-বার্তা) প্রাতিভাদি সিদ্ধির (জায়ন্তে) উৎপত্তি হয়।

সূত্রার্থ - নিজের স্বরূপে সংযম করলে প্রাতিভ, শ্রাবণ, বেদনা, আদর্শ, আস্বাদ এবং বার্তা নামক সিদ্ধির উৎপত্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে নিজ স্বরূপে সংযম করলে যোগীর আরও কি ফলের প্রাপ্তি হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

নিজ স্বরূপে সংযমের ফলে আত্মার সাক্ষাৎকার হয় সেই সাক্ষাৎকার দ্বারা নিম্ন লিখিত সিদ্ধি গুলির প্রাপ্তি হয় -

(১) প্রাতিভ- সূক্ষ্ম, ব্যবহিত, দূরস্থ, অতীত ও অনাগত পদার্থের জ্ঞান উৎপন্ন হয়।

(২) শ্রাবণ- দিব্য শব্দ গ্রহণ করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়।

(৩) বেদনা- দিব্য স্পর্শ গ্রহণ করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়।

(৪) আদর্শ- দিব্য রূপ গ্রহণ করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়।

(৫) আস্বাদ- দিব্য রস গ্রহণ করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়।

(৬) বার্তা- দিব্য গন্ধ গ্রহণ করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়।

অর্থাৎ এই সকল বিষয়ে ইন্দ্রিয়ের, বিষয় গ্রহণের সামর্থ্য বেড়ে যায়।।৩৬।।

সূত্র - তে সমাধাবুপসর্গা ব্যুত্থানে সিদ্ধয়ঃ।।৩৭।।

শব্দার্থ - (তে) উপরোক্ত সিদ্ধি গুলি (সমাধৌ) সমাধিতে (উপসর্গাঃ) বিঘ্নকারী হয় (ব্যুত্থানে) ব্যুত্থান অবস্থায় (সিদ্ধয়ঃ) সিদ্ধি হয়।

সূত্রার্থ - উপরোক্ত সিদ্ধি গুলিকে সমাধিতে বিঘ্ন উৎপন্নকারী মনে করা হয় এবং ব্যুত্থান অবস্থায় এগুলিকে সিদ্ধি মনে করা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে উপরোক্ত সিদ্ধি গুলি যোগ মার্গে কতটা সহায়ক, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

উপরোক্ত প্রাতিভ ইত্যাদি সিদ্ধি গুলি সমাহিত চিত্ত যুক্ত যোগীদের বিঘ্ন উৎপন্নকারী হয়, তার কারণ হল আত্মা এবং পরমাত্মার সাক্ষাৎকারের বিরোধী হওয়ায়। কিন্তু ব্যুথিত চিত্ত যুক্ত ব্যক্তির জন্য এগুলিকে সিদ্ধি মনে করা হয়।

এই সিদ্ধি গুলিকে প্রাপ্ত করে প্রাথমিক অবস্থায় স্থিত যোগীর যোগ সম্বন্ধে রুচি আরও বেড়ে যায়, কিন্তু এই সিদ্ধি গুলির মোহে পড়ে থাকলে ঈশ্বর পর্যন্ত পৌঁছানো যায় না।।৩৭।।

সূত্র - বন্ধকারণশৈথিল্যাৎ প্রচারসংবেদনাচ্ চিত্তস্য পরশরীরাবেশঃ।।৩৮।।

শব্দার্থ - (বন্ধ-কারণ-শৈথিল্যাৎ) বন্ধনের কারণকে শিথিল করে দিলে (প্রচার-সংবেদনাৎ চ) এবং মনের বিষয় গ্রহণের মার্গকে জেনে নিলে (চিত্তস্য, পর-শরীর-আবেশঃ) মনের, অন্যের শরীরে প্রবেশ হয়।

সূত্রার্থ - বন্ধনের কারণকে শিথিল করে দিলে এবং মনের বিষয় গ্রহণের মার্গকে জেনে নিলে; মনের, অন্যের শরীরে প্রবেশ করা সম্ভব হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্ত দ্বারা অন্যের শরীর সম্বন্ধে কীভাবে জ্ঞান প্রাপ্ত হয় অথবা অন্যকে নিজের চিত্ত দ্বারা কীভাবে চালিত করা হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

শুভ-অশুভ সকাম কর্ম এবং কুসংস্কার চিত্তের বন্ধনের কারণ। শুভ-অশুভ সকাম কর্মকে পরিত্যাগ করে বন্ধনের কারণকে শিথিল করা হয়। কুসংস্কারকে; যম-নিয়ম ইত্যাদি অপ্সের অনুষ্ঠান এবং সমাধির অভ্যাস দ্বারা শিথিল করা হয়।

মনের যাওয়ার এবং আসার মার্গ অর্থাৎ বিষয় গ্রহণ কীভাবে হয়, সেটি সমাধি অবস্থায় উৎকৃষ্ট ভাবে জ্ঞান হয়।

উপরোক্ত সকল কার্য সম্পন্ন হলে যোগীর চিত্ত সত্ত্বগুণ প্রধান হয়ে যায়। এর দ্বারা অন্যের উপর তার প্রভাব পড়ে। যার ফলে সে যেমন চায় সেরকম তার অনুকরণকারী শিষ্যরা করে অথবা অন্যের শরীর সম্পর্কে জ্ঞান হয় যে এই ব্যক্তি কতটা সুস্থ ইত্যাদি; এটাই পরশরীরে প্রবেশ জানা উচিত।।৩৮।।

সূত্র - উদানজয়াজ্জলপঙ্ককণ্টকাদিষুসঙ্গ উৎক্রান্তিশ্চ।।৩৯।।

শব্দার্থ - (উদান-জয়াৎ) উদান প্রাণকে জিতে নিলে (জল-পঙ্ক-কণ্টক-আদিষু-অসঙ্গঃ-উৎক্রান্তিঃ-চ) জল, পঙ্ক, কণ্টক ইত্যাদি হতে যোগী অসঙ্গ হয় এবং উর্ধ্বগতির প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - উদান প্রাণকে জিতে নিলে জল, পঙ্ক, কণ্টক ইত্যাদি হতে যোগী অসঙ্গ হয়ে যান এবং উর্ধ্বগতি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে উদান প্রাণকে জিতে নিলে তার কি ফল প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

শরীরে স্থিত পাঁচটি প্রাণের স্থান নিম্নে উল্লেখ করা হল -

(১) **প্রাণ**- মূখ এবং নাসিকা হতে হৃদয় পর্যন্ত অবস্থিত থাকে। বায়ুকে শরীরে প্রবেশ করানো এর কার্য।

(২) **সমান**- হৃদয় হতে নাভি পর্যন্ত বিদ্যমান থাকে। গৃহীত অন্ন, জলকে সমান রূপে সর্বত্র বিতরণ করা এর কার্য।

(৩) **অপান**- নাভি হতে পাদতল পর্যন্ত বিদ্যমান থাকে। মল-মূত্র, গর্ভ ইত্যাদিকে নিচের দিকে নিয়ে যাওয়া এর কার্য।

(৪) **ব্যান**- সমস্ত শরীরে এটি ব্যাপ্ত থাকে। এটি জ্ঞান বাহক, গতি বাহক নাড়িকে গতি প্রদান করে এবং প্রাণের সাথে মিলিত হয়ে নাড়িতে কম্পন, প্রাণ এবং রক্তের সঞ্চারণ করে ইত্যাদি।

(৫) **উদান**- কণ্ঠ হতে মূর্ধা পর্যন্ত অবস্থিত থাকে। এটি উর্ধ্বে ক্রিয়া করে, এই উদান প্রাণকে জিতে নিলে যোগীর শরীর হাল্কা হওয়ায়; যোগী কাঁটা ইত্যাদিতে সবধান পূর্বক চললে, যোগী ওই কাঁটা ইত্যাদি হতে অসঙ্গ থাকেন এবং মৃত্যুর পর তাঁর উচ্চ গতি হয় অর্থাৎ উৎকৃষ্ট যোনিতে তাঁর জন্ম হয়।।৩৯।।

সূত্র - সমানজয়াজ্জ্বলনম্ ।।৪০।।

শব্দার্থ - (সমান-জয়াৎ) সমান প্রাণকে জিতে নিলে (জ্বলনম্) দীপ্তিমান্ হয়ে যায়।

সূত্রার্থ- সমান প্রাণকে জিতে নিলে যোগী দীপ্তিমান্ হয়ে যান।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সমান প্রাণকে জিতে নিলে যোগীর কি প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সমান প্রাণ হৃদয় হতে নাভি পর্যন্ত বিদ্যমান থাকে। এই সমান প্রাণকে জিতে নিলে অর্থাৎ সমান প্রাণ যার ব্যবস্থিত থাকে তার শরীর দীপ্তিমান্ হয়ে যায়।।৪০।।

সূত্র - শ্রোত্রাকাশয়োঃ সম্বন্ধসংযমাদিব্যং শ্রোত্রম্ ।। ৪১ ।।

শব্দার্থ - (শ্রোত্র-আকাশয়োঃ) শ্রোত্র এবং আকাশের (সম্বন্ধ-সংযমাৎ) সম্বন্ধে সংযম করলে (দিব্যং, শ্রোত্রম্) দিব্য শ্রোত্র প্রাপ্ত হয়।

সূত্রার্থ - শ্রোত্র এবং আকাশের সম্বন্ধে সংযম করলে দিব্য শ্রোত্র প্রাপ্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শ্রোত্র এবং আকাশের সম্বন্ধে সংযম করলে তার কি ফল প্রাপ্ত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সমস্ত শ্রোত্রেন্দ্রিয়ের আধার আকাশ এবং সকল শব্দের আধারও আকাশ। এই বিষয়ে এটা বলা হয়েছে যে একটি স্থানে স্থিত সকল শ্রবণকারী ব্যক্তিদের একটি দেশ যুক্ত একই প্রকারের শব্দের শ্রবণ হয়। এই জন্য শ্রোত্রেন্দ্রিয় আকাশের জ্ঞাপক। আকাশকে আবরণ রহিতও বলা হয়েছে এই জন্য আকাশের সর্বব্যাপকতা সিদ্ধ হয়। শব্দ গ্রহণ দ্বারা শ্রোত্রেন্দ্রিয়ের অনুমান করা হয়। তার কারণ হল বধির ব্যক্তি শব্দকে শুনতে পায় না কিন্তু অবধির ব্যক্তি শুনতে পায়। এই জন্য শ্রোত্রেন্দ্রিয়ের বিষয় হল শব্দ। ঘ্রাণেন্দ্রিয়ের সম্বন্ধ পৃথিবীর সাথে রয়েছে যেহেতু ঘ্রাণেন্দ্রিয় গন্ধকে গ্রহণ করায়। একই রকম ভাবে রসনা ইন্দ্রিয় ইত্যাদির ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত। অতএব শ্রোত্রেন্দ্রিয়ের সম্বন্ধ আকাশের সাথে রয়েছে। আর সে শব্দকে গ্রহণ করায়। এইভাবে শ্রোত্রেন্দ্রিয় এবং আকাশের সম্বন্ধে সংযম করলে যোগীর দিব্য শব্দ গ্রহণ করার সামর্থ্য বেড়ে যায়।। ৪১ ।।

সূত্র - কায়াকাশয়োঃ

সম্বন্ধসংযমাল্লঘু তুলসমাপত্তেঃ চাকাশগমনম্ ।। ৪২ ।।

শব্দার্থ - (কায়-আকাশয়োঃ) শরীর এবং আকাশের (সম্বন্ধ-সংযমাৎ) সম্বন্ধে সংযম করলে (লঘু-তুল-সমাপত্তেঃ-চ) এবং হাল্কা তুলো ইত্যাদি পদার্থে তদাকারতা হলে (আকাশ-গমনম্) আকাশে গমন হয়।

সূত্রার্থ - শরীর এবং আকাশের সম্বন্ধে সংযম করলে এবং হাল্কা তুলো ইত্যাদি পদার্থে সংযমের মাধ্যমে সেই সকল পদার্থের সাথে চিত্তের তদাকারতা হলে আকাশ গমনের সিদ্ধি প্রাপ্ত হয়।

যোগী যখন শরীর এবং আকাশের সম্বন্ধে সংযম করেন এবং হাল্কা তুলো ইত্যাদি পদার্থে সংযম করেন তখন তাঁর চিত্ত সত্ত্বগুণযুক্ত হয়ে একাগ্র হয়ে যায়। তার অত্যাধিক একাগ্রতার জন্য জলে মন দ্বারা বিচরণ করতে থাকে অর্থাৎ জলের জীবজন্তু ইত্যাদি প্রাণীকে একাগ্রভাবে মন দ্বারা দেখতে থাকেন। যেমন কেউ পা দ্বারা জলে বিহারণ করে। মন দ্বারা মাকড়সার জালের তন্তুতে সূক্ষ্মভাবে দৃষ্টিগোচর করতে করতে আকাশেও তাঁর সূক্ষ্ম দৃষ্টি হয়ে যায় অর্থাৎ যোগী ইচ্ছানুযায়ী

আকাশে মন দ্বারা ভ্রমণ করতে থাকেন এবং আকাশের বিষয়গুলিকে আহরণ করতে থাকেন। অনেকে সিদ্ধি সম্পর্কে কিছু ভ্রান্ত মান্যতাকে গ্রহণে স্থান দিয়েছেন। কিন্তু যোগীর প্রায়ঃ সকল সিদ্ধি মনের, এটা জানা উচিত। শরীর দ্বারা নয়। এটি পরবর্তী সূত্র (৩/৪৩) দ্বারা স্পষ্ট হয়ে যাবে। ১৪২।।

সূত্র - বহিরকল্লিতাবৃত্তিমহাবিদেহা ততঃ প্রকাশাবরণক্ষয়ঃ। ১৪৩।।

শব্দার্থ - (বহিঃ-অকল্লিতা-বৃত্তিঃ-মহাবিদেহা) বাহ্য পদার্থে অকল্লিতা বৃত্তিকে মহাবিদেহা বলা হয়। (ততঃ) তার দ্বারা (প্রকাশ-আবরণ-ক্ষয়ঃ) প্রকাশের আবরণ ক্ষীণ হয়।

সূত্রার্থ - শরীর হতে সম্বন্ধ মনের যে বাহ্য পদার্থ হতে বৃত্তি লাভ হয়, সেই অকল্লিতা বৃত্তিকে মহাবিদেহা বলা হয়। তার দ্বারা প্রকাশের আবরণ ক্ষীণ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে মহাবিদেহা বৃত্তির স্বরূপ এবং তার ফল সম্পর্কে আলোচনা করা হয়েছে।

শরীর হতে বাহ্যের কোনো পদার্থে মনের বৃত্তিকে ‘বিদেহা’ নামক ধারণা বলা হয়। সেই ধারণা যদি শরীরে স্থিত মনের বাহ্য পদার্থে ইন্দ্রিয়ের সাহায্যে বৃত্তি (ব্যাপার) হয় তাহলে তাকে ‘কল্লিতা’ বলা হয়। সেই ধারণা যদি শরীরে স্থিত মনের বাহ্য পদার্থে ইন্দ্রিয়কে ছেড়ে বৃত্তি (ব্যাপার) হয় তাহলে তাকে ‘অকল্লিতা’ বলা হয়। যোগী কল্লিতা দ্বারা অকল্লিতা নামক মহাবিদেহাকে সিদ্ধ করে। সেই মহাবিদেহার দ্বারা অন্যের শরীর সম্পর্কে জ্ঞান করতে সক্ষম হয়। সেই ধারণা দ্বারাই চিত্ত আবরণকারী রজস্-তমস্ মূলক ক্লেশ-কর্ম-বিপাক, সেগুলির বিনাশ হয়। ১৪৩।।

সূত্র - স্থূলস্বরূপসূক্ষ্মানুয়র্থবত্ত্বসংযমাদ্ ভূতজয়ঃ। ১৪৪।।

শব্দার্থ - (স্থূল-স্বরূপ-সূক্ষ্ম-অনুয়-অর্থবত্ত্বসংযমাদ্) স্থূল, স্বরূপ, সূক্ষ্ম, অনুয় এবং অর্থবত্ত্ব সংযম করলে (ভূত-জয়ঃ) ভূতজয়ী হয়।

সূত্রার্থ - স্থূল, স্বরূপ, সূক্ষ্ম, অনুয় এবং অর্থবত্ত্ব এই পাঁচ প্রকারের রূপে সংযম করলে যোগীকে ‘ভূতজয়’ নামক সিদ্ধি লাভ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে পঞ্চমহাভূতের রূপে সংযম করলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

পঞ্চমহাভূতের পাঁচটি রূপ -

(১) স্থূল- পার্থিব ইত্যাদি পদার্থে বিদ্যমান আকার-প্রকার ধর্ম এবং গন্ধ ইত্যাদি

গুণ বিশেষকে ‘স্থূল’ শব্দ দ্বারা বিশেষিত করা হয়। এটি ভূতের প্রথম রূপ।

(২) স্বরূপ- পৃথিবীর কঠোরতা, জলের স্নিগ্ধতা, অগ্নির উষ্ণতা, বায়ুর প্রণামী এবং আকাশের ব্যাপকতা; এগুলিকে ‘স্বরূপ’ শব্দের দ্বারা অভিহিত করা হয়েছে। এগুলি পার্থিব ইত্যাদি দ্রব্যের সামান্য ধর্ম এবং গন্ধ ইত্যাদিকে বিশেষ ধর্ম বলা হয়। এই শাস্ত্রে সামান্য এবং বিশেষের সমুদায়কে দ্রব্য মনে করা হয়েছে অর্থাৎ যে বস্তুতে সামান্য এবং বিশেষ ধর্ম বিদ্যমান থাকে তাকে ‘দ্রব্য’ বলা হয়। এটি ভূতের দ্বিতীয় রূপ।

(৩) সূক্ষ্ম- তন্মাত্রা, পাঁচ মহাভূতের কারণ। এই তন্মাত্রা হতে পার্থিব ইত্যাদি স্থূল দ্রব্যের উৎপত্তি হয়েছে। এটি ভূতের ‘সূক্ষ্ম’ রূপ। এটিই ভূতের তৃতীয় রূপ।

(৪) অনুয়- প্রকাশ, ক্রিয়া এবং স্থিতি স্বভাব যুক্ত, নিজ কার্যের স্বভাবে অনুগত; সত্ত্ব ইত্যাদি তিনটি গুণকে ‘অনুয়’ নামে অভিহিত করা হয়। এটি ভূতের চতুর্থ রূপ।

(৫) অর্থবত্ত্ব- ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজন সিদ্ধকারী হওয়াকে ‘অর্থবত্ত্ব’ বলা হয়। এটি ভূতের পঞ্চম রূপ।

এই পাঁচটি রূপে সংযম করলে যোগী ভূতজয়ী হয়ে যান অর্থাৎ ভৌতিক পদার্থ দ্বারা অনেক প্রয়োজনকে সিদ্ধ করতে সমর্থ হয়ে যান। ১৪৪।।

সূত্র - ততোঃনিমাদিপ্রাদুর্ভাবঃ কায়সম্পত্ত্বদ্বর্মানভিঘাতশ্চ ।।৪৫।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ওই ভূতজয় সিদ্ধি দ্বারা (অনিমাদি-প্রাদুর্ভাবঃ) অনিমা ইত্যাদি সিদ্ধি গুলির উৎপত্তি হয় (কায়-সম্পত্ত্বঃ) শরীরের সামর্থ্য বেড়ে যায় (তদ-ধর্ম-অনভিঘাতঃ-চ) এবং ভূতের ধর্ম বাধিত করে না।

সূত্রার্থ - উপরোক্ত ভূতজয় সিদ্ধি দ্বারা অনিমা ইত্যাদি সিদ্ধি গুলির উৎপত্তি হয়, শরীরের সামর্থ্য বেড়ে যায় এবং (এর ফলে) যোগীর কার্যে পৃথিবী ইত্যাদি পাঁচটি ভূতের ধর্ম একটি সীমা পর্যন্ত বাধিত করে না।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ভূতজয় সিদ্ধির ফলকে উল্লেখ করা হয়েছে।

উপরোক্ত ভূতজয় সিদ্ধি দ্বারা নিম্নে উল্লেখিত সিদ্ধি গুলির প্রাপ্তি হয়।

(ক) - (১) অনিমা- চিত্ত দ্বারা যোগী সূক্ষ্মাতিসূক্ষ্ম বস্তুকে গ্রহণ করতে সমর্থ হয়ে যান।

(২) মহিমা- চিত্ত দ্বারা যোগী বৃহৎ হতে বৃহত্তম বস্তুকে গ্রহণ করতে সমর্থ হয়ে যান।

(৩) লঘিমা- যোগী শরীর-মন ইত্যাদিকে হাল্কা করে নেন।

(৪) প্রাপ্তি- যোগী চিত্ত দ্বারা অতি দূরে স্থিত চন্দ্রমা ইত্যাদিকে মানসিকভাবে তাকে স্পর্শ করতে সমর্থ হয়ে যান। যেমন- অঙ্গুলি দ্বারা কোনো বস্তুকে স্পর্শ করা হয়, সেই রকম অনুভূতি ওই অবস্থায় হয়।

(৫) প্রাকাম্য- ইচ্ছার বিঘাত না হওয়া। যোগী চিত্তকে বশীভূত করে ইচ্ছানুসার তাঁর সকল কার্যকে পূর্ণ করতে সমর্থ হয়ে যান।

(৬) বশিত্ব- পৃথিবী এবং পার্থিব বস্তুকে যোগী নিজের বশীভূত করতে সমর্থ হয়ে যান।

(৭) ঈশিত্ব- যোগী পৃথিবী ইত্যাদি হতে তৈরি পদার্থকে নিয়ে নতুন পদার্থ উৎপন্ন করতে, তাকে বিনষ্ট করতে এবং তাকে নিজ অবস্থায় স্থিত রাখতে সক্ষম হয়ে যান।

(৮) যত্রকামাবসায়িত্ব- সত্য সংকল্প যুক্ত হওয়া। যোগীর জ্ঞান, বল এবং সামর্থ্য দ্বারা যেটিকে তিনি উৎপন্ন করতে চান সেটি উৎপন্ন হয় অথবা যেটিকে বিনষ্ট করতে চান সেটিকে বিনষ্ট করতে সমর্থ হয়ে যান। কিন্তু ঈশ্বরের সংকল্পের বিরুদ্ধে তিনি কিছু করতে পারেন না।

(খ) - শরীরের সামর্থ্য সম্পর্কে পরবর্তী সূত্রে আলোচনা করা হবে।

(গ) - অন্তিম ফল হল যোগীর কার্যে পৃথিবী ইত্যাদি পাঁচটি ভূতের ধর্ম বাধিত করে না অর্থাৎ পৃথিবী, জল, অগ্নি, বায়ু ইত্যাদির কঠোরতাধি ধর্ম যোগীর কার্যে একটি সীমা পর্যন্ত বাধিত করতে পারে না।।৪৫।।

সূত্র - রূপলাবণ্যবলবজ্রসংহননত্বানি কায়সম্পৎ ।।৪৬।।

শব্দার্থ - (রূপ-লাবণ্য-বল-বজ্র-সংহননত্বানি) রূপ, লাবণ্য, বল, বজ্র এবং শরীরের দৃঢ়তা (কায়-সম্পৎ) শরীরের সম্পত্তি।

সূত্রার্থ - রূপ, লাবণ্য, বল, বজ্র এবং শরীরের দৃঢ়তা; এগুলি হল শরীরের সম্পত্তি।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শরীরের সম্পত্তি কি, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

দর্শনীয়, কান্তিমান্, অতিবলবান্, বজ্রের মত সুদৃঢ় অঙ্গসন্নিবেশ যুক্ত হওয়াই শরীরের সম্পত্তি।।৪৬।।

**সূত্র - গ্রহণস্বরূপাস্মিতানুয়ার্থবক্তৃসংয়মাদ্
ইন্দ্রিয়জয়ঃ ।।৪৭।।**

শব্দার্থ - (গ্রহণ-স্বরূপ-অস্মিতা-অনুয়-অর্থবক্তৃ-সংয়মাদ্) ইন্দ্রিয়ের গ্রহণ,

স্বরূপ, অস্মিতা, অনুয় এবং অর্থবত্তে সংযম করলে (ইন্দ্রিয়-জয়ঃ) ইন্দ্রিয়জয়ী হয়।

সূত্রার্থ - ইন্দ্রিয়ের গ্রহণ, স্বরূপ, অস্মিতা, অনুয় এবং অর্থবত্ত এই পাঁচটি রূপে সংযম করলে ইন্দ্রিয়তে অধিকার প্রাপ্ত হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ইন্দ্রিয়ের পাঁচটি রূপে সংযম করলে কি ফল হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

ইন্দ্রিয়ের পাঁচটি রূপ -

(১) **গ্রহণ**- ঘট ইত্যাদি বিষয়কে ‘গ্রাহ্য’ বলা হয় এবং সেই ঘট ইত্যাদি বিষয়ে ইন্দ্রিয়ের ব্যাপারকে ‘গ্রহণ’ বলা হয়। এটি ইন্দ্রিয়ের প্রথম রূপ।

(২) **স্বরূপ**- সত্ত্বপ্রধান মহৎতত্ত্ব হতে সত্ত্বপ্রধান অহংকারের উৎপত্তি হয়েছে এবং অহংকার হতে সত্ত্বপ্রধান ইন্দ্রিয় গুলির উৎপত্তি হয়েছে। অতএব সত্ত্বগুণ বিশিষ্ট মহৎতত্ত্বের সামান্য ও বিশেষ ধর্ম হতে অপৃথক্ স্বরূপকে ইন্দ্রিয় বলা হয়। এটি ইন্দ্রিয়ের দ্বিতীয় রূপ।

(৩) **অস্মিতা**- ইন্দ্রিয়ের উপাদান কারণ হল অহংকার। এটি ইন্দ্রিয়ের তৃতীয় রূপ। (অহংকারকে অস্মিতাও বলা হয়)।

(৪) **অনুয়**- প্রকৃতির কার্য-কারণ পরম্পরা সকল বিকারে অনুগত থাকে। এই প্রকৃতিই ইন্দ্রিয়ের ‘অনুয় রূপ’। এটিকেই ইন্দ্রিয়ের চতুর্থ রূপ বলা হয়।

(৫) **অর্থবত্ত** জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গ সম্পাদন করার সামর্থ্য বিদ্যমান থাকা। এটি ইন্দ্রিয়ের পঞ্চম রূপ।

উপরোক্ত ইন্দ্রিয়ের পাঁচটি রূপে সংযম করলে যোগী ইন্দ্রিয়ের উপর বিজয় প্রাপ্ত করে নেন। ১৪৭।।

সূত্র - ততো মনোজবিত্বং বিকরণভাবঃ প্রধানজয়শ্চ। ১৪৮।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ওই ইন্দ্রিয়জয় সিদ্ধি দ্বারা (মনোজবিত্বম্) মনোজবিত্ব (বিকরণ-ভাবঃ) বিকরণভাব (প্রধান-জয়ঃ-চ) এবং প্রধানজয় সিদ্ধি লাভ হয়।

সূত্রার্থ - ওই ইন্দ্রিয়জয় সিদ্ধি দ্বারা মনোজবিত্ব, বিকরণভাব এবং প্রধানজয় সিদ্ধি লাভ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ইন্দ্রিয়জয় সিদ্ধির ফল সম্পর্কে উল্লেখ করা হয়েছে।

ইন্দ্রিয়জয় সিদ্ধির ফল তিন প্রকারের হয়, সেটি নিম্নরূপ -

(১) **মনোজবিত্ব**- শরীর মনের মতো গতিমান হওয়া। অর্থাৎ শরীর দ্বারা শীঘ্র

কার্য সম্পাদন করতে সক্ষম হয়ে যায়।

(২) বিকরণভাব- ইন্দ্রিয়তে বিষয়কে গ্রহণ করার বিশেষ সামর্থ্য উৎপন্ন হয়ে যায়।

(৩) প্রধানজয়- প্রকৃতি হতে উৎপন্ন বুদ্ধি, অংকার ইত্যাদি বস্তুকে বশীভূত করার সামর্থ্য উৎপন্ন হয়ে যায় অর্থাৎ সেগুলি দ্বারা মনোনীত কার্য সম্পাদন করতে সমর্থ হয়ে যায়। ১৪৮।।

সূত্র - সত্ত্বপুরুষান্যতাখ্যাতিমাত্রস্য সর্বভাবাধিষ্ঠাতৃত্বং সর্বজ্ঞাতৃত্বং চ। ১৪৯।।

শব্দার্থ - (সত্ত্বপুরুষ-অন্যতা-খ্যাতিমাত্রস্য) বুদ্ধি এবং পুরুষের ভিন্নতার জ্ঞান সম্পন্ন যোগীর (সর্ব-ভাব-অধিষ্ঠাতৃত্বম্) অনেক পদার্থের স্বামিত্ব (সর্ব-জ্ঞাতৃত্বম্ চ) এবং অনেক বস্তুর বিশেষ জ্ঞান প্রাপ্ত হয়।

সূত্রার্থ - বুদ্ধি এবং পুরুষের ভিন্নতার জ্ঞান সম্পন্ন যোগীর অনেক পদার্থের স্বামিত্ব এবং অনেক বস্তুর বিশেষ জ্ঞান প্রাপ্ত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বুদ্ধি এবং আত্মাকে পৃথক-পৃথক জানলে তার কি ফল হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

রজোগুণ এবং তমোগুণের মল হতে বুদ্ধি অত্যন্ত নির্মল হয়ে, উৎকৃষ্ট বৈরাগ্যের প্রাপ্তি হলে বুদ্ধি এবং পুরুষের পৃথকতার জ্ঞানে প্রতিষ্ঠিত হয়ে ‘সর্বভাবাধিষ্ঠাতৃত্ব’ এবং ‘সর্বজ্ঞাতৃত্ব’ এই দুটি সিদ্ধিকে লাভ করে।

সর্বভাবাধিষ্ঠাতৃত্ব- যোগী মন, বুদ্ধি, অহংকার, জল, পৃথিবী ইত্যাদিকে নিজের অধিকারে রেখে সেগুলিকে উচিৎ প্রয়োগ এবং প্রয়োজনকে সিদ্ধ করতে সক্ষম হয়ে যাওয়াকে ‘সর্বভাবাধিষ্ঠাতৃত্ব’ বলা হয়।

সর্বজ্ঞাতৃত্ব- প্রকৃতি হতে উৎপন্ন মন, ইন্দ্রিয় ইত্যাদি বস্তুকে এবং রূপ, রস, গন্ধ ইত্যাদি ভৌতিক বিষয়কে যথার্থ ভাবে জানতে সক্ষম হয়ে যাওয়াকে ‘সর্বজ্ঞাতৃত্ব’ বলা হয়। কিন্তু ঈশ্বরের মতো সে কখনো সর্বজ্ঞ হয় না। যোগীর এই জ্ঞানকে ‘বিবেকজ জ্ঞান’ বলা হয়। এটিকে ‘বিশোকা’ নামক সিদ্ধিও বলা হয়। যাকে প্রাপ্ত করে যোগী সর্বজ্ঞ, ক্ষীণ-ক্লেশ-বন্ধন যুক্ত হয়ে স্বতন্ত্র বিচরণ করেন। ১৪৯।।

সূত্র - তদ্বৈরাগ্যাদপি দোষবীজক্ষয়ে কৈবল্যম্। ১৫০।।

শব্দার্থ - (তদ্বৈরাগ্যাৎ) ওই ‘বিশোকা’ নামক সিদ্ধি হতে বৈরাগ্য হয়ে

গেলে (অপি) ও (দোষ-বীজ-ক্ষয়ে) দোষের বীজ নষ্ট হয়ে গেলে (কৈবল্যম্) মোক্ষের প্রাপ্তি হয়।

সূত্রার্থ - ওই 'বিশোক্য' নামক সিদ্ধি হতে বৈরাগ্য হয়ে গেলে এবং দোষের বীজ অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ নষ্ট হয়ে গেলে মোক্ষের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগীর মোক্ষ প্রাপ্তি কখন হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ, অশুভ কর্ম এবং সকাম কর্ম ক্ষীণ হয়ে গেলে যোগী এরকম অনুভব করেন যে এই বিবেকখ্যাতিও সত্ত্বগুণেরই ধর্ম এবং সত্ত্বগুণকে হেয় কোটিতে রাখা হয়েছে। অপরিণামী, শুদ্ধ পুরুষ অর্থাৎ জীবাত্মা সত্ত্ব ইত্যাদি গুণ হতে সর্বথা ভিন্ন। এইভাবে বিরক্ত হয়ে যোগীর অঙ্কুরিত হতে অসমর্থ ভাজা ধানের বীজের সমান যে ক্লেশের বীজ রয়েছে, সেগুলি মনের সাথে-সাথে প্রকৃতিতে বিলীন হয়ে যায়। সেগুলি প্রকৃতিতে বিলীন হয়ে গেলে জীবাত্মা তিন প্রকারের দুঃখকে পুনঃ কখনো ভোগ করে না। তখন মনে কর্ম, ক্লেশ এবং বিপাক রূপে অভিব্যক্ত হতে সমর্থ কিন্তু পুরুষের ভোগ এবং অপবর্গকে পূর্ণ করায় এই সকল সত্ত্ব ইত্যাদি গুণ যুক্ত পদার্থ প্রকৃতিতে লীন হয়ে গেলে জীবাত্মা সত্ত্ব ইত্যাদি গুণ হতে অত্যন্ত বিয়োগ অর্থাৎ মোক্ষের প্রাপ্তি হয়ে যায়। সেই অবস্থায় জীবাত্মা নিজ স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়ে যায় এবং পরমাত্মার আনন্দকে ভোগ করে।।৫০।।

সূত্র - স্থান্য উপনিমন্ত্রণে সঙ্গস্ময়াকরণং পুনরনিষ্টপ্রসঙ্গাৎ ।।৫১।।

শব্দার্থ - (স্থান্য-উপনিমন্ত্রণে) সমাজের উচ্চ স্থানকে প্রাপ্ত লৌকিক ব্যক্তিদের দ্বারা নিমন্ত্রিত করা হলে (সঙ্গ-স্ময়-অকরণম্) আসক্তি এবং অভিমান করা উচিৎ নয় (পুনঃ) পুনরায় (অনিষ্ট-প্রসঙ্গাৎ) অনিষ্ট হওয়ার সম্ভাবনা থাকে।

সূত্রার্থ - সমাজের উচ্চ স্থানকে প্রাপ্ত লৌকিক ব্যক্তি অর্থাৎ রাজা-মহারাজা, ধন, বল, ঐশ্বর্য সম্পন্ন ব্যক্তিদের দ্বারা নিমন্ত্রিত করা হলে যোগীর তাতে আসক্তি এবং অভিমান করা উচিৎ নয়। তার কারণ হল, এরকম করলে যোগ মার্গ হতে চ্যুত (বিচলিত) হওয়ার অবসর উপস্থিত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে যোগীর সম্মান এবং বিষয় ভোগের সাধন প্রাপ্ত হলে যোগীকে সে সব ভোগে আসক্ত হওয়া উচিৎ নয় এবং অভিমানও করা উচিৎ নয়, এর দ্বারা পুনঃ অনিষ্ট হওয়ার সম্ভাবনা থাকে।

যোগী চার প্রকারের হন -

(১) প্রাথমকল্পিক- যিনি যম-নিয়ম ইত্যাদি অষ্টাঙ্গের অনুষ্ঠান দ্বারা বিতর্ক সমাপ্তি পর্যন্ত পৌঁছেছেন। কিন্তু এটি তাঁর প্রারম্ভিক অবস্থা তিনি এখনো পর্যন্ত যোগের কোনো বিশেষ উপলব্ধি করেননি।

(২) মধুভূমিক- যিনি অসম্প্রজ্ঞাত সমাপ্তির উচ্চ অবস্থাকে প্রাপ্ত করে নিয়েছেন, সেই অবস্থাকে ‘ঋতান্তরা প্রজ্ঞা’ বলা হয়।

(৩) প্রজ্ঞাজ্যোতি- যিনি যোগের সাধনকে অভ্যাস করতে-করতে ভূতেন্দ্রিয়তে বিজয় প্রাপ্ত করে নিয়েছেন এবং যোগাভ্যাসীর সম্মুখে উপস্থিত বাধা গুলিকে পার করে নিয়েছেন।

(৪) অতিক্রান্তভাবনীয়- যিনি সমাপ্তির উচ্চ অবস্থায় পৌঁছে গেছেন। চিত্তকে প্রকৃতিতে লীন করাই যাঁর একটি মাত্র অবশিষ্ট প্রয়োজন। তাঁর সাত প্রকারের প্রজ্ঞা উৎপন্ন হয়। যাঁর বিষয়ে বলা হয়েছিল ২/২৭ সূত্রে।

এই চার প্রকারের যোগীদের মধ্যে ‘মধুভূমিক’ যোগীর কল্যাণের ভাবনায় সূত্রকার কিছু চেতাবনি দিয়েছেন। সেই সকল যোগীদের বিশেষতাকে দেখে লৌকিক সাধন হতে সম্পন্ন ব্যক্তি তাঁদেরকে অনেক বস্তু দেওয়ার প্রলোভন দেন। যেমন- আপনি শারীরিক বল, বিদ্যা, ধর্ম দ্বারা স্বয়ংকে উচ্চ অবস্থায় পৌঁছে দিয়েছেন। এই জন্য এই সকল সুখ সাধন গুলিকে আপনি ইচ্ছানুসার ভোগ করুন। এখানে কামনা করার যোগ্য সুন্দরী কন্যা বিদ্যমান রয়েছে। জরা-মৃত্যুকে দূর করার রসায়ন বিদ্যমান রয়েছে। আকাশ ভ্রমণকারী বিমান রয়েছে। সুন্দর রমণীয় উদ্যান রয়েছে। এই সকল উদ্যানে আপনি স্বতন্ত্র পূর্বক বিচরণ করুন। এই ধরনের নিমন্ত্রণ আসলে যোগীকে সঙ্গ দোষের ভাবনা করা উচিত যে- “ভীষণ সংসার রূপী আগুনে জ্বলতে-জ্বলতে, জন্ম-মরণের অন্ধকারে পড়ে আমি ক্লেশান্ধকারকে বিনষ্টকারী যোগপ্রদীপকে কোনোমতে প্রাপ্ত করেছি। তুমি উৎপন্নকারী এই সকল বিষয়বায়ু তার বিরোধী। যোগপ্রদীপকে প্রাপ্ত করে এই মৃগ তুমি রূপী বিষয় হতে বাঞ্ছিত হয়ে পুনঃ কিভাবে নিজেকে প্রজ্বলিত সংসার আগুনের জ্বালানি বানাবো?” “হে নিম্নজনের দ্বারা প্রার্থনীয় স্বপ্ন সদৃশ্য বিষয়! এই সকল সাধন গুলি আমার থেকে দূরেই থাকুক, এগুলির দ্বারা আপনারই কল্যাণ হোক, এগুলি আমার কোনোও আবশ্যিকতা নেই।” এইরকম স্থির বুদ্ধি যুক্ত হয়ে সমাপ্তির অভ্যাস করা উচিত। এই সকল প্রলোভনে যদি যোগী পড়ে যায় তাহলে তার যোগ মার্গ হতে চ্যুত হয়ে পুনঃ ভোগের দিকে গতি হওয়া কোনও আশ্চর্য নয়।

আবার অভিমানও করা উচিত নয়। অনেক সময় এরকম হয় যে উচ্চ স্থানে অবস্থিত ব্যক্তিদের দ্বারা নিমন্ত্রিত হলে নিজের মধ্যে এধরনের ভাব উৎপন্ন হয় যে-

“আমি বড়দেরও নিমন্ত্রণের পাত্র হয়ে গেছি।” যদি এই ধরনের অভিমান উৎপন্ন হয়, তাহলে সে গর্বে নিজেকে মহান্ মনে করার কারণে যোগী; মৃত্যু আমাদেরকে সতত চুলকে টানার মতো টেনে রেখেছে, এটি ভুলে গিয়ে সমাধিকে সম্পাদিত করে না। সেই অবস্থায় ছিদের প্রতীক্ষাকারী প্রমাদ প্রতিদিন যাকে প্রযত্ন দ্বারা দূর করার যোগ্য সেটি অবকাশ প্রাপ্ত করে ক্লেশকে উৎপন্ন করে দেয়। এর দ্বারা পুনঃ যোগীর অনিষ্টের প্রাপ্তি হয় অর্থাৎ এই ধরনের অভিমান করলেও যোগ মার্গ হতে চ্যুত হওয়ার প্রসঙ্গ উপস্থিত হয়।।৫১।।

সূত্র - ক্ষণতৎক্রময়োঃ সংয়মাদ্বিবেকজং জ্ঞানম্।।৫২।।

শব্দার্থ - (ক্ষণ-তৎ-ক্রময়োঃ) ক্ষণ এবং তার ক্রমে (সংয়মাৎ) সংযম করলে (বিবেকজম্-জ্ঞানম্) বিবেকজ জ্ঞান উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - ক্ষণ এবং তার ক্রমে সংযম করলে বিবেকজ জ্ঞান উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ক্ষণ এবং তার ক্রমে সংযম করলে কি ফল হয়, সে সম্পর্কে বর্ণনা করা হয়েছে।

ক্ষণ- যেমন মাটির ঢিলকে বিভাগ করতে-করতে অন্তিম অবস্থা এরকম আসে যখন তার কোনও বিভাগ করা আর সম্ভব নয় তাকে ‘পরমাণু’ বলা হয়। সেই রকম সময়কে বিভাগ করতে-করতে তার সব থেকে ছোট ভাগকে ‘ক্ষণ’ বলা হয়। অথবা যত সময়ে একটি পরমাণু পূর্বদেশকে ত্যাগ করে উত্তর দেশকে প্রাপ্ত হতে যে সময় লাগে সেই সময়কে ‘ক্ষণ’ বলা হয়।

ক্রম- পূর্ব ক্ষণের সাথে উত্তর ক্ষণের যে ব্যবধান রহিত সম্বন্ধ রয়েছে, তাকে ‘ক্রম’ বলা হয়।

এই ক্ষণকে এবং ক্ষণের ক্রমকে বস্তু রূপে একত্র করা সম্ভব নয় এইজন্যে মুহূর্ত, অহোরাত্র ইত্যাদি বুদ্ধি দ্বারা নির্মিত এবং গৃহীত। সামান্য ব্যক্তি এগুলিকে বস্তুর মতো অনুভব করে। কিন্তু ক্ষণ বস্তুর আওতায় আসে। যদি এই ক্ষণকেও মুহূর্ত ইত্যাদির মত কাল্পনিক মনে করা হয় তাহলে ক্রমের আশ্রয় কেউ থাকবে না। এই ক্ষণকে কালবিদেরা ‘কাল’ নামে অভিহিত করেছেন। দুটি ক্ষণ একসাথে উপস্থিত হয় না। এই ক্ষণ দ্বারাই সম্পূর্ণ জগৎ পরিবর্তনের অনুভব করে। সকল পদার্থ বর্তমান ক্ষণের উপরেই আকৃষ্ট থাকে। আমাদের শরীর ইত্যাদি সকল পদার্থ এই ক্ষণ দ্বারাই বিনষ্টের দিকে অগ্রসর হচ্ছে।

এই ক্ষণ এবং তার ক্রমে সংযম করলে বিবেকজ জ্ঞান উৎপন্ন হয়। এই বিবেকজ জ্ঞানকে এই পাদে (৩/৪৯ এবং ৫৪) সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে।।৫২।।

সূত্র - জাতিলক্ষণদেশৈরন্যতানবচ্ছেদাতুল্যয়োস্ততঃ প্রতিপত্তিঃ ।।৫৩।।

শব্দার্থ - (জাতি-লক্ষণ-দেশৈঃ) জাতি, লক্ষণ এবং দেশ দ্বারা (অন্যতা-অনবচ্ছেদাৎ) ভিন্নতার জ্ঞান না হলে (তুল্যয়োঃ) সমান প্রতীতি যুক্ত দুটি বস্তুর (ততঃ) ওই বিবেকজ জ্ঞান দ্বারা (প্রতিপত্তিঃ) ভিন্নতার নিশ্চয় করা হয়।

সূত্রার্থ - জাতি, লক্ষণ এবং দেশ দ্বারা সমান প্রতীতি যুক্ত দুটি বস্তুর ভিন্নতার জ্ঞান না হলে, সেই বিবেকজ জ্ঞান দ্বারা ওই দুটি বস্তুর ভিন্নতার নিশ্চয় করা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেকজ জ্ঞানের ফলকে উল্লেখ করা হয়েছে।

জাতি, লক্ষণ এবং দেশ দ্বারা সমান প্রতীতি যুক্ত দুটি বস্তুর ভিন্নতার জ্ঞান না হলে, সেই বিবেকজ জ্ঞান দ্বারা কীভাবে দুটি বস্তুর ভিন্নতার নিশ্চয় করা হয়, সেটি নিচে বর্ণনা করা হল-

(১) **জাতি**- একটি স্থানে বিদ্যমান গরু এবং মহিষকে জাতি দ্বারা তাদের ভিন্নতার জ্ঞান করা হয়।

(২) **লক্ষণ**- একই জাতির দুটি গরুকে তাদের রং ইত্যাদি লক্ষণকে দেখে তাদের ভিন্নতার জ্ঞান করা হয়।

(৩) **দেশ**- যেমন দুটি আমলকীর জাতি এবং লক্ষণ সমান হলেও তাদেরকে দেশ দ্বারা ভিন্নতা করা হয় অর্থাৎ এটি পূর্ব স্থানে অবস্থিত রয়েছে, এটি দক্ষিণ স্থানে অবস্থিত রয়েছে। এইভাবে তাদের মধ্যে পৃথকতার জ্ঞান করা হয়। এই অবস্থায় যদি দুটি আমলকীকে কিছু সময়ের জন্য দৃষ্টি হতে অগোচর করে দিয়ে তাদের পূর্বদেশ ও দক্ষিণ দেশ আলাদা-আলাদা করে দেওয়া হয়, তখন তাদের ভিন্নতার জ্ঞান করা সাধারণ জনের সাধ্য নয়। কিন্তু বিবেকজ জ্ঞান যুক্ত যোগী সেই দুটিকে পৃথক-পৃথক জানতে পারেন যে, এটি প্রথমে কোন্ দেশে অবস্থিত ছিল এবং অন্যটি কোন্ দেশে অবস্থিত ছিল। তার কারণ হল দুটি আমলকীর মধ্যে ক্ষণের পার্থক্য রয়েছে। যেহেতু দুটি আমলকী একই ক্ষণে উৎপন্ন হয়নি অথবা দুটি আমলকীকে একই ক্ষণে নিজ-নিজ স্থানে রাখা হয়নি। তাদের উৎপন্ন হওয়ার এবং রাখার ক্ষণ নিশ্চয়ই আলাদা-আলাদা হয়। সেই ক্ষণকে বিবেকজ জ্ঞান যুক্ত যোগীই জানতে পারেন।।৫৩।।

সূত্র - তারকং সর্ববিষয়ং সর্বথা বিষয়মক্রমং চেতি বিবেকজং জ্ঞানম্ ।।৫৪।।

শব্দার্থ - (তারকম্) নিজ প্রতিভা দ্বারা উৎপন্ন জ্ঞান (সর্ব-বিষয়ম্) অনেক

পদার্থের বিষয়কারী (সর্বথা বিষয়ম্) সব প্রকারের পদার্থের বিষয়কারী (অক্রমম্) ক্রম রহিত (চ) এবং (ইতি) এই রকম (বিবেকজং জ্ঞানম্) বিবেকজ জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - নিজ প্রতিভা দ্বারা উৎপন্ন হওয়া জ্ঞান; অনেক পদার্থকে জানার সামর্থ্য যুক্ত হওয়া, অতীত, ভবিষ্যৎ এবং বর্তমান সব প্রকারের পদার্থকে জানার সামর্থ্য যুক্ত হওয়া এবং ক্রম রহিত অর্থাৎ এক বুদ্ধি দ্বারা সম্পূর্ণ পদার্থকে জানার সামর্থ্য যুক্ত হওয়াকে বিবেকজ জ্ঞান বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেকজ জ্ঞানের লক্ষণকে উল্লেখ করা হয়েছে।

বিবেকজ জ্ঞানের লক্ষণকে নিম্নে বর্ণনা করা হল-

(১) **তারক**- কোনো উপদেশ ইত্যাদি দ্বারা অগৃহীত কিন্তু নিজের প্রতিভা দ্বারা উৎপন্ন জ্ঞানকে 'তারক' বলা হয়। সমস্ত দুঃখ এবং বন্ধন হতে পার হয়ে যাওয়াকেও 'তারক' বলা হয়। বিবেকজ জ্ঞান যুক্ত যোগী সমস্ত বন্ধন এবং দুঃখ হতে পৃথক হয়ে যান।

(২) **সর্ববিষয়**- সকল বিষয়কে জানতে সমর্থ হওয়া অর্থাৎ সংসারে এরকম কোনও বিষয় নেই যেটিকে যোগী জানতে চাইলে তিনি জানতে পারেন না।

(৩) **সর্বথাবিষয়**- পদার্থের অতীত, অনাগত এবং বর্তমানকে উৎকৃষ্ট রূপে জানতে সমর্থ হয়।

(৪) **অক্রম**- বস্তুকে এক বুদ্ধিতে শীঘ্রতা পূর্বক জানতে সমর্থ হয়। শীঘ্রতার ফলে জ্ঞান হওয়ার সময়ে ক্রমের অনুভূতি হয় না। এগুলি হল বিবেকজ জ্ঞানের লক্ষণ।।৫৪।।

সূত্র - সত্ত্বপুরুষয়োঃ শুদ্ধিসাম্যে কৈবল্যমিতি।।৫৫।।

শব্দার্থ - (সত্ত্বপুরুষয়োঃ) বুদ্ধি এবং পুরুষের (শুদ্ধি-সাম্যে) শুদ্ধি সমান হয়ে গেলে (কৈবল্যম্) মোক্ষের প্রাপ্তি হয় (ইতি) এটি তৃতীয় পাদের সমাপ্তির সূচক।

সূত্রার্থ - বুদ্ধি এবং পুরুষ এই দুটির শুদ্ধি সমান ভাবে হয়ে গেলে মোক্ষের প্রাপ্তি হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগীর মোক্ষ কখন হয়, সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

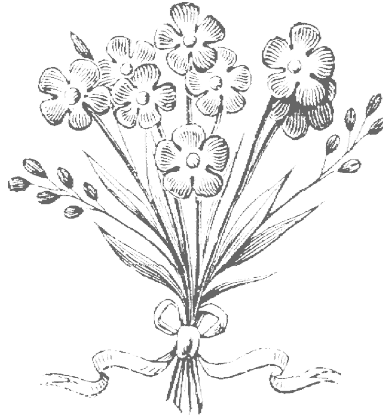
রজোগুণ এবং তমোগুণের মল হতে রহিত সত্ত্বগুণ প্রধান বুদ্ধি, পুরুষের ভেদক জ্ঞানমাত্রে প্রতিষ্ঠিত অধিকার যুক্ত হওয়া এবং ক্লেশের দন্ধবীজ ভাব যুক্ত হওয়া এগুলিকে বুদ্ধির শুদ্ধি বলা হয়।

জীবাশ্মায় অবস্থিত ভোগের অভাব হওয়াকে পুরুষের শুদ্ধি বলা হয়।

এই দুই ধরনের শুদ্ধি হয়ে গেলে পুরুষের মোক্ষ হয়ে যায়। তার কাছে কোনোও ঐশ্বর্য অথবা বিভূতি অথবা সিদ্ধি থাকুক অথবা না থাকুক, বিবেকজ্ঞানযুক্ত হোক অথবা না হোক। সেগুলির কোনোও আবশ্যিকতা থাকে না ক্লেশ দখলীজ হয়ে গেলেই সে মোক্ষের অধিকারী হয়ে যায়।

বস্তুত জ্ঞান দ্বারা অজ্ঞানের নিবৃত্তি হয়, অজ্ঞানের নিবৃত্তি হয়ে গেলে অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ নষ্ট হয়ে যায়, ক্লেশ নষ্ট হয়ে গেলে কর্মের ফল নষ্ট হয়ে যায়। এই অবস্থায় তাঁর চিত্ত ভোগ এবং অপবর্গ রূপ কার্যকে সম্পাদন করে চরিতাধিকার যুক্ত হয়ে যায়। তখন দৃশ্য রূপে এই প্রকৃতি তাঁর সম্মুখে উপস্থিত হয় না। এই অবস্থায় পুরুষের ‘কৈবল্য’ হয়ে যায়। তখন পুরুষকে কেবলস্বরূপ যুক্ত, জ্যোতিমান্, নির্মল, কেবলী বলা হয়।।৫৫।।

।। ইতি তৃতীয় বিভূতিপাদ ।।



প্রশ্ন পত্র

(ক) সঠিক উত্তরটি বেছে নিন।

- (১) কোনো একটি বিষয়ে মনকে বেঁধে রাখাকে বলা হয় - (ক) প্রত্যাহার (খ) ধারণা (গ) ধ্যান (ঘ) সমাধি।
- (২) জ্ঞেয় বিষয়ক জ্ঞানের এক সমান স্থির অবস্থা থাকাকে বলা হয় - (ক) প্রত্যাহার (খ) ধারণা (গ) ধ্যান (ঘ) সমাধি।
- (৩) যে অবস্থায় কেবল বস্তুর স্বরূপ প্রকাশিত হয় এবং নিজ স্বরূপ হতে শূন্যের মতো থাকে সেই অবস্থাকে বলা হয় - (ক) প্রত্যাহার (খ) ধারণা (গ) ধ্যান (ঘ) সমাধি।
- (৪) ধারণা, ধ্যান এবং সমাধির এক বিষয়ক হয়ে যাওয়াকে বলা হয় - (ক) যম (খ) নিয়ম (গ) সংযম (ঘ) এক বিষয়ম্।
- (৫) সম্প্রজ্ঞাত সমাধির অন্তরঙ্গ সাধন হল - (ক) আসন (খ) প্রাণায়াম (গ) প্রত্যাহার (ঘ) ধারণা।
- (৬) সম্প্রজ্ঞাত সমাধির বহিরঙ্গন সাধন হল - (ক) ধ্যান (খ) সমাধি (গ) প্রত্যাহার (ঘ) ধারণা।
- (৭) অসম্প্রজ্ঞাত সমাধির বহিরঙ্গন সাধন হল - (ক) ধ্যান (খ) সমাধি (গ) ধারণা (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (৮) অতীত, ভবিষ্যৎ এবং বর্তমান ধর্মে যে একটি বস্তু নিরন্তর নিজ অবস্থায় বিদ্যমান থাকে তাকে বলা হয় - (ক) ধর্ম (খ) ধর্মী (গ) গুণ (ঘ) অবয়ব।
- (৯) যখন কোনো বস্তুর বিদ্যমান ধর্ম সরে গিয়ে নতুন ধর্ম উৎপন্ন হয় তখন তাকে বলা হয় - (ক) ধর্ম পরিণাম (খ) লক্ষণ পরিণাম (গ) অবস্থা পরিণাম (ঘ) সমাধি পরিণাম।
- (১০) যখন কোনো বস্তুর পরিণামকে কালের সাথে যুক্ত করে দেখা হয় তখন তাকে বলা হয় - (ক) ধর্ম পরিণাম (খ) লক্ষণ পরিণাম (গ) অবস্থা পরিণাম (ঘ) সমাধি পরিণাম।
- (১১) সর্বার্থতা এবং একাগ্রতার ক্রমশ ক্ষয় এবং উদয় হওয়াকে বলা হয় - (ক) সমাধি পরিণাম (খ) একাগ্রতা পরিণাম (গ) নিরোধ পরিণাম (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১২) ব্যুত্থান এবং নিরোধ সংস্কারের ক্রমশ জাগ্রত হওয়া এবং প্রকট হওয়াকে

বলা হয় - (ক) সমাধি পরিণাম (খ) একাগ্রতা পরিণাম (গ) নিরোধ পরিণাম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৩) একটি বস্তু বিষয়ক সমান জ্ঞানের শান্ত হওয়া এবং প্রকট হওয়া রূপী ক্রম চলতে থাকাকে বলা হয় - (ক) সমাধি পরিণাম (খ) একাগ্রতা পরিণাম (গ) নিরোধ পরিণাম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৪) ইন্দ্রিয়ের পাঁচটি রূপের মধ্যে একটি হল - (ক) অস্মিতা (খ) স্থূল (গ) সূক্ষ্ম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৫) ভূতের পাঁচটি রূপের মধ্যে একটি হল - (ক) গ্রহণ (খ) স্বরূপ (গ) অস্মিতা (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৬) মোক্ষ প্রাপ্তি হয় - (ক) সকল ক্লেশ দণ্ডবীজ হয়ে গেলে (খ) অষ্টাঙ্গ যোগের পালন করলে (গ) সমাধিকে প্রাপ্ত করলে (ঘ) সিদ্ধি লাভ করলে।

(১৭) সময়কে বিভাগ করতে-করতে অন্তিম বিভাজিত কালকে বলা হয় - (ক) পরমাণু (খ) ক্ষণ (গ) ক্রম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৮) মাটির ঢিলকে বিভাগ করতে-করতে অন্তিম বিভাজিত ঢিলের অংশকে বলা হয় - (ক) পরমাণু (খ) ক্ষণ (গ) ক্রম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(১৯) ক্ষণের প্রবাহকে বলা হয় - (ক) পরমাণু (খ) ক্ষণ (গ) ক্রম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(২০) একটি পরমাণু পাল্টা খেতে যত সময় লাগে তাকে বলা হয় - (ক) পরমাণু (খ) ক্ষণ (গ) ক্রম (ঘ) তিনটি ঠিক।

(খ) নিম্ন লিখিত প্রশ্ন গুলির সংক্ষেপে উত্তর লিখুন।

(১) নিরোধ পরিণাম কাকে বলা হয় ?

(২) সমাধি পরিণাম কাকে বলা হয় ?

(৩) একাগ্রতা পরিণাম কাকে বলা হয় ?

(৪) ধারণা কাকে বলা হয় ?

(৫) ধ্যানের পরিভাষা কী ?

(৬) সমাধির পরিভাষা কী ?

(৭) ক্ষণ কাকে বলা হয় ?

(৮) প্রাণ এবং অপান বায়ুর স্থান উল্লেখ করুন ?

(৯) ব্যান এবং সমান বায়ুর স্থান উল্লেখ করুন ?

- (১০) শরীরের সম্পত্তি গুলি কী কী ?
- (১১) কোন্ অবস্থার পর যোগীর মোক্ষ লাভ হয় ?
- (১২) নাভি চক্রে সংযম করলে কার জ্ঞান হয় ?
- (১৩) চন্দ্রমায় সংযম করলে কার জ্ঞান হয় ?
- (১৪) ধ্রুবতায় সংযম করলে কার জ্ঞান হয় ?
- (১৫) সূর্যে সংযম করলে কার জ্ঞান হয় ?
- (১৬) সোপক্রমম্ এবং নিরুপক্রমম্ কর্মের অর্থ কী ?
- (১৭) মৃত্যুর জ্ঞাপক দুটি লক্ষণ উল্লেখ করুন ?
- (১৮) চার প্রকারের যোগীর নাম উল্লেখ করুন ?
- (১৯) ভূতের দুটি রূপকে অর্থ সহিত উল্লেখ করুন ?
- (২০) ইন্দ্রিয়ের দুটি রূপকে অর্থ সহিত বর্ণনা করুন ?

(গ) সূত্রার্থ লিখুন।

- (১) দেশবন্ধুশ্চিত্তস্য ধারণা।
- (২) তত্র প্রত্যয়েকতানতা ধ্যানম্।
- (৩) তদেবার্থমাত্রনির্ভাসং স্বরূপশূণ্যমিব সমাপ্তিঃ।
- (৪) ত্রয়মন্তরঙ্গং পূর্বেভ্যঃ।
- (৫) তদপি বহিরঙ্গং নির্বীজস্য।
- (৬) ব্যুৎখাননিরোধসংস্কারয়োরভিভবপ্রাদুর্ভাবৌ নিরোধক্ষণচিত্তানুয়ো নিরোধপরিণামঃ।
- (৭) সর্বার্থতৈকাগ্রতয়োঃ ক্ষয়োদয়ৌ চিত্তস্য সমাপ্তিপরিণামঃ।
- (৮) ততঃ পুনঃ শান্তোদিতৌ তুল্যপ্রত্যয়ৌ চিত্তসৈকাগ্রতা পরিণামঃ।
- (৯) ক্রমান্যত্বং পরিণামান্যত্বে হেতুঃ।
- (১০) সোপক্রমং নিরুপক্রমং চ কর্ম তৎসংযমাদপরান্তজ্ঞানমরিষ্টেভ্যো বা।
- (১১) মৈত্র্যাदिষু বলানি।
- (১২) চন্দ্রে তারাবৃহজ্ঞানম্।
- (১৩) সত্ত্বপুরুষয়োরত্যন্তাসংকীর্ণয়োঃ প্রত্যয়াবিশেষো ভোগঃ পরার্থত্বাৎ স্বার্থসংযমাৎ পুরুষজ্ঞানম্।
- (১৪) তে সমাধাবুপসর্গা ব্যুৎখানে সিদ্ধয়ঃ।

(১৫) রূপলাবণ্যবলবজ্রসংহননত্বানি কায়সম্পৎ ।

(১৬) স্থান্যুপনিমন্ত্রণে সঙ্গস্ময়াকরণং পুনরনিষ্টপ্রসঙ্গাৎ ।

(১৭) সত্ত্বপুরুষয়োঃ শুদ্ধিসাম্যে কৈবল্যমিতি ।

(ঘ) সমাধি পাদের যে কোনোও পাঁচটি সূত্র লিখুন ।

(ঙ) নিম্নলিখিত প্রশ্ন গুলির ব্যাসভাষ্যানুসার ব্যাখ্যা করুন ।

- (১) প্রাথমিক অবস্থা যুক্ত যোগীদের কীভাবে নিমন্ত্রণ আসে এবং সেগুলি হতে কীভাবে বিস্তার পাওয়া যায়, তাকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
- (২) চিত্তের তিনটি পরিণামকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
- (৩) ধর্ম, লক্ষণ এবং অবস্থা পরিণামকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
- (৪) ইন্দ্রিয়ের পাঁচটি রূপকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
- (৫) ভূতের পাঁচটি রূপকে বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
- (৬) পুরুষের কৈবল্য কোন অবস্থার পর হয়; সেগুলি ক্রমশ বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।

।। সমাপ্ত ।।



চতুর্থ কৈবল্যপাদ

সূত্র - জন্মৌষধিমন্ত্রতপঃসমাধিজাঃ সিদ্ধয়ঃ । ১১ ।

শব্দার্থ - (জন্ম-ঔষধি-মন্ত্র-তপঃ-সমাধিজাঃ) জন্ম, ঔষধি, মন্ত্র, তপ এবং সমাধি দ্বারা (সিদ্ধয়ঃ) সিদ্ধি লাভ হয়।

সূত্রার্থ - জন্ম, ঔষধি, মন্ত্র, তপ এবং সমাধি দ্বারা সিদ্ধি লাভ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সিদ্ধি লাভ কত ভাবে হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

(১) জন্মজা সিদ্ধি- যাহা জন্ম হতে প্রাপ্ত হয়, তাকে ‘জন্মজা সিদ্ধি’ বলা হয়। এই সিদ্ধিকে প্রাপ্ত করার জন্য এই জন্মে বিশেষ প্রযত্ন করা হয় না কিন্তু জন্ম থেকেই সিদ্ধি প্রাপ্ত থাকে। পূর্বজন্মে কৃত শুভ কর্ম, যোগের স্বরূপের বর্ণনাকারী বেদ বা বেদানুকূল শাস্ত্রের অধ্যয়ন-অধ্যাপন, যম-নিয়ম ইত্যাদি আট অঙ্গের অনুষ্ঠান, বিবেক, বৈরাগ্য, সৎপুরুষের সঙ্গ এই সকল আচরণ দ্বারা সংস্কার উৎপন্ন হয়। সেই সংস্কারের ফলে অল্প পরিশ্রম দ্বারাই সিদ্ধিলাভের কারণ হয়।

(২) ঔষধিজা সিদ্ধি- বিশেষ ঔষধির সেবন দ্বারা, রসায়ন ইত্যাদির প্রয়োগ দ্বারা তথা শুদ্ধ সাত্ত্বিক ভোজন ইত্যাদির দ্বারা শরীর, ইন্দ্রিয় স্বাস্থ্য, বলবান্ হয়ে যায়। একে আয়ুর্বেদে কায়াকল্প বলা হয়েছে। ঔষধ সেবন দ্বারা এই সিদ্ধি উৎপন্ন হয়।

(৩) মন্ত্রজা সিদ্ধি- যেসকল চিন্তনের মাধ্যমে সূক্ষ্ম বিদ্যার গবেষণা করা হয় তাকে ‘মন্ত্র’ বলা হয় এবং বেদের শব্দ সমুদায়কেও ‘মন্ত্র’ বলা হয়। অতএব চিন্তনের মাধ্যমে অথবা বেদ মন্ত্রের অর্থ সহিত উচ্চারণের ফলে মন, ইন্দ্রিয় বশীভূত হয়, ঈশ্বর সাক্ষাৎকার ইত্যাদি হয়, এগুলিকে ‘মন্ত্রজা’ সিদ্ধি বলা হয়।

(৪) তপোজা সিদ্ধি- সত্য বিদ্যার পঠন-পাঠন করলে, যম-নিয়মের পালন করলে, ব্যক্তির শরীর স্বাস্থ্য, বলবান্, দীর্ঘায়ু হয়, বুদ্ধি পবিত্র হয় ইত্যাদি। এগুলিকে ‘তপোজা’ সিদ্ধি বলা হয়।

(৫) সমাধিজা সিদ্ধি- সমাধি হতে উৎপন্ন সিদ্ধি। যেগুলি তৃতীয় পাদে বর্ণনা করা হয়েছে, সেখান থেকেই জেনে নেওয়া উচিত। ১১ ।

অবতরণিকা - নিম্ন সূত্রে শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের পরিবর্তনের কারণ সম্পর্কে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - জাত্যন্তরপরিণামঃ প্রকৃত্যাপূরাৎ ।।২।।

শব্দার্থ - (জাতি-অন্তর-পরিণামঃ) শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের অবস্থান্তর পরিণাম (প্রকৃতি-আপূরাৎ) উপাদান কারণের প্রবিষ্ট হওয়ায় ঘটে।

সূত্রার্থ - শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের অবস্থান্তর পরিণাম, শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের উপাদান কারণ শরীর এবং ইন্দ্রিয়তে প্রবিষ্ট হওয়ায় ঘটে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের পরিবর্তন হওয়ার কারণ কী? সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের উপাদান কারণ হল পৃথিবী ইত্যাদি পাঁচটি মহাভূত। শরীরের তিনটি দোষ রয়েছে- বাত, পিত্ত এবং কফ। শরীরে সাতটি ধাতু রয়েছে- রস, রক্ত, মাংস, মেদ, অস্থি, মজ্জা এবং বীৰ্য। আরও একটি ধাতুর কল্পনা করা হয় যাকে 'ওজ' বলা হয়। এগুলিতে দোষ উৎপন্ন হলে ধর্মাচরণ, যোগাভ্যাস, ঔষধ সেবন, ব্রহ্মচর্য পালন ইত্যাদির দ্বারা দূর করা হয়। এর ফলে শরীরে উত্তম পদার্থের সমাবেশ হয়, যার ফলে শরীরের অত্যধিক পরিবর্তন হয়ে যায়। ইন্দ্রিয়ের গোলকেও পরিবর্তন দেখা যায়। যেমন- স্পষ্ট দেখা-শুনা ইত্যাদির সামর্থ্য বেড়ে যায়।।২।।

সূত্র - নিমিত্তমপ্রয়োজকং প্রকৃतीনাং বরণভেদস্তু ততঃ ক্ষেত্রিকবৎ ।।৩।।

শব্দার্থ - (নিমিত্তম) সাধন (অ-প্রয়োজকম) প্রেরক হয় না (প্রকৃतीনাং) উপাদান কারণের (বরণ-ভেদঃ) বাধক কারণের নাশক হয় (ততঃ) ওই সাধন দ্বারা (ক্ষেত্রিকবৎ) কৃষকের মত।

সূত্রার্থ - ধর্ম ইত্যাদি সাধন শরীরের উপাদান কারণের প্রেরক হয় না কিন্তু শরীরের বিকাশে বাধক কারণের নাশক হয়; কৃষকের মত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের পরিবর্তনে ধর্মাচরণ ইত্যাদি কিভাবে সাহায্য করে, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

শরীর এবং ইন্দ্রিয়ের বিদ্যমান দোষকে ধর্মাচরণ দ্বারা দূর করা হয় সেই দোষ দূর হলে শরীরের উপাদান কারণগুলি শরীরে স্বতঃ প্রবিষ্ট হয়ে যায়।

যেমন- কৃষক জমিতে জল দেওয়ার সময় একটি ক্যারি হতে অন্য ক্যারিতে জল হাত দ্বারা দেয় না। কিন্তু বাঁধ গুলি কেটে দিলেই জল স্বতঃ প্রবিষ্ট হয়ে যায় অথবা জমিতে বিদ্যমান ঘাসগুলিকে সরিয়ে দিলে মাটিতে বিদ্যমান জল, খাদ্য পদার্থ গাছে স্বতঃ প্রবিষ্ট হয়ে যায়; হাত দ্বারা গাছের মধ্যে জল, খাদ্য পদার্থ প্রবেশ করায় না। সেই রকম ধর্ম, অধর্মের কেবল নিবৃত্তির কারণ হয়। ধর্ম এবং অধর্ম বিরোধী

হওয়ায় ধর্ম, অধর্মকে সরায় আবার অধর্ম, ধর্মকে সরায়। এই জন্য শরীরের উপাদানকে প্রবিষ্ট করাতে ধর্ম সাক্ষাৎ কারণ হয় না কিন্তু ধর্ম, অধর্মের নিবৃত্তি করে; যার ফলে শরীরে সাত্ত্বিক উপাদানগুলির অনুপ্রবেশ ঘটে এবং শরীরের পরিবর্তন দেখা দেয়। ১৩।।

সূত্র - নির্মাণচিত্তান্যস্মিতামাত্রাৎ । ১৪ ।।

শব্দার্থ - (নির্মাণ-চিত্তানি) নির্মিত চিত্ত (অস্মিতামাত্রাৎ) অহংকার হতে উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - বিশিষ্ট উপায় দ্বারা নির্মিত চিত্ত অহংকার হতে উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের উপাদান কারণ কী ? সেই বিষয়ে বর্ণনা করা হয়েছে।

প্রকৃতি হতে মহৎতত্ত্বের নির্মাণ হয়, মহৎতত্ত্ব হতে অহংকারের উৎপত্তি হয়, অহংকার হতে চিত্তের নির্মাণ হয় অর্থাৎ ঈশ্বর অহংকার দ্বারা চিত্তকে নির্মাণ করে। অহংকারের অপর নাম অস্মিতা, মহৎতত্ত্বের অপর নাম বুদ্ধি, চিত্তের অপর নাম মন। ১৪।।

সূত্র - প্রবৃত্তিভেদে প্রয়োজকং চিত্তমেকমনেকেষাম্ । ১৫ ।।

শব্দার্থ - (প্রবৃত্তি-ভেদে) চিত্তের ভিন্ন-ভিন্ন কার্যে (প্রয়োজকম্) সঞ্চালক হয় (চিত্তম্-একম্) একটি মাত্র চিত্ত (অনেকেষাম্) চিত্তের বিভিন্ন কার্যের।

সূত্রার্থ - চিত্তে ভিন্ন-ভিন্ন কার্য হলেও, চিত্তের বিভিন্ন কার্যের একটি মাত্র চিত্তই সঞ্চালক হয়।

ব্যাখ্যা - চিত্তের ভিন্ন-ভিন্ন কার্য সম্পাদন কার দ্বারা ঘটে, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

যখন যোগী নিজের চিত্তকে যোগাভ্যাস দ্বারা বিভিন্ন স্তরের নির্মাণ করে তখন সেই বিবিধ অবস্থা যুক্ত নির্মিত চিত্তের সঞ্চালক একটি মাত্রই চিত্ত হয়।

চিত্তের বিভিন্ন স্তর ক্ষিপ্ত, মূঢ় ইত্যাদি যেটি পূর্বে আলোচনা করা হয়েছে। চিত্তের কিছু কার্য হল সংকল্প-বিকল্প করা, চিন্তন করা, স্মরণ করা, ইন্দ্রিয়কে প্রেরিত করা, জীবন ধারণ করা ইত্যাদি। এই সকল কার্যও একটি চিত্ত দ্বারাই সম্পন্ন হয়। ১৫।।

সূত্র - তত্র ধ্যানজমনাশয়ম্ । ১৬ ।।

শব্দার্থ - (তত্র) পূর্বোক্ত চিত্তের মধ্যে (ধ্যানজম্) সমাপ্তি দ্বারা নির্মিত চিত্ত

(অনাশয়ম) বাসনা রহিত হয়।

সূত্রার্থ - পূর্বোক্ত জন্ম, ঔষধি, মন্ত্র, তপ এবং সমাধি দ্বারা নির্মিত চিত্তের মধ্যে যে চিত্ত সমাধি দ্বারা নির্মাণ করা হয়েছে; সেটি বাসনা রহিত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বাসনা রহিত চিত্ত কোনটি হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

সমাধি দ্বারা নির্মিত চিত্তই বাসনা রহিত হয়। সেই চিত্তে রাগ, দ্বেষ ইত্যাদির প্রবৃত্তি হয় না। ক্লেশ ক্ষীণ হওয়ায় পাপ-পুণ্য কর্মশয়ের সাথেও সম্বন্ধ হয় না। কিন্তু অন্য চার প্রকারের উপায় দ্বারা নির্মিত চিত্তে বাসনা বিদ্যমান থাকে।।৬।।

সূত্র - কর্মশুদ্ধাকৃষ্ণং যোগিনস্ত্রিবিধমিতরেষাম্।।৭।।

শব্দার্থ - (কর্ম-অশুদ্ধ-অকৃষ্ণম) না পুণ্য কর্ম হয়, না পাপ কর্ম হয় (যোগিনঃ) যোগীদের (ত্রিবিধম) তিন প্রকারের কর্ম হয় (ইতরেষাম্) অন্য ব্যক্তিদের।

সূত্রার্থ - যোগী না তো পুণ্য কর্ম করেন, না পাপ কর্ম করেন। কিন্তু সামান্য ব্যক্তি তিন প্রকারের কর্ম করে থাকে- পুণ্য, পাপ এবং মিশ্রিত।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে যোগীদের এবং সামান্য ব্যক্তিদের কর্ম কি ধরনের হয় সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

মন, ইন্দ্রিয় এবং শরীর এই তিনটি সাধন দ্বারা আমরা বিবিধ কর্ম করে থাকি। কর্মকে চারটি ভাগে ভাগ করা হয়েছে- শুদ্ধ (পুণ্য), কৃষ্ণ (পাপ), শুদ্ধ-কৃষ্ণ (মিশ্রিত) এবং অশুদ্ধ-অকৃষ্ণ (নিষ্কাম)।

শুদ্ধ কর্ম- যে সকল কর্ম দ্বারা নিজের বা অন্যের সুখ হয়, সেগুলিকে ‘শুদ্ধ কর্ম’ বলা হয়। যেমন- দান দেওয়া, নির্বলদের রক্ষা করা ইত্যাদি।

কৃষ্ণ কর্ম- যেসকল কর্ম দ্বারা নিজের বা অন্যের দুঃখ হয়, সেগুলিকে ‘কৃষ্ণ কর্ম’ বলা হয়। যেমন- চুরি করা, অন্যায় করা ইত্যাদি।

শুদ্ধ-কৃষ্ণ কর্ম- যেসকল কর্ম দ্বারা নিজের বা অন্যের সুখ এবং দুঃখ দুইই প্রাপ্ত হয়, সেগুলিকে ‘শুদ্ধ-কৃষ্ণ কর্ম’ বলা হয়। যেমন- চাষ-বাস করা, বাঁধ নির্মাণ করা ইত্যাদি।

অশুদ্ধ-অকৃষ্ণ কর্ম- যে শুভ কর্ম ঈশ্বর প্রাপ্তি করার জন্য এবং করানোর জন্য করা হয় তাকে ‘অশুদ্ধ-অকৃষ্ণ কর্ম’ অর্থাৎ ‘নিষ্কাম কর্ম’ বলা হয়। তাঁদের লৌকিক কামনা না থাকায় অশুদ্ধ (পুণ্য রহিত) কর্ম এবং পাপ কর্মকে গ্রহণ না করায় অকৃষ্ণ (পাপ রহিত) কর্ম যা কেবল মাত্র যোগীদেরই হয়ে থাকে। যাঁদের জ্ঞান, কর্ম এবং উপাসনা বিশুদ্ধ; তাঁরাই এই ধরনের কর্ম করে থাকেন। তাঁদের বিদ্যমান শরীর অন্তিম হাওয়ায় তাঁদেরকে ‘চরমদেহ’ অথবা ‘জীবনমুক্ত’ বলা হয়। অন্য সমস্ত

ব্যক্তিদেব পূর্বোক্ত তিন প্রকারের কর্ম হয়ে থাকে । ১৭ । ।

সূত্র - তন্তুদ্বিপাকানুগুণানামেবাব্যক্তিবাসনানাম্ । ১৮ । ।

শব্দার্থ - (ততঃ) তিন প্রকারের কর্ম দ্বারা (তদ্-যিপাক-অনুগুণানাম্) কর্মের ফলের অনুরূপ (এব) অবশ্যই (অভিব্যক্তিঃ) অভিব্যক্তি হয় (বাসনানাম্) বাসনার ।

সূত্রার্থ - পূর্বোক্ত তিন প্রকারের কর্ম দ্বারা প্রাপ্ত ফলের অনুরূপই বাসনার অর্থাৎ সংস্কারের অভিব্যক্তি হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বাসনার অভিব্যক্তি কিভাবে হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে ।

জীবাত্মা যখন যে যোনিতে জন্মগ্রহণ করে তখন তার সংস্কার সেই যোনির অনুসারই অভিব্যক্ত হয় । যেমন- কেউ মনুষ্য যোনিকে প্রাপ্ত করলে; মনুষ্য যোনির অনুসারই তার সংস্কার অভিব্যক্ত হবে, পশু-পক্ষীর ন্যায় সংস্কার নয় । একই ভাবে কেউ পশু-পক্ষীর যোনিকে প্রাপ্ত করলে; পশু-পক্ষী যোনির অনুসারই তার সংস্কার অভিব্যক্ত হবে, মনুষ্য যোনির ন্যায় সংস্কার নয় ।

এখানে একটা কথা আরও জেনে নেওয়া উচিত যে- যখন পাপ এবং পুণ্য তুল্য হয়ে যায় অর্থাৎ পঞ্চাশ শতাংশ পাপ এবং পঞ্চাশ শতাংশ পুণ্য হয়; তখন সে সাধারণ মনুষ্য জন্মকে প্রাপ্ত করে । যখন পঞ্চাশ শতাংশের অধিক পুণ্য এবং পঞ্চাশ শতাংশের কম পাপ হয়, তখন উৎকৃষ্ট মাতা-পিতা যুক্ত পরিবারে তার জন্ম হয় । যখন পঞ্চাশ শতাংশের অধিক পাপ এবং পঞ্চাশ শতাংশের কম পুণ্য হয়, তখন সে পশু-পক্ষী ইত্যাদি নিম্ন যোনিতে জন্মগ্রহণ করে । ১৮ । ।

**সূত্র - জাতিদেশকালব্যবহিতানামপ্যানন্তয়ং
স্মৃতিসংস্কারয়োরেকরূপত্বাৎ । ১৯ । ।**

শব্দার্থ - (জাতি-দেশ-কাল-ব্যবহিতানাম্) জাতি, দেশ এবং কালের ব্যবধান দ্বারা যুক্ত বাসনার (অপি) ও (আনন্তর্যম্) সমীপতা হয় (স্মৃতি-সংস্কারয়োঃ) স্মৃতি এবং সংস্কারের (একরূপত্বাৎ) একরূপতা হওয়ায় ।

সূত্রার্থ - জাতি, দেশ এবং কালের ব্যবধান হলেও স্মৃতি এবং সংস্কারের একরূপতা হওয়ায়; বাসনা গুলির মধ্যে সমীপতা হয়ে থাকে ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে জাতি, দেশ এবং কালের ব্যবধান হলে বাসনা গুলির অবস্থা কিরকম হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে ।

আত্মা কর্মানুসার মানুষ্য, পশু, পাখি, কীট, পতঙ্গ ইত্যাদি ভিন্ন-ভিন্ন যোনিতে

জন্মগ্রহণ করে। যে যোনিতে আত্মা জন্মগ্রহণ করে, সেই যোনির অনুরূপ সংস্কার; সেই যোনিতে অভিব্যক্ত হয়, সংস্কার এবং স্মৃতির মধ্যে একরূপতা হওয়ায়। যেমন- কেউ পক্ষী যোনিতে জন্মগ্রহণ করেছে তখন সে খাদ্য সংগ্রহ করার জন্য চঞ্চু খোলে। কিন্তু সেই আত্মা যখন পশু যোনিতে অর্থাৎ গরুতে জন্মগ্রহণ করে তখন সে দুগ্ধপানের জন্য স্তনের দিকে অগ্রসর হয়। সেই রকম মনুষ্য যোনিতে জন্মগ্রহণ করলে সে মাতৃদুগ্ধ গ্রহণ করার জন্য স্তনের দিকে অগ্রসর হয়। অতএব যে যোনিতে আত্মা জন্মগ্রহণ করে সেই যোনির অনুরূপই তার সংস্কার ও স্মৃতি অভিব্যক্ত হয়। একই রকম ভাবে দেশ এবং কালের ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত যে- স্থানের ব্যবধান হলেও অথবা সময়ের ব্যবধান হলেও অনুকূল বিষয় উপস্থিত হলে একই রকম সংস্কার ও স্মৃতি অভিব্যক্তি হয়।

যে ধরনের অনুভব হয় সেই ধরনের সংস্কার তৈরি হয় এবং সেই সংস্কার কর্ম এবং বাসনার অনুরূপ হয়। যে ধরনের বাসনা হয় সেই ধরনের স্মৃতি উৎপন্ন হয়। স্মৃতি হতে পুনঃ সংস্কার উৎপন্ন হয়। এই ভাবে স্মৃতি ও সংস্কার, কর্মশয়ের ফলোন্মুখ হলে অভিব্যক্ত হয়। ১৯।।

সূত্র - তাসামনাদিত্বং চাশিষো নিত্যত্বাৎ । ১০ ।।

শব্দার্থ - (তাসাম্) সেই বাসনার (অনাদিত্বম্ চ) প্রবাহের দ্বারা অনাদিত্বও রয়েছে (আশিষঃ) বেঁচে থাকার ইচ্ছা (নিত্যত্বাৎ) সতত বিদ্যমান থাকায়।

সূত্রার্থ - বেঁচে থাকার ইচ্ছা সতত বিদ্যমান থাকায়, সেই সংস্কার গুলির (প্রবাহে) নিত্যতা সিদ্ধ হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সংস্কার গুলির প্রবাহের দ্বারা নিত্য হওয়ার কারণ কী? সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

প্রত্যেক প্রাণীর এটা স্বাভাবিক ইচ্ছা থাকে যে, “আমার মৃত্যু যেন না হয়, আমি সদা জীবিত থাকি।” এই ইচ্ছা দ্বারা এটা সিদ্ধ হয় যে- পূর্ব জন্মে মৃত্যু হতে উৎপন্ন দুঃখের সংস্কারের ফলে, এই ধরনের ইচ্ছা এই জন্মে উৎপন্ন হয়েছে। যদি মৃত্যুর ভয় পূর্ব জন্মের অনুভূত নয় তাহলে এই উৎপন্ন ভয়ের কারণ কী? সেটা বলা উচিত! আবার এই জন্মে সে মরে এই দুঃখের অনুভব করেনি। অতএব এটা সিদ্ধ হয়ে যায় যে- এটি পূর্ব জন্মের সংস্কারের ফলেই এই জন্মে সে মৃত্যু ভয়ে ভীত হচ্ছে। বস্তুত মৃত্যুর সময়ে ব্যক্তি অত্যন্ত দুঃখের অনুভব করে। সেই দুঃখের অনুভূতির ফলে সংস্কার উৎপন্ন হয়। সেই সংস্কার দ্বারা এই জন্মে কোনো বিকট পরিস্থিতি উৎপন্ন হলে পুরানো স্মৃতি উৎপন্ন হয়, এই স্মৃতির ফলেই সে ভয় ভীত হয়। একই রকম ভাবে প্রত্যেক প্রাণীর সদা সুখী থাকার ইচ্ছা, দুঃখ

হতে পৃথক্ থাকার ইচ্ছা বিদ্যমান থাকে। এই ইচ্ছার ফলে সে ওই ধরনের কর্ম করে। সেই কর্ম দ্বারা সংস্কার পড়ে। সেই সংস্কার দ্বারা পুনঃ স্মৃতি উৎপন্ন হয়। ওই স্মৃতির ফলে, সেই ধরনের বস্তু হতে সুখ-দুঃখ প্রাপ্ত করতে চায়; এইভাবে ইচ্ছা, সংস্কার, কর্ম ইত্যাদি অহর্নিশ চলতে থাকে। এই জন্য অনাদি কালের বাসনা হতে সম্বন্ধ চিত্ত কর্মাশয় রূপ নিমিত্তের কারণে কিছু বাসনাকে নিয়ে পুরুষ ভোগের জন্য প্রবৃত্ত হয়। অতএব জীবাত্মার ইচ্ছা সতত বিদ্যমান থাকায় বাসনা গুলির নিত্যতা সিদ্ধ হয়। ১০।।

সূত্র - হেতুফলাশ্রয়ালম্বনৈঃ সংগৃহীতত্বাদেষামভাবে তদভাবঃ। ১১।।

শব্দার্থ - (হেতু-ফল-আশ্রয়-আলম্বনৈঃ) হেতু [কারণ], ফল, আশ্রয় এবং আলম্বন এই চারটি কারণের দ্বারা (সংগৃহীতত্বাৎ) বাসনার সংগ্রহ হওয়ায় (এষাম্) এই চারটি কারণের (অভাবে) অভাব হয়ে গেলে (তদ্-অভাবঃ) বাসনারও অভাব হয়।

সূত্রার্থ - হেতু (কারণ), ফল, আশ্রয় এবং আলম্বন এই চারটি কারণের দ্বারা বাসনার সংগ্রহ (উৎপত্তি) হয়। এই চারটি কারণের অভাব হয়ে গেলে বাসনারও অভাব হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বাসনার সংগ্রহের এবং অভাবের কারণ সম্পর্কে আলোচনা করা হয়েছে।

নিম্ন কারণের ফলে বাসনার সংগ্রহ হয়-

(১) **হেতু**- প্রত্যেক ক্ষণ ঘুরন্ত এই সংসার চক্রের নেত্রী হল অবিদ্যা, যেটি বাসনার সংগ্রহের মূল কারণ। এই অবিদ্যার ফলে ব্যক্তি ধর্ম-অধর্ম রূপ আচরণ করে। ধর্মাচরণের ফলে সুখের প্রাপ্তি হয়। এবং অধর্ম আচরণের ফলে দুঃখের প্রাপ্তি হয়। এর ফলে সুখের প্রতি রাগ এবং দুঃখের প্রতি দ্বেষ উৎপন্ন হয়। এই রাগ-দ্বেষের ফলে ব্যক্তি প্রযত্ন করে। ওই প্রযত্ন দ্বারা শরীর-মন-বাণী দ্বারা অন্যকে দয়া করে অথবা কষ্ট দেয়। তার ফলে পুনঃ ধর্ম-অধর্ম, সুখ-দুঃখ, রাগ-দ্বেষ উৎপন্ন হয়। এই ভাবে 'ষড়ংসার চক্র' অহর্নিশ চলতে থাকে।

(২) **ফল**- জাতি, আয়ু এবং ভোগ; এর ফলে বাসনার সংগ্রহ হয়।

(৩) **আশ্রয়**- যে মন ভোগ এবং অপবর্গ রূপী কার্য সম্পন্ন করেনি; সেই মন এই সকল বাসনার আশ্রয়স্থল।

(৪) **আলম্বন**- সকল ইন্দ্রিয়ের রূপ, রস ইত্যাদি বিষয় গুলি হল আলম্বন।

এই চারটির অভাব হয়ে গেলে বাসনারও অভাব হয়ে যায় । ১১ ।।

অবতরণিকা - অসৎ পদার্থের উৎপত্তি হয় না এবং সত্ত্বাৎমক পদার্থের বিনাশও হয় না । এই জন্য দ্রব্যের রূপে বিদ্যমান বাসনা গুলি কীভাবে নিবৃত্তি হতে পারে ? সেই বিষয়ে নিম্নে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - অতীতানাগতং স্বরূপতোঽন্ত্যধ্বভেদাদ্ ধর্মাণাম্ । ১২ ।।

শব্দার্থ - (অতীত-অনাগতম্) অতীত এবং ভবিষ্যৎ [বস্তু] (স্বরূপতঃ) স্বরূপে (অস্তি) বিদ্যমান থাকে (অধ্ব-ভেদাৎ) কাল ভেদ হওয়ায় (ধর্মাণাম্) ধর্মের ।

সূত্রার্থ - বস্তুর ধর্মের কাল ভেদ হওয়ায়, বস্তু অতীত এবং ভবিষ্যৎ স্বরূপে বিদ্যমান থাকে ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বলা হয়েছে যে কালের ভিন্নতায়, বস্তু নিজ স্বরূপে সতত বিদ্যমান থাকে কখনও বিনষ্ট হয় না ।

পূর্বের সূত্রে বাসনার অভাব হওয়ার উপায় বলা হয়েছে । বস্তুত সেই বাসনার অভাব হয় না; তাকে স্পষ্ট করার জন্য সূত্রাকার এই সূত্রে সেটিকে স্পষ্ট করেছেন ।

যে বস্তু ভবিষ্যতে অভিব্যক্ত হবে তাকে ‘অনাগত পদার্থ’ বলা হয় । যে বস্তু অভিব্যক্ত হয়ে নষ্ট হয়ে গেছে তাকে ‘অতীত কালিক পদার্থ’ বলা হয় । যে বস্তু অভিব্যক্ত হয়ে বর্তমানে বিদ্যমান থাকে তাকে ‘বর্তমান কালিক পদার্থ’ বলা হয় । এই ভাবে সকল পদার্থ অতীত, অনাগত এবং বর্তমান রূপে বিদ্যমান থাকে পদার্থের অভাব হয় না । এটি সৎ কার্যবাদ সিদ্ধান্ত । যদি অতীত, অনাগত স্বরূপ হতে বিদ্যমান না হত; তাহলে ভূত-ভবিষ্যৎ পদার্থের জ্ঞান হওয়া সম্ভব হত না । কিন্তু ভূত-ভবিষ্যৎ পদার্থের জ্ঞান সামান্য ব্যক্তি হতে শুরু করে যোগী ব্যক্তি পর্যন্ত সকলেই করেন । যদি অতীত এবং অনাগতকে স্বীকার না করা হয় তাহলে কেউই বন্ধন হতে মুক্ত হওয়ার অথবা মোক্ষ প্রাপ্তির জন্য চেষ্টা করত না । বস্তুত যখন বস্তুর ধর্মের অভিব্যক্ত হওয়ার কারণ উপস্থিত হয় তখন সেই বস্তুর ধর্ম অভিব্যক্ত হয় । যখন অভিব্যক্তির কারণ উপস্থিত থাকে না তখন সেটি অনভিব্যক্তি রূপে বিদ্যমান থাকে । অতএব কালের ভিন্নতায় সকল পদার্থ নিজ নিজ স্বরূপে বর্তমান থাকে; তার অভাব কখনও হয় না । সেই রকম বাসনার ক্ষেত্রেও জানা উচিত । যোগী হেতু, ফল ইত্যাদি যেটি বাসনার আশ্রয় স্থল, সেগুলিকে দূর করে দেয় তখন সেগুলি নিজ উপাদান কারণ প্রকৃতিতে লীন হয়ে যায় । কিন্তু ওই সকল বাসনার অভাব কখনও হয় না । ১২ ।।

সূত্র - তে ব্যক্তসূক্ষ্মা গুণাত্মানঃ ।।১৩।।

শব্দার্থ - (তে) সেই পদার্থ (ব্যক্ত-সূক্ষ্মাঃ) প্রকট এবং অপ্রকট (গুণ-আত্মানঃ) প্রকৃতিরই স্বরূপ।

সূত্রার্থ - তিনটি কালে বিদ্যমান প্রকট এবং অপ্রকট পদার্থ; সত্ত্ব, রজস্ এবং তমস্ এই তিনটি সূক্ষ্ম দ্রব্যেরই স্বরূপ অর্থাৎ এগুলির দ্বারাই সকল পদার্থ উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে কাল ভেদে যে বস্তু বিদ্যমান থাকে সে সকল পদার্থের মূল কারণ কী? সেই বিষয়কে দর্শানো হয়েছে।

তিনটি কালে বিদ্যমান পদার্থ, বর্তমান অবস্থায় অভিব্যক্ত হলে তাকে ‘প্রকট’ এবং অতীত, অনাগত অবস্থায় অনভিব্যক্ত হলে ‘সূক্ষ্ম’ অর্থাৎ ‘অপ্রকট’ বলা হয়। বস্তুত সম্পূর্ণ জগৎ সত্ত্ব, রজস্ এবং তমস্-এরই রচনা বিশেষ। এই জন্য বাস্তবিক রূপে সম্পূর্ণ সংসার প্রকৃতিরই স্বরূপ। তাই বলা হয়েছে -

গুণানাং পরমং রূপং ন দৃষ্টিপথম্চ্ছতি।

যত্নে দৃষ্টিপথং প্রাপ্তং তন্মাত্রেব সুতুচ্ছকম্।।

অর্থাৎ প্রকৃতির বাস্তবিক রূপ দৃষ্টি পথে আসে না। যেগুলি দৃষ্টি পথে আসে সেগুলি মায়ার সমান নাশবান্।

সকল জড় পদার্থের ছয় প্রকারের পরিণাম দেখা যায় যেটি নিরুক্তে বর্ণিত রয়েছে- “জায়তে, অস্তি, বিপরিণমতে, বর্ধতে, অপক্ষীয়তে, বিনশ্যতি” অর্থাৎ উৎপন্ন হওয়া, বিদ্যমান হওয়া, পরিণামকে প্রাপ্ত হওয়া, বৃদ্ধি হওয়া, ক্ষয় হওয়া এবং নষ্ট হওয়া; এগুলি সকল উৎপন্ন হওয়া বস্তুতে দৃষ্টিগোচর হয়।।১৩।।

অবতরণিকা - যখন সকল পদার্থ প্রকৃতিরই স্বরূপ তাহলে এটি একটি শব্দ, এটি একটি ইন্দ্রিয় এগুলির ব্যবহার কীভাবে হয়? সেই বিষয়ে বলা হয়েছে -

সূত্র - পরিণামৈকত্বাদস্তু তত্ত্বম্।।১৪।।

শব্দার্থ - (পরিণাম-একত্বাদ) একটি পরিণাম হওয়ায় (বস্তু-তত্ত্বম্) বস্তু একত্ব রূপে উৎপন্ন হয়।

সূত্রার্থ - সত্ত্ব ইত্যাদি গুণের ভিন্ন-ভিন্ন মিশ্রণের একটি পরিণাম হওয়ায়, পরিণত পদার্থ একটি বস্তু রূপে উৎপন্ন হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সত্ত্ব ইত্যাদি তিনটি গুণ হতে অসংখ্য পৃথক্-পৃথক্ বিবিধ বৈচিত্র যুক্ত এক-একটি পদার্থের উৎপত্তি কীভাবে হয়? সেই বিষয়ে আলোচনা

করা হয়েছে।

সত্ত্বগুণ প্রকাশশীল, রজোগুণ ক্রিয়াশীল এবং তমোগুণ স্থিতিশীল। এই তিনটি বস্তু পৃথক্-পৃথক্ হলেও এবং এদের মধ্যে গুণের ভিন্নতা থাকলেও এই তিনটিকে জ্ঞান পূর্বক ঈশ্বর দ্বারা মিশ্রিত হলে এক-একটি পদার্থের উৎপত্তি হয়ে যায়। ঈশ্বর প্রথমে প্রকৃতি হতে একটি মাত্রা বিশেষ গ্রহণ করে তাকে মিশ্রন করে বুদ্ধি নামক প্রথম পদার্থ উৎপন্ন করেন। সেই বুদ্ধির সাথে পুনঃ সত্ত্ব-রজ-তম হতে কিছু অংশ মিশ্রিত করে অহংকারকে উৎপন্ন করেন। পুনঃ অহংকারের সাথে সত্ত্ব-রজ-তম হতে কিছু অংশ মিশ্রিত করে পাঁচটি তন্মাত্রা, পাঁচটি জ্ঞানেন্দ্রিয়, পাঁচটি কর্মেন্দ্রিয় এবং মন তৈরি করেন। পুনঃ পাঁচটি তন্মাত্রাকে মিশ্রিত করে পাঁচটি স্থূলভূত উৎপন্ন করেন। এই স্থূলভূত মিশ্রিত হয়ে গরু, মনুষ্য শরীর, বৃক্ষ, বনস্পতি ইত্যাদি উৎপন্ন হয়। এইভাবে তিনটি পদার্থকে জ্ঞান পূর্বক সংমিশ্রনের ফলেই এক-একটি পৃথক্-পৃথক্ বস্তুর রচনা হয়ে যায়।

কিছু ভ্রান্ত লোক এই সকল পদার্থকে কেবল স্বপ্নের মত কল্পিত মনে করেন। তারা বলেন এগুলি জ্ঞানের অতিরিক্ত বস্তু রূপে কিছু নয়।

আবার কিছু ভ্রান্ত লোক মনে করেন এই সকল পদার্থ পরমাণুর সমুদায় মাত্র, একত্ব রূপে কোনো বস্তুর অস্তিত্ব নেই। ১৪।।

অবতরণিকা - উপরে বর্ণিত ভ্রান্ত লোকের মান্যতার কারণ কী? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছে -

সূত্র - বস্তু সাম্যে চিত্তভেদাত্তয়োৰ্বিভক্তঃ পন্থাঃ। ১৫।।

শব্দার্থ - (বস্তু-সাম্যে) বস্তু একটি হলেও (চিত্ত-ভেদাত্ত) জ্ঞানের ভিন্নতায় (তয়োঃ) বস্তু এবং জ্ঞানের (বিভক্তঃ) ভিন্ন-ভিন্ন (পন্থাঃ) অস্তিত্ব হয়।

সূত্রার্থ - বস্তু একটি হলেও জ্ঞানের ভিন্নতায় বস্তু ভিন্ন-ভিন্ন রূপে প্রতীত হয়। বস্তু এবং জ্ঞানের ভিন্ন-ভিন্ন অস্তিত্ব থাকায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বস্তু একটি হলেও ভিন্ন-ভিন্ন রূপে প্রতীতির কারণ কী? সেটি উল্লেখ করা হয়েছে।

একটি বস্তুকে ভিন্ন-ভিন্ন চিত্ত দ্বারা তাকে জানা হয়। সেই বস্তু না তো একটি চিত্ত দ্বারা কল্পিত। না তো অনেক চিত্ত দ্বারা কল্পিত অর্থাৎ চিত্তের কল্পনা দ্বারা বস্তুর সত্তা সিদ্ধ হয় না। কিন্তু বস্তু নিজ স্বরূপে স্বতন্ত্র রূপে অবস্থিত থাকে। তাহলে প্রশ্ন ওঠে বস্তু একটি হলেও ভিন্ন-ভিন্ন জ্ঞান হওয়ার কারণ কী? তার কারণ হল ভিন্ন-ভিন্ন ব্যক্তির দৃষ্টি ভিন্ন-ভিন্ন হওয়ায় এরকম হয়। তাই বলা হয়েছে- “যেমন দৃষ্টি তেমন সৃষ্টি”। আবার জ্ঞান এবং পদার্থের মধ্যে গন্ধ মাত্রও একত্ব নেই; যদি বস্তু

এবং জ্ঞান একই হত তাহলে অগ্নি শব্দ উচ্চারিত হলে মুখ জ্বলে যাওয়া উচিত অথবা ছুরি বললে জিহ্বা কেটে যাওয়া উচিত। যেমন- একটি বস্তু হতে ধর্মের অপেক্ষায় একটি ব্যক্তিকে সুখের অনুভূতি হয়। অধর্মের অপেক্ষায় সেই বস্তু হতে দ্বিতীয় ব্যক্তিকে দুঃখের অনুভূতি হয়। সেই বস্তু হতে তৃতীয় ব্যক্তিকে অবিদ্যার কারণে মিথ্যা জ্ঞান হয়। আবার সেই বস্তু হতে চতুর্থ ব্যক্তিকে সম্যক জ্ঞানের অপেক্ষায় ওই পদার্থ হতে মধ্যস্থ জ্ঞান হয়।

তাই যারা এই সকল পদার্থকে স্বপ্নের মত জ্ঞান মাত্র মনে করেন তাদের মাথায় একটি ঢিল ছুড়ে দিলে বোঝা যায় যে সেটি কাল্পনিক নয় বস্তুত আঘাত লাগে। অতএব একত্ব রূপে বস্তুর অস্তিত্ব রয়েছে।

আবার যারা এই সকল পদার্থকে পরমাণুর সমুদায় মাত্র মনে করেন তারা এটা জানেন না যে পরমাণু ইন্দ্রিয় গ্রাহ্য নয়। কিন্তু আমাদের সম্মুখে বিদ্যমান বৃক্ষ, বনস্পতি ইত্যাদিকে ইন্দ্রিয় দ্বারা প্রত্যক্ষ করি এবং সেগুলি দ্বারা নিজের ব্যবহার সিদ্ধ করি। অতএব এই সকল মান্যতা কেবল ভ্রান্ত মাত্র; আর কিছু নয়। ১৫।।

অবতরণিকা - যদি বস্তুকে চিত্ত দ্বারা কল্পিত মনে করা হয়। তখন কি ধরনের দোষ আসতে পারে, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - ন চৈকচিত্ততন্ত্বং বস্তু তদপ্রমাণকং তদা কিং স্যাৎ । ১৬ ।।

শব্দার্থ - (ন) নয় (চ) এবং (এক-চিত্ত-তন্ত্বম) একটি চিত্তের অধীন (বস্তু) বস্তুর অস্তিত্ব (তদ) সেই বস্তু (অ-প্রমাণকম) প্রমাণ দ্বারা না জানলে (তদা) তখন (কিম) কী (স্যাৎ) হবে ?

সূত্রার্থ - বস্তুর অস্তিত্ব একটি চিত্তের অধীন হয় না; তার কারণ হল- বস্তুকে যখন চিত্ত দ্বারা জানা হয় না, সেই অবস্থায় ওই বস্তুর কী অবস্থা হবে ?

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে, যদি বস্তুকে চিত্ত দ্বারা কল্পিত মনে করা হয় তাহলে কি ধরনের দোষ উপস্থিত হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

যদি পদার্থকে চিত্তের অধীন কল্পিত মনে করা হয় তাহলে যখন চিত্ত অন্য বস্তুতে ব্যস্ত থাকে অথবা নিরুদ্ধ হয়ে যায়, সেই অবস্থায় ওই বস্তুর কী অবস্থা হবে ? চিত্ত নিরুদ্ধ হওয়ার পর পুনঃ সেই বস্তুকে জানতে চাইলে সেই বস্তু কি পুনঃ উৎপন্ন হবে ? অথবা বস্তুর যে ভাগ অজ্ঞাত তাহলে সেটাও কি নেই ? আবার পিঠ অথবা পেট সেটাও কি নেই ? এই সকল প্রশ্নের কোনোও উত্তর তাদের কাছে নেই এবং দেওয়াও সম্ভব নয়। অতএব পদার্থ স্বতন্ত্র রূপে নিজ স্বরূপে বিদ্যমান থাকে এবং ব্যক্তি স্বতন্ত্র হওয়ায় প্রত্যেক ব্যক্তি নিজের চিত্ত দ্বারা সেই

বস্তুকে ভিন্ন-ভিন্ন ধরনের জ্ঞান করে এবং সেই জ্ঞানই তাদের ভোগ । ১৬ ।।

সূত্র - তদুপরাগাপেক্ষিত্বাচ্চিত্তস্য বস্তু জ্ঞাতাঃজ্ঞাতম্ । ১৭ ।।

শব্দার্থ - (তদ-উপরাগ-অপেক্ষিত্বাৎ) ওই বাহ্য বস্তুর সাথে সম্বন্ধের অপেক্ষাকারী হওয়ায় (চিত্তস্য) চিত্তের (বস্তু) বাহ্য বস্তু (জ্ঞাত-অজ্ঞাতম্) জ্ঞাত-অজ্ঞাত হয় ।

সূত্রার্থ - চিত্ত বাহ্য বস্তুর সাথে সম্বন্ধের অপেক্ষাকারী হওয়ায়, বাহ্য পদার্থ জ্ঞাত-অজ্ঞাত হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে, বস্তুর জ্ঞান হওয়ার এবং না হওয়ার কারণ কী ? এই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে ।

এই সকল বিষয় চুম্বকের সদৃশ্য হয়, লোহা সদৃশ্য চিত্তের সাথে সম্বন্ধ হলে চিত্ত ঐ সকল বিষয়ে উপরঞ্জিত হয় । যে সকল বিষয়ের সাথে চিত্ত উপরক্ত হয় সেগুলি জ্ঞাত হয় । যে গুলির সাথে সম্বন্ধ হয় না সেগুলি অজ্ঞাত হয় । এই জন্য বস্তুর স্বরূপ জ্ঞাত-অজ্ঞাত হওয়ায় চিত্তকে পরিণামী বলা হয় । ১৭ ।।

অবতরণিকা - চিত্তের স্বামীর স্বরূপ কি ধরনের হয়, সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - সদাজ্ঞাতাশ্চিত্তবৃত্তয়স্তৎপ্রভোঃ পুরুষস্যাপরিণামিত্বাৎ । ১৮ ।।

শব্দার্থ - (সদা) সর্বদা (জ্ঞাতাঃ) জানতে থাকে (চিত্ত-বৃত্তয়ঃ) চিত্তবৃত্তিকে (তৎপ্রভোঃ) চিত্তের স্বামী (পুরুষস্য) জীবাত্মার (অ-পরিণামিত্বাৎ) অপরিণামী হওয়ায় ।

সূত্রার্থ - সেই চিত্তের স্বামী জীবাত্মা অপরিণামী হওয়ায়, সর্বদা চিত্তবৃত্তিকে জানতে থাকে ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে জীবাত্মার স্বরূপকে উল্লেখ করা হয়েছে ।

যদি চিত্তের মত জীবাত্মাও পরিণামী হত তাহলে সেও বিষয়ের সমান জ্ঞাত-অজ্ঞাত হত । কিন্তু পুরুষ মনকে সদা জানতে থাকায়, সেই স্বামীর অপরিণামী হওয়াকে প্রমাণিত করে । ১৮ ।।

অবতরণিকা - এখানে কেউ যদি শঙ্ক করে যে- চিত্তই স্বপ্রকাশক এবং পরপ্রকাশক হয়, অগ্নির সমান । চিত্ত হতে ভিন্ন সত্তা যুক্ত জীবাত্মাকে স্বীকার করার

কোনোও আবশ্যিকতা নেই। তার উত্তর নিম্ন সূত্রে দেওয়া হয়েছে -

সূত্র - ন তৎস্বাভাসং দৃশ্যত্বাৎ ।। ১৯ ।।

শব্দার্থ - (ন) নয় (তৎ) সেই চিত্ত (স্ব-আভাসম) স্বয়ং প্রকাশক (দৃশ্যত্বাৎ) জড় হওয়ায়।

সূত্রার্থ - চিত্ত স্বয়ং প্রকাশক হতে পারে না; জড় হওয়ায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের স্বরূপ বর্ণনা করা হয়েছে।

যেমন ইন্দ্রিয় এবং শব্দ ইত্যাদি বিষয় জড় হওয়ায় স্বয়ং প্রকাশক নয়, সেরকম মনের ক্ষেত্রেও জেনে নেওয়া উচিত। জীবাশ্মা ইন্দ্রিয়কে প্রেরিত করে বিষয়ের সাথে সংবদ্ধ করলে, বিষয় ইন্দ্রিয়তে চিত্র রূপে উপস্থিত হয়। কিন্তু ইন্দ্রিয় সেই সকল বিষয়গুলির অনুভব করে না। আত্মা সেই সকল চিত্রকে অনুভব করে। অতএব ইন্দ্রিয় কেবল আত্মাকে বিষয় জানাতে সাহায্য করে সেই রকম মনের ক্ষেত্রেও জানা উচিত। অর্থাৎ মন স্বয়ং বিষয়কে না জানে; না অন্যকে নিজের স্বরূপ স্বয়ং জানাতে সক্ষম। এখানে যে অগ্নির দৃষ্টান্ত দেওয়া হয়েছে সেটি ঠিক নয়। যেহেতু অগ্নি জড় হওয়ায় স্বয়ং নিজ স্বরূপকে প্রকাশিত করতে পারে না এবং যখন কখনো ঘট ইত্যাদি অন্য পদার্থের স্বরূপকে প্রকাশিত করে তখনও অন্য পদার্থের স্বরূপকে স্বয়ং প্রকাশিত করে না। কোনো মনুষ্য সেই সকল পদার্থের সামনে উপস্থিত করলে অগ্নি সেই সকল পদার্থের স্বরূপকে প্রকাশিত করে। অতএব এই দৃষ্টান্ত তার সাধ্যকে সিদ্ধ করে না।। ১৯ ।।

সূত্র - একসময়ে চোভয়ানবধারণম্ ।। ২০ ।।

শব্দার্থ - (এক-সময়ে) একই সময়ে (চ) এবং (উভয়-অনবধারণম্) দুটির জ্ঞান হতে পারে না।

সূত্রার্থ - চিত্ত একই ক্ষণে নিজের জ্ঞান এবং বিষয়ের জ্ঞান করাতে পারে না।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ক্ষণিকবাদীরা চিত্তকে স্বয়ং প্রকাশক মনে করলে কি ধরনের দোষ উপস্থিত হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

ক্ষণিকবাদীরা চিত্তকে ক্ষণিক মনে করেন এবং স্বয়ং প্রকাশকও মনে করেন। এই অবস্থায় একই ক্ষণে চিত্ত দ্বারা নিজেকে প্রকাশিত করা এবং অন্য বিষয়কেও প্রকাশিত করা এই দুটি কর্ম একই সাথে হওয়া অসম্ভব। অতএব চিত্ত স্বয়ং প্রকাশক নয়। এবং চিত্তকে ক্ষণিক মনে করলে, ক্ষণিক চিত্ত যে সকল কর্ম করবে, সেই সকল কর্মের ভোগ, কে করবে? কৃতকর্ম ব্যর্থ হয়ে যাবে অথবা বিনা প্রয়োজনে ক্ষণিক চিত্ত কার জন্য কর্ম করবে? ইত্যাদি অনেক প্রকারের দোষ উপস্থিত হওয়ায়,

ক্ষণিকবাদীদের মত কখনোই গ্রহণযোগ্য নয় ।।২০।।

অবতরণিকা - যদি ক্ষণিকবাদী এরকম মনে করেন যে- নষ্ট হওয়া চিত্তকে অন্য উৎপন্ন হওয়া চিত্ত দ্বারা সেই চিত্তকে জানা হয়; এই সিদ্ধান্তকে স্বীকার করলে নিম্ন প্রকারের দোষ উৎপন্ন হয় -

সূত্র - চিত্তান্তরদৃশ্যে বুদ্ধিবুদ্ধেরতিপ্রসঙ্গঃ স্মৃতিসংকরশ্চ ।।২১।।

শব্দার্থ - (চিত্তান্তর-দৃশ্যে) অন্য চিত্ত দ্বারা দৃশ্য মেনে নিলে (বুদ্ধি-বুদ্ধেঃ) একটি চিত্তকে জানার জন্য অন্য চিত্তকে গ্রহণ করলে (অতি-প্রসঙ্গঃ) অনবস্থা দোষ আসে (স্মৃতি-সংকরঃ, চ) এবং স্মৃতির পরস্পর মিশ্রণও প্রাপ্ত হয় ।

সূত্রার্থ - পূর্ব চিত্তকে পশ্চাৎ চিত্ত দ্বারা জানা হয় এটি মেনে নিলে, সেই চিত্তকে অন্য চিত্ত দ্বারা এবং অন্য চিত্তকেও ভিন্ন চিত্ত দ্বারা জানার অনবস্থা দোষ উৎপন্ন হয় এবং স্মৃতির পরস্পর মিশ্রণও প্রাপ্ত হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও ক্ষণিকবাদীদের মান্যতায় দোষ দেখানো হয়েছে ।

যদি একটি চিত্ত নষ্ট হওয়ার পূর্বে অন্য উৎপন্ন হওয়া চিত্ত সেই চিত্তকে জানে; এরকম মনে করলে নিম্ন প্রকারের দোষ উপস্থিত হয় -

(১) একটি চিত্তকে দ্বিতীয় চিত্ত জানে এবং দ্বিতীয়কে তৃতীয় চিত্ত জানে, তৃতীয়কে চতুর্থ এইভাবে অনবস্থা দোষ উৎপন্ন হবে এবং অন্তিম চিত্তকে কোন্ চিত্ত দ্বারা জানা যাবে ? অর্থাৎ তাকে কারও দ্বারা জানা যাবে না ।

(২) স্মৃতির মিশ্রণও উৎপন্ন হবে অর্থাৎ কোনো ব্যক্তির কাছে পয়সা ধার নেওয়ার সময় যে চিত্ত বিদ্যমান থাকবে সে অন্য চিত্তকে বলে যাবে এবং সেও অন্যকে বলে যাবে, অন্যও ভিন্ন চিত্তকে বলে যাবে । এইভাবে বিভিন্ন রকমের স্মৃতি যখন একটি চিত্ত দ্বারা অন্যকে দেওয়া হবে তখন কার পয়সা কাকে দেওয়া হবে ইত্যাদি বিভিন্ন প্রকারের স্মৃতির মিশ্রণ হয়ে মহান্ বিনষ্টকারী অবস্থা উৎপন্ন হবে ।

অতএব এই সিদ্ধান্তকে স্বীকার করলে আরও বিভিন্ন প্রকারের দোষ উৎপন্ন হওয়ায় একে কোনও মতে স্বীকার করার যোগ্য নয় ।।২১।।

সূত্র - চিত্তেরপ্রতিসংক্রমায়ান্তদাকারাপত্তৌ স্ববুদ্ধিসংবেদনম্ ।।২২।।

শব্দার্থ - (চিত্তেঃ) চেতন জীবাশ্মা (অ-প্রতিসংক্রমায়ঃ) অপরিণামী (তদ্-আকার-আপত্তৌ) সেই বিষয়াকার চিত্তের সাথে যুক্ত হলে (স্ব-বুদ্ধি-সংবেদনম্)

নিজের চিত্তের জ্ঞান হয়।

সূত্রার্থ - অপরিণামী চেতন জীবাত্মা বিষয়াকার চিত্তের সাথে যুক্ত হলে জীবাত্মাকে, বিষয়ের সাথে যুক্ত নিজের চিত্তের জ্ঞান হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে জীবাত্মার স্বরূপ এবং জীবাত্মা কিভাবে বিষয়কে গ্রহণ করে, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

জীবাত্মা অপরিণামী অর্থাৎ বিকার রহিত এবং বিষয়ের সাথে কখনও মিশ্রিত হয় না। ইন্দ্রিয়ের মাধ্যমে চিত্ত ঘট ইত্যাদি বিষয়কে গ্রহণ করে। চিত্তে যে ঘট ইত্যাদি বিষয় উপস্থিত হয়, তাকে জীবাত্মা জানতে চায়; এই অবস্থায় জীবাত্মা চিত্তের সাথে যুক্ত হয়। তখন আত্মাকে চিত্তে উপস্থিত বিষয়গুলির অনুভূতি হয় যে এটি ঘট ইত্যাদি। ১২২।।

অবতরণিকা - এই জন্য চিত্ত সম্পর্কে এটি স্বীকার করা হয় যে -

সূত্র - দ্রষ্টৃদৃশ্যোপরক্তং চিত্তং সর্বার্থম্। ১২৩।।

শব্দার্থ - (দ্রষ্টৃ-দৃশ্য-উপরক্তম্) চেতন জীবাত্মার সাথে এবং সমস্ত জড় পদার্থের সাথে যুক্ত (চিত্তম্) চিত্ত (সর্ব-অর্থম্) সর্বার্থ হয়।

সূত্রার্থ - চিত্ত, চেতন জীবাত্মার সাথে এবং সমস্ত জড় পদার্থের সাথে যুক্ত হয়ে, চেতন-অচেতন পদার্থের স্বরূপের মত ভাসিত হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের স্বরূপ কি ধরনের হয়, সেই বিষয়ে বলা হয়েছে।

জীবাত্মাকে ‘দ্রষ্টা’ বলা হয়। চিত্ত এবং সকল জড় পদার্থকে ‘দৃশ্য’ বলা হয়। চিত্তের স্বরূপকে নিম্নে দর্শানো হয়েছে -

(১) যখন জীবাত্মা চিত্তের মাধ্যমে বাহ্য বিষয়কে জানতে চায় তখন চিত্ত বাহ্য বিষয়াকার হয়ে বাহ্য বিষয়ের জ্ঞান করায়; এই অবস্থাকে চিত্তের ‘গ্রহণ স্বরূপ’ বলা হয়।

(২) যখন জীবাত্মা চিত্তকে জানতে চায় তখন চিত্ত নিজস্বরূপাকার হয়ে জীবাত্মাকে নিজ স্বরূপের জ্ঞান করায়; এই অবস্থাকে চিত্তের ‘গ্রাহ্য স্বরূপ’ বলা হয়।

(৩) যখন জীবাত্মা চিত্তের সাহায্যে নিজেকে জানতে চায় তখন চিত্ত জীবাত্মার স্বরূপকে প্রাপ্ত করে জীবাত্মার স্বরূপাকার হয়ে, জীবাত্মাকে জীবাত্মার স্বরূপের জ্ঞান করায়; চিত্তের এই অবস্থাকে ‘গ্রহীতা স্বরূপ’ বলা হয়। এই জন্য চিত্তকে ‘সর্বার্থ’ বলা হয়।

চিত্তের এই ধরনের বিচিত্র স্বরূপ হওয়ায় কিছু ভ্রান্ত লোক চিত্তকেই চেতন মনে

করেন। আবার কিছু লোক সমস্ত সংসারের পদার্থকে জ্ঞানমাত্র মনে করেন, বস্তু রূপে কিছুই নেই। তাদের এই মান্যতা ভ্রান্ত বুদ্ধির ফলে উৎপন্ন হয়েছে। অতএব তারা সকলে দয়ার পাত্র।

বস্তুত ঈশ্বর, জীব এবং প্রকৃতি এই তিনটির বিশুদ্ধ জ্ঞান সমাপ্তি অবস্থাতেই সম্পষ্ট হয়। এই জন্য যতক্ষণ পর্যন্ত মোক্ষ শাস্ত্রের অধ্যয়ন না করা হয় এবং সমাপ্তি পর্যন্ত পৌঁছানো না যায়, ততক্ষণ পর্যন্ত এই ধরনের ভ্রান্ত বুদ্ধি বিদ্যমান থাকে। ১২৩।।

সূত্র - তদসংখ্যেয়াবাসনাভিশিচিৎরমপি পরার্থং সংহত্যকারিত্বাৎ ১।২৪।।

শব্দার্থ - (তদ) সেই চিত্ত (অসংখ্যেয়া-বাসনাভিঃ) অসংখ্য বাসনার দ্বারা (চিৎরম) চিত্রিত (অপি) হলেও (পর-অর্থম্) অন্যের জন্য হয় (সংহত্যকারিত্বাৎ) অনেক অবয়ব দ্বারা নির্মিত হওয়ায়।

সূত্রার্থ - সেই চিত্ত অসংখ্য বাসনার সাথে যুক্ত হলেও, অনেক অবয়ব দ্বারা নির্মিত হওয়ার জন্য এটি জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপী প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে চিত্তের প্রয়োজনীয়তা সম্পর্কে আলোচনা করা হয়েছে।

জীবাশ্মা যে সকল শুভ-অশুভ কর্ম করে, তার সংস্কার চিত্তে বিদ্যমান থাকে। জন্ম-জন্মান্তরের সঞ্চিত অসংখ্য সংস্কার চিত্তে চিত্রিত রয়েছে। কিন্তু এই সকল সংস্কার দ্বারা চিত্ত কোনোও লাভ বা হানি উঠায় না। সেই সকল সংস্কার হতে অনুকূল অথবা প্রতিকূল যে ধরনের অনুভূতি হয় সেই সকল অনুভূতিকে জীবাশ্মাই অনুভব করে; তার কারণ হল চিত্ত সংঘাতকারী।

সংসারে যতগুলি প্রাকৃতিক পদার্থ রয়েছে সে সকল পদার্থ সত্ত্ব, রজ এবং তম এই তিনটি পদার্থের সংঘাত হয়ে উৎপন্ন হয়। অতএব যে সকল পদার্থ এই তিনটি পদার্থের সংঘাত হতে উৎপন্ন হয়েছে সে সকল পদার্থ অন্যের প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে, এটি একটি স্থির সিদ্ধান্ত। অতএব চিত্ত সংঘাত রূপ বস্তু হওয়ায় চিত্তও পরার্থ হয় অর্থাৎ জীবাশ্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপ প্রয়োজনকে সিদ্ধ করে। যেমন- সংঘাতকারী ঘর, আসবাবপত্র ইত্যাদি অন্যের জন্য হয়। সেই রকম সুখ ভোগ করার সাধন রূপ চিত্ত নিজের সুখের জন্য হয় না এবং জ্ঞানের সাধন রূপ চিত্ত নিজের জ্ঞানের জন্য হয় না। ১২৪।।

সূত্র - বিশেষদর্শিন আত্মভাবভাবনাবিনিবৃত্তিঃ ১।২৫।।

শব্দার্থ - (বিশেষ-দর্শিনঃ) বিশেষ জ্ঞানীর (আত্ম-ভাব-ভাবনা) আত্ম বিষয়ক

জিজ্ঞাসা (বিনিবৃতিঃ) নিবৃতি হয়ে যায়।

সূত্রার্থ - বিশেষ জ্ঞানী ব্যক্তির আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসার নিবৃতি হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে আত্মা, পরমাত্মা বিষয়ক জিজ্ঞাসার নিবৃতি কোন্ ব্যক্তির হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

সর্বপ্রথমে এটা জেনে নেওয়া উচিত যে আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসাকারী ব্যক্তিদের কি ধরনের লক্ষণ পাওয়া যায় এবং আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসা গুলি কী কী? এটিকে নিচে বর্ণনা করা হল -

আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসাকারী ব্যক্তিদের লক্ষণ- মোক্ষ মার্গের উপদেশ শ্রবণ করলে তাদের শরীর রোমাঞ্চিত হয়ে যায় এবং নেত্র হতে অশ্রুপাত দৃষ্টিগোচর হয়। এই লক্ষণগুলি দেখে অনুমান করা হয় যে তার মধ্যে মোক্ষ প্রাপ্ত করার বিশেষ জ্ঞানের বীজ বিদ্যমান রয়েছে। এই সকল ব্যক্তিদের আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসা স্বাভাবিক দেখা যায়। এই লক্ষণের অভাবে দেখা যায় যে ব্যক্তি আত্মা-পরমাত্মাকে খন্ডন করতে থাকে এবং অনর্গল শঙ্ক করতে থাকে কিন্তু সেই শঙ্ক গুলির নির্ণয়ে তার কোনও রুচি দেখা যায় না।

আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসা- আমি কে? কি রকম ছিলাম? কোথা থেকে এসেছি? কোথায় যাব? এই শরীর, ইন্দ্রিয়, মন ইত্যাদি কি? এগুলি কোথা থেকে এসেছে? আমরা সকলে ভবিষ্যতে কি হব? কি ধরনের হব? এই সকল ভাবনাগুলিকে আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসা বলা হয়। এই সকল জিজ্ঞাসার নিবৃতি, অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশকে যিনি দৃষ্টবীজ করে দিয়েছেন; সেই ধরনের বিশেষদর্শী যোগীর এই সকল আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসার নিবৃতি হয়ে যায়। ১২৫।।

সূত্র - তদা বিবেকনিম্নং কৈবল্যপ্রাপ্তারং চিত্তম্। ১২৬।।

শব্দার্থ - (তদা) বিবেক জ্ঞান প্রাপ্ত হয়ে গেলে (বিবেকনিম্নম্) বিবেক মার্গের দিকে গমনকারী (কৈবল্য-প্রাপ্তভারম্) মোক্ষ প্রাপ্ত করানোর সামর্থ্য যুক্ত (চিত্তম্) চিত্ত হয়।

সূত্রার্থ - বিবেক জ্ঞান প্রাপ্ত হয়ে গেলে, চিত্ত বিবেক মার্গের দিকে গমনকারী এবং মোক্ষ প্রাপ্ত করানোর সামর্থ্য যুক্ত হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেক জ্ঞানীর চিত্তের বিশেষতাকে দর্শানো হয়েছে।

প্রথমে যোগীর চিত্ত বিষয়াভিমুখ অজ্ঞান মার্গের অনুসরণকারী ছিল কিন্তু বিবেক জ্ঞান হয়ে যাওয়ার ফলে তার চিত্ত কৈবল্যাভিমুখ হয়ে গেছে। ১২৬।।

সূত্র - তচ্ছিত্ত্রেষু প্রত্যয়ান্তরাণি সংস্কারেভ্যঃ। ১২৭।।

শব্দার্থ - (তৎ-ছিদ্রেষু) বিবেক জ্ঞানের মাঝে ছিদ্র হলে (প্রত্যয়-অন্তরাণি) বিবেক জ্ঞান হতে ভিন্ন জ্ঞান (সংস্কাররেভ্যঃ) সংস্কাররের কারণে [উৎপন্ন হয়] ।

সূত্রার্থ - বিবেক জ্ঞানের প্রবাহের মাঝে ছিদ্র হওয়ার ফলে, ব্যুত্থান সংস্কাররের কারণে বিবেক জ্ঞান হতে ভিন্ন সাংসারিক জ্ঞান উৎপন্ন হয়ে যায় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে বিবেক জ্ঞান দৃঢ় না হলে এবং অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ ক্ষীণ না হলে কি অবস্থা হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে ।

ক্ষীয়মাণ সংস্কার সম্পূর্ণরূপে নষ্ট না হওয়ার ফলে বিবেকী ব্যক্তি যখন যোগাভ্যাসে আলস্য-প্রমাদ করে তখন সেই সকল পূর্বের সংস্কার পুনঃ উৎপন্ন হয়ে যায় । যেমন- ‘এটি আমার’ ‘আমি বুদ্ধিমান’ ‘আমি সবকিছু জানি’ ইত্যাদি অহংকার উৎপন্ন হয়ে যায়; এর ফলে পুনঃ অনিষ্ট আসার সম্ভাবনা থাকে । ১২৭ ।

সূত্র - হানমেঘাং ক্লেশবদুক্তম্ । ১২৮ ।

শব্দার্থ - (হানম্) নাশ (এষাম্) এই সংস্কাররের (ক্লেশবৎ) ক্লেশের নাশের সমান (উক্তম্) বলা হয়েছে ।

সূত্রার্থ - পূর্ব সূত্রে বর্ণিত সাংসারিক সংস্কাররের নাশ, অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশের নাশের সমান জানা উচিত ।

ব্যাখ্যা - পূর্ব সূত্রে বর্ণিত সংস্কার গুলির নাশ কীভাবে করা উচিত, সেই বিষয়ে এই সূত্রে আলোচনা করা হয়েছে ।

যেভাবে অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশকে দণ্ডবীজ করা হয়েছিল সেই রকম এই সকল সংস্কাররেরও নাশ সম্পর্কে জানা উচিত । যেমন অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ দণ্ডবীজ হয়ে গেলে পুনঃ উদ্বুদ্ধ হতে সমর্থ হয় না সেই রকম বিবেক রূপী জ্ঞান অগ্নি দ্বারা এই সকল সংস্কারকে দণ্ডবীজের ন্যায় করলে এগুলিও উৎপন্ন হতে সমর্থ হয় না । ১২৮ ।

সূত্র - প্রসংখ্যানেঽপ্যকু সীদস্য সর্বথা বিবেকখ্যাতেধর্মমেঘঃ সমাধিঃ । ১২৯ ।

শব্দার্থ - (প্রসংখ্যানে) বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত হয়ে গেলে (অপি) ও (অকুসীদস্য) সিদ্ধি গুলির প্রতি রাগ রহিত যোগীর (সর্বথা বিবেকখ্যাতেঃ) দৃঢ় বিবেকখ্যাতি উৎপন্ন হয়ে গেলে (ধর্মমেঘঃ সমাধিঃ) ধর্মমেঘ সমাধি হয় ।

সূত্রার্থ - বিবেকখ্যাতি প্রাপ্ত হয়ে গেলে সিদ্ধি গুলির প্রতি রাগ রহিত যোগীর দৃঢ় বিবেকখ্যাতি উৎপন্ন হওয়ায় ‘ধর্মমেঘ’ নামক সমাধির লাভ হয় ।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সম্প্রজ্ঞাত সমাধির সর্বোচ্চ অবস্থা অর্থাৎ ‘ধর্মমেঘ’ নামক সমাধির লাভ কখন হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

যখন যোগীর উৎপন্ন বিবেকখ্যাতি হতে এবং প্রাপ্ত সিদ্ধি গুলির প্রতি দোষ দর্শনের ফলে রাগ রহিত অবস্থা উৎপন্ন হয় এবং সংস্কারের বীজের ক্ষয় হওয়ায় বিবেকখ্যাতি হতে ভিন্ন জ্ঞান উৎপন্ন হয় না তখন তার ‘ধর্মমেঘ’ নামক সম্প্রজ্ঞাত সমাধির লাভ হয়। এই প্রসঙ্গকে প্রথম পাদে দ্বিতীয় সূত্রে বর্ণনা করা হয়েছিল। ১২৯।।

সূত্র - ততঃ ক্লেশকর্মনিবৃত্তিঃ ।।৩০।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ওই ধর্মমেঘ সমাধি দ্বারা (ক্লেশ-কর্ম-নিবৃত্তিঃ) ক্লেশ এবং কর্মের নিবৃত্তি হয়।

সূত্রার্থ - ওই ‘ধর্মমেঘ সমাধি’ দ্বারা অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ এবং শুভ-অশুভ সকাম কর্মের নিবৃত্তি হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ধর্মমেঘ নামক সমাধির ফলকে উল্লেখ করা হয়েছে।

সেই ধর্মমেঘ সমাধিকে প্রাপ্ত করে নিলে অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ নষ্ট হয়ে যায় এবং শুভ-অশুভ কর্মশয়ও সমূল নষ্ট হয়ে যায়। ক্লেশ এবং কর্মের নিবৃত্তি হয়ে গেলে যোগী জীবন্ত অবস্থায় ‘জীবনমুক্ত’ হয়ে যায়। অবিদ্যা নষ্ট হয়ে গেলে কোনও ব্যক্তি, কারও দ্বারা, কোথাও উৎপন্ন হতে দেখা যায় না। ১৩০।।

সূত্র - তদা সর্বাবরণমলাপেতস্য জ্ঞানস্যানন্ত্যাজ্জ্যেয়মল্লম্ ।।৩১।।

শব্দার্থ - (তদা) ক্লেশ এবং কর্মের নিবৃত্তি হয়ে গেলে (সর্ব-আবরণ-মল-অপেতস্য) জ্ঞানের আবরণকারী অজ্ঞান রূপী মল হতে রহিত (জ্ঞানস্য) জ্ঞানের (আনন্ত্যঃ) অধিকতা হওয়ায় (জ্যেয়ম্) জ্যেয় (অল্লম্) অল্প থেকে যায়।

সূত্রার্থ - অবিদ্যা ইত্যাদি ক্লেশ এবং শুভ-অশুভ সকাম কর্ম নষ্ট হয়ে গেলে, জ্ঞানের আবরণকারী অজ্ঞান রূপী মল হতে পৃথক্ হয়ে গেলে, শুদ্ধ জ্ঞানের অধিকতা হওয়ায় জ্যেয় বিষয় অল্প থেকে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে সমস্ত ক্লেশ এবং কর্ম বিনষ্ট হয়ে গেলে যোগীর অবস্থা কি রকম হয়, সেই বিষয়ে আলোচনা করা হয়েছে।

যখন সমস্ত ক্লেশ এবং কর্ম হতে যোগী বিমুক্ত হয়ে যায় তখন তার জ্ঞানের আবরণকারী মল সম্পূর্ণরূপে বিনষ্ট হয়ে যায়। তখন তার জ্ঞানের অনন্ততা হয়ে

যায়। জ্ঞানের অনন্ততা হওয়ার ফলে জ্ঞেয় বিষয় অল্প থেকে যায়। যেমন- বৃহৎ আকাশের মধ্যে কোনো একটি ছোট্ট জোনাকী বিচরণ করে।

সেই যোগীর পুনরায় শরীর ধারণ করা এরকমই অসম্ভব যেমন কোনো -

অন্ধো মণিমবিধ্যন্তমনঙ্গুলিরাবয়ৎ ।

অগ্নীবস্তং প্রত্যমুঞ্চন্তমজিহ্বোভ্যপূজয়ৎ ।।

অর্থ্যৎ- “অন্ধের দ্বারা মণি ভেদ করা, সেই মণি দিয়ে কোনো আঙুল বিহীন ব্যক্তির দ্বারা মালা তৈরি করা, সেই মালাকে কোনো গীবাহীন ব্যক্তির ধারণ করা এবং কোনো জিহ্বাহীন ব্যক্তির দ্বারা প্রশংসা করা।” এগুলি যেমন অসম্ভব সেরকম তাঁর শরীর ধারণ করাও অসম্ভব।।৩১।।

সূত্র - ততঃ কৃতার্থানাং পরিণামক্রমসমাপ্তিগুণানাম্ ।।৩২।।

শব্দার্থ - (ততঃ) ধর্মমেঘ সমাধির সিদ্ধি লাভ হয়ে গেলে (কৃতার্থানাং) কৃতার্থ ব্যক্তিদের (পরিণামক্রম-সমাপ্তিঃ) পরিণাম ক্রমের সমাপ্তি হয় (গুণানাম্) প্রকৃতির।

সূত্রার্থ - ধর্মমেঘ সমাধির উদয় হয়ে গেলে, যাঁদের ভোগ এবং অপবর্গ রূপী কার্য পূর্ণ হয়ে গেছে; তাঁদের জন্য মহৎ তত্ত্ব, অহংকার ইত্যাদি পদার্থের উৎপত্তি ক্রম সমাপ্ত হয়ে যায়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রেও ধর্মমেঘ নামক সমাধির ফল সম্পর্কে আলোচনা করা হয়েছে।

ধর্মমেঘ সমাধির উদয় হয়ে গেলে, ভোগ এবং অপবর্গ রূপী কার্য পূর্ণকারী সত্ত্ব-রজ-তম গুণের পরিণামের ক্রমের সমাপ্তি হয়ে যায়। সেই অবস্থায় যোগীর সম্মুখে সত্ত্ব-রজ-তম একটি ক্ষনের জন্যও স্থিত থাকে না; প্রলয়াভিমুখ হয়ে যায়।।৩২।।

সূত্র - ক্ষণপ্রতিযোগী পরিণামাপরান্তনির্গাহ্যঃ ক্রমঃ ।।৩৩।।

শব্দার্থ - (ক্ষণ-প্রতিযোগী) ক্ষণের সমূহে আশ্রিত (পরিণাম-অপরান্ত-নির্গাহ্যঃ) পরিণামের সমাপ্তির পর জানার যোগ্য (ক্রমঃ) ক্রম বলা হয়।

সূত্রার্থ - যেখানে, একটি ক্ষণের পশ্চাৎ পরবর্তী ক্ষণ উপস্থিত হয় এবং পরিণামের সমাপ্তির পর জানা যায়; তাকে ক্রম বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে ক্রমের স্বরূপকে দর্শানো হয়েছে।

কালের সবথেকে ছোট ভাগকে ‘ক্ষণ’ বলা হয়। একটি ক্ষণের পশ্চাৎ দ্বিতীয় ক্ষণের আসাকে ‘ক্রম’ বলা হয়। ক্ষণের এই ক্রমের ফলেই উৎপন্ন সকল বস্তু পুরানোর দিকে অগ্রসর হয় এবং অবশেষে বিনষ্ট হয়ে যায়। যতক্ষণ পর্যন্ত কোনো বস্তুর বড় ধরনের পরিবর্তন না হয় ততক্ষণ পর্যন্ত এই ক্রমকে আমরা জানতে পারি না।

এই ক্রমের সমাপ্তি কাদের হয়? সেই বিষয়কেও জানা উচিত। নিত্যতা দু’ধরনের হয় একটি পরিণামী নিত্যতা, দ্বিতীয়টি কূটস্থ নিত্যতা।

পরিণামী নিত্যতা- বিবিধ পরিবর্তন হলেও মূল তত্ত্ব একই রকম ভাবে নিজ স্বরূপে বিদ্যমান থাকাকে ‘পরিণামী নিত্যতা’ বলা হয়। প্রকৃতিতে পরিণামী নিত্যতা বলা হয়। যেমন- সোনা হতে বিবিধ আভূষণ তৈরি করলেও সোনা একই রকম অবস্থায় বিদ্যমান থাকে।

কূটস্থ নিত্যতা- যে বস্তুতে কোনও ধরনের পরিবর্তন হয় না তাকে ‘কূটস্থ নিত্যতা’ বলা হয়। যেমন- আত্মা এবং পরমাত্মা।

এই ক্রমের সমাপ্তি পরিণামী নিত্যতায় দেখা যায়।

ক্রমের প্রসঙ্গে একটি প্রশ্ন ওঠে যে- এই স্থিতি ও গতি রূপে বিদ্যমান সংসারের ক্রমের সমাপ্তি হবে কী না? এই প্রশ্নের উত্তর এক বাক্যে দেওয়া সম্ভব নয়। সংসারে দু’ধরনের প্রশ্ন হয়ে থাকে- প্রথমটি হল, এক বাক্যে উত্তর দেওয়ার যোগ্য। যেমন- যে সকল প্রাণী জন্মগ্রহণ করেছে তার মৃত্যু হবে কী না? এর উত্তর হল- হ্যাঁ, মৃত্যু হবে। দ্বিতীয়টি হল, সকল প্রাণী মৃত্যুর পর পুনরায় জন্মগ্রহণ করবে কী না? এই প্রশ্নের উত্তর এক বাক্যে দেওয়া সম্ভব নয়। এটিকে বিভাগ করে বলতে হবে। অর্থাৎ যাঁর সমস্ত ক্লেশ দঙ্কবীজ হয়ে গেছে তাঁর পুনঃ জন্ম হবে না। কিন্তু যার ক্লেশ বিদ্যমান রয়েছে সে পুনঃ জন্ম গ্রহণ করবে। একই রকম ভাবে যে সকল যোগীর ক্লেশ দঙ্কবীজ হয়ে গেছে তাঁদের ক্ষেত্রে এই সংসারের ক্রমের সমাপ্তি হয়ে যায়, অপরের নয়। ১৩৩।।

অবতরণিকা - সত্ত্ব, রজ এবং তম এই তিনটি গুণের ক্রমের সমাপ্তি হয়ে গেলে কী হয়? সেই বিষয়ে নিম্ন সূত্রে আলোচনা করা হয়েছে -

সূত্র - পুরুষার্থশূন্যানাং গুণানাং প্রতিপ্রসবঃ কৈবল্যং
স্বরূপপ্রতিষ্ঠা বা চিতিশক্তিরিতি। ১৩৪।।

শব্দার্থ - (পুরুষার্থ-শূন্যানাম) জীবাত্মার প্রয়োজন হতে রহিত (গুণানাম) কার্য পদার্থের (প্রতি-প্রসবঃ) নিজ কারণে লীন হয়ে যাওয়া (কৈবল্যম্) মুক্তি বলা হয় (স্বরূপ-প্রতিষ্ঠা বা) অথবা নিজ স্বরূপে অবস্থিত থাকা (চিতিশক্তিঃ) জীবাত্মা

(ইতি) পাদ এবং শাস্ত্র সমাপ্তির সূচক।

সূত্রার্থ - জীবাত্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপ প্রয়োজন হতে রহিত, চিত্ত ইত্যাদি কার্য রূপ গুণের নিজ কারণে লীন হয়ে যাওয়াকে 'কৈবল্য' বলা হয় অথবা জীবাত্মা, নিজ স্বরূপে এবং ঈশ্বরের স্বরূপে অবস্থিত থাকাকে 'কৈবল্য' বলা হয়।

ব্যাখ্যা - এই সূত্রে কৈবল্যের স্বরূপকে দর্শানো হয়েছে।

যে সকল কার্য রূপ বস্তু জীবাত্মার ভোগ এবং অপবর্গ রূপ প্রয়োজনকে সম্পন্ন করে নিয়েছে তাদের নিজ কারণে লীন হয়ে যাওয়াকে 'কৈবল্য' বলা হয়। অথবা জীবাত্মা নিজ স্বরূপে প্রতিষ্ঠিত হয়ে পুনঃ চিত্ত ইত্যাদি কার্য বস্তু হতে সংবদ্ধ না হয়ে, দীর্ঘকাল পর্যন্ত অর্থাৎ ছত্রিশ হাজার বার সৃষ্টির উৎপত্তি এবং প্রলয়ের সময় পর্যন্ত নিজ স্বরূপে এবং ঈশ্বরের আনন্দে অবস্থিত থাকাকে 'কৈবল্য' বলা হয়। ছত্রিশ হাজার বার সৃষ্টির উৎপত্তি এবং প্রলয়ের সময় পর্যন্ত নিজ স্বরূপে এবং ঈশ্বরের আনন্দে অবস্থিত থাকাকে 'কৈবল্য' বলা বলা হয়। ৩৪।

।। ইতি চতুর্থ কৈবল্যপাদ ।।



প্রশ্ন পত্র

(ক) সঠিক উত্তরটি বেছে নিন।

- (১) যোগী দ্বারা ভিন্ন-ভিন্ন স্তরের তৈরি চিত্তের উপাদান কারণ হল - (ক) মহৎতত্ত্ব (খ) অহংকার (গ) তন্মাত্রা (ঘ) মহাভূত।
- (২) কোন্ উপায় দ্বারা তৈরি চিত্ত বাসনা রহিত হয় - (ক) জন্ম (খ) মন্ত্র (গ) তপ (ঘ) সমাধি।
- (৩) যোগীদের দ্বারা কৃতকর্মের নাম হল - (ক) কৃষ্ণ (খ) শূক্ল-কৃষ্ণ (গ) শূক্ল (ঘ) অশূক্ল-অকৃষ্ণ।
- (৪) দুষ্ট ব্যক্তিদের দ্বারা কৃতকর্মের নাম হল - (ক) কৃষ্ণ (খ) শূক্ল-কৃষ্ণ (গ) শূক্ল (ঘ) অশূক্ল-অকৃষ্ণ।
- (৫) তপ-স্বাধ্যায় ইত্যাদি কারী ব্যক্তিদের দ্বারা কৃতকর্মের নাম হল - (ক) কৃষ্ণ (খ) শূক্ল-কৃষ্ণ (গ) শূক্ল (ঘ) অশূক্ল-অকৃষ্ণ।
- (৬) কোনটি ষড়র সংসার চক্রের অন্তর্গত আসে - (ক) ধর্ম (খ) সুখ (গ) অধর্ম (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (৭) সকল ক্রেশের নেত্রী হল - (ক) অবিদ্যা (খ) অস্মিতা (গ) রাগ (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (৮) প্রকাশশীল বস্তু হল - (ক) সত্ত্ব (খ) রজ (গ) তম (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (৯) পুরুষ অপরিণামী, তার কারণ হল পুরুষ - (ক) সর্বদা বিষয়ের জ্ঞাতা হওয়ায় (খ) সর্বদা বিষয়ের অজ্ঞাতা হওয়ায় (গ) সর্বদা বিষয়ের জ্ঞাতা-অজ্ঞাতা হওয়ায় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১০) চিত্ত পরিণামী হয়, তার কারণ হল চিত্ত - (ক) সর্বদা বিষয়ের জ্ঞাতা হওয়ায় (খ) সর্বদা বিষয়ের অজ্ঞাতা হওয়ায় (গ) সর্বদা বিষয়ের জ্ঞাতা-অজ্ঞাতা হওয়ায় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১১) শরীর এবং ইন্দ্রিয়ে পরিবর্তন ঘটে - (ক) ধর্ম আচরণ করলে (খ) অধর্ম আচরণ করলে (গ) নতুন অবয়বের অনুপ্রবেশ হলে (ঘ) অবয়বের বৃদ্ধি হলে।
- (১২) চিত্তের বিভিন্ন ব্যাপারের সঞ্চালন - (ক) একটি চিত্ত দ্বারা সম্পন্ন হয় (খ) অনেক চিত্ত দ্বারা সম্পন্ন হয় (গ) ব্যাপক চিত্ত দ্বারা সম্পন্ন হয় (ঘ)

তিনটি ঠিক।

- (১৩) মনুষ্য যোনীতে সঞ্চিত কর্মের সংস্কারের অভিব্যক্তি - (ক) পশু যোনীতেও হতে পারে (খ) পক্ষী যোনীতেও হতে পারে (গ) মনুষ্য যোনীতেই হয় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১৪) বাসনা গুলির নিত্যতার কারণ হল - (ক) জীবাত্মার ইচ্ছা নিত্য থাকায় (খ) জীবাত্মার অনিচ্ছা নিত্য থাকায় (গ) জীবাত্মার বিবশতা থাকায় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১৫) বাসনার উৎপত্তির কারণ হল - (ক) অবিদ্যা (খ) মন (গ) বিষয় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১৬) জ্ঞানের ভিন্নতার ফলে - (ক) বস্তুও ভিন্নতা হয়ে যায় (খ) বস্তুও নিজস্ব রূপে অবস্থিত থাকে (গ) পরিস্থিতি অনুযায়ী ভিন্ন-ভিন্ন হয়ে যায় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১৭) চিত্ত স্বয়ং প্রকাশক হতে পারে না - (ক) জড় হওয়ায় (খ) একদেশী হওয়ায় (গ) ব্যাপক হওয়ায় (ঘ) বদ্ধ হওয়ায়।
- (১৮) চিত্ত পরার্থ হয় - (ক) সংঘাতকারী হওয়ায় (খ) একদেশী হওয়ায় (গ) ব্যাপক হওয়ায় (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (১৯) আত্মা বিষয়ক জিজ্ঞাসাকারী ব্যক্তির লক্ষণ হল - (ক) তর্কে রুচি রাখে (খ) নির্ণয়ে রুচি রাখে (গ) সর্বদা শঙ্ক করতেই রুচি রাখে (ঘ) তিনটি ঠিক।
- (২০) ধর্মমেঘ নামক সমাধি কোন্ সমাধির উচ্চ অবস্থা - (ক) সম্প্রজ্ঞাত (খ) অসম্প্রজ্ঞাত (গ) সম্প্রজ্ঞাত-অসম্প্রজ্ঞাত (ঘ) তিনটি ঠিক।

(খ) নিম্ন লিখিত প্রশ্ন গুলির সংক্ষেপে উত্তর লিখুন।

- (১) কর্ম কত প্রকারের হয় এবং সেগুলি কী ?
- (২) ষড়র সংসার চক্রকে উল্লেখ করুন ?
- (৩) চিত্তকে কেনো 'পরার্থ' বলা হয়েছে এবং 'পর' কে ?
- (৪) বাসনার সংগ্রহ কোন্-কোন্ কারণের দ্বারা হয়, চারটি কারণ উল্লেখ করুন ?
- (৫) চিত্তকে ক্ষণিক মেনে নিলে কি ধরনের দোষ উপস্থিত হবে ?
- (৬) মোক্ষের অধিকারী ব্যক্তির বাহ্য লক্ষণ গুলি উল্লেখ করুন ?
- (৭) কোন্ অবস্থার পর ধর্মমেঘ সমাধির লাভ হয় ?

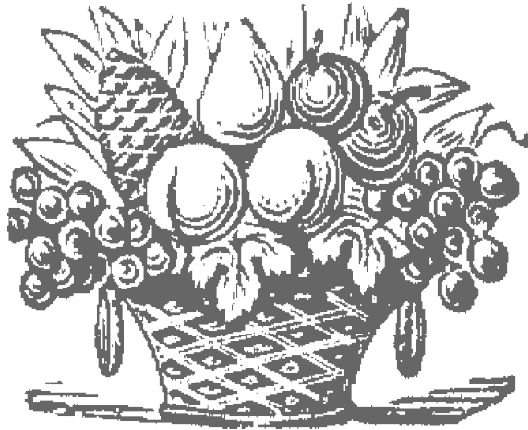
- (৮) এক বাক্যে উত্তর দেওয়ার যোগ্য দুটি প্রশ্ন উল্লেখ করুন ?
- (৯) একটি বাক্যে উত্তর না দেওয়ার যোগ্য দুটি প্রশ্ন উল্লেখ করুন ?
- (১০) কৈবল্যের স্বরূপ উল্লেখ করুন ?
- (১১) কত ভাবে সিদ্ধি লাভ হতে পারে, সেটি উল্লেখ করুন ?
- (১২) কোন্ অবস্থার পর কৈবল্যের প্রাপ্তি হয় ?
- (১৩) নিত্যতা কত প্রকারের হয় সংক্ষেপে বর্ণনা করুন ?
- (১৪) আত্মা বিষয়ক জিজ্ঞাসা গুলি কী কী ?
- (১৫) চিত্তের স্বরূপ উল্লেখ করুন ?
- (১৬) স্মৃতি সংকর কীভাবে হতে পারে ?
- (১৭) বস্তু একটি হলেও জ্ঞাতার ভিন্নতার ফলে বস্তু কত ধরনের অনুভব হতে পারে ?
- (১৮) প্রকৃতির ভিন্ন-ভিন্ন স্বরূপ হলেও একটি পদার্থ রূপে কীভাবে উৎপন্ন হয়ে যায় ?
- (১৯) সম্ভাবান্ বস্তু কত রূপে বিদ্যমান থাকে ?
- (২০) জাতি, দেশ এবং কালের ব্যবধান হলেও সংস্কারের সমীপতা হওয়ার কারণ কী ?

(গ) সূত্রার্থ লিখুন।

- (১) নিমিত্তমপ্রয়োজকং প্রকৃতীনাং বরণভেদস্তু ততঃ ক্ষেত্রিকবৎ ।
- (২) নির্মাণচিত্তান্যস্মিতামাত্রাৎ ।
- (৩) তত্র ধ্যানজমনাশয়ম্ ।
- (৪) কর্মশুক্রাকৃষ্ণং যোগিনস্ত্রিবিধমিতরেষাম্ ।
- (৫) তাসামনাদিত্বং চাশিমো নিত্যত্বাৎ ।
- (৬) হেতুফলাশ্রয়ালম্বনৈঃ সংগৃহীতত্বাদেষামভাবে তদভাবঃ ।
- (৭) পরিণামৈকত্বাদ্বস্তু তত্র ।
- (৮) সদাজ্ঞাতাশ্চিত্তবৃত্তয়স্তৎপ্রভোঃ পুরুষস্যাপরিণামিত্বাৎ ।
- (৯) ন তৎস্বাভাসং দৃশ্যত্বাৎ ।
- (১০) চিত্তান্তরদৃশ্যে বুদ্ধিবুদ্ধেরতিপ্রসঙ্গঃ স্মৃতিসংকরশ্চ ।
- (১১) দ্রষ্টৃদৃশ্যোপরক্তং চিত্তং সর্বার্থম্ ।

- (১২) তদসংখ্যেয়বাসনাভিশ্চিত্রমপি পরাথং সংহত্যকারিত্বং ।
 (১৩) বিশেষদর্শিন আত্মভাবভাবনাবিনিবৃত্তিঃ ।
 (১৪) তদা বিবেকনিম্নং কৈবল্যপ্রাগ্ভারং চিত্তম্ ।
 (১৫) প্রসংখ্যানেহপ্যকুসীদস্য সর্বথা বিবেকখ্যাতেধর্মমেঘঃ সমাধিঃ ।
 (১৬) তদা সর্বাবরণমলাপেতস্য জ্ঞানস্যানন্ত্যাজেজ্জয়মল্লম্ ।
 (ঘ) সমাধি পাদের যে কোনোও পাঁচটি সূত্র লিখুন ।
 (ঙ) নিম্নলিখিত প্রশ্ন গুলির ব্যাসভাষ্যানুসার ব্যাখ্যা করুন ।
 (১) চিত্ত বিষয়ক ভিন্ন-ভিন্ন ভ্রান্তি যুক্ত মান্যতাকে উল্লেখ করে সমাধান করুন ।
 (২) বাসনার সংগ্রহের কারণ গুলি বিস্তার পূর্বক আলোচনা করুন ।
 (৩) কৈবল্যের স্বরূপ কত প্রকারের উল্লেখ করা হয়েছে, সেটি বিস্তার পূর্বক বর্ণনা করুন ।
 (৪) ধর্মমেঘ সমাধির ফল সম্পর্কে বিস্তার পূর্বক আলোচনা করুন ।
 (৫) আত্মা বিষয়ক জিজ্ঞাসা কাদের হয় ? কি ধরনের হয় এবং কাদের এই জিজ্ঞাসার নিবৃত্তি হয় ? বিস্তার পূর্বক আলোচনা করুন ।

।। সমাপ্ত ।।



যোগদর্শনম্ সমাধিপাদঃ

১. অথ যোগানুশাসনম্ ।
২. যোগশ্চিত্তবৃত্তিনিরোধঃ ।
৩. তদা দৃষ্ট্বঃ স্বরূপে'বস্থানম্ ।
৪. বৃত্তিসারূপ্যমিতরত্র ।
৫. বৃত্তয়ঃ পঞ্চতয়ঃ ক্লিষ্টাক্লিষ্টাঃ ।
৬. প্রমাণবিপর্যয়বিকল্পনিদ্রাস্মৃতয়ঃ ।
৭. প্রত্যক্ষানুমানাগমাঃ প্রমাণানি ।
৮. বিপর্যয়ো মিথ্যাজ্ঞানমতদ্রূপপ্রতিষ্ঠম্ ।
৯. শব্দজ্ঞানানুপাতী বস্তুশূন্যো বিকল্পঃ ।
১০. অভাবপ্রত্যয়ালম্বনা বৃত্তির্নিদ্রা ।
১১. অনুভূতবিষয়াসম্প্রমোষঃ স্মৃতিঃ ।
১২. অভ্যাসবৈরাগ্যাভ্যাং তন্নিরোধঃ ।
১৩. তত্র স্থিতৌ যত্নো'ভ্যাসঃ ।
১৪. স তু দীর্ঘকালনৈরন্তর্যসংকারাসেবিতো দৃঢ়ভূমিঃ ।
১৫. দৃষ্টানুশ্রবিকবিষয়বিতৃষ্ণ্যস্য বশীকারসংজ্ঞা বৈরাগ্যম্ ।
১৬. তৎপরং পুরুষখ্যাতে'গুণবৈতৃষ্ণ্যম্ ।
১৭. বিতর্কবিচারানন্দাস্মিতারূপানুগমাৎ সম্প্রজ্ঞাতঃ ।
১৮. বিরামপ্রত্যয়াভ্যাসপূর্বঃ সংস্কারশেষো'ন্যঃ ।
১৯. ভবপ্রত্যয়ো বিদেহ প্রকৃতিলয়ানাম্ ।
২০. শ্রদ্ধাবীর্য়স্মৃতিসমাধিপ্রজ্ঞাপূর্বক ইতরেষাম্ ।
২১. তীব্রসংবেগানামাসন্নঃ ।
২২. মৃদুমধ্যাধিমাত্রত্বাৎ ততো'পি বিশেষঃ ।
২৩. ঈশ্বরপ্রণিধানাদ্বা ।
২৪. ক্লেশকর্মবিপাকার্শয়েরপরামৃষ্টঃ পুরুষবিশেষ ঈশ্বরঃ ।
২৫. তত্র নিরতিশয়ং সর্বজ্ঞবীজম্ ।
২৬. স এষ পূর্বেষামপি গুরুঃ কালেনানবচ্ছেদাৎ ।
২৭. তস্য বাচকঃ প্রণবঃ ।
২৮. তজ্জপস্তদর্থভাবনম্ ।

২৯. ততঃ প্রত্যক্চেতনাধিগমোঃপ্যন্তরায়াভাবশ্চ ।
 ৩০. ব্যাধিস্ত্যানসংশয়প্রমাদালস্যাবিরতিভ্রান্তির্দর্শনালঙ্ঘনমিকত্বানবস্থিতত্বানি
 চিত্তবিক্ষেপান্তেষুন্তরায়াঃ ।
 ৩১. দুঃখদৌর্মনস্যাস্প্রমেজয়ত্বাসপ্রস্থাসা বিক্ষেপসহভুবঃ ।
 ৩২. তৎপ্রতিষেধার্থমেকতত্ত্বাভ্যাসঃ ।
 ৩৩. মৈত্রীকরুণামুদিতোপেক্ষাণাং সুখদুঃখপুণ্যাপুণ্যবিষয়াণাং ভাবনা-
 তশ্চিত্তপ্রসাদনম্ ।
 ৩৪. প্রচ্ছদনবিধারণাভ্যাং বা প্রাণস্য ।
 ৩৫. বিষয়বতী বা প্রবৃত্তিরুৎপন্নামনসঃ স্থিতিনিবন্ধনী ।
 ৩৬. বিশোক বা জ্যোতিষ্মতী ।
 ৩৭. বীতরাগবিষয়ং বা চিত্তম্ ।
 ৩৮. স্বপ্ননিদ্রাজ্ঞানালম্বনং বা ।
 ৩৯. যথাভিমতধ্যানাদ্বা ।
 ৪০. পরমাণুপরমমহত্ত্বাত্তোঃস্য বশীকারঃ ।
 ৪১. ক্ষীণবৃত্তেরভিজাতস্যেব মণেৰ্হীত্ৱহণগ্ৰাহ্যেষু তৎস্থতদঞ্জনতা
 সমাপত্তিঃ ।
 ৪২. তত্র শব্দার্থজ্ঞানবিকল্পৈঃ সংকীর্ণা সবিতৰ্কা সমাপত্তিঃ ।
 ৪৩. স্মৃতিপরিশুদ্ধৌ স্বরূপশূন্যেবার্থমাত্রনির্ভাসা নির্বিতৰ্কা ।
 ৪৪. এতয়ৈব সবিচারানির্বিচারান্ চ সূক্ষ্মবিষয়া ব্যাখ্যাতা ।
 ৪৫. সূক্ষ্মবিষয়ত্বং চালিঙ্গপর্যবসানম্ ।
 ৪৬. তা এব সবীজঃ সমাধিঃ ।
 ৪৭. নির্বিচারবৈশারদ্যেঃধ্যানপ্রসাদঃ ।
 ৪৮. ঋতন্তরা তত্র প্রজ্ঞা ।
 ৪৯. শ্রুতানুমানপ্রজ্ঞাভ্যামন্যবিষয়া বিশেষার্থত্বাৎ ।
 ৫০. তজ্জঃ সংস্কারোঃন্যসংস্কারপ্রতিবন্ধী ।
 ৫১. তস্যাপি নিরোধে সৰ্বনিরোধান্নির্বীজঃ সমাধিঃ ।

। ইতি প্রথম সমাধিপাদ ।।



দ্বিতীয় সাধনপাদ

১. তপঃস্বাধ্যায়েশ্বরপ্রণিধানানি ক্রিয়াযোগঃ ।
২. সমাধিভাবনার্থঃ ক্লেশতনুকরণার্থশ্চ ।
৩. অবিদ্যাঃ স্মিতারাগদ্বেষাভিনিবেশাঃ পঞ্চঃ ক্লেশাঃ ।
৪. অবিদ্যা ক্ষেত্রমুত্তরেমাং প্রসুপ্ততনুবিচ্ছিন্নোদারাগাম্ ।
৫. অনিত্যশুচিদুঃখানামসু নিত্যশুচিসুখান্নখ্যাতিরবিদ্যা ।
৬. দৃগদর্শনশক্ত্যোরেকাত্মতেবাস্মিতা ।
৭. সুখানুশয়ী রাগঃ ।
৮. দুঃখানুশয়ী দ্বেষঃ ।
৯. স্বরসবাহী বিদুষোঽপি তথা রূঢ়োঽভিনিবেশঃ ।
১০. তে প্রতিপ্রসবহেয়াঃ সূক্ষ্মাঃ ।
১১. ধ্যানহেয়াস্তদ্ব্যস্তয়ঃ ।
১২. ক্লেশমূলঃ কর্মাশয়ো দৃষ্টাদৃষ্টজন্মবেদনীয়ঃ ।
১৩. সতি মূলে তদ্বিপাকো জাত্যায়ুর্ভোগাঃ ।
১৪. তে হ্লাদপরিতাপফলাঃ পুণ্যাপুণ্যহেতুত্বাৎ ।
১৫. পরিণামতাপসংস্কারদুঃখৈগুণবৃত্তিবিরোধাচ্চ দুঃখমেব সর্বং বিবেকিনঃ ।
১৬. হেয়ং দুঃখমনাগতম্ ।
১৭. দ্বষ্টদৃশ্যয়োঃ সংযোগো হেয়হেতুঃ ।
১৮. প্রকাশক্রিয়াস্থিতিশীলং ভূতেন্দ্রিয়াত্মকং ভোগাপবর্গার্থং দৃশ্যম্ ।
১৯. বিশেষাবিশেষলিপ্সমাত্রালিপ্সানি গুণপর্বাণি ।
২০. দ্বষ্টা দৃশিমাত্রঃ শুদ্ধোঽপিপ্রত্যয়ানুপশ্যঃ ।
২১. তদর্থ এব দৃশ্যস্যাত্মা ।
২২. কৃতার্থম্প্রতি নষ্টমপ্যনষ্টং তদন্যসাধারণত্বাৎ ।
২৩. স্বস্বামিশক্ত্যাঃ স্বরূপোপলব্ধি হেতুঃ সংযোগঃ ।
২৪. তস্য হেতুরবিদ্যা ।
২৫. তদভাবাৎ সংযোগাভাবো হানং তদ্বশেঃ কৈবল্যম্ ।
২৬. বিবেকখ্যাতিরবিপ্লবা হানোপায়ঃ ।
২৭. তস্য সপ্তধা প্রাপ্তভূমিঃ প্রজ্ঞা ।
২৮. যোগাঙ্গানুষ্ঠানাদশুদ্ধিক্ষয়ে জ্ঞানদীপ্তিরাবিবেকখ্যাতেঃ ।
২৯. যমনিয়মাসনপ্রাণায়ামপ্রত্যাহারধারণাধ্যানসমাধয়োঽষ্টাবঙ্গানি ।
৩০. অহিংসাসত্যাস্তেয়ব্রহ্মচর্যাপরিগ্রহা যমাঃ ।
৩১. জাতিদেশকালসময়ানবচ্ছিন্নাঃ সার্বভৌমা মহাব্রতম্ ।

৩২. শৌচসন্তোষতপঃস্বাধ্যায়েশ্বরপ্রণিধানানি নিয়মাঃ ।
 ৩৩. বিতর্কবাধনে প্রতিপক্ষভাবনম্ ।
 ৩৪. বিতর্ক হিংসাদয়ঃ কৃতকারিতানুমোদিতা লোভক্রোধমোহপূর্বকা
মৃদুমধ্যাধিমাত্রা দুঃখাজ্ঞানান্তফলা ইতি প্রতিপক্ষভাবনম্ ।
 ৩৫. অহিংসাপ্রতিষ্ঠায়াং তৎসন্নিধৌ বৈরত্যাগঃ ।
 ৩৬. সত্যপ্রতিষ্ঠায়াং ক্রিয়াফলাশ্রয়ত্বম্ ।
 ৩৭. অস্তেয়প্রতিষ্ঠায়াং সর্বরত্নোপস্থানম্ ।
 ৩৮. ব্রহ্মচর্যপ্রতিষ্ঠায়াং বীর্যলাভঃ ।
 ৩৯. অপরিগ্রহস্থৈর্যে জন্মকথন্তাসম্বোধঃ ।
 ৪০. শৌচাৎস্বাপ্নজুগুপ্সা পরৈরসংসর্গঃ ।
 ৪১. সত্ত্বশুদ্ধিসৌমনসৈকাগ্রেদ্রিয়জয়াশ্চদর্শনযোগ্যত্বানি চ ।
 ৪২. সন্তোষাদনুত্তমসুখলাভঃ ।
 ৪৩. কায়েদ্রিয়সিদ্ধিরশুদ্ধিক্ষয়ান্তপসঃ ।
 ৪৪. স্বাধ্যায়াদিষ্টদেবতাসম্প্রয়োগঃ ।
 ৪৫. সমাধিসিদ্ধিরীশ্বরপ্রণিধানাৎ ।
 ৪৬. স্থিরসুখমাসনম্ ।
 ৪৭. প্রয়ত্নশৈথিল্যানন্তসমাপত্তিভ্যাম্ ।
 ৪৮. ততো দ্বন্দ্বানভিঘাতঃ ।
 ৪৯. তস্মিন্ সতি শ্বাসপ্রশ্বাসযোগ্যতিবিচ্ছেদঃ প্রাণায়ামঃ ।
 ৫০. বাহ্যাত্তন্তরন্তস্তব্ভিত্তির্দেশকালসংখ্যাভিঃ পরিদৃষ্টৌ দীর্ঘসূক্ষ্মঃ ।
 ৫১. বাহ্যাত্তন্তরবিষয়াক্ষেপী চতুর্থঃ ।
 ৫২. ততঃ ক্ষীয়তে প্রকাশাবরণম্ ।
 ৫৩. ধারণাসু চ যোগ্যতা মনসঃ ।
 ৫৪. স্ববিষয়াসম্প্রয়োগে চিত্তস্য স্বরূপানুকার ইবেদ্রিয়াণাং প্রত্যাহারঃ ।
 ৫৫. ততঃ পরমা বশ্যতেদ্রিয়াণাম্ ।
- । ইতি দ্বিতীয় সাধনপাদ ।।



তৃতীয় বিভূতিপাদ

১. দেশবন্ধুশ্চিত্তস্য ধারণা ।
২. তত্র প্রত্যয়েকতানতা ধ্যানম্ ।
৩. তদেবার্থমাত্রনির্ভাসং স্বরূপশূণ্যমিব সমাধিঃ ।
৪. ত্রয়মেকত্র সংয়মঃ ।
৫. তজ্জয়াৎ প্রজ্ঞালোকঃ ।
৬. তস্য ভূমিষু বিনিয়োগঃ ।
৭. ত্রয়মন্তরঙ্গং পূর্বেভ্যঃ ।
৮. তদপি বহিরঙ্গং নিবীজস্য ।
৯. ব্যুত্থাননিরোধসংস্কারয়োরভিভবপ্রাদুর্ভাবৌ নিরোধক্ষণচিহ্নানুয়ো
নিরোধপরিণামঃ ।
১০. তস্য প্রশান্তবাহিতা সংস্কারাৎ ।
১১. সর্বার্থতৈকাগ্নতয়োঃ ক্ষয়োদয়ৌ চিত্তস্য সমাধিপরিণামঃ ।
১২. ততঃ পুনঃ শান্তোদিতৌ তুল্যপ্রত্যয়ৌ চিত্তসৈকাগ্নতা পরিণামঃ ।
১৩. এতেন ভূতেন্দ্রিয়েষু ধর্মলক্ষণাবস্থাপরিণামা ব্যাখ্যাতাঃ ।
১৪. শান্তোদিতাব্যপদেশ্যধর্মানুপাতী ধর্মী ।
১৫. ক্রমান্যত্বং পরিণামান্যত্বে হেতুঃ ।
১৬. পরিণামত্রয়সংয়মাদতীতানাগতজ্ঞানম্ ।
১৭. শব্দার্থপ্রত্যয়ানামিতরেতরাধ্যাসাৎ সংকরস্তৎ প্রবিভাগসংয়মাৎ সর্ব-
ভূতরূতজ্ঞানম্ ।
১৮. সংস্কারসাক্ষাৎকরণাৎ পূর্বজাতিজ্ঞানম্ ।
১৯. প্রত্যয়স্য পরচিত্তজ্ঞানম্ ।
২০. ন চ তৎসালম্বনং তস্যাবিষয়ীভূতত্বাৎ ।
২১. কায়রূপসংয়মাৎ তদগ্রাহ্যশক্তিস্তস্তে চক্ষুঃপ্রকাশাসম্প্রয়োগে'ন্তর্ধানম্ ।
২২. সোপক্রমং নিরূপক্রমং চ কর্ম তৎসংয়মাদপরাত্তজ্ঞানমরিষ্টেভ্যো বা ।
২৩. মৈত্র্যাदिষু বলানি ।
২৪. বলেষু হস্তিবলাদীনি ।
২৫. প্রবৃত্ত্যালোকন্যাসাৎ সূক্ষ্মব্যবহিতবিপ্রকৃষ্টজ্ঞানম্ ।
২৬. ভুবনজ্ঞানং সূর্যে সংয়মাৎ ।
২৭. চন্দ্রে তারাব্যুহজ্ঞানম্ ।
২৮. ধ্রুবে তদগতিজ্ঞানম্ ।
২৯. নাভিচক্রে কায়ব্যুহজ্ঞানম্ ।
৩০. কণ্ঠকূপে ক্ষুৎপিপাসানিবৃত্তিঃ ।

৩১. কূর্মনাড্যাং স্তৈর্যম্ ।
৩২. মূর্ধজ্যোতিষি সিদ্ধদর্শনম্ ।
৩৩. প্রাতিভাদ্ বা সর্বম্ ।
৩৪. হৃদয়ে চিত্তসংবিৎ ।
৩৫. সত্ত্বপুরুষয়োরত্যন্তাসংকীর্ণয়োঃ প্রত্যয়াবিশেষো ভোগঃ পরার্থত্বাৎ স্বার্থসংয়মাৎ পুরুষজ্ঞানম্ ।
৩৬. ততঃ প্রাতিভপ্রাবণবেদনাদর্শাস্বাদবার্তা জায়ন্তে ।
৩৭. তে সমাধাবুপসর্গা ব্যুত্থানে সিদ্ধয়ঃ ।
৩৮. বন্ধকারণশৈথিল্যাৎ প্রচারসংবেদনাচ্চ চিত্তস্য পরশরীরাবেশঃ ।
৩৯. উদানজয়াজ্জলপঙ্ককণ্টকাদিমুসঙ্গ উৎক্রান্তিশ্চ ।
৪০. সমানজয়াজ্জলনম্ ।
৪১. শ্রোত্রাকাশয়োঃ সম্বন্ধসংয়মাদিব্যং শ্রোত্রম্ ।
৪২. কায়াকাশয়োঃ সম্বন্ধসংয়মাল্লঘুতূলসমাপত্তেশ্চাকাশগমনম্ ।
৪৩. বহিরকল্লিতাবৃত্তির্মহাবিদেহা ততঃ প্রকাশাবরণক্ষয়ঃ ।
৪৪. স্থূলস্বরূপসূক্ষ্মানুয়ার্থবৃত্তসংয়মাদ্ ভূতজয়ঃ ।
৪৫. ততোঽগ্নিমাদিপ্রাদুর্ভাবঃ কায়সম্পত্তদ্বর্মানভিঘাতশ্চ ।
৪৬. রূপলাবণ্যবলবজ্রসংহননত্বানি কায়সম্পৎ ।
৪৭. গ্রহণস্বরূপাস্মিতানুয়ার্থবৃত্তসংয়মাদ্ ইন্দ্রিয়জয়ঃ ।
৪৮. ততো মনোজবিত্ত্বং বিকরণভাবঃ প্রধানজয়শ্চ ।
৪৯. সত্ত্বপুরুষান্যতাখ্যাতিমাত্রস্য সর্বভাবাধিষ্ঠাতৃত্বং সর্বজ্ঞাতৃত্বং চ ।
৫০. তদ্বৈরাগ্যাদপি দোষবীজক্ষয়ে কৈবল্যম্ ।
৫১. স্থান্যপনিমন্ত্ৰণে সঙ্গস্ময়াকরণং পুনরনিষ্টপ্রসঙ্গাৎ ।
৫২. ক্ষণতৎক্রময়োঃ সংয়মাদ্বিবেকজং জ্ঞানম্ ।
৫৩. জাতিলক্ষণদৈশৈরন্যতানবচ্ছেদাতুল্যয়োস্ততঃ প্রতিপত্তিঃ ।
৫৪. তারকং সর্ববিষয়ং সর্বথা বিষয়মক্রমং চেতি বিবেকজং জ্ঞানম্ ।
৫৫. সত্ত্বপুরুষয়োঃ শুদ্ধিসাম্যে কৈবল্যমিতি ।

।।তৃতীয় বিভূতিপাদ।।

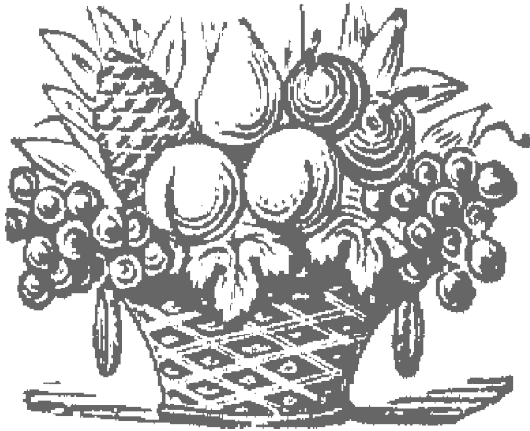


কৈবল্যপাদ

১. জন্মৌষধিমন্ত্রতপঃসমাধিজাঃ সিদ্ধয়ঃ ।
২. জাত্যন্তরপরিণামঃ প্রকৃত্যাপূরাৎ ।
৩. নিমিত্তমপ্রয়োজকং প্রকৃতীনাং বরণভেদস্তু ততঃ ক্ষেত্রিকবৎ ।
৪. নির্মাণচিত্তান্যস্মিতামাত্রাৎ ।
৫. প্রবৃত্তিভেদে প্রয়োজকং চিত্তমেকমনেকেষাম্ ।
৬. তত্র ধ্যানজমনাশয়ম্ ।
৭. কৰ্মাশু ক্লান্ধকৃষ্ণং যোগিনস্ত্রিবিধমিতরেষাম্ ।
৮. ততস্তদ্বিপাকানুগুণানামেবাভিব্যক্তির্বাসনানাম্ ।
৯. জাতিদেশকালব্যবহিতানাং প্যানন্তয়ং স্মৃতিসংস্কারয়োরেকরূপত্বাৎ ।
১০. তাসামনাদিত্বং চাশিষো নিত্যত্বাৎ ।
১১. হেতুফলাশ্রয়ালম্বনৈঃ সংগৃহীতত্বাদেষামভাবে তদভাবঃ ।
১২. অতীতানাগতং স্বরূপতো'স্ত্যধ্বভেদাদ্ ধৰ্মাণাম্ ।
১৩. তে ব্যক্তসূক্ষ্মা গুণাত্মানঃ ।
১৪. পরিণামৈকত্বাদ্ধস্তুতত্ত্বম্ ।
১৫. বস্তুসাম্যে চিত্তভেদাত্তয়োৰ্বিভক্তঃ পন্থাঃ ।
১৬. ন চৈকচিত্ততত্ত্বং বস্তু তদপ্রমাণকং তদা কিং স্যাৎ ।
১৭. তদুপরাগাপেক্ষিত্বাচ্চিত্তস্য বস্তুজ্ঞাতাত্ত্বাতম্ ।
১৮. সদাজ্ঞাতাশ্চিত্তবৃত্তয়স্তৎপ্রভোঃ পুরুষস্যাপরিণামিত্বাৎ ।
১৯. ন তৎস্বাভাসং দৃশ্যত্বাৎ ।
২০. একসময়ে চোভয়ানবধারণম্ ।
২১. চিত্তান্তরদৃশ্যে বুদ্ধিবুদ্ধেরতিপ্রসঙ্গঃ স্মৃতিসংকরশ্চ ।
২২. চিত্তেরপ্রতিসংক্রমায়ান্তদাকারাপত্তৌ স্ববুদ্ধিসংবেদনম্ ।
২৩. দ্বষ্টদৃশ্যোপরক্তং চিত্তং সৰ্বার্থম্ ।
২৪. তদসংখ্যেয়বাসনাভিশ্চিত্রমপি পরার্থং সংহত্যকারিত্বাৎ ।
২৫. বিশেষদর্শিন আত্মভাবভাবনাবিনিবৃত্তিঃ ।
২৬. তদা বিবেকনিম্নং কৈবল্যপ্রাপ্তভারং চিত্তম্ ।
২৭. তচ্ছিদ্ৰেষু প্রত্যয়ান্তরাগি সংস্কারেভ্যঃ ।

- ২৮ . হানমেঘাং ক্লেশবদুত্তম্ ।
 ২৯ . প্রসংখ্যানেপ্যকু সীদস্য সর্বথা বিবেকখ্যাতেধর্মমেঘঃ সমাধিঃ ।
 ৩০ . ততঃ ক্লেশকর্মনিবৃতিঃ ।
 ৩১ . তদা সর্বা বরণমলাপেতস্য জ্ঞানস্যানন্ত্যাজ্জ্যেয়মল্লম্ ।
 ৩২ . ততঃ কৃতার্থানাং পরিণামক্রমসমাপ্তিগুণানাম্ ।
 ৩৩ . ক্ষণপ্রতিযোগী পরিণামাপরান্তনির্থাহ্যঃ ক্রমঃ ।
 ৩৪ . পুরুষার্থশূন্যানাং গুণানাং প্রতিপ্রসবঃ কৈবল্যং স্বরূপপ্রতিষ্ঠা বা চিতিশক্তিরিতি ।

ইতি কৈবল্যপাদ



মুখস্থ রাখার যোগ্য ব্যাসভাষ্যের কিছু পংক্তি-

(১) চিত্তিশক্তিরপরিণামিন্যপ্রতিসংক্রমা দর্শিতবিষয়া শুদ্ধা চানন্তা চ ।। (১/২)

অর্থ - চেতন পুরুষ পরিণাম হতে রহিত, নির্লেপ, বিষয়ের দৃষ্টা, পবিত্র এবং বিনাশ রহিত হয় ।।

(২) ইন্দ্রিয়প্রণালিকয়া চিত্তস্য বাহ্যবস্তুপরাগাত্তদ্বিষয়া সামান্যবিশেষাত্মনোঃস্বার্থস্য বিশেষাবধারণপ্রধানা বৃত্তিঃ প্রত্যক্ষং প্রমাণম্ ।। (১/৭)

অর্থ - ইন্দ্রিয় প্রণালীর দ্বারা চিত্ত বাহ্য বস্তুর সাথে সম্পর্ক হলে সামান্য ও বিশেষাত্মক পদার্থের বিশেষ ধর্মের নিশ্চয়াত্মক বৃত্তিকে ‘প্রত্যক্ষ প্রমাণ’ বলে ।।

(৩) অনুমেয়স্য তুল্যজাতীয়েষু বৃত্তো ভিন্নজাতীয়েভ্যো ব্যাবৃত্তঃ সম্বন্ধো যন্তদ্বিষয়া সামান্যাবধারণপ্রধানা বৃত্তিরনুমানম্ ।। (১/৭)

অর্থ - অনুমান করার যোগ্য তুল্য জাতীয় দুটি বস্তুতে এক সমান বিদ্যমান যে সম্বন্ধ এবং ভিন্ন জাতীয় দুটি বস্তুতে অসমান বিদ্যমান যে সম্বন্ধ, সেই সম্বন্ধকে অনুভব করার পর পদার্থের মধ্যে বিদ্যমান সামান্য ধর্মকে প্রধান ভাবে গ্রহণ করিয়ে থাকে যে বৃত্তি, সেই বৃত্তিকে ‘অনুমান প্রমাণ’ বলা হয় । যেমন- গতি পূর্বক কোন ব্যক্তির দেশান্তরে গমনকে দেখে দেশান্তর প্রাপ্ত চন্দ্র, তারাকে দেখে গতির অনুমান করা হয় । আবার পর্বত ইত্যাদিকে স্থানান্তর হতে কদাপি না দেখলে অনুমান করা হয় যে- এগুলিতে গতি নেই ।।

(৪) আপ্তেন দৃষ্টোঃসুমিতো বার্থঃ পরত্র স্ববোধসংক্রান্তয়ে শব্দেনোপদিশ্যতে, শব্দান্তদর্থবিষয়া বৃত্তিঃ শ্রোতুরাগমঃ ।। (১/৭)

অর্থ - আপ্ত পুরুষের দ্বারা প্রত্যক্ষ অথবা অনুমান দ্বারা জ্ঞাত পদার্থের জ্ঞানকে অন্য ব্যক্তিকে দেওয়ার জন্য শব্দ দ্বারা উপদেশ করা হয় সেই উপদেশ দ্বারা শ্রোতার পদার্থ বিষয়ক যে বৃত্তি উৎপন্ন হয়, সেটি শ্রোতার জন্য ‘আগাম প্রমাণ’ হয় ।।

(৫) প্রাপ্তং প্রাপণীয়ং, ক্ষীণাঃ ক্ষেতব্যাঃ ক্লেশাঃ, ছিন্নঃ স্নিষ্টপর্বা ভবসংক্রমঃ, যস্যাবিচ্ছেদাজ্জনিভা ম্রিয়তে মৃত্বা চ জায়ত ইতি ।। (১/১৬)

অর্থ - যা প্রাপ্ত করার যোগ্য সেটি প্রাপ্ত হয়ে গেছে আর প্রাপ্তব্য কিছু নেই, নষ্ট করার যোগ্য ক্লেশ নষ্ট হয়ে গেছে, ছিন্ন করার যোগ্য সংসার চক্র ছিন্ন হয়ে গেছে; যেটি ছিন্ন না হলে জন্মের পর মৃত্যু এবং মৃত্যুর পর জন্ম হত ।।

(৬) জ্ঞানস্যৈব পরাকাষ্ঠা বৈরাগ্যম্ ।। (১/১৬)

অর্থ - জ্ঞানের অস্তিম সীমা অর্থাৎ উঁচু অবস্থার নামই ‘বৈরাগ্য’ ।।

(৭) শ্রদ্ধা চেতসঃ সংপ্রসাদঃ । সা হি জননীৰ কল্যাণী যোগিনং পাতি ।। (১/২০)

অর্থ - শ্রদ্ধা অর্থাৎ চিত্তের অভিরুচি অর্থাৎ সত্যকে ধারণ করার তীব্র ইচ্ছা । এই শ্রদ্ধা মায়ের মত কল্যাণকারিণী হয়ে যোগীকে রক্ষা করে ।।

(৮) প্রণিধানাঙ্কুতিবিশেষাদাবর্তিত ঈশ্বরস্তমনুগ্হাত্যভিধ্যানমাত্রেণ ।। (১/২৩)

অর্থ - প্রণিধান অর্থাৎ (ঈশ্বরের প্রতি) ভক্তি বিশেষ দ্বারা ঈশ্বর আমাদের অনুকূল হয়ে যায় এবং ঈশ্বর কেবলমাত্র নিজ সংকল্প দ্বারা সেই যোগীকে অনুগ্রহ অর্থাৎ সহায়তা করে ।।

(৯) তস্যাংমানুগ্হাহাভাবেহপি ভূতানুগ্হহঃ প্রয়োজনম্, জ্ঞানধর্মোপদেশেন কল্পপ্রলয়মহাপ্রলয়েষু সংসারিণঃ পুরুষানুদ্ধরিশ্যামীতি ।। (১/২৫)

অর্থ - ঈশ্বরের নিজের কোন স্বার্থ না থাকলেও জীবের কল্যাণ করারই তার প্রয়োজন । এই জন্য জ্ঞান এবং ধর্মের উপদেশ দ্বারা প্রত্যেক সৃষ্টিতে “সাংসারিক জীবের উদ্ধার করিব” এটাই তার প্রয়োজন ।।

(১০) স্বাধ্যায়াদ্যোগমাসীত যোগাৎ স্বাধ্যায়মাসতে । স্বাধ্যায়যোগসংপত্ত্যা পরমাংমা প্রকাশতে ।। (১/২৮)

অর্থ - ওতম্ জপের মাধ্যমে বৃত্তি নিরোধ করিবে এবং বৃত্তি নিরোধের দ্বারা ওতম্-এর জপ করিবে । এই দুটির সামর্থ্যে পরমাত্মা প্রকাশিত হয় ।।

(১১) প্রজ্ঞাপ্রসাদমারুহ্য অশোচ্যঃ শোচতো জনান্ । ভূমিষ্ঠানিব শৈলস্থঃ সর্বানপ্রাজ্ঞোহনুপশ্যতি ।। (১/৪৭)

অর্থ - যোগী উৎকৃষ্ট জ্ঞানে আরুহ্য হয়ে শোকহীন যোগী, শোকমগ্ন প্রাণীদের এরকম দেখেন যেরকম পর্বতে স্থিত ব্যক্তি, ভূমিতে স্থিত ব্যক্তিদের দেখে ।।

(১২) আগমেনানুমানেন ধ্যানাভ্যাসরসেন চ । ত্রিধা প্রকল্পয়নপ্রজ্ঞাং লভতে যোগমুত্তমম্ ।। (১/৪৮)

অর্থ - যোগী বেদ ইত্যাদি সত্য শাস্ত্রের পঠন এবং শ্রবণ দ্বারা, সেই শাস্ত্রের মনন এবং নিদিধ্যাসন দ্বারা তিন প্রকারের বুদ্ধিকে উৎপন্ন করে উত্তম যোগকে প্রাপ্ত করে ।।

দ্বিতীয় পাদ

(১৩) নাতপস্বিনো যোগঃ সিধ্যতি ।। (২/১)

অর্থ - অতপস্বী ব্যক্তির যোগ কখনো সিদ্ধ হয় না ।।

(১৪) স্বাধ্যায়ঃ প্রণবাদিপবিত্রাণাং জপো মোক্ষশাস্ত্রাধ্যয়নং বা ।। (২/১)

অর্থ - স্বাধ্যায় অর্থাৎ প্রণব ইত্যাদি পবিত্র মন্ত্রের জপ এবং মোক্ষ শাস্ত্রের অধ্যয়ন করা ।।

(১৫) ঈশ্বরপ্রণিধানং সর্বক্রিয়াণাং পরমগুরাবর্পণং তৎফলসংন্যাসো বা ।। (২/১)

অর্থ - ঈশ্বরপ্রণিধান' অর্থাৎ সকল কর্মকে এবং সকল ধন-সম্পত্তি শরীর ইত্যাদিকে পরম গুরু ঈশ্বরকে অর্পিত করে দেওয়া এবং তার কোনও লৌকিক ফলের ইচ্ছা না করা ।।

(১৬) স্থানাদ্বীজাদুপষ্টস্তান্নিঃস্যান্নান্নিধনাদপি ।

কায়মাধেয়শৌচত্বাৎপণ্ডিতা হ্যশুচিং বিদুঃ ।। (২/৫)

অর্থ - উদর স্থানের জন্য, উপাদান কারণ রজ-বীৰ্য হওয়ার জন্য, রস, রক্ত ইত্যাদির আশ্রয় হওয়ার জন্য, মল-মূত্র ইত্যাদি নিরন্তর নিঃসরণ হওয়ার জন্য, মৃত্যু হওয়ার জন্য তথা সদা শুদ্ধির অপেক্ষা থাকায় বিদ্বানরা এই শরীরকে অশুদ্ধ মনে করেন ।।

(১৭) তদ্বিপাকস্যৈব দেশকালনিমিত্তানবধারণাদিয়ং কর্মগতিবিচিত্রা দুর্বিজ্ঞানা চেতি ।। (২/১৩)

অর্থ - (মনুষ্য দ্বারা) কর্ম ফলের দেশ, কাল এবং নিমিত্তের নিশ্চয় না হওয়ায় এই কর্মের গতি এতই বিচিত্র এবং কঠিন যে এটা জানা সম্ভব নয়, (এটিকে সম্পূর্ণ রূপে ঈশ্বরই জানেন) ।।

(১৮) বিষয়সুখং চাবিদ্যেতি ।। (২/১৫)

অর্থ - বিষয় সুখকে দুঃখ রহিত মনে করাই অবিদ্যা ।।

(১৯) য়া ভোগেষ্বিন্দ্রিয়াণাং তৃপ্তেরূপশান্তিস্তৎসুখম্ ।। (২/১৫)

অর্থ - বিষয়কে ভোগ করার পর ইন্দ্রিয়ের যে তৃপ্তি হয় সেটিকে সাংসারিক সুখ বলা হয় ।।

(২০) য়া লৌল্যাদনুপশান্তিস্তদুঃখম্ ।। (২/১৫)

অর্থ - ইন্দ্রিয়ের চঞ্চলতার কারণে বিষয় হতে যে অনুপশান্তি হয় সেটিকে দুঃখ বলা হয় ।।

(২১) অক্ষিপাত্রকল্লো হি বিদ্বানিতি ।। (২/১৫)

অর্থ - কোন ঔনের ছোট অংশ চোখে পড়ে গেলে যেমন ব্যক্তি বিচলিত হয়ে যায় কিন্তু অন্য শরীরে তার কোন প্রভাব পড়ে না । সেই রকম যোগীদেরই এই সকল বিষয় সুখকেও দুঃখদায়ক মনে হয়, অন্য ব্যক্তিদের নয় ।।

(২২) দুঃখবহুলঃ সংসারো হেয়ঃ ।। (২/১৫)

অর্থ - দুঃখ বহুল সংসার' ত্যাগ করার যোগ্য ।।

(২৩) প্রধানপুরুষয়োঃ সংযোগো হেয়হেতুঃ ।। (২/১৫)

অর্থ - প্রধান ও পুরুষের সম্বন্ধ দুঃখের কারণ ।।

(২৪) সংযোগস্যাত্যন্তিকী নিবৃতির্হানম্ ।। (২/১৫)

অর্থ - প্রধান ও পুরুষের মধ্যে বিদ্যমান সম্বন্ধের সম্পূর্ণ নিবৃতি হাওয়াই 'মোক্ষ' ।।

(২৫) হানোপায়ঃ সম্যগদর্শনম্ ।। (২/১৫)

অর্থ - যথার্থ জ্ঞান মোক্ষ লাভের উপায় ।।

(২৬) তত্রাহিংসা সর্বথা সর্বদা সর্বভূতানামনভিদ্বেহঃ ।। (২/৩০)

অর্থ - সর্বথা সর্বদা সকল প্রাণীর সাথে প্রীতির সহিত ব্যবহার করাকে 'অহিংসা' বলা হয় ।।

(২৭) সত্যং যথার্থে বাঙ্ঘনসে । যথা দৃষ্টং যথানুমিতং যথা শ্রুতং তথা বাঙ্ঘনশ্চেতি ।। (২/৩০)

অর্থ - বস্তু যেমন রয়েছে সেই রকম বাণী এবং মনে হওয়া অর্থাৎ যেরকম দর্শন করেছে, অনুমান দ্বারা জেনেছে এবং শুনেছে সেরকমই মন এবং বাণীতে হওয়াকে সত্য বলা হয় ।।

(২৮) স্তেয়মশাস্ত্রপূর্বকং দ্রব্যাকাং পরতঃ স্বীকরণম্, তৎপ্রতিষেধঃ পুনরল্লহারুপমস্তেয়মিতি ।। (২/৩০)

অর্থ - অবৈধ ভাবে অন্যের পদার্থকে গ্রহণ করাকে 'স্তেয়' অর্থাৎ চুরি বলা হয় । একে ছেড়ে দেওয়াকে অর্থাৎ অন্যের পদার্থকে অবৈধভাবে অভিলাষা না

করাকে ‘অস্তেয়’ চুরি ত্যাগ বলা হয় । ।

(২৯) ব্রহ্মচর্যং গুপ্তেন্দ্রিয়স্যোপস্থস্য সংযমঃ । । (২/৩০)

অর্থ - উপস্থ ইন্দ্রিয়কে সংযম রাখাকে ব্রহ্মচর্য বলা হয় । ।

(৩০) বিষয়াণামর্জনরক্ষণক্ষয়সঙ্গহিংসাদোষদর্শনাদস্বীকরণমপরিগ্রহঃ । । (২/৩০)

অর্থ - বিষয়বস্তুতে উপার্জন, রক্ষণ, ক্ষয়, সঙ্গ এবং হিংসা দোষ দেখে বিষয় ভোগকে সংগ্রহ না করাকে ‘অপরিগ্রহ’ বলা হয় । অর্থাৎ হানিকারক, অনাবশ্যক বাণী-বস্তু-বিচারের সংগ্রহ না করা । ।

(৩১) তত্র শৌচং মৃজ্জলাদিজনিতং মেখ্যাভ্যবহরণাদি চ বাহ্যম্ । আভ্যন্তরং চিত্তমলানামাক্ষালনম্ । । (২/৩২)

অর্থ - শরীর, বস্ত্র, স্থান, পাত্র, ভোজন ইত্যাদির শুদ্ধি রাখা এবং ধন-সম্পত্তিকে ন্যায্যপূর্বক উপার্জিত করাকে ‘বাহ্য শুদ্ধি’ বলা হয় । অবিদ্যা, মিথ্যাভিমান, রাগ, দ্বেষ, কাম, ক্রোধ, লোভ, মোহ ইত্যাদিকে দূর করাকে ‘আন্তরিক শুদ্ধি’ বলা হয় । ।

(৩২) সন্তোষঃ সন্নিহিতসাধনাদধিকস্যানুপাদিৎসা । । (২/৩২)

অর্থ - পূর্ণ পুরুষার্থের পশ্চাৎ যা কিছু উপলব্ধ হয় তাতেই সন্তুষ্ট থাকা এবং তার অধিকের ইচ্ছা না করাকে ‘সন্তোষ’ বলা হয় । ।

(৩৩) তপো দ্বন্দ্বসহনম্ । । (২/৩২)

অর্থ - ধর্মাচরণ করার সময় হানি-লাভ, সুখ-দুঃখ, মান-অপমান, সর্দি-গর্মি, ক্ষুধা-পিপাসা ইত্যাদি দ্বন্দ্বকে শান্ত চিত্তে সহন করাকে ‘তপ’ বলা হয় । ।

(৩৪) স্বাধ্যায়ো মোক্ষশাস্ত্রাণামধ্যয়নং প্রণবজপো বা । । (২/৩২)

অর্থ - বেদ এবং বেদানুকূল মোক্ষের স্বরূপকে বর্ণনকারী শাস্ত্রের পঠন-পাঠন এবং ঈশ্বরের স্বরূপকে প্রকাশকারী প্রণব ইত্যাদি মন্ত্রকে অর্থ সহিত জপ করাকে ‘স্বাধ্যায়’ বলা হয় । ।

(৩৫) ঈশ্বরপ্রণিধানং তস্মিন্ পরমগুরৌ সর্বকর্মাপণম্ । । (২/৩২)

অর্থ - পরম গুরু ঈশ্বরকে সমস্ত কর্মকে সমর্পিত করে দেওয়াকে ‘ঈশ্বরপ্রণিধান’ বলা হয় । ।

(৩৬) ঘোরেষু সংসারাপ্সারেষু পচ্যমানেন ময়া শরণমুপাগতঃ সর্বভূতাভয়প্রদানেন

যোগধর্মঃ । স খল্বহং ত্যক্ত্বা বিতর্কানপুনস্তানাদদানস্তুল্যঃ স্ববৃত্তেনেতি ।। (২/৩৩)

অর্থ - ঘোর সংসার রূপী অঙ্গারে ঝলসাতে-ঝলসাতে আমি সকল প্রাণীকে অভয় প্রদান করার জন্য যোগ মাগের শরণ নিয়েছিলাম পরন্তু আমি পুনঃ বিনাশকারী মার্গকে গ্রহণ করে কুত্তার সমান হয়ে গেছি । যেমন কুত্তা বমন করে পুনঃ গ্রহণ করে নেয়, সেইরকম আমিও পুনঃ ওই সকল অনিষ্ট গ্রহণকারী হয়ে গেছি ।।

(৩৭) কোহহমাসং, কথমহমাসং, কিংস্বিদিদং, কথংস্বিদিদং, কে বা ভবিষ্যামঃ, কথং বা ভবিষ্যামঃ ।। (২/৩৯)

অর্থ - আমি কে ছিলাম ? কেমন ছিলাম ? এই শরীর কি ? কোথা থেকে উৎপন্ন হয়েছে ? আমরা কেমন হব ? কিধরনের হব ? (এগুলি সকল আত্ম বিষয়ক জিজ্ঞাসা) ।।

(৩৮) যচ্চ কামসুখং লোকে যচ্চ দিব্যং মহৎসুখম্ । তৃষ্ণাক্ষয়সুখস্যেতে নারহতঃ ষোড়শীং কলাম্ ।। (২/৪২)

অর্থ - সংসারে যে কামনাজন্য সুখ রয়েছে এবং যে মহান্ স্বর্গসুখ রয়েছে এই দুটি সুখ, তৃষ্ণার ক্ষয় হতে প্রাপ্ত সুখের ষোলটি ভাগের এক ভাগও নয় ।।

(৩৯) তপো ন পরং প্রাণায়ামাত্তো বিশুদ্ধির্মলানাং দীপ্তিশ্চ জ্ঞানস্যেতি ।। (২/৫২)

অর্থ - প্রাণায়াম হতে বড় তপ নেই, তার দ্বারা মনের শুদ্ধি হয় এবং জ্ঞানের দীপ্তি হয় ।।

তৃতীয় পাদ

(৪০) যোগেন যোগো জ্ঞাতব্যো যোগো যোগাৎ প্রবর্ততে । যোহপ্রমত্তস্তু যোগেন স যোগে রমতে চিরম্ ।। (৩/৬)

অর্থ - যোগ, যোগের দ্বারাই জানার যোগ্য; যোগ, যোগ দ্বারাই বৃদ্ধি পায় । যোগে যে অপ্রমত্ত সে দীর্ঘকাল পর্যন্ত যোগে রমণ করে ।।

চতুর্থ পাদ

(৪১) চতুষ্পদা খল্বিয়ং কর্মজাতিঃ । কৃষ্ণা, শুক্লকৃষ্ণা, শুক্লা, অশুক্লকৃষ্ণা ।। (৪/৭)

অর্থ - কর্মকে চারটি ভাগে ভাগ করা হয়েছে- শুক্ল (পুণ্য), কৃষ্ণ (পাপ), শুক্ল-কৃষ্ণ (মিশ্রিত) এবং অশুক্ল-অকৃষ্ণ (নিষ্কাম) ।।

(৪২) ধর্মাৎসুখমধর্মাৎদুঃখং, সুখাদ্রাগো দুঃখাদ্বেষস্ততশ্চ প্রযত্নস্তেন মনসা বাচা কায়েন বা পরিস্কন্দমানঃ পরমনুগৃহ্নাত্যুপহন্তি বা । ততঃ পুনর্ধর্মাধর্মৌ সুখদুঃখে রাগদ্বেষাবিতি প্রবৃত্তমিদং ষড়র সংসারচক্রম্ ।। (৪/১১)

অর্থ - ধর্মাচরণের ফলে সুখের প্রাপ্তি হয় । এবং অধর্ম আচরণের ফলে দুঃখের প্রাপ্তি হয় । এর ফলে সুখের প্রতি রাগ এবং দুঃখের প্রতি দ্বেষ উৎপন্ন হয় । এই রাগ-দ্বেষের ফলে ব্যক্তি প্রযত্ন করে । ওই প্রযত্ন দ্বারা শরীর-মন-বাণী ইহাতে অন্যকে দয়া করে অথবা কষ্ট দেয় । তার ফলে পুনঃ ধর্ম-অধর্ম, সুখ-দুঃখ, রাগ-দ্বেষ উৎপন্ন হয় । এই ভাবে ‘ষড়র সংসার চক্র’ অহর্নিশ চলতে থাকে ।।

(৪৩) অস্য চ প্রতিক্ষণমাবর্তমানস্যাবিদ্যা নেত্রী মূলং সর্বক্লেশানামিত্যেষ হেতুঃ ।। (৪/১১)

অর্থ - প্রত্যেক ক্ষণ ঘুরন্ত এই সংসার চক্রের নেত্রী হল অবিদ্যা, যেটি বাসনার সংগ্রহের মূল কারণ ।।

(৪৪) গুণানাং পরমং রূপং ন দৃষ্টিপথমুচ্ছতি । যত্ন দৃষ্টিপথং প্রাপ্তং তন্মায়েব সুতুচ্ছকম্ ।। (৪/১৩)

অর্থ - প্রকৃতির বাস্তবিক রূপ দৃষ্টি পথে আসে না । যেগুলি দৃষ্টি পথে আসে সেগুলি মায়ার সমান নাশবান্ ।।

(৪৫) অন্ধো মণিমবিধ্যন্তমনসুলিরাবয়ং ।

অগ্রীবস্তং প্রত্যমুঞ্চন্তমজিহ্বাহত্যপূজয়ং ।। (৪/৩১)

অর্থ - অন্ধের দ্বারা মণি ভেদ করা, সেই মণি দিয়ে কোন আঙুল বিহীন ব্যক্তির দ্বারা মালা তৈরি করা, সেই মালাকে কোন গ্রীবাহীন ব্যক্তির ধারণ করা এবং কোন জিহ্বাহীন ব্যক্তির দ্বারা প্রশংসা করা । এগুলি যেমন অসম্ভব সেইরকম ক্লেশ যাঁদের দণ্ডবীজ হয়ে গেছে তাঁদের শরীর ধারণ করাও অসম্ভব ।।



যোগ মার্গে উন্নতি না হওয়ার কারণ

-আচার্য্য কপিল আচার্য্য

- (০১) ঈশ্বরের অস্তিত্বকে স্বীকার না করা অথবা ভিন্ন রূপে স্বীকার করা ।
- (০২) ঈশ্বর একটি প্রাপ্ত বস্তু এবং আমিও প্রাপ্ত করতে পারি এই বিশ্বাস মনের ভিতর না হওয়া ।
- (০৩) ঈশ্বর মাতা পিতাদি সম্বন্ধীদের মধ্যে সর্বশ্রেষ্ঠ সম্বন্ধী এই ভাব মনে সতত বিদ্যমান না থাকা ।
- (০৪) ঈশ্বর প্রাপ্তির জন্য ইচ্ছা না হওয়া ।
- (০৫) ঈশ্বর প্রাপ্তির জন্য ঋষিদের এবং গুরুদের দ্বারা নির্দেশিত মার্গে না চলা ।
- (০৬) ঈশ্বরের গুণ, কর্ম এবং স্বভাবকে ভালোভাবে না জানা ।
- (০৭) ঈশ্বর প্রাপ্তির জন্য উচিত পুরুষার্থ না করা ।
- (০৮) ঈশ্বর প্রাপ্তি করতে হবে এই বিষয়ে অবহেলা করা এবং অবকাশ খোঁজা ।
- (০৯) লৌকিক বিষয়ে নিজের বুদ্ধিকে দৌড়াতে থাকা, রুচি রাখা, প্রধানতা দেওয়া এবং লৌকিক কার্যকে করার সময় ঈশ্বরকে ভুলে যাওয়া এবং সেই কার্যকে নিষ্কাম কার্য মনে করা ।
- (১০) অনাবশ্যক বস্তুর সংগ্রহ করা পুনঃ সেগুলিকে নিতান্ত আবশ্যক বলে মনে করা ।
- (১১) গুরুজনদের দ্বারা কথিত ছোট বড় দোষকে উপেক্ষা করে সেগুলিকে না ছাড়া ।
- (১২) গুরুজনদের প্রতি আন্তরিক শ্রদ্ধা না রাখা, তাদেরকে কম জ্ঞানী মনে করা এবং নিজেকে অধিক জ্ঞানী মনে করা । তাদের সামনে সাধুতা দেখানো এবং পেছনে ভিন্ন আচরণ করা ।
- (১৩) পারিবারিক সম্বন্ধকে মন থেকে অব্যাহত রাখা ।
- (১৪) কথায় কথায় তর্ক করা এবং নিজের পক্ষ যেমনই হোক না কেন তাকে সিদ্ধ করার চেষ্টা করা ।
- (১৫) অন্যকে দেখে জ্বলতে থাকা এবং অন্যের দোষকেই বের করতে থাকা ।
- (১৬) মুখে মিষ্টি মিষ্টি কথা বলা এবং ভিতর থেকে ক্রুর ভাবনা রাখা এবং বাণীতে সর্বদা কঠোর ভাষার প্রয়োগ করা ।
- (১৭) আমি যেটা করি সেটাই ঠিক কিন্তু অন্যেরা যা করেন সেগুলি ঠিক নয়, এরকম

মনে করা ।

- (১৮) গুরুদের দোষকে উপেক্ষা না করে তাঁদেরকেই ঘৃণা করা ।
- (১৯) উচিত তপস্যা থেকে বাঁচতে থাকা এবং তাকে নিজের সামর্থের অভাব মনে করা ।
- (২০) ঈশ্বর বিষয়ক উপদেশ অন্যকে দৃঢ়তার সাথে দেওয়া এবং সেগুলিকে নিজে পালন না করা ।
- (২১) কিছুদিন পুরুষার্থ করে কিছু উপলব্ধি প্রাপ্ত করে নিজেকে কৃত কৃত্য মনে করা এবং পুরুষার্থ থেকে বিরত হওয়া ।
- (২২) নিজেকে ঈশ্বরে পূর্ণ অর্পণ না করা ।
- (২৩) সম্পূর্ণ দিন ঈশ্বরকে ভুলে থাকা এবং উপাসনা কালে বিশেষ উপলব্ধির ইচ্ছা করা ।
- (২৪) ঈশ্বর প্রাপ্তির জন্য বহু শাস্ত্রের জ্ঞানের আবশ্যকতা রয়েছে এরকম মনে করে কেবলমাত্র বিদ্যাতেই রমণ করা ।
- (২৫) মন উদার, সরল না হওয়া অর্থাৎ নিজেকে বালকের মতো মনে করে ঈশ্বর এবং অন্যের সাথে ব্যবহার না করা ।
- (২৬) সংসারের কোনও একটি ব্যক্তি বা বস্তুসহ সাথে রাগ অথবা দ্বেষ রাখা ।
- (২৭) আদর্শ দিনচর্যা থেকে নিজেকে পৃথক রাখা এবং মন গড়ন্ত দিনচর্যা বানিয়ে নেওয়া ।
- (২৮) মনকে সর্বদা বহির্মুখ রাখা ।
- (২৯) ঈশ্বর ছাড়া আমার আর কিছুই চাইনা এরকম অবস্থা না থাকা, অর্থাৎ ঈশ্বর প্রাপ্ত করার জন্য সর্বস্ব পরিত্যাগ করতে সমর্থ না হওয়া ।
- (৩০) ঈশ্বর বা অন্য ব্যক্তিদের থেকে নিজের দোষকে ঢাকতে থাকা ।
- (৩১) কথায়-কথায় অন্যকে পরামর্শ দেওয়া ।
- (৩২) কোনও ব্যক্তি কিছু বলে দিলে অথবা মনে যেমনটি আসে তেমনটি করা, তার বিবেচনা না করা ।
- (৩৩) আন্তরিক শুদ্ধির থেকে বেশি বাহ্য শুদ্ধিকে মহত্ব দেওয়া ।
- (৩৪) অত্যন্ত ব্যবহার পটুতা দেখানো কিন্তু হৃদয় থেকে ব্যবহার না করতে পারা ।
- (৩৫) সংসারস্থ প্রায়ঃ সকল মানুষকে ঈশ্বর থেকে বিমুখ দেখে এটা মনে করে নেওয়া যে ঈশ্বর প্রাপ্তি করা কঠিন এবং অসম্ভব ।

- (৩৬) সত্যকে গ্রহণ করতে এবং অসত্যকে পরিত্যাগ করতে সর্বদা উদ্যত না থাকা ।
- (৩৭) জটাস্থারী, ভাষণে পটু, সূর্যের সমান শরীরাদি বাহ্য গুণকে দেখে সেই ব্যক্তিকে ঈশ্বরের পরম ভক্ত মনে করা এবং তাকেই নিজের গুরু মনে করা ।
- (৩৮) যে কোনোও প্রকারের দায়িত্বকে বহন করতে থাকা ।
- (৩৯) অন্যের ভয়ে ভীত হয়ে ঈশ্বরকে ছেড়ে দেওয়া; যদি সম্পূর্ণ সংসার একদিকে হয়ে যায় তাহলেও তাদের ভয়ে ভীত হওয়া উচিত নয় ।
- (৪০) বিষয়ের ভোগ কালে বিষয়ে বিদ্যমান দুঃখকে না জানতে পারা ।
- (৪১) অন্যের দ্বারা কৃত উপকারকে ভুলে গিয়ে কৃতজ্ঞতা প্রকট না করা এবং গুরুজনদের উপকারকেও ভুলে যাওয়া ।
- (৪২) সংসারের প্রবাহে প্রবাহিত হওয়া, তার বিপরীত একলা চলার সামর্থ্য না রাখা ।
- (৪৩) কেউ ভালো বললে নিজেকে ভালো মনে করে কলা গাছের মতো ফুলে যাওয়া এবং কেউ খারাপ বললে নিজেকে খারাপ মনে করে কাঠির মতো হয়ে যাওয়া ।
- (৪৪) অত্যন্ত পরোপকার করায় রুচি রাখা এবং ঈশ্বরকে ছেড়ে দেওয়া ।
- (৪৫) অন্য কোনও কারণে বাধা উপস্থিত হলে সেটি আধ্যাত্মিক ক্ষেত্রের বাধক বলে মনে করা ।
- (৪৬) লৌকিক কার্যকে স্বয়ং এইজন্য করতে থাকা কেননা অন্য কেউই এই কার্যকে করতে পারবে না, এই ধরনের মান্যতা মনের ভিতরে থাকা ।
- (৪৭) আধ্যাত্মিক পুস্তক, উপদেশাদি মজা করার জন্য পড়তে শুনতে থাকা ।
- (৪৮) অন্যের সাথে সমন্বয় করে চলতে না পারা । ইত্যাদি

সমাপ্ত



দর্শন যোগ ধর্মার্থট্রস্ট কার্য বিষয়ক সূচি

(১) দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয় (মুখ্য শাখা), আয়বন, রোজাড় (গুজরাত) এবং দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয় (দ্বিতীয় শাখা), সুন্দরপুর, রোহতক (হরিয়ানা)-এর সঞ্চালন।

উদ্দেশ্য:

- (ক) বেদ, দর্শন, উপনিষদ তথা ঋষিকৃত বৈদিক প্রাচীন গ্রন্থের অধ্যয়ন অধ্যাপন।
(খ) সমাজে বৈদিক বিদ্যার প্রচার প্রসারের জন্য বৈরাগ্যবান যোগাভ্যাসী ধর্মাচার্যদের নির্মাণ করা।



(২) দর্শন যোগ সাধনা আশ্রম, কমোদা, কুরুক্ষেত্রের সঞ্চালন করা। (যোগ সাধনা তথা যোগ অনুসন্ধান এবং প্রশিক্ষণের আদর্শ সংস্থান)।

(৩) বৈদিক পরিবার নির্মাণ তথা বেদ প্রচার সমিতির স্থাপনা দ্বারা ব্যবস্থিত এবং নিরন্তর রূপে বৈদিক বিচারধারার ব্যবহারিক রূপ প্রদান করা।



(৪) ক্রিয়াত্মক যোগ প্রশিক্ষণ শিবির, উচ্চস্তরীয় যোগ প্রশিক্ষণ শিবির, আত্ম সাধনা শিবির, জীবন বিকাশ শিবির তথা সঘন সাধনা শিবিরাদি কার্যক্রমের সঞ্চালন করা।



(৫) ভারতের বিভিন্ন প্রান্তে বিশুদ্ধ বৈদিক যোগ এবং বেদ, দর্শন, উপনিষদাদি বৈদিক গ্রন্থের অধ্যাপন এবং এর সাথে সম্বন্ধিত প্রবচনমালা তথা আগন্তুক মহানুভবের মার্গদর্শন, জিজ্ঞাসুদের শংকার সমাধান করা।



(৬) লৌকিক-পারলৌকিক কার্যের সফলতার জন্য সফলতা বিজ্ঞান পরিয়োজনার সঞ্চালন করা। (সুবিচার, পুস্তক, ভিডিও, চিত্র, শিবির, মঞ্চাদি দ্বারা প্রস্তুতি)।

(৭) বিশুদ্ধ বৈদিক ধ্যান যোগের সাথে সম্বন্ধিত সাহিত্যের লেখন, প্রকাশন এবং প্রচার প্রসারের জন্য নিঃশুল্ক সাহিত্য বিতরণ করা।

(৮) বৈদিক বিদ্যার প্রচার প্রসারে সমর্পিত বিদ্বানদের আর্থিক সহযোগ তথা নিবাস ইত্যাদির রূপে সুরক্ষা প্রদান করা।

(৯) বৈদিক সংস্কার-দীক্ষার আয়োজন করা। (সন্ন্যাস, বানপ্রস্থ, উপনয়ন, বেদারম্ভ দীক্ষার আয়োজন)।

(১০) অন্য গুরুকুলে অধ্যায়নরত ব্রহ্মচারী তথা বিদ্যার্থীদের আর্থিক সহযোগ করা।

(১১) গো-বংশ সংবর্ধনের জন্য প্রচার তথা ধনাদির দ্বারা সহযোগ করা।

(১২) নির্ধন, দিব্যাঙ্গ, রোগীদের আর্থিক সহায়তা করা।

(১৩) বাতাবরণ শুদ্ধির জন্য-

(ক) বৈজ্ঞানিক স্তরে যজ্ঞ-হবনের ক্রিয়ানুয়ন করা, অন্যদের প্রশিক্ষণ দেওয়া তথা যজ্ঞ হেতু ঘৃত, সমিধা এবং হবন সামগ্রীর সহযোগ করা।

(খ) ঔষধি এবং বনস্পতি বৃক্ষরোপণ করা তথা অন্যকে প্রেরিত করা।



- (১৪) বৈদিক অন্তেষ্টি সংকার করা তথা তাতে প্রযুক্ত সামগ্রীর সহযোগ করা ।
- (১৫) দেশের বিভিন্ন প্রান্তে প্রাকৃতিক প্রকোপ যেমন বন্যাদিতে পীড়িতদের সাহায্য করা ।
- (১৬) ইন্টারনেট এবং ওয়েবসাইট-এর মাধ্যমে বিভিন্ন প্রকারের প্রেরণা তথা আধ্যাত্মিক এবং ব্যবহারিক শংকার সমাধান করা ।
- (১৭) কেবলমাত্র গৃহস্থীদের জন্য নিজ নিবাস স্থানে স্থিত থেকে দর্শনাদি ঋষি কৃত গ্রন্থের বিধিবিধি অধ্যাপন কার্য করা ।

-*-

দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়-এর পরিচয়

(বৈদিক দর্শন অধ্যাপন এবং ধ্যান যোগ প্রশিক্ষণ-এর আদর্শ সংস্থান)



স্বাপনা

দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়ের স্থাপনা চৈত্র শুক্লা প্রতিপদা বিক্রম সম্বত ২০৪৩ অর্থাৎ ১০ অপ্রিল ১৯৮৬ সালে স্বামী সত্যপতি জী মহারাজ দ্বারা হয়েছে ।

উদ্দেশ্য

- (১) মহর্ষি পতঞ্জলি নির্দেশিত অষ্টাঙ্গ যোগের পদ্ধতি দ্বারা উচ্চস্তরের প্রশিক্ষক তৈরি করা, যিনারা দেশ বিদেশে প্রচলিত মিথ্যা যোগের স্থানে সত্য যোগের প্রশিক্ষণ দিতে পারবেন ।

- (২) বিশিষ্ট যোগ্যতা যুক্ত বৈদিক দার্শনিক বিদ্বানদের নির্মাণ করা, যিনারা সার্বভৌমিক যুক্তিযুক্ত, অকাট্য, বৈজ্ঞানিক, শাস্ত্রত বৈদিক সিদ্ধান্তকে বুদ্ধিজীবী বর্গের সম্মুখে প্রভাবশালী পদ্ধতিতে প্রতিপাদন করে তাঁদের নাস্তিকতা দূর করে তাঁদেরকে বৈদিক ধর্মানুযায়ী তৈরি করতে পারবেন।
- (৩) নিষ্কাম ভাবনার দ্বারা যুক্ত, মনসা, বাচা, কর্মণা এক হয়ে তন, মন এবং ধন দ্বারা সম্পূর্ণ জীবনকে সমর্পিতকারী ব্যক্তিদের নির্মাণ করা, যিনারা নিজের এবং সংসারের অবিদ্যা, অধর্ম এবং দুঃখের বিনাশ করে তারই স্থানে বিদ্যা, ধর্ম তথা আনন্দের স্থাপনা করতে পারবেন।

প্রবেশের জন্য যোগ্যতা

- প্রবেশ কেবল মাত্র ব্রহ্মচারীদের জন্য। (আজীবন ব্রহ্মচারীদের প্রাথমিকতা)।
- বৈদিক সিদ্ধান্তে নিষ্ঠাবান হওয়া।
- যোগাভ্যাস তথা দর্শনের অধ্যয়নে রুচি হওয়া।
- সংস্কৃত ভাষা পড়তে, লিখতে, বলতে সমর্থ হওয়া। (ব্যাকরণাচার্য, শাস্ত্রী বা সমকক্ষ যোগ্যতা যুক্তদের প্রাথমিকতা)।
- যম নিয়মকে শ্রদ্ধা পূর্বক পালন করা।
- নিষ্কাম ভাবনার সাথে সমাজ-রাষ্ট্রের সেবা করার সংকল্প হওয়া। ত্যাগী, তপস্বী, সদাচারী হওয়া।
- অধ্যয়নকালে ঘরের সাথে বা আত্মীয় স্বজনদের সাথে সাংসারিক সম্বন্ধ না হওয়া।
- বয়স ১৮ বছরের উপরে হওয়া।

সংস্থানের বিশেষতা

- (১) প্রত্যেক ব্রহ্মচারীদের পক্ষপাত রহিত (সমানভাবে) ভোজন, বস্ত্র, দুধ-ঘী, ফল, ঔষধি, পুস্তক, আসন, বিছানা ইত্যাদি সকল প্রয়োজনীয় বস্তু নিঃশুল্ক উপলব্ধ করানো হয়।
- (২) প্রতিদিন কমপক্ষে দু'ঘণ্টা ব্যক্তিগত যোগাভ্যাস (ধ্যান) করা অনিবার্য।
- (৩) প্রতিদিন ক্রিয়াত্মক যোগ প্রশিক্ষণে বিবেক, বৈরাগ্য, অভ্যাস, ঈশ্বর-প্রণিধান, মননিয়ন্ত্রণ, ধ্যান, সমাধি তথা স্বস্বামি-সম্বন্ধ (মমতা)-কে দূর করা ইত্যাদি আধ্যাত্মিক সূক্ষ্ম বিষয়ের উপর বিস্তার পূর্বক বিবেচনা করা হয়।
- (৪) যম-নিয়মকে মন, বাণী এবং কর্ম দ্বারা সূক্ষ্মতা পূর্বক পালন করানো হয়।
- (৫) দিনে ৫:৩০ ঘণ্টা মৌনের সময় থাকে। (যেখানে ধ্যান, স্বাধ্যায়াদি সম্মিলিত রয়েছে)।

- (৬) প্রতিদিন রাত্রিতে আত্ম-নিরীক্ষণ ক্লাস হয়। (যেখানে সম্পূর্ণ দিনের দোষকে সকলের সম্মুখে জ্ঞাপন তথা ভবিষ্যতে সুধার করার জন্য প্রযত্ন করা হয়)।
- (৭) বার্তালাপের মাধ্যম সংস্কৃত ভাষা।
- (৮) প্রতিদিন যজ্ঞ, বেদপাঠ তথা বেদমন্ত্রের স্বাধ্যায় করা হয়।
- (৯) সপ্তাহে একবার আসন প্রশিক্ষণ তথা সময়ে সময়ে ব্যাখ্যান প্রশিক্ষণেরও অভ্যাস করানো হয়।
- (১০) দর্শনের লিখিত এবং মৌখিক পরীক্ষা নেওয়া হয়।
- (১১) প্রাতঃকাল ৪টা থেকে রাত্রি ৯:৩০টা পর্যন্ত আদর্শ এবং ব্যস্ত গুরুকুলীয় দিনচর্যা পালন করা হয়।

বিশেষ দৃষ্টব্য- প্রবেশ গ্রহণকারী ব্রহ্মচারীদের তিন মাস পর্যন্ত বৌদ্ধিক, আধ্যাত্মিক তথা ব্যবহারিক পরীক্ষণ করা হয়। ব্রহ্মচারী যোগ্যমানে হলে স্থায়ী প্রবেশ দেওয়া হয়।

মহাবিদ্যালয়-এর কার্য এবং উপলব্ধি

সাল ১৯৮৬ থেকে ২০১৮ পর্যন্ত মহাবিদ্যালয়ের ৩২ বছরে বিদেশের এবং দেশের ১৫টি প্রান্তের স্নাতক, স্নাতকোত্তর (Graduate, Post Graduate) ব্যাকরণাচার্য্য, শাস্ত্রী স্তরের প্রায় ৬৭ ব্রহ্মচারীদের প্রশিক্ষণ দেওয়া হয়েছে। যোগ, সাংখ্য, বৈশেষিক, ন্যায়, বেদান্ত এই দর্শন গুলিকে সংস্কৃত ভাষ্য সহিত অধ্যাপন করানো হয়েছে। এই দর্শনের লিখিত ও মৌখিক পরীক্ষাও নেওয়া হয়েছে। দর্শনের অতিরিক্ত ঈশ ইত্যাদি ১০ উপনিষদ তথা বেদের চয়নিত অধ্যায়েরও অধ্যাপন করানো হয়েছে এবং ঋষিকৃত বহুগ্রন্থের অধ্যাপন এবং আংশিকভাবে ব্যাকরণ তথা সংস্কৃত ভাষারও অধ্যাপন করানো হয়েছে।

উপরোক্ত দর্শন পড়ানোর যোগ্যতা প্রাপ্তকারীদের দর্শনাচার্য্য, দর্শন-বিশারদ তথা দর্শন-প্রাজ্ঞ উপাধি প্রদান করা হয়েছে তথা ক্রিয়াত্মক যোগ প্রশিক্ষণ দিতে সমর্থদের যোগ-বিশারদ তথা যোগ-প্রাজ্ঞ উপাধি প্রদান করা হয়েছে। ব্রহ্মচারীদের বৈদিক, দার্শনিক-গম্ভীর সিদ্ধান্তের জ্ঞান করানো হয়েছে, যার ফলস্বরূপ অনেক ব্রহ্মচারী সূক্ষ্ম বিষয় সম্বন্ধিত শংকা সমাধান করতে, গম্ভীর বিষয়ের উপর নিবন্ধ লিখতে তথা দার্শনিক ব্যাখ্যান দিতে নিপুণ হয়েছেন। যম-নিয়মকে সদা ব্যবহারে প্রয়োগ কিভাবে করা যায় তথা নিষ্কাম কর্ম কিভাবে করা যায় এই বিষয়ে ব্রহ্মচারীদের বিশেষ প্রশিক্ষণ দেওয়া হয়েছে। ব্রহ্মচারীরাও পর্যাপ্ত মাত্রায় এই সকল বিষয়কে বুঝেছেন এবং যথাশক্তি জীবনে এনেছেন।

বর্তমানে মহাবিদ্যালয়ের স্নাতক দেশ-বিদেশের বিভিন্ন প্রান্তে সংস্কৃত ভাষা, ব্যাকরণ এবং দর্শন অধ্যাপন, যোগ-প্রশিক্ষণ তথা বৈদিক ধর্মের প্রচারকার্যে সংলগ্ন রয়েছেন।

সূচনা- প্রবেশের ইচ্ছুক ব্রহ্মচারী পত্র ব্যবহার করুন।।

পুস্তক প্রকাশন সহযোগী



আচার্য্য শ্রী ব্রহ্মদত্ত আচার্য্য
আচার্য্য
আর্য গুরুকুল কোলাঘাট,
পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী সমীরণ শাস্ত্রী
মন্ত্রী
আর্য্য সমাজ মদনপুর,
নদীয়া, পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী নিতাই মাল
প্রধান
আর্য্য সমাজ মদনপুর,
নদীয়া, পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী ওম প্রকাশ রায়
মন্ত্রী
আর্য্য সমাজ মালিগ্রাম,
পশ্চিমবঙ্গ



পন্ডিত শ্রী বিষ্ণু কান্ত শাস্ত্রী,
ধর্মপত্নী শ্রীমতি সুলতা আচার্য্য
সেকেন্দ্রাবাদ, তেলঙ্গানা



আচার্য্য শ্রী ধর্মবীর আচার্য্য;
ধর্মপত্নী শ্রীমতি মমতা আচার্য্য
Brampton, Ontario, CANADA



পন্ডিত শ্রী প্রদ্যুম্ন শাস্ত্রী,
ধর্মপত্নী শ্রীমতি আচার্য্য ধর্মবতী আচার্য্য
সেকেন্দ্রাবাদ, তেলঙ্গানা



ডঃ শ্রী প্রশান্ত বিদ্যালংকার,
ধর্মপত্নী শ্রীমতি অমৃতা রায়
শিলিগুড়ি, পশ্চিমবঙ্গ



স্বামী শান্তানন্দ সরস্বতী
কচ্ছ ভূজ,
গুজরাট



শ্রী কানাইলাল আচার্য্য,
ইটাবেড়িয়া,
পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী কল্যাণকর কোলোই,
চন্দ্রকোনা, ঘাটাল,
পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী নির্মাল্য পোড়িয়া,
চন্দ্রকোনা, ঘাটাল,
পশ্চিমবঙ্গ



শ্রী গুণধর চন্দ্র আর্ঘ্য শ্রীমতি প্রভানগ দাস,
কুঞ্জবন, আগরতলা, ত্রিপুরা



শ্রী দেবেন্দ্র মন্ডল ধর্মপত্নী শ্রীমতি মঞ্জুরানী মন্ডল,
কুমারমভীম, তেলেঙ্গানা

- শ্রী ধর্মদেব আর্ঘ্য, রোহতক, হরিয়ানা, • শ্রী মনোজীৎ দাস, বাঁকুড়া, পশ্চিমবঙ্গ,
- শ্রী বেদ আর্ঘ্য, সলটলেক, পশ্চিমবঙ্গ

যে সকল ত্যাগী-তপস্বী, সন্ন্যাসী এবং আচার্যের আশীর্বাদ প্রাপ্ত হয়েছে



যোগগুরু স্বামী সত্য পতি জী পরিব্রাজক
সংস্থাপক
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়



স্বামী বিবেকানন্দ জী পরিব্রাজক
নিদেশক
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়



স্বামী ব্রহ্মবিদানন্দ জী সরস্বতী
আচার্য
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়



স্বামী ধ্রুবদেব জী পরিব্রাজক
কার্যকারী আচার্য
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়



আচার্য দিনেশ কুমার জী
বাবস্থাপক
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয়



আচার্য ব্রহ্মদত্ত জী আর্ঘ্য
আচার্য
আর্ঘ্য গুরুকুল কোলাঘাট



আচার্য সত্য মিত্র জী আর্ঘ্য
আচার্য
বেদরক্ষক আর্ঘ্য গুরুকুল



আচার্য প্রিয়েশ জী
কার্যকারী আচার্য
দর্শন যোগ মহাবিদ্যালয় সুন্দরপুর

- (০১) ঈশ্বরের বিশেষ ভক্তি অর্থাৎ আঞ্জা পালন করলে ঈশ্বর নিজের সংকল্পমাত্র দ্বারা ভক্তকে আপন করে নেন।
- (০২) আত্মা নিত্য, অবিকারি, অল্পজ্ঞ, একদেশী, কর্ম করতে স্বতন্ত্র এবং ফল ভোগ করতে পরতন্ত্র হয়।
- (০৩) প্রকৃতি একটি জড়বস্তু, এর দ্বারাই সংসারের সকল জড় পদার্থ অর্থাৎ পৃথিবী, জল, বনসপতি, শরীর ইত্যাদি তৈরি হয়।
- (০৪) ঈশ্বর, আত্মা এবং প্রকৃতির যথার্থ স্বরূপকে জেনে নিলে, নিষকাম কর্ম করলে এবং চেতন, নিরাকার, সর্বদৃষ্টা, সর্বব্যাপক, সর্বজ্ঞ, সর্বশক্তিমান ইত্যাদি লক্ষণযুক্ত ঈশ্বরের সত্য উপাসনা করলে মোক্ষের প্রাপ্তি হয়।
- (০৫) মোক্ষে আত্মা সম্পূর্ণ দুঃখ হতে রহিত হয়ে ঈশ্বরের নিত্য সুখকে ভোগ করে।
- (০৬) সংসারের বিষয় ভোগের প্রতি নারুচি থাকানা হ্বেষ থাকা, এই অবস্থাকে ‘বৈরাগ্য’ বলা হয়।
- (০৭) মন একটি জড় পদার্থ একে আমরাই অর্থাৎ আত্মাই সঞ্চালন করে।
- (০৮) আধ্যাত্মিক, আধিভৌতিক এবং আধিদৈবিক, এই সকল দুঃখ হতে রহিত হয়ে ঈশ্বরীয় পূর্ণ সুখকে প্রাপ্ত করাই মনুষ্য জীবনের পরম লক্ষ্য।
- (০৯) অবিদ্যা, অস্মিতা, রাগ, হ্বেষ এবং অভিভিবেশ এই পাঁচটিকে ‘ক্লেশ’ বলা হয়। অবিদ্যা এই সকল ক্লেশের নেত্রী। এই সকল ক্লেশকে তত্ত্বজ্ঞান দ্বারা নষ্ট করে দিলেই মোক্ষের প্রাপ্তি হয়।
- (১০) যেমন ভাবে তত্ত্বজ্ঞান দ্বারা ক্লেশ নষ্ট হয়, সেরকম ভাবে মিথ্যাজ্ঞান দ্বারা ক্লেশ বেড়ে ও ওঠে।
- (১১) শরীর এবং সংসার ইত্যাদি অনিত্য পদার্থকে নিত্য মনে করা, পাপকে পুণ্য মনে করা, জড় মনাদিকে চেতন মনে করা এবং শরীর ইত্যাদিকে আত্মা মনে করাকে ‘অবিদ্যা’ বলা হয়।
- (১২) অনেক প্রকারের দুঃখ হতে যুক্ত সাংসারিক সুখকে বিশুদ্ধ সুখ মনে করাকেও ‘অবিদ্যা’ বলা হয়।
- (১৩) বিষয় ভোগকে বার-বার ভোগ করলে ইন্দ্রিয়কে শান্ত করা যায় না।
- (১৪) অতএব ‘যোগাভ্যাস’ করাই সুখের উপায় ‘ভোগাভ্যাস’ নয়।
- (১৫) তাগ করার যোগ্য হল- দুঃখ। দুঃখের কারণ হল- অবিদ্যা। প্রাপ্ত করার যোগ্য হল- মোক্ষ। মোক্ষের উপায় হল- তত্ত্বজ্ঞান।
- (১৬) তত্ত্বজ্ঞান-এর উপায় হল- যোগের আট অঙ্গ (= যম, নিয়ম, আসন, প্রাণায়াম, প্রত্যাহার, ধারণা, ধ্যান এবং সমাধি)-এর অনুষ্ঠান করা।
- (১৭) কর্মের ফল অবশ্যই ভোগ করতে হয়, এতে কোনও ছাড় নেই। যেহেতু ঈশ্বর পূর্ণ ন্যায়কারী, যদি তিনি পাপকে ক্ষমা করে দেন, তাহলে সংসারে অব্যবস্থা উৎপন্ন হয়ে যাবে।
- (১৮) রূপ, রস, গন্ধাদি সংসারের বিষয়-ভোগ চুম্বকের সমান হয় এবং মন লোহার সমান হয়। এই সকল বিষয় মনকে সদা নিজের দিকে আকর্ষণ করতে থাকে। এগুলি হতে মনকে বশ করার উপায় হল- এই সকল বিষয় ভোগ দ্বারা প্রাপ্ত হানিকে বিচার করা।
- (১৯) ঈশ্বরই সংসারের উৎপাদক এবং পালনকর্তা, তাঁরই উপাসনা করা উচিত, অন্য কারও নয়। তিনিই সকলের রক্ষক এবং সকলকে সুখ প্রদান করেন।
- (২০) মনের প্রমাণ, বিপর্যয় ইত্যাদি বৃত্তিগুলির নিরুদ্ধ হয়ে যাওয়াই যোগের বাস্তবিক স্বরূপ। এটি হতে ভিন্ন ব্যায়াম, চিকিৎসা ইত্যাদিকে যোগ বলা হয় না।



গ্রন্থ লেখার প্রেরণা স্রোত

আমাদের ভারত বর্ষ দেশ থেকে বেদের বহু ধর্ম লুপ্ত হয়ে গেছে এবং অবশিষ্ট আমাদের প্রমাদের জন্য নষ্ট হতে চলেছে এবং তারই স্থানে পাখন্ড, অনাচার এবং দম্ভ বেড়ে চলেছে। সদাচার এবং সত্যতা থেকে আমরা দূর হতে চলেছি, সেই জন্য আমাদের সকলের দুর্দশা হচ্ছে, এতে আশ্চর্যই বা কী? ... যদি আমায় কেউ প্রশ্ন করে যে এই পাগলামির কোন উপায়ও রয়েছে কিনা? তাহলে আমার উত্তর হলো যে যদিও রোগ অনেক বেড়ে গেছে তথাপি এর উপায় হতে পারে। যদি পরমাত্মার কৃপা হয় তাহলে রোগ অসাধ্য নয়। বেদ এবং ষড়্‌দর্শন-এর প্রাচীন পুস্তকের ভিন্ন-ভিন্ন ভাষায় অনুবাদ করে সকলের যাতে সরলতা পূর্বক প্রাচীন বিদ্যার জ্ঞান প্রাপ্ত হতে পারে, এরকম প্রযত্ন করা উচিত এবং শিক্ষিত বিদ্বানদের সত্য ধর্মের উপদেশ করার দিকে বিশেষ ধ্যান দেওয়া উচিত।। (উপদেশমঞ্জরী- উপদেশ ১৩)

-মহর্ষি স্বামী দয়ানন্দ সরস্বতী

ISBN 978-81-936179-8-4



9 788193 617984